दास्तान

-ए-

नसरुद्दीन

दास्तान -ए- नसरुद्दीन



लेखक

लियोनिद सोलोवयेव

Leonid Solovyove

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लि०

पहला संस्करण : नवम्बर १९५७

अनुवादक

कृष्णकुमार

मूल्य ५ रुपया

डी. पी. सिन्हा द्वारा न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, एम. एम. रोड, नई दिल्ली में मुद्रित और उन्हीं के द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली की तरफ से प्रकाशित।

मुलाकात

दास्तान-ए-नसरुद्दीन !

किताब का नाम पढ़ते ही आप पूछ बैठेंगे : "कौन नसरुद्दीन ? मैं तो उसे जानता नहीं !"

तो आइए, खोजा नसरुद्दीन से आपकी मुलाकात करा दें।

खोजा नसरुद्दीन (बुखारा से यहां तक पहुंचते-पहुंचते ही शायद यह नाम 'ख्वाजा नसरुद्दीन' से 'खोजा नसरुद्दीन' हो गया हो) बुखारा शरीफ का बाशिंदा था। उसके खयालात, जो दहकती आग की मानिन्द पाक थे, न मालूम क्यों बुखारा के पुराने अमीर को खतरनाक लगते थे। वह उसे आवारा, बागी, फूट व फसाद फैलानेवाला, न जाने क्या-क्या समझते थे। उनके चंगुल से बचकर खोजा नसरुद्दीन बुखारा से भाग निकला। लेकिन अमीर ने उसके बाग-बागीचों को तहस-नहस करवा दिया और उसके रिश्तेदारों को मौत के घाट उतार दिया।

दस साल तक बगदाद, तेहरान, बख्शी सराय और दूसरे शहरों में भटकते रहने के बाद यही खोजा नसरुद्दीन अपने पाक वतन बुखारा लौटता है। उसके साथ कोई है तो सिर्फ उसका गधा — उसका सच्चा और वफादार साथी, जो अपने मालिक के मिजाज और तौर-तरीकों से वाकिफ है, जो दुनिया में सबसे चालाक और शरारती गधा है।

खोजा नसरुद्दीन के बुखारा में कदम रखते ही अजीबोगरीब वाकयात शुरू हो जाते हैं।

शहर के फाटक पर वह शहर में दाखिल होने का टैक्स, मेहमान टैक्स, तिजारत टैक्स वगैरा दे चुका है। मसजिदों की अराइश के लिए अतिया भी अदा कर चुका है। लेकिन टैक्स अफसर पूछता है :

"तुम्हारे उस गधे का टैक्स कौन अदा करेगा ? अगर तुम अपने रिश्तेदारों से मिलने आये हो तो तुम्हारा गधा भी अपने रिश्तेदारों से मिलेगा ही !"

"आप बजा फरमाते हैं," खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया, "वाकई, मेरे गधे के रिश्तेदारों की बुखारा में कमी नहीं है; नहीं तो जिस ढंग से यहां काम चल रहा है, आपके अमीर बहुत पहले ही तख्त से धकेल दिये गये होते और मेरे बहुत काबिल हुजूर आप, अपने लालच के लिए, न जाने कब के फांसी पर लटक गये होते।"

अजीबोगरीब वाकयात की धुंध में से खोजा नसरुद्दीन की अजीम शख्सियत साफ उभरती है। नये अमीर ने जैसे ही बुखारा में उसके आने की खबर सुनी वह चौंककर तख्त पर सीधे बैठ गये, मानो किसी ने उनके कांटा चुभा दिया हो। वह बोले :

"... कुछ ही दिन पहले बगदाद के खलीफा ने मुझे लिखा था कि उन्होंने उसका सिर कलम करवा दिया है। तुर्की के सुलतान ने लिखा था कि उन्होंने उसे सूली पर लटकवा दिया है। ईरान के शाह ने खुद अपने हाथ से मुझे लिखा था कि उन्होंने उसे फांसी दे दी है ...। यह खोजा नसरुद्दीन, उस पर लानत, इतने बादशाहों के हाथों से कैसे बेदाग बचकर निकल सकता है ?"

बेशक, खोजा नसरुद्दीन में कुछ ऐसी ही सिफत थी जिससे वह हर बार बच निकलता था।

बुखारा पहुंचते ही वह वहां के गरीब बाशिन्दों—भिश्तियों, कुम्हारों, तांबागरों, लुहारों, वगैरा—का सच्चा दोस्त और मददगार बन जाता है। उसके नाम से बुखारा का वजीर बख्तियार खौफ खाता है क्योंकि खोजा नसरुद्दीन ने मजहब के नाम पर लूट बन्द करा दी। उसके नाम से सूदखोर जाफर को सांप सूंघ जाता है क्योंकि खोजा नसरुद्दीन ने गरीबों को उस लुटेरे की चालों से होशियार कर दिया। चेचकरू खुफिया को उसके नाम से गश आ जाता है क्योंकि ...।

और आफताब-ए-जहां खुद अमीर ?

हां, इस सिलेसिले में एक नाम और आता है—गुलजान ! यह हसीन दोशीजा खोजा नसरुद्दीन की होनेवाली दुलहिन थी, जिसे नापाक इरादे से अमीर ने अपने हरम में कैद कर लिया था। मगर, वाह रे खोजा नसरुद्दीन ! खैर, आप खुद पढ़ लेंगे ...।

बेशक, अमीर-उमरा, रईस, मुल्ला, सूदखोर—गरीबों को ठगने और लूटने वाले—सभी खोजा नसरुद्दीन से नफरत करते थे। इसकी वजह भी थी। खोजा नसरुद्दीन आदमी ही दूसरी किस्म का था :

"उसके खयालात की दुनिया ऐसी थी जहां इंसान भाई-भाई की तरह रहें, जहां लालच, हसद, दगा और गुस्से का नाम न हो, जहां सब एक-दूसरे की वक्त पर मदद करें ...।" उसकी जिन्दगी के दो पहलू थे : एक वह जो तीखा था, जहर में बुझा हुआ—लुटेरों व बदमाशों के लिए; दूसरा वह जो नर्म व मुलायम था—सभी भले व नेक इन्सानों के लिए।

लेकिन शायद अब आप हमसे नाराज हो चले होंगे क्योंकि हम आपका ज्यादा वक्त ले रहे हैं। लेकिन, चन्द मिनट और। बस, बहुत थोड़े।

"दास्तान-ए-नसरुद्दीन" किताब का तर्जुमा अंग्रेजी से किया गया है। हमें यकीन है कि इसमें आपको दास्तान का रस मिलेगा। किताब में उर्दू अल्फाज के नीचे नुक्ते नहीं हैं। आप इससे बहुत नाराज न हों। किताब नागरी लिपि में है, हिन्दी में है, लेकिन है दास्तान। बस, इतनी सी बात ध्यान में रखिए।

लीजिए, अब खुद ही दास्तान पढ़ लीजिए।

प्रकाशक



मैं खोजा नसरुद्दीन, मियां !
आजाद हमेशा रहा किया !
यह झूठ न कोई बकता हूं !
मैं कभी नहीं मर सकता हूं !

"...यह कहानी हमने अबू-उमर-अहमद-इब्न-मुहम्मद से सुनी, जिन्होंने इसे मुहम्मद-इब्न-अली-इब्न-रिफा से सुना, जिन्होंने इसे अली-इब्न-अब्दुल-अजीज से सुना, जिन्होंने अबू-उबैद-अल-कासिम-इब्नसलाम का हवाला दिया, जिन्होंने इसे अपने बुजुर्ग उस्तादों के मुंह से सुना और आखिरी उस्ताद ने सबूत में उमर-इब्न-अल-खत्ताब व उनके बेटे अब्दुल्ला — अल्लाह उन पर करम करे — का जिक्र किया..."

इब्नहज्म — "बत्तख का हार"


यह किताब अपने दोस्त मोमिन आदिलोव की, जो १८ अप्रैल सन् १९३० को एक कायर की गोली का शिकार बने, पाक याद को भेंट करता हूं।

उनमें खोजा नसरुद्दीन के कई हुनर थे — जनता की सच्ची सेवा, हिम्मत, आला समझ और ईमानदारी की चतुरता। जब मैं यह किताब लिख रहा था, कई बार, रात के सन्नाटे में मुझे लगा कि उनका साया मेरे साथ है और मेरी कलम को मदद पहुंचा रहा है।

वह पहाड़ के एक गांव — नाने — में मरे और कनीबादम में उनकी कब्र है। कुछ दिन पहले मैं वहां गया था। बसन्त की घास और फूल मिट्टी के उस ढेर पर उग रहे थे और बच्चे वहां खेल रहे थे; और वह हमेशा की गहरी नींद में सोये हुए थे — उन्होंने मेरे दिल की आवाज नहीं सुनी...

लि. सो.



"यह भी बयान किया गया है कि वह सीधा-सादा इंसान अपने गधे की लगाम पकड़े चल रहा था और गधा पीछे-पीछे आ रहा था।"

(अलिफ लैला की शहरजाद की ३८२ वीं रात)

जब खोजा नसरुद्दीन की पैंतीसवीं सालगिरह थी, तो वह सड़कों पर मारा-मारा फिर रहा था।

परदेशों में, एक शहर से दूसरे शहर, एक देश से दूसरे देश, समुद्र और रेगिस्तान पार करते हुए, जहां रात हुई वहीं सोते हुए उसने दस साल काट दिये थे। कभी वह चरवाहों के छोटे अलाव के किनारे सो जाता, कभी खचाखच भरी कारवांसराय में—जहां सारी रात धुंधलके में ऊंट सांसें भरा करते और घंटियों की रुनझुन के साथ अपना बदन खुजाया करते। कभी वह धुएं और कालिख से भरे चायखानों में पड़ रहता—भिश्तियों, फकीरों, खच्चरवालों और गरीबों के बीच, जो भोर होते ही तंग गलियों और बाजारों को अपनी चीख-पुकार से भर देते।

बहुत सी रातें उसने किसी न किसी ईरानी रईस के हरम में नर्म, रेशमी गद्दों पर बितायी थीं, जब घर का मालिक सिपाहियों के साथ इस नापाक आवारे की खोज में सरायों और चायखानों की ख़ाक छानता फिरता था ताकि वह उसे पकड़ ले और सूली पर लटकवा दे।

झिझरीदार झरोखे से असमान में रोशनी की एक किरन दिखायी देती, सितारे धुंधले हो जाते, सुबह होने की खबर देनेवाली हवा हौले से नम सब्जे में सरसराने लगती और खिड़कियों पर जंगली चिड़ियां चहचहाने और चोंच से अपने पर संवारने लगतीं। अलसायी आंखोंवाली सुन्दरी का मुंह चूमता हुआ खोजा नसरुद्दीन कहता :

"वक्त हो गया। अलविदा, ऐ मेरी दिलबर, भूल न जाना मुझे।"

"अभी रुको!" अपनी सलोनी बाहें उसकी गरदन में डालकर वह कहती, "क्या तुम हमेशा के लिए जा रहे हो? सुनो, आज रात को जैसे ही अंधेरा होगा, तुम्हें बुलाने के लिए मैं बुढ़िया को फिर भेजूंगी।"

"नहीं। एक ही मकान में दो रातें गुजारना क्या होता है, यह मैं एक अरसे से भूल चुका हूं। मुझे अपनी राह लगने दो। देर हो रही है मुझे।"

"अपनी राह ? किसी और शहर में तुम्हें कोई जरूरी काम है क्या ? तुम जा कहां रहे हो ?"

"मुझे नहीं मालूम। लेकिन उजाला हो चुका है; शहर के फाटक खुल गये हैं और पहले कारवां रवाना हो रहे हैं। ऊंटों की घंटियों की रुनझुन सुन रही हो न ? इसे सुनते ही मुझे लगता है कि जिन मेरे पैरों में समा गये हैं और मैं रुक नहीं सकता।"

"तो, जाओ !" अपनी लम्बी पलकों में आंसू छिपाने की नाकाम कोशिश करती हुई वह नाजनीनें हरम नाराजगी से कहती। "लेकिन सुनो तो ! जाने से पहले अपना नाम तो मुझे बता जाओ।"

"मेरा नाम ? तो सुनो : तुमने यह रात खोजा नसरुद्दीन के साथ बितायी है। मैं हूं खोजा नसरुद्दीन। अमन में खलल डालनेवाला और फूट और फसाद फैलानेवाला। मैं वही हूं जिसका सिर काटनेवाले को भारी इनाम देने का ऐलान किया गया है; हर दिन नकीबची बाजारों और आम जगहों पर इसका ढिंढोरा पीटते हैं। कल तो वे लोग मुझे पकड़नेवाले को तीन हजार तूमान देने का लालच दे रहे थे। मेरा मन हुआ कि इतनी अच्छी कीमत पर मैं खुद ही अपना सिर दे दूं। तू हंसती है, मेरी नन्हीं बुलबुल ? अच्छा, तो ला, आखिरी बार अपने होंठ चूम लेने दे। मेरा दिल तो चाहता है कि तुझे कोई जमर्रुद दूं, लेकिन वह मेरे पास है नहीं। ले, मैं यह सफेद पत्थर का टुकड़ा दे रहा हूं, जिसको देखकर तू मुझे याद किया करे !"

वह अपनी फटी खलअत पहनता जो अलाव की चिनगारियों से कई जगह जल चुकी थी और चुपचाप बाहर हो जाता। दरवाजे पर महल के सबसे कीमती खजाने का रखवाला, काहिल और बेवकूफ ख्वाजा साफा बांधे और सामने की ओर ऊपर को मुड़ी मुलायम जूतियां पहने खर्राटे लेता रहता। आगे गलीचों व दरियों पर नंगी तलवारों का तकिया बनाये पहरेदार लम्बे पड़े होते। खोजा नसरुद्दीन पंजों के बल चुपचाप निकल जाता — हमेशा बखैरियत, मानो इस वक्त वह दूसरों की नजरों से छूमन्तर हो गया हो !

और पथरीली सड़क फिर एकबार उसके गधे के तेज खुरों से गूंजने लगती और धुंआ उड़ाने लगती। नीले आसमान का सूरज दुनिया पर चमकता। खोजा नसरुद्दीन बिना आंखें झपकाये उसकी ओर देखता। ओस से नम खेत और ऊसर रेगिस्तान — जहां रेत की आंधियों से सफेद हुई ऊंटों की हड्डियां पड़ी होतीं — हरे-भरे बाग और उफनती नदियां, नंगी बंजर पहाड़ियां और हंसते-मुसकराते चरागाह खोजा नसरुद्दीन के गीतों से गूंज उठते। अपने गधे पर

सवार, पीछे मुड़कर एक बार भी देखे बिना, गुजरी बातों के लिए किसी भी कसक के बिना और आगे आनेवाली मुसीबतों के लिए किसी डर के बिना, वह आगे बढ़ता जाता।

पर जो कस्बा वह अभी-अभी छोड़कर आया है उसकी याद हमेशा ताजा रहेगी। मुल्ला और उमरा उसका नाम सुनते ही गुस्से से लाल-पीले होने लगते। भिश्ती, गाड़ीवान, बुनकर, ठठेरे और जीनसाज रात को चायखानों में इकट्ठे होकर उसकी वीरता की कहानियां कहकर अपना मनोरंजन करते और ये कहानियां खत्म होने तक हमेशा उसके माफिक बन जातीं। हरम की अलसायी हुई सुन्दरी बार-बार सफेद पत्थर के टुकड़े को देखती और अपने शौहर के कदमों की आवाज सुनते ही जल्दी से उसे सीप की पिटारी में छिपा लेती।

जरबफ्त की खलअत को उतारता हुआ, हांफता-कांखता मोटा अमीर कहता—"ओफ! इस कम्बख्त, आवारा खोजा नसरुद्दीन ने हम सभी को पस्त कर दिया। उसने तो पूरे मुल्क को उभारकर, गड़बड़ फैला रखी है। आज मुझे मेरे पुराने दोस्त, खुरासान के आला हाकिम का खत मिला। तुम समझती हो न! उनके शहरों में यह आवारा पहुंचा ही था कि यकायक सभी लुहारों ने टैक्स देना बन्द कर दिया और सरायवालों ने बिना दाम लिये सिपाहियों को खाना खिलाने से इनकार कर दिया। और, सबसे बड़ी बात तो यह कि यह चोट्टा, इस्लाम को नापाक करनेवाला यह हरामजादा, हाकिम के हरम में घुसने की गुस्ताखी कर बैठा और उनकी सबसे चहेती बीवी को फुसला लिया। सच ही, दुनिया ने ऐसा बदमाश कभी नहीं देखा! अफसोस यही है कि यह दो कौड़ी का भिखमंगा मेरे हरम में घुसने की कोशिश करने नहीं आया, नहीं तो उसका सिर बाजार के चौराहे पर सूली पर लटकता दिखायी देता।"

नाजनी, अपने आप मुस्कराती हुई, मौन रहती।

और, इस बीच खोजा नसरुद्दीन के गानों और उसके गधे के तेज खुरों से सड़क गूंजा करती और धुंआ उड़ा करता।

इन दस सालों में वह हर जगह हो आया था: बगदाद और इस्ताम्बूल, तेहरान, बख्शी सराय, तिफलिस, दमिश्क, तबरेज और अखमेज। इन सभी शहरों से वह वाकिफ था और इनके अलावा और भी बहुत से शहरों से। और हर जगह वह अपनी कभी न भुलायी जा सकनेवाली याद छोड़ आता। और अब वह अपने वतन, अपने शहर बुखारा शरीफ लौट रहा था—पाक बुखारा, जहां वह नाम बदलकर कुछ दिन अपनी भटक से छुट्टी पाकर आराम करना चाहता था।

व्यापारियों के एक काफिले के साथ, जिसके पीछे वह लग लिया था, उसने बुखारा की सरहद पार की। सफर के आठवें दिन, दूर गर्द के धुन्ध में, इस बड़े और मशहूर शहर के ऊंचे मीनार दीखे।

प्यास और गर्मी से पस्त ऊंटवालों ने फटे गलों से आवाज लगायी और ऊंट और तेजी से आगे बढ़ चले। सूरज डूब रहा था। शहर के फाटक बन्द होने से पहले बुखारा में दाखिल होने के लिए जल्दी करने की जरूरत थी। खोजा नसरुद्दीन कारवां में सबसे पीछे था—गर्द के मोटे और भारी बादल में लिपटा हुआ। यह उसके अपने वतन की पाक गर्द थी जिसकी खुशबू उसे दूर देशों की मिट्टी से ज्यादा अच्छी लग रही थी। छींकता, खांसता, वह बराबर अपने गधे से कहता जाता—"ले! अच्छा ले! हम लोग आ ही पहुंचे। आखिर अपने वतन आ ही गये। इंशा अल्लाह, कामयाबी और मसर्रत यहां हमारा इन्तजार कर रही है।"

कारवां शहर की चहारदीवारी तक पहुंचा तो पहरेदार फाटक बन्द कर रहे थे।

"खुदा के वास्ते हमारा इन्तजार करो!" कारवां का सरदार दूर से सोने का सिक्का दिखाता हुआ चिल्लाया।

लेकिन तब तक फाटक बन्द हो गये। झनझनाहट के साथ साकलें लग गयीं। ऊपर बुर्जियों पर लगी तोपों के पास पहरेदार तैनात हो गये। ताजा हवा चल निकली। धुन्ध-भरे आसमान में गुलाबी रोशनी खत्म हो गयी। नया, नाजुक दूज का चांद आसमान से झांकने लगा। झुटपुटे की खामोशी में अनगिनत मीनारों से, मुसलमानों को शाम की इबादत के लिए बुलाती हुई मुअज्जिनों की तीखी, उदास, ऊंची आवाजें तैरती हुई आने लगीं।

जैसे ही व्यापारी और ऊंटवाले नमाज के लिए दोजानू हुए, खोजा नसरुद्दीन अपने गधे के साथ एक तरफ को खिसक लिया।

"इन ताजिरों के पास तो कुछ है जिसके लिए वे खुदा का शुक्र करें," वह बोला, "शाम का खाना ये लोग खा चुके हैं और अभी ब्यालू करेंगे। ऐ मेरे वफादार गधे! तू और मैं अभी भूखे हैं। न शाम का खाना मिला है, न रात का मिलेगा। अगर अल्लाह हमारा शुक्रिया चाहता है, तो मेरे लिए पुलाव की एक रकाबी और तेरे लिए एक गट्ठर तिपतिया घास भेज दे।"

गधे को उसने सड़क के किनारे एक पेड़ से बांधा और पास ही एक पत्थर का तकिया लगाकर नंगी जमीन पर पड़ रहा। ऊपर साफ्फाफ आसमान में सितारों के चमकते हुए जाल को देखने लगा। तारों के हर झुंड को

वह पहचानता था। इन दस सालों में उसने न जाने कितनी बार इस तरह खुले आसमान को ताका था। हमेशा उसे यही लगता कि रातों के खामोश और पाक-साफ दुवा के घंटे उसे सबसे बड़े दौलतमन्दों से भी ज्यादा दौलतमन्द बना देते थे, क्योंकि दुनिया में हर एक की अपनी-अपनी किस्मत होती है। रईस भले ही सोने की थाली में खाना खायें, पर वे अपनी रातें छत के नीचे गुजारने को ही मजबूर होते हैं और इस तरह सर्द, नीले, तारों भरे कुहासे में आधी रात के सन्नाटे में इस दुनिया की उड़ान के खयाल को महसूस करने से महरूम रह जाते हैं।

इस बीच शहर की उस चहारदीवारी के बाहर, जिस पर तोपें चढ़ी हुई थीं, चायखानों और सरायों में, जो धिचपिच बने हुए थे, बड़े-बड़े कड़ाहों के नीचे आग जल चुकी थी और जिबह होने के लिए ले जायी जानेवाली भेड़ों ने दर्दनाक आवाज में मिमियाना शुरू कर दिया था। तजुरबे से होशियार हुए खोजा नसरुद्दीन ने रात भर के अपने आराम के लिए हवा के रुख के खिलाफ जगह तलाश की थी ताकि खाने की ललचानेवाली महक रात में उसे परेशान न करे। बुखारा के रिवाजों की पूरी जानकारी होने के कारण उसने अगले दिन शहर के फाटक पर चुंगी अदा करने के लिए अपनी रकम का आखिरी हिस्सा भी बचा रखा था।

बहुत देर तक वह करवटें बदलता रहा, पर उसे नींद न आयी। नींद न आने की वजह भूख नहीं, बल्कि वे कड़वे विचार थे जो उसे सता रहे थे।

उसे अपने वतन से मुहब्बत थी। धूप से तपे, तांबे के रंग के चेहरे पर छोटी सी काली दाढ़ी और साफ आंखों में एक शैतान चमकवाले इस चालाक और खुशमिजाज इंसान को सबसे ज्यादा मुहब्बत थी अपने वतन से। और फटा, पैबन्द लगा कोट, तेल से भरा कुलाह और टूटे जूते पहने वह बुखारा से जितनी ज्यादा दूरी पर होता, उतनी ही ज्यादा मुहब्बत अपने वतन के लिए उसके दिल में उमड़ती और उतनी ही ज्यादा उसकी याद सताती। अपनी जलावतनी में उसे बुखारा की उन तंग गलियों की याद आती जो इतनी पतली थीं कि अराबा (एक तरह की गाड़ी) दोनों तरफ की कच्ची दीवालों को रगड़ कर ही निकल पाता; उन ऊंचे मीनरों की याद आती जिनके रोगनदार ईंटों-वाले नकाशीदार गुम्बदों पर सूरज निकलने और डूबने के वक्त लाल रोशनी पैर टिकाती थी; उन पुराने और पाक दरख्तों की याद आती जिनकी शाखों पर सारस के घोंसलों के काले बोझ झूलते रहते थे।

नहरों के किनारे के चायखाने, जिन पर सरसराते हुए चिनारों का साया था, नानबाइयों की बेहद गर्म दूकानों से निकलता हुआ धुआं और खाने की खुशबू, बाजारों के तरह-तरह के शोर-गुल उसे याद आते। उसे अपने वतन के झरने और पहाड़ियां याद आतीं। खेत, चरागाह, गांव, रेगिस्तान याद आते।

बगदाद या दश्मिक में अपने हम-वतन लोगों को वह उनकी पोशाक या कुलाह की बनावट से पहचान लेता। उस वक्त खोजा नसरुद्दीन का दिल जोर से धड़कने लगता और उसका गला भर आता। जाते वक्त के मुकाबले अपनी वापसी पर उसे अपना मुल्क और भी दुखी लगा। पुराना अमीर बहुत पहले दफ्न हो चुका था। पिछले आठ साल में नये अमीर ने बुखारा को बरबाद करने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी। खोजा नसरुद्दीन ने टूटे हुए पुल, नहरों के धूप से चटकते सूखे तले, गेहूं और जौ के धूप से जले ऊबड़-खाबड़ खेत देखे। घास और कंटीली झाड़ियों से खेत बरबाद हो रहे थे। बाग बिना पानी मुरझा रहे थे। काश्तकारों के पास न मवेशी थे, न रोटी। सड़कों पर कतार बांधे फकीर उन लोगों से भीख मांगा करते थे जो खुद ही रोटी के जरूरतमन्द थे।

नये अमीर ने हर गांव में सिपाहियों की टुकड़ियां भेज रखी थीं और गांववालों को हिदायत दी थी कि इन सिपाहियों के खाने-पीने की जिम्मेदारी गांववालों की होगी। उसने बहुत सी मसजिदों की नींव डाली और फिर गांववालों से उन्हें पूरा करने को कहा। नया अमीर बड़ा मजहबी था और साल में दो बार लासानी और सबसे ज्यादा पाक शेख बहाउद्दीन के मजार की, जो बुखारा के नजदीक ही थी, जियारत करने से न चूकता। चार टैक्स, जो पहले से लागू थे, उनमें तीन नये टैक्सों का उसने इजाफा कर दिया था। हर पुल पर उसने चुंगी लगा दी थी। तिजारत पर उसने टैक्स बढ़ा दिया था। कानूनी टैक्स में भी उसने इजाफा कर दिया था और इस तरह बहुत सी नापाक रकम जमा कर ली थी। दस्तकारियां खत्म हो रही थीं। तिजारत कम होती जा रही थी।

[खोजा नसरुद्दीन की वापसी के वक्त उसके वतन में बड़ी उदासी छायी हुई थी।]

... सबेरे तड़के मुअज्जिनों ने फिर मीनारों से अजान दी। फाटक खुले और कारवां धीरे-धीरे शहर में दाखिल हुआ। घंटियां हौले-हौले बज रही थीं।

फाटक से घुसकर कारवां ठहर गया। सड़क पहरेदारों से घिरी हुई थी। वे बहुत बड़ी तादाद में थे। कुछ ठीक से वरदी पहने थे और करीने से थे; कुछ, जिन्हें अमीर की नौकरी में माल काटने का पूरा मौका अभी नहीं मिला था, अधनंगे और नंगे पांव थे। वे चीख-चिल्ला रहे थे और उस लूट के लिए झगड़ व एक-दूसरे को ठेल रहे थे, जो उन्हें अभी मिलनेवाली थी। आखिर, एक चायखाने से एक मोटा-ताजा और नींद में भरा टैक्स-अफसर निकला। उसकी रेशमी खलअत की आस्तीनों में तेल लगा था। उसके नंगे पांव जूतियों में पड़े थे। उसके मोटे थलथल चेहरे पर अय्याशी और बदकारी के निशान साफ झलक रहे थे। व्यापारियों की ओर उसने ललचायी नजरों से देखा और कहा : "ताजिरो खुशामदीद! अल्लाह करे तुम्हें अपने काम में कामयाबी

हासिल हो! तुम्हें मालूम हो कि अमीर का हुक्म है कि जो तिजारी अपने माल का छोटे-से-छोटा हिस्सा भी छिपाने की कोशिश करेगा उसे बेंत लगाकर मार डाला जायगा।"

परेशान और चौकन्ने व्यापारी चुपचाप अपनी रंगी हुई दाढ़ियां सहलाते रहे। बेताबी से चहलकदमी करते हुए पहरेदारों की ओर टैक्स-अफसर मुड़ा और अपनी मोटी उंगलियां नचायीं। इशारा पाते ही वे सिपाही चीखते-चिल्लाते हुए ऊंटों पर टूट पड़े। उतावली में एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते, उन्होंने तलवारों से बालों के बने रस्से काट डाले और सामान की गांठें खोल डालीं, जिससे सड़क पर जरबफ्त, रेशम और मखमल के थान, काली मिर्च, चाय, काफूर, गुलाब के कीमती इत्र की शीशियां और तिब्बती दवाओं के डिब्बे बिखर गये।

खौफ और परेशानी से व्यापारियों की जुबान पर मानो ताला पड़ गया।

दो मिनट में जांच पूरी हो गयी। सिपाही अफसर के पीछे कतार बांधकर खड़े हो गये। उनके कोटों की जेबें लूट के माल से फटी जा रही थीं। अब शहर में आने और सामान लाने की टैक्स वसूली शुरू हुई। खोजा नसरुद्दीन के पास तिजारत के लिए कोई सामान था नहीं। उसे शहर में घुसने का ही टैक्स अदा करना था।

अफसर ने पूछा, "तुम कहां से आये हो और तुम्हारे आने का मकसद क्या है?"

मुहर्रिर ने सींग में भरी स्याही में नेजे की कलम डुबोयी और मोटे रजिस्टर पर खोजा नसरुद्दीन का बयान दर्ज करने को तैयार हो गया।

"हुजूर आला! मैं ईरान से आ रहा हूं और यहां बुखारा में मेरे कुछ रिश्तेदार रहते हैं।"

"अच्छा," अफसर ने कहा, "तो तुम अपने रिश्तेदारों से मिलने आये हो? इस हालत में तुम्हें मिलनेवालों का टैक्स अदा करना होगा।"

"पर मैं उनसे मिलूंगा नहीं। मैं तो एक जरूरी काम से आया हूं।" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया।

"काम से आये हो?" अफसर चिल्लाया और उसकी आंखें चमकने लगीं। "तो तुम रिश्तेदारों से मिलने भी आये हो और काम के लिए भी आये हो। तुम मिलनेवालों का टैक्स अदा करो, काम पर लगनेवाला टैक्स दो और खुदा की अजमत में बनी मसजिदों की अराइश के लिए अतिया अदा करो, जिसने रास्ते में डाकुओं से तुम्हारी हिफाजत की।"

खोजा नसरुद्दीन ने सोचा, "मैं तो चाहता था कि वह खुदा मेरी इस वक्त हिफाजत करता—डाकुओं से बचने का इन्तजाम तो मैं खुद ही कर

लेता।" पर वह खामोश ही रहा, क्योंकि उसने हिसाब लगा लिया था कि इस बातचीत के हर लफ्ज की कीमत उसे दस तंके देकर अदा करनी पड़ रही है। उसने अपना पटका खोला और पहरेदारों की ललचायी, घूरनेवाली आखों के सामने शहर में दाखिल होने का टैक्स, मेहमान टैक्स, तिजारत टैक्स और मसजिदों की अराइश के लिए अतिया अदा किया। अफसर ने सिपाहियों की ओर घूरा तो वे पीछे को हट गये। मुहर्रिर रजिस्टर में नाक गड़ाये नेजे की कलम घसीटता रहा।

टैक्स अदा करने के बाद खोजा नसरुद्दीन रवाना होनेवाला ही था कि टैक्स-अफसर ने देखा कि उसके पटके में अब भी कुछ सिक्के बाकी हैं।

"ठहरो!" वह चिल्लाया। "तुम्हारे उस गधे का टैक्स कौन अदा करेगा? अगर तुम अपने रिश्तेदारों से मिलने आये हो, तो तुम्हारा गधा भी अपने रिश्तेदारों से मिलेगा ही।"

अपना पटका एक बार फिर खोलते हुए खोजा नसरुद्दीन ने बहुत नरमी से जवाब दिया: "मेरे दानिशमन्द आका! आप बजा फरमाते हैं। वाकई, मेरे गधे के रिश्तेदारों की तादाद बुखारा में बहुत बड़ी है; नहीं तो, जिस ढंग से यहां काम चल रहा है, आपके अमीर बहुत पहले ही तख्त से धकेल दिये गये होते और मेरे बहुत काबिल हुजूर आप, अपने लालच के लिए, न जाने कब सूली पर चढ़ा दिये गये होते।"

इसके पहले कि अफसर अपने होश दुरुस्त कर पाये, खोजा नसरुद्दीन कूदकर अपने गधे पर सवार हुआ, उसे सरपट भगाया और सबसे नजदीक की गली में गायब हो गया।

वह बराबर कहता जा रहा था: "और तेज! और जल्दी, मेरे वफादार गधे! जल्दी भाग नहीं तो तेरे मालिक को एक टैक्स और अपना सिर देकर अदा करना पड़ेगा।"

खोजा नसरुद्दीन का गधा बहुत होशियार था। हर बात समझता था। उसके लम्बे कानों में शहर के फाटक से आयी आवाजें और पहरेदारों की चिल्लाहट पड़ चुकी थी और वह सड़क की परवाह किये बिना सरपट भागा जा रहा था—इतनी तेज रफ्तार से भाग रहा था वह कि उसके मालिक को अपने पैर ऊंचे उठाने पड़ रहे थे, उसके हाथ गधे की गरदन से लिपटे हुए थे और वह जीन से चिपका हुआ था। भारी आवाज में भोंकते कुत्ते उसके पीछे दौड़ रहे थे, मुर्गियों के चूजे डर से हर ओर तितर-बितर होकर भाग रहे थे और सड़क पर चलनेवाले लोग दीवारों से चिपटे, अपने सिर हिलाते हुए उसे देख रहे थे।

शहर के फाटकों पर पहरेदार इस हिम्मतवर आजाद खयाल इंसान की तलाश में भीड़ छान रहे थे। व्यापारी मुसकराकर एक-दूसरे से फुसफुसा रहे थे:

"यह जवाब तो खुद खोजा नसरुद्दीन के काबिल था।"

दोपहर होते-होते पूरा शहर इस खबर को सुन चुका था। बाजार में व्यापारी अपने गाहकों को चुपचाप यह किस्सा सुनाते और वे इसे दूसरों को सुनाते। हर एक हंसता और कहता :

"ये अल्फाज तो खोजा नसरुद्दीन के ही काबिल हैं।"

: ३ :

बुखारा में उसे न रिश्तेदार मिले, न पुराने दोस्त। उसे अपने वालिद का मकान भी नहीं मिला, जहां वह पैदा हुआ था और बड़ा हुआ था। न वह हरा-भरा सायेदार बगीचा ही उसे मिला जहां सर्दी के मौसम में पीली-पीली पत्तियां हवा में सरसराती हुई झूलतीं और पके फल जमीन पर भद से गिरते; जहां चिड़ियां ऊंची आवाज में गातीं और खुशबूदार घास पर सूरज की किरनें नाचा करतीं; जहां मक्खियां मुरझाते हुए फूलों से आखिरी रस चूसती हुई भनभनाया करतीं और सिंचाई के तालाब में झरना भेदभरे ढंग से बच्चों को कभी न खत्म होनेवाली अनबूझ कहानियां सुनाया करता था।... उस जगह अब ऊसर मैदान था, जिस पर बीच-बीच में मलबे और खडंजे के ढेर लगे थे, टूटती हुई दीवारें खड़ी थीं, चटाइयों के टुकड़े सड़ रहे थे, और कांटेदार झाड़ियां उग आयी थीं। वहां खोजा नसरुद्दीन को न एक चिड़िया दिखायी दी, न मक्खी। सिर्फ पत्थरों के ढेर के नीचे से, जहां उसका पैर पड़ गया था, एकाएक एक लम्बी तेल की-सी धार उबल पड़ी और धूप में हलकी चमक के साथ पत्थरों के दूसरे ढेर में छिप गयी — यह एक सांप था, हमेशा से इंसान की छोड़ी हुई वीरान जगहों का अकेला और खौफनाक बाशिन्दा!

खोजा नसरुद्दीन बहुत देर तक नीची निगाह किये खामोश खड़ा रहा। उसका दिल गम से भर उठा था।

पूरे जिस्म को कंपा देनेवाली खांसी की आवाज सुनकर वह चौंक उठा और पीछे मुड़कर देखा।

गरीबी और परेशानियों से दोहरा एक बूढ़ा उस बंजर जमीन को लांघता हुआ आ रहा था। खोजा नसरुद्दीन ने उसे रोका।

"अस्सलामालेकुम बुजुर्गवार! अल्लाह आपको सेहत और तरक्की बख्शे। क्या आप मुझे बतायेंगे कि इस जमीन पर किसका मकान था?"

"यहां जीनसाज शेर मुहम्मद का घर था," बूढ़े ने जवाब दिया, "मैं उनसे एक जमाने से खूब वाकिफ था। शेर मुहम्मद मशहूर खोजा नसरुद्दीन के वालिद थे और खोजा के बारे में, ऐ मुसाफिर, तुमने जरूर बहुत कुछ सुना होगा।"

"हां, मैंने कुछ सुना तो है। लेकिन आप बतायें कि मशहूर खोजा नसरुद्दीन के वालिद जीनसाज शेर मुहम्मद और उनके घरवाले गये कहां?"

"इतने जोर से न बोलो, मेरे बेटे! बुखारा में हजारों जासूस हैं। अगर वे हम लोगों की बातचीत सुन लेंगे तो हमारे लिए परेशानी ही परेशानी रह जायगी। तुम जरूर कहीं बहुत दूर से आ रहे हो, तभी नहीं जानते कि हमारे शहर में खोजा नसरुद्दीन का नाम लेने की सख्त मुमानियत है। उनका नाम लेना ही जेल में भर दिये जाने के लिए काफी है। आओ, मेरे और नजदीक आ जाओ। मैं तुम्हें बताऊं कि शेर मुहम्मद का क्या हुआ?"

घबराहट और खलबली को छिपाते हुए खोजा नसरुद्दीन बूढ़े के नजदीक आ गया।

बूढ़े ने खांसते हुए कहना शुरू किया: "यह वाकया पुराने अमीर के जमाने का है। खोजा नसरुद्दीन के बुखारा से निकाले जाने के कोई अट्ठारह महीने बाद बाजारों में अफवाह फैली कि वह खुफिया तौर पर, गैर कानूनी ढंग से, फिर लौट आया है और अमीर का मजाक उड़ानेवाले गीत लिख रहा है। अफवाह अमीर के महल तक पहुंची। सिपाहियों ने खोजा नसरुद्दीन की बहुत तलाश की, लेकिन नाकामयाब रहे। अब अमीर ने उसके वालिद, उसके दो भाई, चाचा व दूर के रिश्तेदारों व दोस्तों को पकड़ लेने का हुक्म जारी किया। उन लोगों को तब तक तकलीफें दी जानेवाली थीं, जब तक वे खोजा नसरुद्दीन का पता न बता दें। अलहम्दुलिल्लाह (अल्लाह का शुक्र है) कि उसने उन लोगों को खामोश रहने की हिम्मत व जब्त दी कि खोजा नसरुद्दीन अमीर के हाथों नहीं पड़ा। पर उसका वालिद जीनसाज शेर मुहम्मद तकलीफों से बीमार पड़ गया और फौरन बाद मर गया। उसके रिश्तेदार और दोस्त अमीर के गुस्से से बचने के लिए बुखारा छोड़कर भाग गये। किसी को मालूम नहीं कि वे अब कहां हैं। अमीर ने उनके मकानों-बागीचों को तहस-नहस और बरबाद करने का हुक्म जारी कर दिया ताकि खोजा नसरुद्दीन की याद भी बाकी न रह जाय।"

"पर उन्हें तकलीफें क्यों दी गयीं?" खोजा नसरुद्दीन ने जोर से पूछा। आंसू उसके गालों पर बह रहे थे लेकिन बूढ़े ने उन्हें नहीं देखा। उसकी निगाह कमजोर थी। "उन्हें सताया क्यों गया? खोजा नसरुद्दीन उस वक्त बुखारा में तो था नहीं। मैं यह बात बखूबी जानता हूं।"

"यह कौन कह सकता है?" बूढ़े ने जवाब दिया। "खोजा नसरुद्दीन जहां जब उसकी मरजी होती है, आता जाता है। हमारा लासानी खोजा नसरुद्दीन हर जगह है और कहीं भी नहीं है!"

यह कहकर बूढ़ा खांसता-कांखता हुआ आगे बढ़ गया। अपना मुंह हाथों में छिपाये, खोजा नसरुद्दीन अपने गधे की तरफ बढ़ा।

गधे की गरदन में बाहें डालकर और अपना भीगा हुआ गाल उसकी गर्म, गंधाती गरदन से लगाते हुए खोजा नसरुद्दीन बोला :

"ऐ मेरे अच्छे, मेरे सच्चे दोस्त ! तू देख रहा है कि मेरे प्यारे लोगों में यहां तेरे सिवा और कोई नहीं बचा। तू ही मेरी आवारागर्दी में मेरा वफादार और बराबर का साथी है।"

गधा मानो अपने मालिक का गम समझ रहा हो। वह बिलकुल चुपचाप खड़ा रहा। झाड़ी की पत्तियां खाना तक उसने छोड़ दिया। वे उसके मुंह से लटकती रह गयीं।

घंटे भर में खोजा नसरुद्दीन अपने गम पर काबू पा चुका था और उसके आंसू उसके चेहरे पर सूख चुके थे।

"कोई बात नहीं !" गधे की पीठ पर धौल जमाते हुए वह चिल्लाया, "कोई फिक्र नहीं ! बुखारा में लोग मुझे अब भी याद रखे हैं। लोग मुझे अब भी जानते और याद करते हैं। किसी न किसी तरह हम लोग कुछ दोस्त ढूंढ ही निकालेंगे ! और, अमीर के बारे में हम ऐसा गीत बनायेंगे—ऐसा, कि वह गुस्से से अपने तख्त पर ही फट जायगा और उसकी गन्दी आंतें महल की सजी-सजायी दीवारों पर जा पड़ेंगी। चल, मेरे वफादार गधे ! आगे बढ़ !"

: ४ :

तीसरे पहर का सन्नाटा। बड़ी उमस थी। धूल भरी सड़क। पत्थरों, कच्ची दीवारों और बाड़ों से अलसायी-सी गरमी उठ रही थी। इसके पहले कि वह पोंछ सके, खोजा नसरुद्दीन के चेहरे पर पसीना सूख जाता था।

बड़े प्यार से उसने बुखारा की जानी-पहचानी सड़कों, चायखानों और मीनारों को पहचाना। दस साल में बुखारा में कुछ भी नहीं बदला था। हमेशा की तरह कुछ मरगिल्ले कुत्ते अब भी तालाबों के किनारे पड़े सो रहे थे। रंगे हुए नाखूनोंवाले हाथों से बुरका उठाये एक औरत बड़े सजीले ढंग से झुकी गहरे रंग के पानी में एक पतली-सी, बजती हुई, सुराही डुबो रही थी।

सवाल था यह कि खाना कहां और कैसे मिले। खोजा नसरुद्दीन ने कल से तीसरी बार अपना पटका और कसके बांधा।

"कोई न कोई तरकीब तो करनी ही होगी, मेरे वफादार गधे !" उसने कहा। "यहां रुककर हम कोई तरकीब सोचें। खुशकिस्मती से यहीं एक चायखाना भी है।"

लगाम ढीली करते हुए उसने गधे को खूंटे के आसपास पड़े तिपतिया घास के टुकड़े चरने के लिए छोड़ दिया। अपनी खलअत का दामन सिकोड़कर वह सिंचाईवाली नहर के किनारे बैठ गया। वहां गंदला पानी मोड़ पर उफन रहा था और बुलबुले छोड़ रहा था।

खयालों में डूबा खोजा नसरुद्दीन सोच रहा था : "क्यों, कैसे और कहां से बह रहा है यह पानी ? पानी को खुद न इसकी खबर है, न इस बारे में वह कुछ सोचता ही है। मैं, खुद भी, न यह जानता हूं कि मैं कहां जा रहा हूं, न मुझे घर या आराम ही मयस्सर है। मैं बुखारा क्यों आया ? कल मैं कहां हूंगा ? मुझे खाना खरीदने के लिए आधे तंके का सिक्का भी कहां से मिलेगा ? क्या मैं भूखा ही रह जाऊंगा ? वह कम्बख्त टैक्स वसूलनेवाला अफसर ! उसने मेरी सारी रकम साफ कर दी ! मुझ से डाकुओं की बात करना कितनी बड़ी गुस्ताखी थी।"

उसी वक्त उसे वह आदमी दिखायी दिया जो उसकी बदकिस्मती का बायस था। टैक्स-अफसर घोड़े पर चढ़ा चायखाने की ओर आ रहा था। दो सिपाही उसके अरबी घोड़े की लगाम पकड़े-पकड़े आगे चल रहे थे। घोड़ा कत्थई भूरे रंग का खूबसूरत जानवर था। उसकी गहरे रंग की आंखों में बहुत अच्छी चमक थी। गरदन उसकी सुराहीदार थी और जब वह अपनी खूबसूरत पतली टांगें बड़े अन्दाज से आगे बढ़ाकर रखता तो साफ जाहिर होता कि वह अपने मालिक की थलथल मोटी लाश को ढोने से नाराज है।

सिपाहियों ने बड़े अदब से अपने सरदार को उतरने में मदद दी। वह उतरा और चायखाने में चला गया। चायखाने के घबराये हुए मालिक फरमाबरदारी में उसे रेशमी गद्दों की ओर ले गया जहां वह बैठ गया। फिर मालिक ने बेहतरीन चाय का एक खास प्याला तैयार किया और चीनी कारीगरी के एक नाजुक गिलास में अपने मेहमान को चाय दी।

"देखो तो ! मेरी कमाई पर यह कितनी शानदार खातिर पा रहा है।" खोजा नसरुद्दीन सोच रहा था।

अफसर ने डटकर चाय पी और वहीं गद्दों पर लुढ़ककर सो गया। उसके खर्राटों, होंठ चटखारने और गलल-गलल की आवाजों के शोर से पूरा चायखाना भर गया। उसकी नींद में खलल न पड़े इस डर से चायखाने के दूसरे मेहमानों ने फुसफुसाकर बातें करना शुरू किया। पहरेदार उसके दोनों तरफ बैठ गये और पत्तियों की चौरियों से मक्खियां उड़ाने लगे। जब उन्हें यकीन हो गया कि उनका सरदार गहरी नींद में सो गया है तो उन्होंने आंखों से इशारा किया, उठकर घोड़े की लगाम खोली, उसके सामने घास का एक गट्ठर डाला और एक नारियली हुक्का लेकर चायखाने के अंधेरे हिस्से की तरफ

बढ़ गये। थोड़ी देर बाद खोजा नसरुद्दीन को गांजे की मीठी-मीठी महक मिली। पहरेदार नशे में मदहोश थे।

शहर के फाटक पर सबेरे की घटनाओं को यादकर और इस डर से कि कहीं पहरेदार उसे पहचान न लें, खोजा नसरुद्दीन ने तय किया कि अब रफू-चक्कर होने का वक्त आ गया है। "तो भी, वह आधा तंका कहां मिलेगा ? ऐ कातिबे तकदीर ! तू खोजा नसरुद्दीन की मदद के लिए न जाने कितनी बार आया है। अब फिर उस पर करम की नजर कर !"

तभी किसी ने उसे पुकारा—"अरे सुन ! हां हां तू, जो वहां बैठा है !"

खोजा नसरुद्दीन पलटा और उसे सड़क पर एक बहुत सजावटदार ढकी हुई गाड़ी नजर आयी। एक बड़ा साफा बांधे और कीमती खलअत पहने एक आदमी गाड़ी के परदों से बाहर झांक रहा था। इससे पहले कि वह अजनबी एक लफ्ज भी और बोले, खोजा नसरुद्दीन समझ गया कि उसकी दुवा सुन ली गयी है और हमेशा की तरह किस्मत ने, उसे मुसीबत में देखकर, उस पर करम की नजर की है।

उस रईस अजनबी ने खूबसूरत अरबी घोड़े को देखते हुए और उसकी तारीफ करते हुए, अकड़कर कहा : "मुझे यह घोड़ा पसन्द है। बोल, क्या यह घोड़ा बिकाऊ है ?"

बात बनाते हुए खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "दुनिया में कोई ऐसा घोड़ा है ही नहीं जो बेचा न जा सके।"

"शायद तुम्हारी जेब बिलकुल खाली है।" अजनबी बोला। "मेरी बात कान देकर सुनो। मैं नहीं जानता कि यह घोड़ा किसका है, कहां से आया है और इसका पहलेवाला मालिक कहां है। मैं तुम से पूछ भी नहीं रहा। तुम्हारे कपड़ों पर पड़ी गर्द से लगता है कि तुम कहीं बहुत दूर से बुखारा आये हो। मेरे लिए यह बहुत काफी है। तुम समझ रहे हो न ?"

खोजा नसरुद्दीन ने सिर हिलाकर हामी भरी। वह फौरन भांप गया कि रईस क्या कहना चाहता है, और वह इससे भी आगे की बात समझ गया। अब वह सिर्फ यह मना रहा था कि कोई बेवकूफ मक्खी टैक्स-अफसर की गरदन या नाक पर कूदकर कहीं उसे जगा न दे। पहरेदारों की उसे ज्यादा फिक्र न थी, क्योंकि चायखाने के अंधेरे हिस्से से आनेवाले गहरे धुएं से जाहिर था कि वे नशे में धुत हैं।

अजनबी अमीर बड़े बुजुर्गाना और गम्भीर लहजे में बोला : "तुम्हें यह समझना चाहिए कि इस फटी खलअत को पहनकर ऐसे घोड़े पर चढ़ना तुम्हें जेब नहीं देता। तुम्हारे लिए यह खतरनाक भी साबित हो सकता है,

क्योंकि हर कोई सोचेगा : इस भिखमंगे को इतना बढ़िया घोड़ा मिला कहां से ? इसकी भी गुंजायश है कि तुम कैद में डाल दिये जाओ।"

खोजा नसरुद्दीन बहुत आजिजी से बोला : "ठीक फरमाते हैं आप, मेरे आका। सचमुच यह घोड़ा मेरे जैसों के लिए जरूरत से ज्यादा बढ़िया है। इस फटी खलअत में मैं जिन्दगी भर गधे पर ही चढ़ता रहा हूं और मैं ऐसे घोड़े पर सवारी करने की सोचने की हिम्मत भी नहीं कर सकता।"

जवाब सुनकर अजनबी खुश हुआ।

"यह ठीक है कि तुम गरीब हो, लेकिन घमंड ने तुम्हें अंधा नहीं बना दिया। नाचीज गरीब को खाकसारियत ही जेब देती है, क्योंकि खूबसूरत फूल बादाम के शानदार दरख्त पर ही अच्छे लगते हैं, मैदान की कंटीली झाड़ी पर नहीं। अब तुम मुझे जवाब दो : क्या तुम्हें यह थैली चाहिए ? इसमें चांदी के पूरे तीन सौ तंके मौजूद हैं।"

"चाहिए ?" भौजक्का होकर—क्योंकि एक बेवकूफ मक्खी उसी वक्त टैक्स-अफसर की नाक में घुस गयी थी, जिससे कि वह छींक रहा था और कुन-मुना रहा था—खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया, "चाहिए ? मैं समझता हूं जरूर चाहिए ! चांदी के तीन सौ तंके लेने से कौन इनकार करेगा ? अरे, यह तो ऐसे ही हुआ जैसे किसी को थैली सड़क पर पड़ी मिल जाय !"

बड़े जानकार ढंग से मुसकुराते हुए वह अजनबी बोला : "लगता है कि तुम्हें सड़क पर बिलकुल दूसरी चीज मिली है। लेकिन मैं यह रकम उस चीज से बदलने को तैयार हूं जो तुम्हें सड़क पर मिली है। यह रहे तुम्हारे तीन सौ तंके।"

उसने वह भारी थैली खोजा नसरुद्दीन को सौंप दी और अपने नौकर को इशारा किया जो चाबुक से अपनी पीठ खुजलाता हुआ वहां खड़ा बातचीत सुन रहा था। काठ जैसे उसके चेचकरू चेहरे की मुसकान और उसकी आंखों के काइयांपन को देखकर खोजा नसरुद्दीन समझ गया कि यह नौकर जो घोड़े की तरफ जा रहा है उतना ही बड़ा मक्कार है जितना बड़ा उसका मालिक।

"एक ही सड़क पर तीन-तीन मक्कारों का एक साथ होना ठीक नहीं।" उसने तय किया। "इनमें से कम से कम एक तो जरूर ही फालतू है। वक्त आ गया है कि मैं यहां से नौ दो ग्यारह हो जाऊं।"

उस अजनबी रईस की नेकनीयती और दरियादिली की तारीफ करता हुआ नसरुद्दीन जल्दी से अपने गधे पर सवार हो गया और उसे इतने जोर से ऐड़ लगायी कि तबियत से काहिल होने पर भी गधा एकदम दुलकी भाग चला।

खोजा नसरुद्दीन ने पीछे मुड़कर देखा तो नौकर अरबी घोड़े को गाड़ी से बांध रहा था। वह फिर मुड़ा तो देखा कि अजनबी रईस और टैक्स-अफसर

एक-दूसरे से गुथे हुए दाढ़ियां नोच रहे हैं और सिपाही उन्हें अलग करने की बेकार कोशिश कर रहे हैं।

अक्लमन्द लोग दूसरों के झगड़ों में दिलचस्पी नहीं लेते। खोजा नसरुद्दीन गली-कूचों में चक्कर काटता हुआ काफी दूर बढ़ गया—यहां तक कि उसे यकीन हो गया कि अब वह पीछा करनेवालों से बच गया है। उसने अपने गधे की लगाम खींची।

"ठहरो, ठहरो," उसने कहना शुरू किया, "अब कोई जल्दी नहीं है...।" यकायक बिलकुल पास ही उसे घोड़े की तेज और चौंका देनेवाली टापें सुनायी दीं। "ओह, आगे बढ़, आगे बढ़, मेरे वफादार गधे! मुझे यहां से जल्दी निकाल ले चल!" वह चिल्लाया। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। पीछे से एक घुड़सवार छलांग भरता हुआ सड़क पर आ गया था।

यह वही चेचकरू नौकर था। वह गाड़ी से खोलकर लाये घोड़े पर सवार था। अपने पैर झुलाता हुआ वह तेजी से खोजा नसरुद्दीन की बगल से गुजर गया और घोड़े को सड़क पर आड़ा खड़ा करके यकायक रुक गया।

खोजा नसरुद्दीन बहुत आजिजी से बोला—"ओ भलेमानस! मुझे आगे बढ़ने दे। ऐसी तंग सड़कों पर लोगों को सीधे-सीधे सवारी करनी चाहिए, आड़े-आड़े नहीं।"

बदनीयती से भरी हंसी के साथ नौकर ने जवाब दिया: "आहा! कैद-खाने से बचने का अब कोई रास्ता तुम्हारे लिए नहीं है। मालूम है तुम्हें? घोड़े के मालिक उस अफसर ने मेरे मालिक की आधी दाढ़ी नोच डाली है और मेरे मालिक ने उसकी नाक से खून निकाल दिया है! कल तुम अमीर की अदालत में पेश होगे। सच है, दोस्त! तुम्हारी तकदीर बहुत खराब है!"

खोजा नसरुद्दीन ने ताज्जुब से पूछा, "तुम कह क्या रहे हो? ऐसे इज्जतदार लोगों के इस तरह झगड़ पड़ने की वजह क्या है? और तुमने मुझे रोका क्यों है? उनके झगड़े का फैसला मैं तो कर नहीं सकता! उन्हें इसका फैसला अपने-आप करने दो, जैसे भी वे कर पायें।"

"खामोश!" नौकर चिल्लाया। "वापस लौट। तुझे उस घोड़े के लिए जवाब देना होगा।"

"कौन सा घोड़ा?"

"तेरी यह पूछने की मजाल! अरे, वही घोड़ा जिसके लिए तुझे मेरे मालिक से चांदी की थैली मिली थी।"

"खुदा गवाह है! तुम गलती कर रहे हो।" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। "इस मामले का घोड़े से कोई वास्ता नहीं। तुम खुद फैसला करो। तुमने तो पूरी बातचीत सुनी थी। तुम्हारे दरियादिल मालिक ने, एक गरीब इंसान

मदद करने के इरादे से, मुझसे पूछा कि क्या मैं चांदी के तीन सौ तंके लेना पसन्द करूंगा और मैंने जवाब दिया : 'हां, वाकई, मैं यह रकम लेना पसंद करूंगा।' तब उसने मुझे तीन सौ तंके दे दिये ! अल्लाह उसे लम्बी जिन्दगी दे। पर मुझे रुपया देने से पहले उसने यह देखने के लिए कि मैं इस इनाम का हकदार भी हूं या नहीं, जांचना चाहा कि मुझ नाचीज में आजिजी और इंकिसारी है या नहीं। उसने कहा, 'मैं नहीं जानना चाहता कि यह घोड़ा किसका है और कहां से आया है।'

"देखा तुमने ! वह यह जानना चाहता था कि कहीं मैं झूठे घमंड में अपने को घोड़े का मालिक तो नहीं बता बैठता। मैं खामोश रहा। वह फैयाज, मुकद्दस इंसान खुश हुआ। उसने कहा कि मेरे जैसों के लिए यह घोड़ा जरूरत से ज्यादा अच्छा है। मैं उसकी बात मान गया। इससे वह और भी खुश हुआ। तब उसने कहा कि मैं सड़क पर ऐसी चीज पा गया हूं जिसके बदले में चांदी के सिक्के मिल सकते हैं। उसका इशारा मुस्तकिल मिजाजी व जोश के साथ इसलाम में मेरे यकीन की तरफ था। यह यकीन मुझे पाक जगहों के सफर में हासिल हुआ। इस सबके बाद उसने मुझे इनाम दिया। इस नेक काम के जरिए वह कुरआन शरीफ में बताये गये बहिश्त जाने के रास्ते में पड़नेवाले उस पुल पर से अपना सफर ज्यादा आसान बनाना चाहता था, जो बाल से भी ज्यादा बारीक है और तलवार की धार से भी ज्यादा तेज है। इबादत के वक्त मैं अल्लाह से तुम्हारे मालिक के इस भले काम का हवाला दूंगा ताकि उसके लिए वह पुल पर बाड़ लगवा दे।"

चाबुक से अपनी पीठ खुजलाता हुआ नौकर लम्बी तकरीर सुनता रहा। तकरीर खत्म होने पर खोजा नसरुद्दीन को परेशान कर डालनेवाली काइयां हंसी के साथ वह बोला :

"ऐ मुसाफिर ! तुम ठीक कहते हो। मेरे मालिक से हुई तुम्हारी बातचीत का मतलब इतना नेक है, यह पहले मेरी समझ में क्यों न आया ? लेकिन, चूंकि उस दूसरी दुनिया के रास्ते का पुल पार करने में तुमने मेरे मालिक की मदद करना तय किया है, तो ज्यादा हिफाजत इसी में होगी कि पुल पर दोनों तरफ बाड़ें लग जायें। मैं भी, बखुशी, अल्लाह से दुवा मांगूंगा ताकि वह मेरे मालिक के लिए दूसरी तरफ भी बाड़ लगा दे।"

"तो मांगो दुवा !" खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया। "तुम्हें रोकता कौन है ? बल्कि ऐसा करना तो तुम्हारा फर्ज है। क्या कुरआन में हिदायत नहीं है कि गुलामों और नौकरों को अपने मालिकों के लिए रोज दुवा मांगनी चाहिए और इसके लिए कोई खास इनाम अलग से नहीं मांगना चाहिए ?"

घोड़े को एड़ लगाकर खोजा नसरुद्दीन को दीवाल की तरफ दबाते हुए नौकर सख्ती से बोला : "अपना गधा वापस लौटा ! चल, जल्दी कर, मेरा ज्यादा वक्त खराब न कर ।"

खोजा नसरुद्दीन ने उसे बीच में ही टोककर जल्दी से कहा : "ठहरो, मुझे बात तो खत्म कर लेने दो मेरे भाई । मैं तीन सौ तंकों के हिसाब से उतने ही अल्फाज की एक दुवा करनेवाला था । पर अब मैं सोचता हूं कि ढाई सौ अल्फाज की दुवा ही काफी होगी । मेरी तरफ की बाड़ कुछ छोटी और पतली हो जायगी । जहां तक तुम्हारा ताल्लुक है, तुम पचास अल्फाज की दुवा मांगना और सब कुछ जाननेवाला अल्लाह उतनी ही लकड़ी से तुम्हारी तरफ भी बाड़ लगा देगा ।"

"क्यों ? मेरी तरफ की बाड़," नौकर बोला, "तुम्हारी बाड़ का पांचवा हिस्सा ही क्यों हो ?"

"वह सबसे ज्यादा खतरनाक मुकाम पर जो बनेगी !" नसरुद्दीन ने जल्दी से कहा ।

नौकर अकड़कर बोला : "नहीं, मैं ऐसी छोटी बाड़ों के लायक नहीं हूं । इसका मतलब तो यह हुआ कि पुल का कुछ हिस्सा बिना बाड़ का रह जायगा । मेरे मालिक के लिए इससे जो खतरा पैदा होगा, मैं तो उसे सोचकर ही कांप जाता हूं । मेरी राय में तो हम दोनों ही डेढ़-डेढ़ सौ अल्फाज की दुवा मांगें ताकि पुल के दोनों तरफ बाड़ एक ही लम्बाई की हो । पतली जरूर होगी, पर कम से कम दोनों तरफ हिफाजत तो रहेगी । और अगर तुम राजी नहीं होते, तो इसका मतलब यह हुआ कि तुम मेरे मालिक का बुरा चाहते हो और यह चाहते हो कि वह पुल से गिर जाय । तब मैं मदद मांगूंगा और तुम कैदखाने का सबसे नजदीक का रास्ता अख्तियार करोगे ।"

गुस्से से खोजा नसरुद्दीन बोला : "पतली बाड़ ? तुम जो कुछ कह रहे हो उससे लगता है कि पतली टहनियों की बाड़ लगा देना ही तुम्हारे लिए काफी होगा । क्या तुम समझ नहीं रहे कि बाड़ एक तरफ मोटी और मजबूत होनी चाहिए, ताकि अगर तुम्हारे मालिक के पैर डगमगायें तो उनके पकड़ने के लिए कुछ तो रहे ।" उसे लग रहा था कि रुपयों की थैली पटके से खिसक रही है ।

खुशी से चिल्लाता हुआ नौकर बोला : "सचमुच तुमने हक की बात कही है । बाड़ को मेरी तरफ मजबूत होने दो और मैं दो सौ अल्फाज की दुआ मांगने में आना-कानी नहीं करूंगा ।"

"तुम शायद तीन सौ अल्फाज की दुवा मांगना चाहोगे ?" जहरीली आवाज में खोजा नसरुद्दीन बोला ।

वे दोनों अलग हुए तो खोजा नसरुद्दीन की थैली का आधा वजन कम हो चुका था। उन लोगों ने तय किया था कि मालिक के लिए बहिश्त के रास्ते-वाले पुल के दोनों तरफ बराबर-बराबर मजबूती और मोटाई की बाड़ लगायी जाय।

"अलविदा मुसाफिर!" नौकर ने कहा। "हम दोनों ने आज बड़े सवाब का काम किया है।"

"अलविदा, ऐ मेहरबान, वफादार और भले नौकर! अपने मालिक की रूह के लिए तुम्हें कितनी फिक्र है! मैं यह और कह दूं कि तुम बहुत जल्दी खुद खोजा नसरुद्दीन की टक्कर के हो जाओगे।"

नौकर के कान खड़े हुए। उसने पूछा: "उसका जिक्र तुमने क्यों किया?"

"कुछ नहीं, यूं ही। बस मुझे ऐसा लगा," खोजा नसरुद्दीन बोला। वह सोच रहा था—"आहा! यह शख्स बिलकुल सीधा-सादा नहीं है।"

नौकर ने पूछा: "शायद तुम्हारा उससे कोई दूर का रिश्ता है! शायद तुम उसके खानदान के किसी शख्स से वाकिफ हो!"

"नहीं, मैं उससे कभी नहीं मिला और मैं उसके किसी रिश्तेदार को भी नहीं जानता।"

नौकर अपनी जीन से झुककर बोला: "सुनो, मैं तुम्हें एक राज की बात बताऊं। मैं उसका रिश्तेदार हूं। असल में, उसका चचेरा भाई हूं। हम दोनों का बचपन में साथ रहा था।"

खोजा नसरुद्दीन का शक पक्का हो गया और वह बिलकुल खामोश रहा। नौकर उसकी ओर और ज्यादा झुक आया:

"उसके वालिद, दो भाई और एक चचा मर चुके हैं। ऐ मुसाफिर, तुमने यह तो शायद सुना ही होगा?"

लेकिन खोजा नसरुद्दीन तब भी खामोश रहा।

फरेबी नौकर बोला: "अमीर भी कितना बेरहम है!"

पर खोजा नसरुद्दीन फिर भी चुप रहा।

"बुखारा के सब वजीर बेवकूफ हैं!" यकायक नौकर कहने लगा। लालच और बेसब्री से वह उतावला था, क्योंकि ला-मजहब और आजाद-खयाल लोगों की गिरफ्तारी के लिए सरकारी खजाने से बड़े-बड़े इनाम मिलते थे। लेकिन खोजा नसरुद्दीन मुंह बन्द रखने की जिद पकड़े हुए था।

नौकर फिर बोला: "और हमारे जीशान अमीर भी उल्लू हैं! यह भी पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि अल्लाह का वजूद है ही!"

हालांकि एक करारा जवाब खोजा नसरुद्दीन की जुबान पर आया, पर उसने मुंह नहीं खोला। कड़वी नाउम्मीदी से नौकर ने एक गाली दी, घोड़े के

चाबुक लगायी और दो छलांग में गली का मोड़ पार करके गायब हो गया। सब तरफ खामोशी छा गयी। घोड़े की टापों से उड़ी गर्द ही बन्द हवा में सुनहले कोहरे की तरह छायी रही। सूरज की तिरछी, गर्म किरनें उसे भेदकर चमकती रहीं।

"अच्छा, तो मुझे एक रिश्तेदार मिल गया!" खोजा नसरुद्दीन ने सोचा और मुसकरा उठा। "उस बूढ़े ने मुझ से झूठ नहीं कहा था। बुखारा में जासूस मक्खी-मच्छरों की तरह भरे पड़े हैं। यहां चालाकी बरतना ही मुनासिब होगा। पुरानी कहावत है : 'कुसूरबार ज़ुबान सिर के साथ कलम की जाती है।'"

इसी तरह सोचता, काफी देर तक वह अपने गधे पर सवार, सड़कें पार करता रहा। कभी वह अपनी थैली की ज्यादातर रकम निकल जाने पर अफ़-सोस करता। कभी टैक्स वसूल करनेवाले अफसर और अजनबी रईस के बीच की लड़ाई की याद करके हंस उठता।

: ५ :

शहर के दूसरे सिरे पर पहुंचकर खोजा नसरुद्दीन रुक गया। अपने गधे को एक चायखाने के मालिक के सुपुर्द किया और फौरन एक नानबाई की दूकान में घुस गया।

वहां बड़ी भीड़ थी। धुआं था। खाना पकने की महक भरी थी। चूल्हे गर्म थे और कमर तक नंगे बावर्चियों की पसीने से तर पीठों पर चूल्हों की लपटों की चमक पड़ रही थी। वे चीखते-चिल्लाते, शोर-शराबा करते, एक-दूसरे को धक्के देते, अपना काम कर रहे थे। आम शोर-गुल, गोलमाल और भम्भड़ को बढ़ाते हुए आंखें फाड़े वे उन छोटे लड़कों के कान उमेठ रहे थे जो मेहमानों को खाना दे रहे थे। बड़े-बड़े देगचों और पतीलों के लकड़ी के ढक्कनों के नीचे खाना उबल रहा था। छत के पास भाप जमा हो रही थी, जहां मक्खियां भनभना रही थीं। धुएं से फैले अंधेरे में मक्खन के जलने और कड़-कड़ाने की आवाज सुनायी पड़ रही थी। गर्मी से सुर्ख अंगीठियों के किनारे दमक रहे थे। सीखचों पर भुनते गोश्त से अंगारों पर टपकती चर्बी नीली धुंएदार लपटों में जल रही थी। यहां पुलाव पक रहा था, सीख कबाब भुन रहे थे, बैलों का गोश्त उबल रहा था, प्याज, कालीमिर्च और भेड़ की दुम की चर्बी व गोश्त भरे समोसे तले जा रहे थे। इन समोसों से चर्बी निकलकर तवों पर बुलबुले बना रही थी।

बड़ी मुश्किल से नसरुद्दीन ने अपने लिए जगह तलाश की। दब-पिसकर जिस जगह वह बैठा, वह इतनी तंग थी कि जिन लोगों की पीठ को धक्का देकर वह बैठा था वे जोर से गुर्रा उठे। पर किसी ने बुरा नहीं माना; किसी ने उससे

कुछ कहा नहीं। न वह खुद ही बुड़बुड़ाया। बाजारों में नानबाइयों की दूकानों की भारी भीड़-भाड़। झगड़े का शोरगुल। हंसी-मजाक। धक्कम-धक्का और चीख-पुकार। सैकड़ों लोगों का, जो दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद खाने छांटने की फुरसत भी नहीं पाते थे और जिनके मजबूत जबड़े कड़ा और मुलायम हर तरह का गोश्त, हर चीज, चबा जाते थे और जिनके मजबूत मेदे हर चीज हज्म कर लेते थे—बशर्ते कि ये चीजें सस्ती और खूब हों। उनका जोर से नाक साफ करना, खाना चबाना और जुबान चटखारना—यह सब खोजा नसरुद्दीन को हमेशा से पसन्द था।

खोजा नसरुद्दीन एक बार में ही ढेर-सा खाना खा सकता था। एक बार में उसने तीन प्याले कीमा, तीन रकाबी चावल और दो दरजन समोसे डकार लिये। समोसे खत्म करने में कुछ कोशिश जरूर करनी पड़ी, पर अपने इस उसूल के मुताबिक कि जिसकी कीमत अदा कर दी जाय, वह खाना थाली में नहीं छोड़ना चाहिए, उसने उन समोसों को भी खत्म कर ही डाला।

खाना खत्मकर वह दरवाजे की तरफ बढ़ा और जब कुहनियों से धक्कम-धक्का करने के बाद, आखिर खुली हवा में पहुंचा, तो वह पसीने से नहा रहा था। हाथ-पैरों में कमजोरी भर रही थी, जैसे वे हल्के पड़ गये हों और उनमें ताकत न रही हो—मानो किसी तगड़े आदमी ने हमाम में उसका बदन रगड़ा हो। खाने और गरमी की वजह से तबियत में भारीपन लिये पैर घसीटता हुआ वह उस चायखाने तक पहुंचा जहां अपना गधा छोड़ आया था। उसने चाय मंगायी और गद्दों पर आराम से पसर गया। उसकी पलकें झुकने लगीं और खुशगवार खयाल उसके दिमाग में धीमे-धीमे तैरने लगे।

"मेरे पास इस वक्त अच्छी-खासी रकम है। किसी कारखाने में जीन-साजी या बरतन बनाने के काम में इसे लगा देना अच्छा रहेगा। मैं इन दोनों कामों को जानता हूं। घुमक्कड़ी छोड़ने का वक्त अब आ गया है। क्या मैं और लोगों से बदतर हूं? क्या मैं उनसे ज्यादा बेवकूफ हूं? क्या मैं भी एक खूबसूरत और मेहरबान बीवी नहीं हासिल कर सकता? क्या मेरे भी एक बेटा नहीं हो सकता जिसे मैं अपनी गोद में खिला सकूं? पैगम्बर की कसम, वह नन्हा, शोर मचानेवाला बच्चा, बड़ा होकर मशहूर शैतान निकलेगा, और मैं अपनी सारी दानिशमन्दी व तजरबे से हासिल अक्लमन्दी उसमें उंडेल दूंगा। हां, मेरा इरादा पक्का हो गया है। अब मैं बेचैन आवारगर्दी की जिन्दगी छोड़ूंगा। काम शुरू करने के लिए मुझे जीनसाज या कुम्हार की दूकान खरीद लेनी चाहिए..."

उसने हिसाब लगाना शुरू किया: "अच्छी दूकान की कीमत कम-से-कम तीन सौ तंके होगी और इस वक्त मेरे पास हैं कुल डेढ़ सौ तंके।" चेचकरू नौकर को उसने कोसना शुरू कर दिया: "अल्लाह उस डाकू को अंधा कर

दे। वह मुझ से वही रकम छीन ले गया है जिसकी किसी काम को शुरू करने के लिए मुझे जरूरत थी।"

एक बार फिर किस्मत ने साथ दिया। "बीस तंके!" किसी ने यकायक आवाज लगायी। फिर तांबे की थाली में पांसा गिरने की आवाज सुनायी दी।

बरसाती के किनारे, जानवर बांधने के खूटों के बिलकुल पास, कुछ लोग घेरा बनाये बैठे थे। चायखाने का मालिक उनके पीछे खड़ा था। गरदन उठाये वह उनके सिरों के ऊपर से झांक रहा था।

"जुआ!" कोहनी के सहारे उठते हुए खोजा नसरुद्दीन ने भांप लिया। "उनके जुआ खेलने की बात उतनी ही सच है जितनी यह कि मेरा नाम खोजा नसरुद्दीन है। मैं भी क्यों न देखूं; भले ही दूर से देखूं। जुआ तो नहीं खेलूंगा मैं। ऐसा बेवकूफ नहीं। पर कोई अक्लमन्द आदमी बेवकूफों को देखे क्यों नहीं?"

वह उठकर जुआरियों के पास चला गया।

"बेवकूफ लोग," चायखाने के मालिक के कान में वह फुसफुसाया, "मुनाफे के लालच में अपना आखिरी सिक्का भी गवां देते हैं। क्या पैगम्बर ने रुपये के लिए जुआ खेलने को मना नहीं किया है? अल्लाह का शुक्र है कि यह खतरनाक आदत मुझ में नहीं है! पर उस लाल बालोंवाले जुआरी की तकदीर तो देखो! लगातार चौथी बार जीता है! देखो, देखो! अरे, वह तो पांचवीं बार भी जीत गया! ओ बेदिमाग बेवकूफ! उसे तो दौलत का झूठा सपना जुए की ओर खींच रहा है, हालांकि गरीबी ने उसके रास्ते में गढ़ा खोद रखा है। क्या? फिर छठी बार जीत गया? नहीं देखी, ऐसी किस्मत मैंने कभी नहीं देखी। देखो, देखो, वह फिर दांव लगा रहा है। वाकई, इन्सान की बेवकूफी की इन्तिहा नहीं। ऐसा तो नामुमकिन है कि लगातार जीतता ही जाय! झूठी किस्मत में यकीन करनेवाले लोग ऐसे ही बरबाद होते हैं! इस लाल बालों-वाले आदमी को सबक सिखाना चाहिए। अगर वह सातवीं बार फिर जीता तो मैं उससे दांव बदूंगा,—गर्चे दिल से मैं जुए के खिलाफ ही हूं। काश मैं अमीर होता, तो जुआ न जाने कब का बन्द करवा चुका होता।"

लाल बालोंवाले ने फिर पांसा फेंका और सातवीं बार फिर जीता।

अब खोजा नसरुद्दीन पक्के इरादे से आगे बढ़ा। कन्धों से खिलाड़ियों को अलग हटाते हुए वह घेरे में जा बैठा।

खुशकिस्मत जीतनेवाले से पांसे लेकर, उन्हें तजुर्बेकार आंखों से, उलट-पलटकर देखते हुए बोला: "मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूं।"

लाल बालोंवाले ने भर्राये गले से पूछा: "कितनी रकम?" उसका सारा बदन कांप गया। जल्दी ही खत्म होनेवाली खुशकिस्मती में ज्यादा से ज्यादा जीत लेने के लिए वह उतावला हो रहा था।

खोजा नसरुद्दीन ने अपना बटुआ निकाला। जरूरत के लिए पच्चीस तंके उसमें वापस रख दिये और बाकी निकाल लिये। तांबे के थाल में चांदी के सिक्के खनखनाकर गिरे और चमकने लगे। जुआरियों ने ऊंचा दांव लगानेवाले इस इन्सान का खुसफुसाहट के साथ इस्तकबाल किया। ऊंचे दांवों का खेल शुरू हो गया था।

लाल बालोंवाले ने पांसे उठा लिये और बड़ी देर तक उन्हें खनखनाता रहा, मानों फेंकने में झिझक रहा हो। हर काई सांस रोके देख रहा था — यहां तक कि गधे ने भी मुंह उठा लिया था और कान खड़े कर लिये थे। अब सिर्फ जुआरी की मुट्ठी से पांसों के खनखनाने की आवाज आ रही थी। उस रूखी खनखनाहट से खोजा नसरुद्दीन के पेट और बदन में चाहत भरी कमजोरी आ गयी। आखिर लाल बालोंवाले ने पांसे फेंके। दूसरे खिलाड़ी गरदन बढ़ाकर देखने लगे और एक साथ ही ठीक से पीछे की ओर लुढ़क कर बैठ गये। एक साथ ही उन्होंने लम्बी सांसें लीं — मानो ये सब सांसें एक ही सीने से निकली हों। जुआरी पीला पड़ गया। उसके भिंचे हुए दांतों से कराह निकल गयी। पांसे पर तीन दिखायी दिये। वह जरूर हार रहा था, क्योंकि एक उतना ही कम निकलता है जितना कि छः और कोई भी दूसरा पांसा खोजा नसरुद्दीन के माफिक होगा।

मुट्ठी में पांसे हिलाते हुए उसने तकदीर का शुक्रिया अदा किया कि आज वह उस पर मेहरबान थी। पर वह भूल गया था कि तकदीर ढुलमुल और सनकी होती है और उन लोगों को बड़ी आसानी से दगा दे जाती है जो उस पर भरोसा करते हैं। अपने पर इतना भरोसा करने के लिए, अब उसने खोजा नसरुद्दीन को सबक सिखाने की सोची। इसके लिए उसने चुना उसके गधे, या कहो गधे की दुम को, जिसके आखीर में कांटे और कटाव थे। गधा जुआरियों की ओर पलटा और जो उसने दुम घुमायी तो जाकर सीधे उसके मालिक के हाथ से टकरायी। पांसे हाथ से फिसल गये। लाल बालोंवाला जुआरी खुशी से भर्रायी चीख के साथ फौरन थाल पर लेट गया और दांव पर लगी रकम अपने बदन से ढंक ली।

खोजा नसरुद्दीन ने दो काने फेंके थे।

देर तक होंठ चबाता हुआ वह चुपचाप बैठा रहा। फटी-फटी आंखों के सामने दुनिया तैरती और ढहती-सी नजर आ रही थी। कानों में एक अजब सनसनाहट हो रही थी।

एकाएक वह उछला, एक डंडा उठा लिया और खूंटे के पास खदेड़ते हुए गधे को पीटने में जुट पड़ा।

"कम्बख्त ! गधे ! हरामजादे ! बदबूदार जानवर ! सभी जिन्दा जानवरों के लिए लानत !" खोजा नसरुद्दीन चिल्ला रहा था। "क्या यही काफी नहीं था कि अपने मालिक के पैसे से जुआ खेले ? क्या यह पैसा हारना भी जरूरी था ? तेरी बदमाश खाल खींच ली जाय ! तेरे रास्ते में अल्लाह गड्ढा कर दे, ताकि तू गिरे और तेरे पैर टूट जायें ! तू मरेगा कब कि मुझे तेरा बदनुमा चेहरा देखने से छुट्टी मिले !"

गधा रेंका। जुआरी हंसी से खिलखिला उठे और चिल्लाने लगे। सबसे ज्यादा जोर से चिल्लाया लाल बालोंवाला वह जुआरी, जिसे अपनी खुशकिस्मती पर पक्का यकीन हो आया था।

थके और हांफते हुए खोजा नसरुद्दीन ने जब डंडा फेंक दिया तो लाल बालोंवाला बोला : "आओ, फिर खेल लो। दो-चार दांव और लग जायें। तुम्हारे पास अभी पच्चीस तंके तो हैं ही।"

यह कहकर उसने अपना बायां पैर फैला दिया और खोजा नसरुद्दीन के लिए हिकारत दिखाते हुए उसे थोड़ा हिलाया।

"हां, क्यों नहीं !" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। वह सोच रहा था—जब सवा सौ तंके चले गये तो अब बाकी पच्चीस का क्या होगा, यह सोचना ही फजूल है।

लापरवाही से उसने पांसे फेंके। वह जीत गया।

हारी हुई रकम थाल पर फेंकते हुए लाल बालोंवाले ने कहा—"पूरी रकम।"

खोजा नसरुद्दीन फिर जीत गया।

लाल बालोंवाले को यकीन नहीं आ रहा था कि किस्मत पलट गयी है।

"पूरी रकम।" उसने फिर कहा।

सात बार लगातार उसने यही कहा और हर बार वह हारा।

थाल रुपयों से भर चुका था। जुआरी खामोश बैठे थे। सिर्फ उनकी आंखों की चमक से उस आग का पता लग रहा था, जो उनके भीतर सुलग रही थी और उन्हें जलाये डाल रही थी।

लाल बालोंवाला चिल्लाया : "अगर शैतान ही तुम्हारी मदद कर रहा है तो दूसरी बात है, वर्ना तुम हर बार नहीं जीत सकते। कभी तो तुम हारोगे ही। यहां थाल पर तुम्हारे सोलह सौ तंके हैं। लगाओगे एक बार फिर पूरी रकम ? कल मैं अपनी दूकान के लिए इस रकम से माल खरीदने वाला था। लो तुम्हारी रकम के मुकाबले में इसे भी दांव पर लगाता हूं !"

सोने के सिक्कों—तिल्ले, रुपयों और तूमानों—से भरी एक छोटी सी थैली उसने निकाली।

उतावली भरी आवाज में खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया—"अपना सोना इस थाल में उंडेल !"

इस चायखाने में ऐसे भारी दांव कभी नहीं देखे गये थे। मालिक उबलती हुई केतलियों को भूल गया। जुआरियों की सांसे लम्बी चलने लगीं। लाल बालोंवाले ने पांसे फेंके और आंखें बन्द कर लीं। पांसे देखने में उसे डर लग रहा था।

"ग्यारह !"—सब एक साथ चिल्ला उठे। खोजा नसरुद्दीन अपने को करीब-करीब हारा हुआ समझने लगा। अब सिर्फ दो छक्के, यानी बारह काने, ही उसे बचा सकते थे।

अपनी खुशी को छिपाये बिना लाल बालोंवाला जुआरी भी दोहराने लगा: "ग्यारह ! ग्यारह काने ! देखो भई, मेरे ग्यारह हैं ! हार गये तुम ! हार गये ! हार गये !"

खोजा नसरुद्दीन का सारा बदन जैसे ठंडा पड़ गया हो। उसने पांसे उठाये और उन्हें फेंकने की तैयारी करने लगा। फिर यकायक उसने अपना हाथ रोक लिया।

"इधर पलट !" वह अपने गधे से बोला। "तू तीन काने पर हार गया था। ले, अब ग्यारह काने पर जीतने की कोशिश कर, नहीं तो मैं तुझे फौरन कसाई के यहां ले चलूंगा।"

बायें हाथ से गधे की दुम पकड़कर पांसे लिए हुए ही उसने दाहिने हाथ से गधे को ठोंका।

लोगों की जोर की आवाजों से चायखाना हिल गया। मालिक कलेजा थामकर बैठ गया। यह तनाव उसकी बरदाश्त के बाहर था।

... ये लो ... एक ... दो ...

पांसों पर दो छक्के थे।

लाल बालोंवाले जुआरी की आंखें मानो बाहर निकल पड़ीं। उसके सूखे सफेद चेहरे पर कांच-सी जड़ी रह गयी। धीरे से वह उठा और रोता, डगमगाता हुआ, चला गया: "हाय री किस्मत ! हाय कम्बख्ती !"

कहते हैं कि उस दिन के बाद लाल बालोंवाला फिर कभी शहर में नहीं दिखायी दिया। भागकर वह रेगिस्तान चला गया और वहां बाल बढ़ाये हुए और देखने में बदनुमा वह रेत और कंटीली झाड़ियों के बीच लगातार चिल्लाता रहता—"हाय कम्बख्ती ! हाय री किस्मत !" आखिर सियारों ने उसका काम तमाम कर दिया। किसी ने उसके लिए अफसोस नहीं किया, क्योंकि वह बहुत बेरहम था और इंसाफ की बात तक नहीं करता था। सीधे-सादे और आसानी से यकीन कर लेनेवाले लोगों को उसने बहुत नुकसान पहुंचाया था।

रही खोजा नसरुद्दीन की बात, सो उसने जीती हुई दौलत को जीन से लगे थैलों में भरा, गधे को गले लगाया, उसका मुंह चूमा और उसी वक्त पकाये बढ़िया मालपुए उसे खिलाये। उस होशियार जानवर को भी अचम्भा था। अभी चन्द मिनट पहले ही उसके साथ बिलकुल दूसरा सलूक हुआ था।

: ६ :

दानिशमन्दी से भरे इस उसूल को याद कर कि, उन लोगों से दूर रहना चाहिए जो यह जानते हैं कि तुम्हारा रुपया कहां रखा है, खोजा नसरुद्दीन उस चायखाने पर नहीं रुका और फौरन बाजार की ओर बढ़ गया। बीच-बीच में मुड़कर वह देखता जाता था कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा, क्योंकि जुआरियों और चायखाने के मालिक के चेहरों पर उसे भलेमनसाहत नहीं दिखायी दी थी।

उसका सफर बहुत खुशगवार था। अब वह एक नहीं तीन-तीन कारखाने खरीद सकता था। यही करना उसने तय भी किया।

"मैं चार दूकानें खरीदूंगा। एक कुम्हार की, एक जीनसाज की, एक दरजी की और एक मोची की। हर दूकान में मैं दो-दो कारीगर रखूंगा। मेरा काम सिर्फ रुपया वसूल करना होगा। दो साल में मैं रईस बन जाऊंगा। फिर तो ऐसा मकान खरीदूंगा, जिसके बाग में फव्वारे हों। हर जगह सोने के पिंजरे लगाऊंगा, जिनमें गानेवाली चिड़ियां रहेंगी और दो ... शायद तीन भी ... बीवियां रखूंगा और हर बीवी से मेरे तीन बेटे होंगे।"

ऐसे ही खुशनुमा खयालों की नदी में डूबता-उतराता वह गधे पर बैठा चला जा रहा था कि गधे ने लगाम ढीली पायी और मालिक के खयालों में खोये रहने का फायदा उठाया। वह एक छोटे पुल के पास पहुंचा ही था कि दूसरे गधों की तरह सीधे पुल पर चलने के बजाय, वह एक तरफ को थोड़ा मुड़ा और दौड़कर खाई के पार छलांग लगायी।

"... और जब मेरे बेटे बड़े हो जायंगे, तो मैं उन्हें एक साथ बुलाकर उनसे कहूंगा..." खोजा नसरुद्दीन के खयाल ऐसे ही दौड़ रहे थे कि यकायक सोचने लगा—"मैं हवा में क्यों उड़ रहा हूं? क्या अल्लाह ने मुझे फरिश्ता बनाकर मेरे पर लगा दिये हैं?"

अगले मिनट ही उसे इतने तारे दिखायी दिये कि वह समझ गया कि उसके एक भी पर नहीं है। गुलेल के ढेले की तरह, जीन से कोई दस हाथ आगे, वह सड़क पर जा गिरा।

धूल से भरा, कराहता हुआ जब वह उठा तो गधा दोस्ताना ढंग से कान खड़े किये उसके पास आ खड़ा हुआ। चेहरे पर उसके मासूमियत थी। लगता था मानो वह मालिक को फिर से जीन पर बैठने की दावत दे रहा हो।

गुस्से से कांपती आवाज में खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया, "अरे तू ! तुझे मेरे ही नहीं, मेरे बापदादों के गुनाहों की भी सजा के एवज में भेजा गया है ! इसलामी इन्साफ के मुताबिक किसी भी इंसान को उसके सिर्फ अपने गुनाहों के लिए इतनी सख्त सजा नहीं मिल सकती ! अबे झींगुर और लकड़बग्घे की औलाद ! अरे..."

लेकिन एक अधटूटी दीवाल के साये में थोड़ी दूर पर बैठे कुछ लोगों की भीड़ को देखकर वह एकदम चुप हो गया ।

गालियां खोजा नसरुद्दीन के होठों में ही रह गयीं । उसे खयाल आया कि जो भी ऐसी मजाकिया और बेइज्जती की हालत में पड़ा हो और लोग उसे देख रहे हों तो अपनी परेशानी पर सबसे ज्यादा जोर से उसे खुद हंसना चाहिए । उन बैठे हुए आदमियों के गिरोह की ओर आंख मारकर अपने सफेद दांत दिखाते हुए वह हंसने लगा ।

"अहा ! मैंने कितनी बढ़िया उड़ान भरी !" हंसी भरी आवाज में वह जोर से बोला : "बताओ न मुझे, मैंने कितनी कलाबाजियां खायीं ? भई, खुद मुझे तो गिनने का वक्त मिला नहीं । अरे शैतान !" गधे को हंसी से थपथपाते हुए वह कहने लगा, हालांकि उसकी तबियत कर रही थी कि जी भरकर उसकी मरम्मत करे, "इसे ऐसी ही शरारतें सूझती हैं ! जानवर ही यह ऐसा है ! मेरी नजर दूसरी तरफ घूमी नहीं कि इसे कोई न कोई शरारत सूझी !"

खोजा नसरुद्दीन फिर खुशगवार हंसी हंसने लगा । लेकिन उसे बड़ा ताज्जुब हुआ जब कोई भी उसकी हंसी में शामिल नहीं हुआ । सिर झुकाये, गमगीन चेहरे लिए, वे लोग खामोश बैठे रहे । उनकी औरतें, जिनकी गोदों में बच्चे थे, चुपचाप रोती रहीं ।

"जरूर कुछ गड़बड़ है ।" खोजा नसरुद्दीन ने सोचा ।

वह उन लोगों के पास गया और सफेद बालों और सूखे चेहरेवाले एक बूढ़े से पूछा :

"बुजुर्गवार ! बताइये न कि हुआ क्या है ? ऐसा क्यों है कि न मुझे मुसकान दिखायी देती है, न हंसी सुनायी पड़ती है ? ये औरतें क्यों रो रही हैं ? इस गरमी और धूल में आप सड़क के किनारे क्यों बैठे हैं ? क्या यह बेहतर न होता कि आप लोग घरों की ठंडी छांह में आराम करते ?"

"घरों में बैठना उनके लिए बेहतर है, जिनके पास घर हों ।" बूढ़े ने रंज भरे लहजे में कहा । "ऐ मुसाफिर ! मुझ से सवाल न कर । हमारी तकलीफ बहुत ज्यादा है और तू किसी भी तरह हमारी मदद नहीं कर सकता ।

रही मेरी बात, सो मैं बूढ़ा हूं और खुदा से दुआ मांगता हूं कि मुझे जल्द ही उठा ले।"

"आप ऐसी बातें क्यों करते हैं?" झिड़कते हुए खोजा नसरुद्दीन ने कहा। "मर्दों को इस तरह नहीं सोचना चाहिए। अपनी परेशानी मुझे बताइए। गरीबों जैसी मेरी शक्ल पर न जाइए। कौन जाने, शायद मैं आपकी कुछ मदद कर सकूं।"

"मेरी कहानी बहुत छोटी है। अभी सिर्फ एक घंटे पहले सूदखोर जाफर यहां के अमीर के दो सिपाही लेकर हमारी गली से गुजरा। मुझ पर उसका कर्ज है। अदायगी की आखिरी तारीख कल है। सो उन्होंने मुझे उस घर से ही निकाल दिया, जहां मेरी सारी उम्र गुजरी है। कोई मेरा खानदान नहीं है। कोई घर नहीं, जहां मैं सिर छिपा सकूं...। और मेरी सारी जायदाद—मेरा घर, बगीचा, ढोरे-डांगर, अंगूर की बेलें, सबकुछ वह कल बेच देगा।"

बूढ़े की आंखें आसुओं से तर हो गयीं। उसकी आवाज कांपने लगी।

"क्या आप पर बहुत कर्ज है?" खोजा नसरुद्दीन ने पूछा।

"बहुत ज्यादा! ऐ मुसाफिर, मुझे उसको ढाई सौ तंके देने हैं।"

"ढाई सौ तंके!!" नसरुद्दीन के मुंह से निकाला। "ढाई सौ तंकों की मामूली रकम के लिए भी भला कोई इंसान मरना चाहता है? बस-बस! आप ज्यादा अफसोस न करें," कहकर वह गधे की तरफ पलटा और जीन से कसे थैले को खोलने लगा। "बस, मेरे बुजुर्ग दोस्त! लो! ये रहे ढाई सौ तंके। आप उस सूदखोर को ये वापस कर दीजिए, फिर लात मारकर उसे घर से निकाल दीजिए और जिन्दगी के बाकी दिन चैन से काटिए।"

चांदी के सिक्कों की खनखनाहट सुनकर उस पूरे झुण्ड में जैसे जान आ गयी हो। बूढ़ा हक्का-बक्का, आंसू भरे, खोजा नसरुद्दीन की तरफ अहसान भरी आंखों से देखता रह गया।

"देखा आपने? तिस पर भी आप अपनी परेशानी मुझे नहीं बता रहे थे," आखिरी सिक्का गिनते हुए खोजा नसरुद्दीन ने कहा। वह सोचता जा रहा था, "कोई हर्ज नहीं! न सही आठ कारीगर, सात को ही नौकर रखूंगा। तब भी बहुत काफी होंगे।"

यकायक बूढ़े की बगल में बैठी एक औरत खोजा नसरुद्दीन के पैरों पर गिर पड़ी। जोर-जोर से रोते हुए उसने अपना बच्चा उसकी तरफ बढ़ा दिया।

"देखिए, यह बीमार है।" सुबकियां भरती हुई वह बोली। "इसके होंठ सूख रहे हैं, चेहरा जल रहा है। बेचारा नन्हा-सा बच्चा सड़क पर ही मर जायगा! हाय, मैं भी अपने घर से निकाल दी गयी हूं।"

खोजा नसरुद्दीन ने बच्चे के पतले सूखे चेहरे को देखा। उसके पतले हाथ देखे जिनमें होकर रोशनी गुजर रही थी। फिर उसने बैठे हुए लोगों के चेहरों को देखा। दुख की लकीरों और झुर्रियों से भरे चेहरों, और लगातार रोने की वजह से धुंधली हुई आंखों को देखकर उसे लगा जैसे किसी ने उसकी छाती में गर्म छुरा भोंक दिया हो। यकायक उसका गला भर आया। रहम और गुस्से से उसका चेहरा तमतमा उठा। वह दूसरी तरफ देखने लगा।

"मैं बेवा हूं।" औरत कह रही थी। "मेरा शौहर छः महीने पहले मर गया। सूदखोरों के दो सौ तंके उसे देने थे। कानूनन वह कर्ज अब मुझे चुकाना है।"

"वाकई, बच्चा बीमार है।" नसरुद्दीन बोला। "लो ये रहे दो सौ तंके। जल्दी घर जाओ और बच्चे के सिर पर ठंडी पट्टी रखो। और सुनो—ये पचास तंके और लेती जाओ। जाकर, किसी हकीम को बुलाओ और इसे कोई दवा दिलवाओ!"

"छः कारीगरों से भी मैं बखूबी काम चला लूंगा।" मन ही मन उसने सोचा।

तभी एक भारी-भरकम संगतराश उसके पैरों पर आ गिरा। अगले ही दिन उसका पूरा खानदान गुलामों की तरह बेचा जानेवाला था। जाफर के चार सौ तंके उसे भी देने थे।

"चलो, पांच कारीगर ही सही।" एक बार फिर अपना थैला खोलते हुए खोजा नसरुद्दीन ने सोचा। जैसे ही वह थैले का मुंह बांध चुका, दो और औरतें उसके सामने घुटनों के बल आ गिरीं। उनकी कहानी भी इतनी दर्दनाक थी कि खोजा नसरुद्दीन सूदखोर का कर्जा चुकाने के लिए उन्हें भी काफी रकम देने में नहीं हिचका। और अब, यह देखकर कि जो रकम उसके पास बची है वह मुश्किल से तीन कारीगरों लायक ही होगी, उसने तय किया कि अब कारखानों के बारे में परेशान होना बेकार है। पूरी फैयाजी के साथ अपनी दौलत उसने सूदखोर जाफर के कर्जदारों में बांटने की ठान ली।

उसके पास थैले में अब बचे थे कुल पांच सौ तंके। तभी खोजा नसरुद्दीन की नजर एक आदमी पर पड़ी जो अकेला बैठा था। उसने मदद नहीं मांगी थी, लेकिन उसके चेहरे से परेशानी और तकलीफ झलक रही थी।

खोजा नसरुद्दीन जोर से बोला: "अरे सुनो भाई! अगर आप पर सूदखोर का कर्ज नहीं है, तो आप यहां क्यों बैठे हैं?"

"है! कर्ज मुझ पर भी है!" भर्राये गले से वह बोला! "जंजीरों में जकड़ा कल ही मैं गुलामों के बाजार में बिकने जाऊंगा।"

"लेकिन आप खामोश क्यों रहे?"

"ऐ सखी और मेहरबान मुसाफिर ! मैं जानता नहीं कि तुम कौन हो। हो सकता है कि तुम फकीर बहाउद्दीन हो जो गरीबों की मदद करने के लिए अपनी कब्र से उठ आये हो, या शायद हारुनर-रशीद हो। मैंने तुम से मदद नहीं मांगी क्योंकि तुम काफी खर्च कर चुके हो और मेरा कर्ज सबसे भारी है—पांच सौ तंके। मुझे डर था कि अगर तुमने मुझे रकम दे दी तो कहीं इन बुजुर्ग और इन औरतों की मदद के लिए तुम्हारे पास काफी रकम न बचे।"

"आप बड़े भलेमानुस हैं।" दया से भरकर खोजा नसरुद्दीन बोला। "पर मैं भी मामूली भलामानुस नहीं हूं। मेरे भी जमीर है और मैं कसम खाता हूं कि आप कल गुलामों के बाजार में नहीं बिकेंगे। फैलाइये अपना दामन।"

और उसके दामन में अपने थैले का आखिरी सिक्का तक उसने उंडेल दिया। खलअत का दामन बायें हाथ से पकड़, दाहिने हाथ से उस आदमी ने खोजा नसरुद्दीन को गले लगाया, फिर आंसुओं से भरा अपना चेहरा उसके सीने पर रख दिया।

यकायक जोर से हंसता हुआ लम्बी दाढ़ीवाला भारी-भरकम संगतराश बोला: "सचमुच ही आप गधे से बड़े मजे से उछले।" फिर तो सभी हंसने लगे; मर्द भारी मोटी आवाज में, औरतें महीन तेज आवाज में। और बच्चे मुसकरा कर अपने हाथ खोजा नसरुद्दीन की तरफ बढ़ाने लगे—जो खुद सबसे ज्यादा जोर से हंस रहा था।

"हो हो हो हो ! हा हा हा हा !" वह खुशी से दोहरा होता हुआ हंस रहा था। "आप नहीं जानते कि यह गधा है किस किस्म का ! यह बड़ा पाजी गधा है।"

"नहीं, नहीं, अपने गधे के बारे में ऐसा न कहिए।" बीमार बच्चेवाली औरत बोली। "यह दुनिया का सबसे बेशकीमत, होशियार और भला गधा है। इसकी तरह का न कोई गधा हुआ है और न होगा। मैं इससे ज्यादा और कुछ भी पसन्द न करूंगी कि जिन्दगी भर इस गधे की सेवा-टहल करती रहूं; खाने के लिए इसे सबसे बढ़िया अनाज दूं, इसके खुरेरा करूं और इसकी दुम पर कंघी करूं—क्योंकि ऐसा बेमिसाल गधा, गुलाब की तरह जिसमें भलाइयों के सिवा और कुछ भी नहीं है, खाई पार करने में अगर उछला न होता और जीन पर से तुम्हें फेंक न दिया होता तो, ए मुसाफिर, तुम जो हमारे लिए अंधेरे में सूरज बनकर आये हो, वह बिना हमारी तरफ ताके चुपचाप सामने से गुजर जाते और तुम्हें रोकने की हिम्मत हममें से किसी को न होती।"

"ठीक कहती है यह !" बड़ी अहमियत के लहजे में बूढ़ा बोला। "हम सब अपना दुख दूर करने के लिए इस गधे के अहसानमन्द हैं। वाकई यह गधा दुनिया का जेवर है ! सब गधों में यह हीरे की तरह चमकता है।"

सबने जोरों से गधे की तारीफ की। उसे भुना हुआ गल्ला, सूखे आड़ू, खूबानी और पूड़ियां खिलाने में सब एक दूसरे से बाजी लेने लगे। परेशान करनेवाली मक्खियों पर गधे ने दुम फटकारी और बहुत अदब और गम्भीरता से सब की भेंट कुबूल की—हालांकि उसकी एक आंख कुछ परेशानी लिये हुए उस चाबुक पर भी गड़ी थी जो खोजा नसरुद्दीन चुपके से उसे दिखाता हुआ हिला रहा था।

दिन डूबने वाला था। साये लम्बे हो रहे थे। लाल पैरोंवाले सारस पर फड़फड़ाते हुए और कैं-कैं करते हुए शोर मचाते अपने घोंसलों को लौट रहे थे, जहां उनके बच्चे लालच से खुली चोंचें आगे बढ़ाये उनका इंतजार कर रहे थे।

खोजा नसरुद्दीन ने उन लोगों से जाने की इजाजत ली। सबने झुककर शुक्रिया अदा किया।

"आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। आपने हमारी मुसीबतें समझीं।"

"कैसे न समझता मैं?" उसने जवाब दिया! "आज ही मेरे चार कारखाने छिन गये हैं, जिनमें आठ-आठ होशियार कारीगर मेरे लिए काम करते थे; एक मकान छिन गया जिसके बाग में फव्वारे लगे थे और पेड़ों से लटकते सोने के पिंजरों में चिड़ियां गाती थीं। कैसे न मैं आपकी मुसीबतें समझता?"

तब अपने पोपले मुंह से बूढ़े ने बुदबुदाकर कहा:

"ऐ मुसाफिर! शुक्रिया के तौर पर भेंट देने के लिए मेरे पास कुछ है नहीं। जब मैंने अपना घर छोड़ा, तो मैं सिर्फ एक चीज अपने साथ लाया था। यह है कुरआन शरीफ। इसे तुम ले लो और खुदा करे इस दुनिया में यह तुम्हें रास्ता दिखानेवाली रोशनी बने।"

खोजा नसरुद्दीन के लिए मजहबी किताबें बेकार थीं। पर बूढ़े के दिल को ठेस न पहुंचाने की गरज से उसने किताब लेली, उसे जीन से लगे थैले में डाला और कूदकर गधे पर सवार हो गया।

"तुम्हारा नाम? तुम्हारा नाम क्या है?" बाकी लोगों ने एक साथ पूछा। "अपना नाम तो बताते जाओ, ताकि हमें मालूम रहे कि इबादत में किसके लिए दुवा मांगें।"

"आप लोगों को मेरा नाम जानने की क्या जरूरत? सच्ची नेकी को शोहरत की जरूरत नहीं। रहा दुवा मांगने का सवाल, सो अल्लाह के बहुत से फरिश्ते हैं जो उसे नेक कामों की खबर देते हैं। फरिश्ते अगर काहिल और लापरवाह हुए और नर्म बादलों में सोते रहे और इस दुनिया के पाक और नापाक कामों का हिसाब न रखा तो आपकी इबादत का कोई असर नहीं होगा, क्योंकि बिना ईमानवाले लोगों से बात पक्की कराये, सब की बातों पर यकीन करना अल्लाह के लिए बेवकूफी ही होगी..."

वह यह कह ही रहा था कि एक औरत यकायक मुंह फाड़कर कुछ कहती-कहती रुक गयी। ऐसा ही दूसरी औरत ने भी किया। बूढ़ा चौंका और खोजा नसरुद्दीन की तरफ घूरने लगा। लेकिन खोजा नसरुद्दीन को जाने की जल्दी थी और उसने इस बात पर ध्यान न दिया।

"अलविदा ! खुदा करे तुम अमन चैन से रहो।"

यह दुवा मिल ही रही थी कि खोजा नसरुद्दीन सड़क के मोड़ पर गायब हो गया।

सब लोग खामोश रहे। उनकी आंखों में एक ही खयाल चमक रहा था। आखिर बूढ़े ने खामोशी तोड़ी। उसने असरदार और गंभीर आवाज में कहा:

"सारी दुनिया में सिर्फ एक ही आदमी ऐसा है जो यह काम कर सकता था। सच, दुनिया में सिर्फ एक ही इंसान ऐसा है जो इस तरह की बात कह सकता था। सिर्फ एक ही इंसान सारी दुनिया में ऐसा है जिसकी रूह की रोशनी और गर्मी से गरीब और सताये हुए लोगों को राहत मिलती है। और वह इंसान है हमारा ..."

"खबरदार ! ज़ुबान बन्द करो !" दूसरे आदमी ने उसे फौरन टोका। "क्या तुम भूल गये कि दीवारों के भी कान होते हैं, पत्थरों के भी आंखें होती हैं और सैकड़ों कुत्ते सूंघते-सूंघते उसे तलाश कर सकते हैं ?"

"सच कहते हो तुम," तीसरे ने कहा, "हमें अपना मुंह बन्द रखना चाहिए, क्योंकि यह वक्त तो ऐसा है मानो वह तलवार की धार पर चल रहा हो। जरा-सा भी धक्का उसके लिए खतरनाक बन सकता है।"

बीमार बच्चेवाली औरत बोली — "भले ही लोग मेरी ज़ुबान खींच लें, लेकिन मैं उसका नाम नहीं लूंगी।"

"मैं भी खामोश रहूंगी।" दूसरी औरत बोली। "मैं चाहे मर जाऊं, लेकिन ऐसी गलती न करूंगी जिससे उसके गले के रस्से का फन्दा पड़े।"

सब इसी तरह कहते रहे, सिवा संगतराश के जो कुछ कुन्दजहन था। उसकी समझ में न आ रहा था कि मुसाफिर अगर कसाई या बैल का उबला गोश्त बेचनेवाला नहीं है तो क्योंकर कुत्ते उसकी सूंघ-तलाश कर लेंगे। फिर, मुसाफिर अगर रस्से पर चलनेवाला नट है, तो उसका नाम जोर से लेने में क्या हरज था ? वह औरत उस नेक शख्स के पेशे के लिए जरूरी रस्सा देने के बजाय आखिर मरने को क्यों तैयार है ? संगतराश एकदम चक्कर में था। उसने जोर से नथुने फटकारे, गहरी सांस भरी और तय किया कि इस मामले में अब वह और ज्यादा न सोचेगा, ताकि कहीं पागल न हो जाय।

खोजा नसरुद्दीन इस बीच काफी सफर तय कर चुका था, तो भी उसकी आंखों के सामने अब भी उन गरीबों के सूखे-मुरझाये चेहरे ही नाच रहे थे। उस

बीमार बच्चे की, उसके सूखे होंठों और तमतमाये गालों की उसे बार-बार याद हो आती थी। उसकी आंखों के सामने सफेद बालोंवाले उस बूढ़े की तसवीर नाच गयी जो अपने घर से निकाल दिया गया था, और उसका दिल गुस्से से भर उठा।

अब वह जीन पर ज्यादा देर न बैठ सका। कूदकर वह नीचे आ गया और गधे के साथ-साथ चलता ठोकर से रास्ते के पत्थरों को हटाने लगा।

"ठहर, सूदखोरों के सरदार! ठहर, तुझे देखूंगा!" वह बड़बड़ा रहा था और एक शैतानी चमक उसकी काली आंखों में समायी हुई थी। "एक न एक दिन मेरी तेरी मुलाकात होगी ही और तब तेरी शामत आयेगी। और तू अमीर! तू, कांप और थर्रा, क्योंकि मैं, खोजा नसरुद्दीन, बुखारा में आ पहुंचा हूं! मक्कार और शैतान जोंको! तुमने दुखी अवाम का खून चूसा है। लालची लकड़बग्घो! घिनौने गीदड़ो! हमेशा तुम्हारी दाल नहीं गलेगी! न ही अवाम पर हमेशा मुसीबत बरपा होगी! और तू, सूदखोर जाफर! मेरे नाम पर लानत बरसे, अगर मैंने तुझसे उस सारे गम और मुसीबत का हिसाब न चुकता किया जो तू गरीबों पर लादता रहा है।"

: ७ :

जिन्दगी में जिसने बहुत कुछ देखा और किया था, उस खोजा नसरुद्दीन के लिए भी, अपने वतन में वापसी का पहला दिन बहुत से वाकओं और बेचैनी से भरा साबित हुआ। वह बहुत थका हुआ था और चाहता था कि कोई अलग जगह मिल जाय, जहां आराम कर सके।

"नहीं," एक तालाब के किनारे बहुत से लोगों की भीड़ देखकर, लम्बी सांस भरता हुआ वह बोला, "लगता है आज मुझे आराम का मौका नहीं मिलेगा! जरूर यहां कुछ गड़बड़ है।"

तालाब सड़क से कुछ दूरी पर था। खोजा नसरुद्दीन सीधा अपनी राह पर जा सकता था। लेकिन वह उन लोगों में नहीं था जो किसी भी झगड़े-फिसाद या लड़ाई में कूदने का मौका हाथ से निकल जाने देते हैं।

इतने सालों से साथ होने की वजह से मालिक के तौर-तरीकों से बखूबी वाकिफ गधा अपने-आप ही तालाब की तरफ मुड़ गया।

खचाखच भीड़ के बीच गधा घुसेड़ते हुए खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया — "क्या बात है, भाइयो? क्या यहां किसी का कत्ल हो गया है? कोई लुट गया है क्या? जगह खाली करो! अलग हटो!"

भीड़ में जगह बनाते हुए उस तालाब के बिलकुल किनारे पहुंचकर, जो काई और चिकनी मिट्टी से ढंक रहा था, खोजा ने एक अजीब नजारा देखा।

किनारे से कुछ दूर तालाब में एक आदमी डूब रहा था। बीच-बीच में वह पानी की सतह पर आता, मगर फिर डूब जाता। पानी में बुलबुले उठ रहे थे।

कई लोग किनारे खड़े हड़बड़ी मचा रहे थे और डूबते हुए आदमी के कपड़े पकड़कर बाहर खींच लेने के लिए बार-बार हाथ बढ़ा रहे थे। लेकिन, वह पहुंच से जरा बाहर था।

"हाथ बढ़ाओ! इधर! यहां! अपना हाथ दो!" वे चिल्ला रहे थे।

लग रहा था कि डूबता हुआ आदमी इन लोगों की बातें सुन नहीं रहा; वह एक बार पानी के ऊपर आता और फिर डूब जाता। जैसे ही वह डूबता, तालाब में हलकी लहरें उठतीं और किनारे से हौले से टकरातीं।

यह नजारा देखता हुआ खोजा नसरुद्दीन सोचने लगा, "अजीब बात है। बड़ी ही अजीब बात है! क्या वजह हो सकती है इसकी? क्यों वह अपना हाथ नहीं बढ़ाता? हो सकता है वह कोई होशियार गोताखोर हो और कोई शर्त लगाकर गोते लगा रहा हो! लेकिन यह बात है, तो वह अपनी खलअत क्यों पहने हुए है?"

वह इन खयालों में डूब गया। इस बीच वह डूबनेवाला आदमी कम से कम चार बार पानी की सतह पर आया और हर बार डूब गया। पानी के भीतर रहने का वक्त हर बार पहले से ज्यादा था।

"बड़ी अजीब बात है।" गधे से उतरते हुए खोजा नसरुद्दीन ने फिर दोहराया। "तू यहीं ठहर," अपने गधे से वह बोला, "मैं जाकर जरा नजदीक से देखूं तो कि बात क्या है।"

डूबता हुआ आदमी तब तक फिर पानी के भीतर पहुंच चुका था। इस बार वह इतनी देर तक पानी में रहा कि किनारे पर खड़े लोग उसे मरा हुआ समझकर उसके लिए दुवा मांगने लगे।

यकायक वह फिर दिखाई दिया।

"यहां! इधर!" लोग चिल्लाये। "अपना हाथ दो हमें, हाथ" और उन लोगों ने उसकी ओर अपने हाथ बढ़ाये। पर वह उनकी ओर सूनी आंखों से देखता रहा और फिर चुपचाप पानी के भीतर समा गया।

"अरे बेवकूफो!" खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया! "उसके रेशमी साफे और कीमती खलअत को देखकर तुम्हें समझ लेना चाहिए कि वह कोई मुल्ला या अफसर है! मुल्लों और अफसरों के तौर-तरीकों से क्या तुम लोग इतने भी वाकिफ नहीं कि जान सको कि उन्हें किस तरह पानी से निकालना चाहिए?"

भीड़ में से आवाजें उठीं—"तुम तरकीब जानते हो तो निकालो उसे बाहर। और हां, जरा जल्दी करो। जाओ, उसे बचाओ! वह पानी के ऊपर आ गया है! जाओ उसे बाहर खींच लो!"

"ठहरो !" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया, "मैंने अपनी तकरीर अभी खत्म नहीं की है। मैं पूछता हूं : तुमने कब किसी मुल्ला या अफसर को किसी को कुछ देते देखा है ? अरे जाहिलो ! याद रखो कि मुल्ला या अफसर कभी कोई चीज देते नहीं हैं, सिर्फ लेते हैं। उनको बचाने के लिए साइंस के उसूलों पर चलना चाहिए। मतलब यह कि उन लोगों की अजब तबियत का खयाल करके ही उन्हें बचाने की कोशिश करनी चाहिए। अच्छा, अब मुझे देखो !"

"अरे अब तक तो बहुत देर हो चुकी है," भीड़ से आवाजें आयीं, "वह अब फिर पानी के ऊपर नहीं आयेगा।"

"क्या तुम समझते हो कि पानी की रूहें इतनी आसानी से मुल्ला या अफसर को कुबूल कर लेंगी ? तुम गलती पर हो। पानी की रूहें उससे बचने की पूरी कोशिश करेंगी।"

खोजा नसरुद्दीन बैठ गया और इतमीनान से इन्तजार करने लगा। वह तालाब के तले से उठते बुलबुलों को हलकी हवा से किनारे की ओर तैरते देखता रहा।

आखिरकार पानी की गहराइयों से गहरे रंग की एक शक्ल धीरे-धीरे बाहर आयी। डूबता आदमी फिर पानी की सतह पर दिखायी दिया। अगर खोजा नसरुद्दीन वहां न होता तो वह आखिरी बार ऊपर आया होता।

"यहां ! यह लीजिए ! यह लीजिए !" खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया।

डूबते आदमी ने अकड़ के साथ उस आगे बढ़े हाथ को थाम लिया। उसकी पकड़ के दर्द से खोजा नसरुद्दीन कराह उठा।

उस आदमी के जबरदस्त चंगुल से छूटने और उसकी उंगलियों को खोलने में बहुत देर लगी।

कुछ देर वह बिना हिले-डुले चुपचाप पड़ा रहा। घास, काई, चिकनी बदबूदार मिट्टी उस पर पुती हुई थी और उसका चेहरा छिप गया था। उसके मुंह और नाक-कानों से पानी निकल रहा था।

"मेरा बटुआ ! हाय, मेरा बटुआ ! अरे, मेरा बटुआ कहां है ?" वह कराहा। तब तक उसने चैन न ली, जब तक कमर में खुसा बटुआ उसने टटोल न लिया। फिर धीरे-धीरे उसने घास हटायी और खलअत के दामन से अपना मुंह पोंछा। खोजा नसरुद्दीन झटके से पीछे हट गया। टूटी चपटी नाक; चौड़े नथुने; एक फूटी आंख—इस आदमी का चेहरा बहुत बदनुमा था। आदमी कुबड़ा भी था।

अपनी एक आंख से भीड़ को देखते हुए खरखराती आवाज में उसने पूछा : "मुझे बचानेवाला कौन है ?"

"यह रहा तुम्हें बचानेवाला।" भीड़ ने चिल्लाकर खोजा नसरुद्दीन को आगे ठेलते हुए कहा।

"इधर आओ। मैं तुम्हें इनाम दूंगा।" पानी से पिचपिचाते बटुए में हाथ डालकर उसने मुट्ठी भर चांदी के गीले सिक्के निकाले। "मुझे बाहर खींच लेने में कोई गैरमालूली या अजीब बात नहीं हुई। मैं तो आप ही निकल आता, फिर भी ..." शिकायत के लहजे में वह बोला।

वह बोल ही रहा था कि कमजोरी या किसी और वजह से उसका हाथ धीरे से खुल गया और सिक्के उसकी उंगलियों के बीच से खनखनाते हुए फिर बटुए में पहुंच गये। बस, उसके हाथ में सिर्फ एक सिक्का बचा—आधे तंके का सिक्का। लम्बी सांस भरते हुए उसने सिक्का खोजा नसरुद्दीन की ओर बढ़ा दिया।

"लो। रुपया लो और जाकर बाजार में एक प्याला पुलाव खरीद लो।"

"पुलाव का प्याला खरीदने को यह सिक्का काफी नहीं है।" खोजा नसरुद्दीन बोला।

"परवाह नहीं। बिना गोश्तवाला भात खरीद लेना।"

पास खड़े लोगों से खोजा नसरुद्दीन बोला—"देखा न तुम लोगों ने कि कैसे मैंने इसे साइंस के उसूलों से बचाया।"

और वह अपने गधे की तरफ बढ़ चला।

रास्ते में वह एक आदमी के पास रुका। यह आदमी लम्बा, दुबला, कड़ियल और चिड़चिड़ी शक्ल का था और उस पर दोस्ती की छाप नहीं दिखायी पड़ती थी। उसके हाथ और बाहें कोयले और कालिख से काले हो रहे थे। उसके हाथ में लुहार का हथौड़ा था।

"कहो, लुहार भाई! क्या बात है?" खोजा नसरुद्दीन ने पूछा।

बैर-भरी निगाहों से उसे ऊपर से नीचे तक घूरता हुआ लुहार बोला—"क्या तुम जानते हो कि तुमने किसे बचाया है? हां, और उस आखिरी वक्त बचाया है जिसके बाद फिर कोई उसे बचा नहीं सकता था? क्या तुम जानते हो तुमने जो कुछ किया है, उसकी वजह से कितने लोगों को कितने आंसू बहाने पड़ेंगे? क्या तुम जानते हो कितने लोगों को अपने घरों, खेतों और अंगूर के बागों से हाथ धोना पड़ेगा, कितने लोगों को गुलामों के बाजार में बिकना होगा और फिर वहां से खीवा की सड़क पकड़नी होगी?"

नसरुद्दीन उसकी ओर ताज्जुब से देखता रह गया।

"तुम्हारी बात मैं समझ नहीं पा रहा हूं, लुहार भाई! क्या यह किसी इंसान और मुसलमान को जेब देता है कि वह एक डूबते इंसान के पास से गुजर जाय और उसकी मदद के लिए हाथ न बढ़ाये?"

"तो तुम समझते हो कि सभी सांपों, लकड़बग्घों और जहरीले जानवरों को बचा लेना चाहिए ?" लुहार चिल्लाया। फिर यकायक कोई बात उसके दिमाग में चमकी, क्योंकि उसने पूछा : "क्या तुम यहीं के रहनेवाले हो ?"

"नहीं, मैं बहुत दूर से आया हूं।"

"तब तुम नहीं जानते कि जिस शख्स को तुमने बचाया है, वह बदी करनेवाला और खून चूसनेवाला इंसान है। बुखारा में रहनेवाला हर तीसरा शख्स उसकी वजह से कराहता और रोता है।"

एक बहुत खौफनाक खयाल खोजा नसरुद्दीन के दिमाग में कौंध गया।

"लुहार भाई ! मुझे उस शख्स का नाम तो बताओ।" उसने हकला कर पूछा, क्योंकि उसे डर था कि कहीं उसका अन्दाजा सही न निकले।

लुहार ने जवाब दिया : "तुमने सूदखोर जाफर को बचाया है। खुदा करे उसकी यह जिन्दगी और आकबत बिगड़े, उसकी चौदह पुश्तें जख्मों से सड़ें और उसके जख्मों में कीड़े पड़ें !"

"क्या कहा ?" नसरुद्दीन चिल्लाया। "तुम कह क्या रहे हो लुहार भाई ? हाय हाय, कम्बख्ती ! ओफ ! लानत है मुझ पर ! क्या मेरे ही इन दोनों हाथों ने उस सांप को पानी से बाहर निकाला है ? वाकई, इस गुनाह की तौबा नहीं ! हाय कम्बख्ती ! लानत है मुझ पर ! ओफ, क्या कयामत है !"

उसके गम का असर लुहार पर पड़ा और वह कुछ नर्म होकर बोला :

"सब्र करो मुसाफिर, अब कुछ नहीं हो सकता। तुम गधे पर सवार होकर उस वक्त उधर से गुजरे ही क्यों ? तुम्हारा गधा सड़क पर अड़ क्यों न गया ? रुक क्यों न गया ? तब तो सूदखोर को डूबने का पूरा-पूरा मौका मिल जाता।"

"यह गधा ?" खोजा नासरुद्दीन बोला, "अगर यह सड़क पर अड़ता भी है तो सिर्फ इसलिए कि जीन से लगे थैलों से रुपया निकल जाय। जब वे भरे होते हैं, तो इसके लिए बहुत भारी साबित होते हैं। लेकिन अगर सूदखोर को बचाकर अपने ऊपर लानत बुलाने की बात हो, तब तुम यकीन मानो, यह गधा मुझे वक्त से पहले ही वहां पहुंचा देगा।"

"हां, यह सही है," लुहार उसकी बात मानते हुए बोला, "पर जो हो चुका वह अब बदला नहीं जा सकता। कोई उस सूदखोर को फिर से तो पानी में धकेल नहीं सकता।"

खोजा नसरुद्दीन को जोश आ गया।

"मैंने बुरा काम किया। पर मैं उसे ठीक कर दूंगा। सुनो, लुहार भाई ! मैं कसम खता हूं कि मैं सूदखोर जाफर को डुबाकर दम लूंगा। मैं अपने वालिद की कसम खाता हूं। मैं उसे डुबा कर रहूंगा, हां ! और इसी तालाब में डुबा

ऊंगा ! लुहार भाई ! मेरा कौल याद रखना, क्योंकि मैंने कभी फिजूल बकवास नहीं की। सूदखोर को डूबना ही होगा ! और जब तुम बाजार में यह खबर सुनो, तो समझ लेना कि बुखारा अजीम के शहरियों का मैंने जो कसूर किया था, उसका मैंने बदला चुका दिया है !"

: ८ :

खोजा नसरुद्दीन बाजार पहुंचा तो शहर पर ठंडे, खुशबूदार कोहरे की तरह शफक छा रही थी।

चायखानों में खुशगवार आग जल रही थी और थोड़ी ही देर में पूरे बाजार में रोशनी होने लगी। अगले दिन बड़ा बाजार लगनेवाला था। एक-एक करके ऊंटों के काफिले आ रहे थे। काफिले अंधेरे में गायब हो जाते पर घंटियों की उदास, साफ, लयदार आवाज हवा में गूंजती रहती। जब यह गूंज दूर जाकर खत्म हो जाती, तो बाजार में आनेवाले दूसरे काफिले की घंटियां उदास टिनटिनाहट करने लगतीं।

यह सिलसिला बराबर जारी रहता, मानो खुद रात आवाज कर रही हो, कांप रही हो और धीरे-धीरे कराह रही हो—दुनिया के कोने-कोने से आयी आवाजों से भर रही हो। हिन्दुस्तान, ईरान, अरब, अफगानिस्तान और मिस्र से आयी, ये न दिखायी पड़नेवाली घंटियां, कोई ललक भरा गीत गाती लग रही थीं। खोजा नसरुद्दीन यह सब सुनता रहा। उसे लग रहा था कि वह हमेशा-हमेशा यह संगीत सुनता रह सकता है। पड़ोस के एक चायखाने से तंबूरे की आवाज आ रही थी और एक दुतारा मानो उसके जवाब में बज रहा था। कहीं कोई गवैया (जो दिखायी नहीं दे रहा था) अपनी तेज, साफ आवाज ऊंची करके सितारों तक पहुंचा रहा था। अपनी माशूका के बारे में वह गीत गा रहा था; उसकी बेवफाई की शिकायत कर रहा था।

इस गाने को सुनता हुआ खोजा नसरुद्दीन रात में सोने की जगह तलाश करने के लिए चल पड़ा।

एक चायखाने के मालिक से वह बोला: "मेरे पास अपने और अपने गधे के लिए कुल आधा तंका है।"

"आधे तंके में तुम यहां रात गुजार सकते हो, लेकिन तुम्हें कम्बल नहीं मिलेगा।" उसने जवाब दिया।

"तो मैं अपना गधा कहां बांधूं ?"

"तुम्हारे गधे के बारे में मैं क्यों सिरदर्द मोल लूं ?"

चायखाने में कहीं खूंटा नहीं था। ऊंचे फर्शवाली बरसाती से निकला एक कुंडा खोजा नसरुद्दीन को दिखाई दिया। यह देखे बिना कि यह कुंडा

किस चीज में लगा है, उसने गधे को बांध दिया। चायखाने में पहुंचते ही वह फौरन लेट गया, क्योंकि वह बहुत थका हुआ था।

उसे झपकी आ रही थी कि यकायक उसे अपना नाम सुनायी दिया। उसने आधी आंख खोली।

पास ही, बाजार में आये कुछ लोग घेरा बनाये चाय पी रहे थे। उनमें एक ऊंटवान था, एक चरवाहा और दो दस्तकार। कोई धीमी आवाज में कह रहा था :

"खोजा नसरुद्दीन के बारे में यह भी कहा जाता है। एक दिन जब वह बगदाद में था, तो बाजार के बीच होकर गुजर रहा था। एकाएक उसे एक सराय में शोर-गुल सुनायी दिया। तुम तो जानते ही हो, हमारा खोजा नसरुद्दीन ऐसी बातें जानने के लिए कितना उतावला रहता है! वह सराय के भीतर जा पहुंचा। वहां मोटा लाल मुंहवाला सराय का मालिक एक भिखमंगे की गरदन पकड़े उसे झकझोर रहा था। वह दाम मांग रहा था और फकीर देने से इनकार कर रहा था। 'यह शोरगुल क्यों हो रहा है?' खोजा नसरुद्दीन ने पूछा, 'तुम लोग क्यों झगड़ रहे हो?' सराय का मालिक जोर से बोला—'यह आवारा, यह कमीना, यह दगाबाज भिखमंगा, खुदा करे इसकी आंतों में कीड़े पड़ें, यह मेरी दूकान में घुस आया। अपनी खलअत के दामन से इसने रोटी का एक टुकड़ा निकाला और देर तक उसे वहीं अंगीठी के ऊपर किये खड़ा रहा जहां मैं बहुत रसीला सीख कबाब भून रहा था। यह तब तक वहां खड़ा रहा जब तक इसकी रोटी में भुने गोश्त की खुशबू न भर गयी और रोटी दुगनी मुलायम और जायकेदार न बन गयी। फिर यह रोटी को निगल गया। अब यह उसकी कीमत अदा करने से इनकार करता है। खुदा करे इसके दांत गिर जायें, इसकी खाल उधड़कर अलग जा गिरे!' 'क्या यह सच है?' खोजा नसरुद्दीन ने सख्ती से पूछा। भिखमंगे के मुंह से डर के मारे बात न निकली। खोजा नसरुद्दीन ने कहा—'तुम जानते हो कि दूसरे की चीज अदा किये बिना उसे इस्तेमाल कर लेना गलत है?' बहुत खुश होकर सराय का मालिक बोला 'सुना तूने बदमाश? तूने इस काबिल और बाइज्जत शख्स की बात सुनी?' खोजा नसरुद्दीन ने भिखारी से पूछा—'तुम्हारे पास पैसा है?' भिखमंगे ने अपनी जेब से आखिरी पैसे निकाले और उन्हें खोजा नसरुद्दीन के सिपुर्द कर दिया। सराय के मालिक ने अपना चर्बीदार पंजा पैसे लेने के लिए आगे बढ़ाया। खोजा नसरुद्दीन बोला—'ठहरिये हजरत! पहले अपना कान मेरे पास लाइए।' काफी देर तक वह सराय के मालिक के कानों के पास पैसे खनखनाता रहा। फिर उसने पैसे भिखारी को लौटाते हुए कहा—'सलामालेकुम, मेरे गरीब दोस्त! अब तुम जा सकते हो।' सराय का मालिक चिल्लाया—'क्या कहा? लेकिन

मुझे तो कीमत मिली नहीं !' खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया—'उसने पूरी कीमत चुका दी है। तुम लोगों का हिसाब साफ हो गया है। उसने तुम्हारा सीख कबाब सूंघा, तुमने उसके पैसों की खनखनाहट सुन ली।' "

सुननेवाले लोग जोर से हंस पड़े। उनमें से एक ने औरों को होशियार किया—"इतने जोर से नहीं। नहीं तो, लोग समझेंगे कि हम लोग खोजा नसरुद्दीन की बात कर रहे हैं।"

खोजा नसरुद्दीन चुपचाप मुस्कराता हुआ सोचने लगा: "इन्हें कैसे पता ? यह सच है कि यह बात बगदाद नहीं इस्ताम्बूल में हुई थी। तो भी, इन्हें खबर कैसे लगी ?"

तभी चरवाहे की पोशाक पहने और रंगीन साफा बांधे दूसरे आदमी ने, जो बदखशा का लग रहा था, धीमी आवाज में यह किस्सा सुनाना शुरू किया :

"लोग कहते हैं कि एक दिन खोजा नसरुद्दीन एक मुल्ला के बगीचे के पास से गुजर रहा था। मुल्ला एक बोरे में कद्दू भर रहा था। लालच ही लालच में उसने बोरा इतना भर लिया कि ढोने की कौन कहे, वह उसे उठा भी नहीं पा रहा था। सो, वह वहीं खड़ा सोचता रहा कि बोरे को घर तक कैसे पहुंचाऊं। तभी उसे एक राहगीर दिखायी दिया। मुल्ला खुश हो गया। 'सुनो, बेटे ! क्या यह बोरा तुम मेरे घर तक पहुंचा सकते हो ?' खोजा नसरुद्दीन के पास उस वक्त पैसे नहीं थे। मुल्ला से पूछा : 'मुझे इसके लिए क्या दोगे ?' 'अरे बेटे, तुम पैसे क्यों मांगते हो ? तुम बोरा लेकर चल रहे होगे, तभी मैं तुम्हें दानिशमन्दी की तीन बातें बताऊंगा जिन्हें सुनकर तुम्हारी जिन्दगी में खुशी छा जायेगी।' खोजा नसरुद्दीन ने सोचा—'क्यों न जान लिया जाय कि दानिशमन्दी की ये तीन बातें क्या हैं ?'

"उसकी जानने की ख्वाहिश बढ़ी। उसने बोरा उठाकर कंधों पर रखा और चल पड़ा। रास्ता ऊंचाई पर था और उसके एक तरफ गार था। दम लेने के लिए खोजा नसरुद्दीन रुका। मुल्ला ने बड़ी अहमियत और राज भरे अन्दाज में कहा : 'दानिशमन्दी की पहली बात सुन ! क्योंकि इससे बड़ी अक्लमन्दी की बात आदम के वक्त से आज तक दुनिया में नहीं हुई। अगर तू इसके मानी पूरी गहरायी में जाकर समझे तो यह उन अलिफ, लाम, मीम हरफों का हकीकी मतलब समझने के बराबर होगा, जिनसे हमारे पैगम्बर हजरत मुहम्मद ने कुर-आन का दूसरा सूरा शुरू किया है।'

"'गौर से सुन ! अगर कोई तुझसे कहे कि सवारी करने से पैदल चलना ज्यादा अच्छा है, तो उसका यकीन न करना। मेरी बात याद रखना बेटे। इस पर दिन-रात गौर करना। तब तू इन अल्फाज में छिपी दानाई समझ सकेगा। पर यह बात अक्ल की उस दूसरी बात के मुकाबले कुछ भी नहीं है

जो मैं तुझे उस पेड़ के नीचे सुनाऊंगा। वह देख, वह आगेवाला पेड़।' खोजा नसरुद्दीन ने सोचा : 'अच्छी बात है, मुल्ला साहब ! आप जरा ठहरें तो !' पसीने से तर वह बोरा लिए पेड़ तक पहुंचा।

"मुल्ला ने उंगली उठाकर कहा : 'कान खोलकर सुन, क्योंकि दानाई की इस दूसरी बात में पूरा कुरआन, आधी शरिअत और चौथाई तरीकत भी भरी है। जो इस बात को समझ लेगा वह कभी नेकी के रास्ते से नहीं डिगेगा; हमेशा सचाई के रास्ते पर चलेगा। इसलिए, ऐ मेरे बेटे ! अक्ल की इस बात को समझने की कोशिश कर और खुशी मना कि यह बात तुझे मुफ्त ही बतायी जा रही है। दानिशमन्दी की दूसरी बात यह है कि अगर तुझ से कोई कहे कि गरीब इंसान की जिन्दगी अमीर के मुकाबले में ज्यादा आसान और आरामदेह है, तो उसका यकीन न करना। लेकिन यह दूसरी बात भी उस तीसरी बात के मुकाबले कुछ नहीं है, जिसकी तेज चमक सूरज को अंधा बना देनेवाली रोशनी की तरह है और जिसकी गहराई सिफ समन्दर की गहराई से मिलाई जा सकती है। यह तीसरी बात मैं तुझे अपने घर के फाटक पर पहुंचकर बताऊंगा। अब जल्दी चल—क्योंकि मैं सुस्ता चुका हूं।'

"खोजा नसरुद्दीन बोला—'ठहरिए, मुल्ला साहब ! मुझे आपकी दानिशमन्दी की तीसरी बात पहले से ही मालूम है। अपने घर के दरवाजे पर पहुंचकर आप मुझे बतायेंगे कि चालाक आदमी बेवकूफ इंसान से कद्दुओं का बोरा हमेशा मुफ्त ढुलवा सकता है।' मुल्ला अचम्भे में आ गया और थम गया। खोजा नसरुद्दीन का कयास ठीक था।

"'अब जनाब मुल्ला साहब ! आप दानिशमन्दी की मेरी भी एक बात सुनिये। यह अकेली बात आपकी सभी बातों के बराबर है।' खोजा नसरुद्दीन कहता गया। 'मैं पाक पैगम्बर की कसम खाकर कहता हूं कि मेरी दानाई की बात इतनी गहरी और ऐसी चकाचौंध कर देनेवाली है कि इसमें कुरआन, शरिअत, तरीकत व मय दूसरी किताबों के पूरा इस्लाम, बौद्ध फलसफा, ईसाई और यहूदी मजहबों की तमाम बातें शामिल हैं। ऐ मुल्ला साहब ! मुझे सच्चा ईमान बतानेवाले मेरे उस्ताद ! इस बात से, जो मैं आपको बताने जा रहा हूं, ज्यादा दानिशमन्दी की बात कोई कभी हुई ही नहीं। लेकिन, इसे सुनने के लिए आप पहले अपने को तैयार कर लीजिए। क्योंकि यह इतनी वसीह, अजीमुश्शान और अचम्भे में डाल देनेवाली है कि इससे आसानी से किसी इंसान का दिमाग फिर सकता है। मुल्ला साहब ! अपने दिमाग को फौलाद की तरह कड़ा कर लीजिए और सुनिए : अगर आपसे कोई कहे कि ये कद्दू फूटे नहीं हैं, तो उसके मुंह पर थूक दीजिएगा, उसे झूठा करार दे दीजिएगा और उसे अपने घर से निकाल बाहर कीजिएगा !'

"यह कहकर खोजा नसरुद्दीन ने बोरा उठाया और उसे पासवाले गहरे खड में फेंक दिया। कद्दू बोरे से निकल पड़े और पत्थरों पर टकराते, आवाज करते हुए नीचे गिरकर चकनाचूर हो गये। मुल्ला 'हाय, हाय!' कहता, अफसोस करता हुआ रोने-धोने लगा। 'हाय कितना नुकसान हो गया! कैसी बरबादी हो गयी!' कहता हुआ वह चीखता-चिल्लाता, रोता-धोता, अपना मुंह नोचता, पागलों जैसा घर की तरफ चल पड़ा।

"उसके चलते-चलते नसरुद्दीन ने कहा: 'देखा न आपने! मैंने आपको खबरदार कर दिया था! मैंने आपको पहले ही बताया था कि दानाई की मेरी बात से आप पागल हो सकते हैं!'"

सुननेवाले हंसी से दोहरे हो गये।

धूल और खटमल भरे नमदे पर एक कोने में पड़ा खोजा नसरुद्दीन सोचने लगा:

"तो उन्होंने इस वाकये की भी खबर पा ली? लेकिन कैसे? उस सड़क पर उस वक्त सिर्फ दो ही शख्स थे—मुल्ला और मैं! और मैंने किसी से इस बारे में कभी कुछ कहा नहीं। शायद मुल्ला को जब पता लगा हो कि उसके कद्दू कौन ढो रहा था, तो उसने यह किस्सा खुद सुनाया हो।"

तभी तीसरे शख्स ने अपना किस्सा शुरू कर दिया:

"एक दिन तुर्की के एक शहर से खोजा नसरुद्दीन उस गांव को लौट रहा था, जहां उन दिनों वह रहता था। थककर वह एक नदी के किनारे लेट गया और बिना जाने ही पानी की खुशगवार आवाज और बहार की खुशबूदार हवा के झोंकों में सो गया। सोते-सोते उसने सपना देखा कि वह मर गया है। उसने सोचा: 'अगर मैं मर गया हूं, तो मुझे न तो हिलना चाहिए और न आंखें खोलनी चाहिएं।' सो, वह चुपचाप मुलायम घास पर बिना हिले-डुले पड़ा रहा। उसे लगा, आखिर मरना इतनी बुरी चीज तो है नहीं। जब तक यह जिन्दगी है, तब तक झंझट और परेशानियां बुरी तरह पीछे लगी रहती हैं! मौत आने पर उनके बिना बस आराम से पड़े रहना होता है।

"उधर से गुजर रहे थे कुछ मुसाफिर। उनकी नजर खोजा नसरुद्दीन पर पड़ी। मुसाफिरों में से एक बोला: 'देखो! वह कोई मुसलमान है।' दूसरा बोला, 'मरा हुआ है! चलो उठाकर पास के गांव ले चलें।'

"पास का गांव वही था, जहां खोजा नसरुद्दीन को जाना था। लोगों ने पेड़ों से कई शाखें काटीं। उनकी चारपाई बनाकर उस पर खोजा नसरुद्दीन को लिटाया और लेकर चल पड़े। काफी देर तक वे उसे लेकर चलते रहे। वह आंखें बन्द किये, बिना हिले-डुले, चुपचाप लेटा रहा—ठीक वैसे ही जैसा कि

उस शख्स को जेब देता है जो मर चुका है यानी जिसकी रूह बहिश्त के फाटक खटखटाती होती है।

"यकायक चारपाई रुकी। मुसाफिर लोग नदी को पार करने के बारे में बातचीत कर रहे थे। एक कह रहा था कि दाहिनी तरफ मुड़ना है, दूसरा कह रहा था, बाईं तरफ। तीसरा कहता सीधे यहीं से नदी पार कर लेनी चाहिए। खोजा नसरुद्दीन ने एक आंख खोली तो देखा कि वे लोग उस जगह खड़े हैं जहां नदी सबसे ज्यादा गहरी है, धार सबसे तेज और खतरनाक है, जहां बहुत से लापरवाह लोग डूब चुके हैं। खोजा नसरुद्दीन ने सोचा : 'मेरी तो कोई बात नहीं! अपनी परवाह मुझे है नहीं, क्योंकि मैं मर चुका हूं! चाहे कब्र में लेटूं, चाहे नदी की गोद में, मेरे लिए कोई फर्क पड़ता नहीं। लेकिन इन मुसाफिरों को आगाह कर देना चाहिए, नहीं तो मेरे ऊपर मेहरबानी करते-करते कहीं ये लोग अपनी जान से ही हाथ न धो बैठें। उन्हें आगाह न करना, मेरा नाशुक्रा-पन होगा।'

"चारपाई पर वह थोड़ा सा उठा और नदी की तरफ इशारा करता हुआ कमजोर आवाज में बोला : "मुसाफिरो! मैं जब जिन्दा था, तो हमेशा इस नदी को चनार के उन दरख्तों के पास से पार किया करता था।' इतना कहकर उसने फिर आंखें बन्द कर लीं। मुसाफिरों ने खोजा नसरुद्दीन का शुक्रिया अदा किया और जोर-जोर से उसकी रूह के लिए दुवा मांगते हुए, चारपाई लेकर आगे बढ़ चले।"

कहानी कहनेवाला और कहानी सुननेवाले एक-दूसरे को कोहनी मारकर हंस रहे थे। खोजा नसरुद्दीन कराहा :

"पूरा वाकया ही उन्होंने गलत सुना। पहली बात तो यह कि मैंने ख्वाब देखा ही नहीं कि मैं मर चुका हूं। मैं इतना बेवकूफ नहीं कि अपनी मौत और जिन्दगी में फर्क न कर सकूं। अरे, मुझे तो यह भी याद है कि उसी वक्त मुझे पिस्सू काट रहे थे और मुझे बड़ी ख्वाहिश हो रही थी कि अपना बदन खुजा लूं। जिन्दा होने का यह सबसे साफ सबूत था। मैं जिन्दा न होता तो पिस्सू काटने की खुजली हरगिज महसूस न करता। हां, थका हुआ मैं बहुत था और चलना नहीं चाहता था! मुसाफिर तगड़े थे और उन्हें जरा-सा रास्ता बदलकर गांव तक मुझे पहुंचा देने में कोई तकलीफ न होती। लेकिन नदी को जब वे उस जगह पार करने की बात सोचने लगे जहां पानी की गहराई तीन आदमियों के बराबर थी, तो मैंने उन्हें रोका—हालांकि तब भी मैं सोच रहा था सिर्फ उन लोगों के ही खानदान की बात, अपनी नहीं क्योंकि मेरा तो कोई खानदान है ही नहीं। फौरन ही उनके नाशुक्रेपन का बड़ा कड़वा फल मिला। वक्त पर होशियार कर देने की एवज में मेरा शुक्रिया अदा करना तो दूर, उन्होंने मुझे

चारपाई से गिरा दिया और मुक्के मारने लगे। वे मेरी और भी ठुकाई करते, अगर मेरे पैर दौड़ने में तेज न होते। लोग सच्चाई को कैसे तोड़-मरोड़ लेते हैं, यह देखकर ताज्जुब होता है!"

इस बीच चौथे शख्स ने अपना किस्सा शुरू कर दिया।

"खोजा नसरुद्दीन के बारे में यह किस्सा भी मशहूर है। एक बार वह एक गांव में करीब छः महीने तक रहा और अपनी हाजिर-जवाबी और मसखरे-पन के लिए मशहूर हो गया..."

खोजा नसरुद्दीन के कान खड़े हो गये। यह आवाज कहां सुनी थी उसने? ज्यादा जोर की नहीं, पर तब भी बिलकुल साफ और कुछ-कुछ भर्रायी हुई-सी थी। सुनी भी यह उसने बिलकुल हाल में ही थी... शायद आज ही। पर, याद करने की कोशिश के बावजूद उसे याद न आया।

वह आदमी कह रहा था :

"एक दिन उस सूबे के हाकिम ने उस गांव में अपना हाथी भेज दिया, जहां खोजा नसरुद्दीन रहता था। हाथी को खिलाने-पिलाने और उसकी देख-भाल करने की जिम्मेदारी गांववालों की थी। हाथी बड़ा खाऊ था। एक दिन में पचास गट्ठर जौ, पचास गट्ठे चरी, पचास गट्ठर मक्का और सौ बोझ चारा खा जाता था। बस एक पखवारे में ही गांववालों के खलिहान खाली हो गये। बेचारे बिलकुल बरबाद हो गये, नाउम्मीद हो गये। आखिर उन्होंने तय किया कि खोजा नसरुद्दीन को हाकिम के पास भेजा जाय और दरखास्त की जाय कि वह हाथी वापस बुला लें।

"उन्होंने खोजा नसरुद्दीन की तलाश की। वह उनका काम करने के लिए राजी भी हो गया। अपने गधे पर उसने जीन कसी और—जैसा कि सारी दुनिया जानती है—जिद, बदमिजाजी और काहिली में उसका गधा सांप, सियार और मेंढक की मिली-जुली औलाद से भी बदतर है। जीन कसकर वह हाकिम की तलाश में निकल पड़ा। लेकिन, जाने से पहले गांववालों से वह अपनी उजरत तय करना न भूला! असल में उसने इस काम के लिए इतनी ज्यादा रकम वसूल की कि बहुत से लोगों को अपने घर बेचने पड़े और वे फकीर हो गये। यह सब हुआ खोजा नसरुद्दीन की बदौलत।"

"जिस कोने में खोजा नसरुद्दीन नमदे पर पड़ा अपने दमघोंट गुस्से पर काबू पाने के लिए करवटें बदल रहा था, उधर से आवाज आयी : "हूं"।

आदमी कहता गया :

"इस तरह खोजा नसरुद्दीन हाकिम के महल तक पहुंचा। बहुत देर तक वह हाकिम के नौकरों और हाकिम की मेहरबानी पर पलनेवाले लोगों की भीड़ में खड़ा इंतजार करता रहा कि वे अपनी रौशन निगाह उस पर भी डालें

—वह निगाह जो कुछ लोगों को मसर्रत बख्शती है और कुछ पर बरबादी। हाकिम ने खोजा नसरुद्दीन की ओर मुड़कर देखा तो उस शानदार चेहरे को देखकर खोजा को इतना डर लगा और इतना अचम्भा हुआ कि सियार की पूंछ की तरह उसकी टांगें कांपने लगीं और बदन में खून की रफ्तार कम हो गयी। बेचारा पसीने से नहा गया और खड़िया से भी ज्यादा सफेद हो गया।"

कोने से फिर "हूं! हूं!" की आवाज आयी। पर, किस्सा कहनेवाला इस रुकावट की परवाह किये बिना कहता रहा:

"'तू क्या चाहता है?' हाकिम ने शेर की हुंकार से मिलती-जुलती गरजती शानदार आवाज में पूछा। डर के मारे खोजा नसरुद्दीन के मुंह से आवाज नहीं निकली। बदबूदार लकड़बग्घे जैसी पिपियाती आवाज में खोजा नसरुद्दीन बोला—'ऐ मेरे ऊीशान आका! ऐ सूबे की रोशनी! ऐ इस सूबे के चांद-सूरज! ऐ हमारे सूबे के हर बाशिन्दे को खुशी और मसर्रत बख्शनेवाले! अपने इस नाचीज गुलाम की बात सुनिए जो आपके महल के दरवाजे को अपनी दाढ़ी से साफ करने के काबिल भी नहीं। ऐ मेहरबानों के मेहरबान! अपना एक हाथी हमारे गांव में भेजकर आपने बड़ी मेहरबानी की है और उसको खिलाने-पिलाने और उसकी देख-भाल करने का गांववालों को मौका दिया है। हम लोगों को इससे कुछ फिक्र हो गयी है ...

"हाकिम की त्यौरियां चढ़ गयीं। खोजा नसरुद्दीन उनके सामने बिल्कुल वैसे ही झुक गया जैसे आंधी में पतवार झुक जाती है। हाकिम ने पूछा—'किस बात की फिक्र? बोलता क्यों नहीं? क्या तेरी नाकिस, गन्दी जुबान सूख कर तालू से चिपक गयी है?' खोजा नसरुद्दीन डर का दिखावा करता हुआ मिमियाया 'मैं ... ऐ ... हम ... ऐ ... आका हमें फिक्र है कि हाथी को अकेलापन महसूस होता है। बेचारा जानवर बहुत गमगीन है। उसकी तकलीफ देखकर, गांववाले गमगीन हो गये हैं और अफसोस मना रहे हैं। ऐ काबिले अजीम! अपनी शख्सियत से इस दुनिया को रौशन करनेवाले ऐ हुजूर! गांववालों ने मुझे आपके पास भेजा है। उन्होंने मुझसे यह इल्तिजा करने को कहा है कि हाथी के साथ रहने के लिए आप एक हथिनी भी भेज दीजिए।' इस दरख्वास्त पर हाकिम बहुत खुश हुआ और उसे फौरन पूरा करने का हुक्म जारी कर दिया। खुशी जाहिर करते हुए उसने खोजा नसरुद्दीन को अपना जूता चूमने की इजाजत दी। खोजा नसरुद्दीन ने यह काम ऐसी लगन और मेहनत से किया कि हाकिम के जूते का रंग उड़ गया और खोजा नसरुद्दीन के होंठ काले पड़ गये ..."

खोजा नसरुद्दीन की बुलन्द आवाज ने किस्सा कहनेवाले की बात बीच ही में काट दी।

"तू झूठ बोलता है बे !" खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया : "गन्दे ! मरियल कुत्ते ! यह तेरे होंठ, तेरी जुबान और तेरा पेट है जो बड़े लोगों के जूते चाटने से काले पड़ गये हैं। खोजा नसरुद्दीन कभी किसी बड़े आदमी के सामने नहीं झुका। तू खोजा नसरुद्दीन को बदनाम करता है ? ऐ मुसलमानो ! तुम इसकी बात न सुनो और इसे यहां से मार भगाओ।"

बदनाम करनेवाले उस शख्स से निपटने के लिए वह आगे झपटा ही था कि चपटे, चेचकरू चेहरेवाले आदमी की पीली काइयां आंखों को पहचानकर वह एकदम रुक गया। यह वही नौकर था जिसने उससे बहिश्त के पुल पर बाड़ लगाने के सिलसिले में गली में झगड़ा किया था।

खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया : "आहा ! मैं तुझे जानता हूं, बे जासूस ! बता, खुफियागीरी से खबर देने का तुझे क्या मिलता है ? जिनके साथ तू दगा करता है, फांसी दिलवाता है, उन पर फी कस कितनी रकम मिलती है ? अबे अमीर के जासूस और खुफिया ! मैं तुझे अच्छी तरह पहचानता हूं।"

जासूस ने, जो अब तक बिलकुल खामोश खड़ा था, एकाएक ताली बजायी और ऊंची आवाज में चिल्लाया :

"सिपाही ! सिपाही ! यहां !"

खोजा नसरुद्दीन ने सिपाही के दौड़ते कदमों की आहट, भालों की खनखनाहट और ढालों की खटाखट सुनी। एक भी लमहा खोये बिना वह एक तरफ को उछला और रास्ता रोकनेवाले चेचकरू जासूस को गिरा दिया।

अब उसे चौराहे की दूसरी तरफ से पहरेदारों के कदमों की आवाज सुनायी पड़ी। जिस तरफ भी वह जाता, सामने सिपाही ही पड़ते। एक लमहे तक तो उसे लगा कि अब बच निकलना नामुमकिन है।

वह जोर से बोला : "लानत है मुझ पर ! मैं फंस गया ! ऐ मेरे वफादार गधे ! कहां है तू ? अलविदा !"

उसी वक्त अचम्भे भरा एक ऐसा वाकया हुआ जिसकी कोई उम्मीद न थी और जिसे आज भी लोग बुखारा में याद करते हैं। ऐसा वाकया जो कभी न भुलाया जा सकेगा। बड़ा नुकसान और हो-हुल्लड़ हुआ था उस बात से।

अपने मालिक की उदास आवाज सुनकर गधा उसकी तरफ बढ़ा। उसके साथ ही बरसाती से टकराता हुआ एक बहुत बड़ा ढोल भी साथ-साथ आने लगा। अंधेरे में बिना जाने हुए ही खोजा नसरुद्दीन ने अपने गधे को उस बड़े ढोल के कुंडे से बांध दिया था जिसे बजवाकर चायखाने का मालिक बड़े त्योहारों पर गाहकों को अपनी दूकान की तरफ बुलाता था। ढोल एक पत्थर से जा टकराया। बड़े जोर की गमक हुई। गधे ने पीछे मुड़कर देखा।

ढोल फिर बजा। यह समझकर कि उसके मालिक से निपटकर शैतान अब उसके पीछे आ पड़ा है, यह समझकर कि अब उसकी भूरी खाल की खैरियत नहीं, डर के मारे गधा अपनी दुम उठाकर जोरों से रेंकता हुआ बाजार की तरफ भागा।

तभी एक काफिले के पचास ऊंट चीनी के बरतन और तांबे की चादरें लादे बाजार की तरफ आ रहे थे। इस तरह जोरों से रेंकने और गमकने-बमकने वाले जानवर को अपनी तरफ बढ़ता देख ऊंट घबराकर इधर-उधर भागे। उन पर लदे चीनी मिट्टी के बरतन व तांबे की चादरें खनखनाती हुई जमीन पर गिरने लगीं।

जरा सी देर में पूरे बाजार और आसपास की गलियों में खौफ और घबड़ाहट फैल गयी। टिनटिनाहट, रेंक, भोंक, खनखनाहट, बरतनों के गिरने की खनन-खनन आवाज, गरज, चीख-पुकार — बिलकुल दोजख जैसा शोरगुल! हर आदमी भौचक्का और हड़बड़ाया हुआ! सैकड़ों ऊंट, घोड़े, गधे, रस्सियां तुड़ा-तुड़ा कर अंधेरे में भागने लगे। तांबे की चादरों से लड़-लड़कर जोर की गरज पैदा करने लगे। जानवरों के मालिक मशालें हाथ में लिये इधर-उधर दौड़ते-भागते चिल्लाने लगे।

इस दोजखी शोरगुल को सुनकर सोनेवाले जाग गये और अधनंगे ही इधर-उधर भागने लगे। कभी वे एक-दूसरे से जा भिड़ते। कभी अफसोस व तकलीफ के साथ चीख-पुकार मचाते। वे तो समझे थे कि हश्र का दिन आ गया है। पर फड़फड़ा-फड़फड़ाकर मुर्गे बांग देने लगे। हुल्लड़ और भी बढ़ा और शहर के बाहर की आबादी तक फैल गया। फिर तो शहर की चहारदीवारी पर लगी तोपें दगने लगीं। शहर के पहरेदारों ने समझा कि दुश्मन बुखारा में घुस आया है। और तो और, शाही महल की तोपें भी गरज उठीं — वहां के पहरेदारों ने समझा कि इन्कलाब हो गया है। शहर की अनगिनत मीनारों से सहमी और गमगीन आवाजों में मुअज्जिन दुवा मांगने लगे। अंधेरे में भारी गड़बड़ मची हुई थी। कोई नहीं समझ पाता था कि क्या करें और कहां भागकर जायें।

इसी हो-हुल्लड़ के बीच खोजा नसरुद्दीन पगलाये हुए ऊंटों और घोड़ों से फुर्ती से बचता हुआ, ढोल की आवाज का सहारा लिए, अपने गधे का पीछा करता, दौड़ रहा था। गधे को वह तब तक न पकड़ पाया जब तक गधे और ढोल को एक दूसरे से जोड़नेवाली दरम्यानी रस्सी टूट न गयी और ढोल लुढ़क कर ऊंटों के पांवों तले न आ गया, जो उससे बचने की हड़बड़ी में शामियाने, चंदोवे, छप्पर, चायखाने और खोखों को तड़ातड़ गिराने लगे।

सचमुच, गधे को ढूंढ़ने में खोजा नसरुद्दीन को न जाने कितना वक्त लग जाता, अगर एकाएक दोनों एक-दूसरे के सामने न आ पड़ते। फेन से लथपथ गधा ऊपर से नीचे तक कांप रहा था।

"चल, इधर आ! यहां जरूरत से ज्यादा शोर-गुल हो रहा है!" गधे को अपने पीछे खींचता हुआ खोजा नसरुद्दीन बोला। "यह देखकर ताज्जुब होता है कि गधे के पीछे ढोल बांध दिया जाय तो यह छोटा-सा जानवर किस कदर बरबादी बरपा कर सकता है। अबे, देखा तूने क्या कर डाला है? सच है कि तूने मुझे पहरेदारों से बचाया। फिर भी बुखारा के गरीब बाशिन्दों के लिए मुझे अफसोस है। सारा घपला साफ करने में उन्हें सबेरा हो जायगा। अब हमें कोई ऐसी जगह कहां मिल सकती है, जहां कोई खलल न डाले?"

खोजा नसरुद्दीन ने तय किया कि वह किसी कब्रिस्तान में रात गुजारेगा। वह सोच भी ठीक ही रहा था क्योंकि चाहे जितनी गड़बड़ क्यों न हो, मुर्दे तो उठकर हाथों में मशालें लेकर चीखते-चिल्लाते दौड़ नहीं सकते थे।

इस तरह, अमन में खलल डालनेवाले और फूट के बीज बोनेवाले खोजा नसरुद्दीन ने अपने वतन में वापसी का पहला दिन अपनी शोहरत के मुताबिक ही गुजारा। एक कब्र के पत्थर से उसने गधा बांधा और दूसरी कब्र पर आराम से लेटकर सो गया। इस बीच शहर में काफी देर तक शोरगुल, चीख-पुकार, घंटियों की टनटनाहट और तोपों की गरज व आम गड़बड़ जारी रही।

: ६ :

तड़का होते ही—जब तारे मद्धिम पड़ने लगे, अंधेरे में चीजों के खाके उभरने लगे—सैकड़ों मेहतर, बढ़ई, कुम्हार और सफाई करनेवाले बाजार में आये और मन लगाकर काम करने लगे। गिरे हुए शामियानों को उन्होंने सीधा किया, पुलों की मरम्मत की, बाड़ों के सूराखों को भरा और टूटे बरतनों और लकड़ी के टुकड़ों को साफ किया। और, सूरज की पहली किरन जब धरती पर उतरी तो बुखारे में रात की गड़बड़ी का कोई निशान बाकी नहीं था।

बाजार खुला।

रात भर आराम से कब्र पर सोने के बाद खोजा नसरुद्दीन अपने गधे पर सवार हुआ और बाजार की तरफ चल पड़ा। अभी ही वहां चहल-पहल और लोगों की आने-जाने और तरह-तरह की बोलियों की भनभनाहट होने लगी थी। अलग-अलग नस्लों के लोगों की रंग-बिरंगी लिबासवाली भीड़ हो गयी थी। ताजिरों, भिश्तियों, नाइयों, दरवेशों, फकीरों की आवाज और बाजार में बैठे जंग लगे डरावने औजारों को हिलाते हुए दांत निकालनेवालों के शोरगुल के बीच

अपनी ही आवाज मुश्किल से सुनायी देती थी। खोजा नसरुद्दीन जोर-जोर से चिल्लाता जा रहा था : "हटो, बचो ! रास्ता करो ! हटो !" रंग-बिरंगी खलअतें, साफे, घोड़ों के कम्बल, कालीन, चीनी, अरबी, मंगोलियायी व बहुत सी दूसरी जुबानें उस धक्कमधक्का करती, भनभनाती भीड़ में शामिल थीं।

गर्द उड़कर आसमान पर छा रही थी। आदमियों का कभी खत्म न होनेवाला तांता लगा हुआ था। अपना-अपना सामान फैलाकर ये लोग भी आम शोरगुल में आवाजें मिला रहे थे। पतली छड़ियों से कुम्हार अपने बरतन बजा रहे थे और उधर से गुजरनेवालों की खलअतें पकड़-पकड़कर उनसे साफ खनखनाहट सुनने को कह रहे थे, ताकि वे उन्हें खरीदने को राजी हो जायें। तांबेवालों की कतार में तांबे के बरतनों की चमक चकाचौंध पैदा कर रही थी। हवा छोटे-छोटे हथौड़ों की आवाज से गूंज रही थी। कारीगर सुराहियों और किश्तियों पर डिजाइन बना रहे थे। जोर-जोर से वे अपनी दस्तकारी की तारीफ कर रहे थे; आसपासवालों के काम की बुरायी भी कर रहे थे। सुनार और सर्राफ छोटी-छोटी प्यालियों में चांदी पिघला रहे थे, सोने के तार खींच रहे थे और कीमती हिन्दुस्तानी जवाहरात को चमड़ों के चकत्तों पर लगाकर पालिश कर रहे थे।

कभी-कभी इत्र के ताजिरों की कतार से आते हवा के हल्के झोंके खुशबू की लहर बिखेर देते। गुलाब, मुश्क व बहुत से दूसरे मसालों के इत्र वहां बिक रहे थे। एक तरफ ईरान, दमिश्क व तक्के के. कम्बल और कालीन थे जिन पर फूलों व तसवीरों का सिलसिला बना हुआ था। दूसरी तरफ काशगर के बिने हुए गलीचे, घोड़ों के रंगीन कम्बलों — मामूली घोड़ों और कीमती शरीफ जानवरों दोनों के लिए सस्ते व कीमती कम्बलों — के ढेर लगे थे। खोजा नसरुद्दीन अपने गधे पर सवार रेशम, जीन, जिरहबख्तर और रंगसाजों की कतारों से होता हुआ गुलामों के बाजार और ऊन कातनेवालों के अड्डे से गुजरा।

यह बाजार की शुरूआत भर थी, क्योंकि आगे तरह-तरह की सैकड़ों कतारें लगी हुयी थीं। खोजा नसरुद्दीन जितना ही भीड़ में घुसता, उतना ही शोरगुल, झगड़ा, चीख-पुकार, लेन-देन की तू-तू मैं-मैं बढ़ती जाती। हां, यह बाजार था, बुखारे का लामिसाल और मशहूर बाजार, जैसा न दमिश्क में था, न बगदाद में।

आखिर वह इन कतारों के खत्म होने की जगह पहुंचा और सामने अमीर का महल देखा। उसके चारों तरफ तिरछे कटाव की ऊंची चहारदीवारी थी जिसमें तोपों के लिए सूराख बने हुए थे और ऊपर मुंडेरें थे। चारों कोनों पर बड़ी होशियारी से चिकने पत्थर की पच्चीकारी की गयी थी। इस काम में अरबी और ईरानी कारीगरों ने बरसों लगाये थे।

महल के फाटक के बाहर एक रंग-बिरंगा खेमा था। एक फटे हुए शामियाने के नीचे गरमी से पस्त लोग बैठे या चटाइयों पर लेटे थे—कुछ अकेले, कुछ अपने खानदानों के साथ। औरतें बच्चों को दूध पिला रही थीं, या बरतनों में खाना पका रही थीं, या फटे हुए गद्दों व खलअतों की मरम्मत कर रही थीं। अधनंगे बच्चे चिल्लाते, लड़ते-झगड़ते, गिरते-पड़ते दौड़ रहे थे। बेइज्जती के साथ वे अपने जिस्मों का वह हिस्सा जो पोशीदा रहता है महल की तरफ कर रहे थे। आदमी सो रहे थे या इधर-उधर खटपट कर रहे थे या चाय के बरतनों के पास गिरोहों में बैठे बातचीत कर रहे थे।

खोजा नसरुद्दीन ने सोचा : "अच्छा ! ये लोग यहां कई दिन से रह रहे हैं।"

खोजा नसरुद्दीन की नजर दो आदमियों पर पड़ी। इनमें से एक गंजा था। दूसरे के दाढ़ी थी। अपने-अपने शामियानों के नीचे वे नंगी जमीन पर लेटे थे। एक सफेद बकरा, जो इतना दुबला था कि उसकी पसलियां खाल फाड़कर बाहर निकली पड़ती थीं, दोनों के बीच चनार के एक खूंटे से बंधा था। दर्द भरी आवाज में में-में करता हुआ वह खूंटे पर मुंह मार रहा था। खूंटे को वह आधा खा भी चुका था।

खोजा नसरुद्दीन आदत से ही हर बात जानने के लिए उतावला रहता था। पूछने से बाज न आया :

"अस्सलामालेकुम, बुखारा शरीफ के बाशिन्दो ! मुझे बताएं कि आप इस खानाबदोश जमात में कब से शरीक हुए ?"

"ऐ मुसाफिर !" दाढ़ीवाले ने जवाब दिया, "हमारा मजाक मत उड़ा। हम खानाबदोश नहीं बल्कि वैसे ही मुसलमान हैं, जैसा कि तू है।"

"अगर आप अच्छे मुसलमान हैं, तो अपने घरों पर क्यों नहीं रहते ? महल के फाटक पर किस इन्तजार में पड़े हैं ?"

"हम अपने आकायेइनामदार बादशाह, जिसकी रोशनी सूरज को भी ढंक लेती है, ऐसे अमीर के सही और नेक इंसाफ का इन्तजार कर रहे हैं।"

ताने भरी आवाज में खोजा नसरुद्दीन बोला : "अच्छा ? आप अपने आकाये वालाजाह, जिसकी रोशनी सूरज को भी ढंक लेती है, उस अमीर के सही और नेक इंसाफ का इन्तजार काफी वक्त से कर रहे हैं ?"

गंजे आदमी ने जवाब दिया, "ऐ मुसाफिर ! हम पांच हफ्ते से ज्यादा से इन्तजार कर रहे हैं। यह दढ़ियल झगड़ालू शख्स—अल्लाह इसे सजा दे, शैतान अपनी दुम इसके बिस्तर पर फैलाये—यह दढ़ियल मेरा बड़ा भाई है। हमारे वालिद का इन्तकाल हुआ और वह हम लोगों के लिए कुछ जायदाद छोड़

गये। इस बकरे को छोड़कर बाकी सब-कुछ हमने बांट-चूंट लिया है। अब अमीर फैसला करें कि यह बकरा किसे मिलना चाहिए।"

"लेकिन वह बाकी जायदाद कहां है जो आप लोगों को विरासत में मिली थी?"

"हर चीज बेचकर हमने उसकी नकद कीमत इकट्ठी कर ली है। अर्जी लिखनेवाले मुहर्रिरों, अर्जियां लेनेवाले अहलकारों, पहरेदारों व दूसरे बहुत से लोगों को भी तो पैसा देना होता है न।"

गंजा आदमी यकायक उछल पड़ा और दौड़कर नंगेपांव व गंदगी भरे एक दरवेश को पकड़ लिया, जो एक नुकीली टोपी पहने था और बगल में काली तूंबी लटकाये था।

"ऐ नेकरूह इन्सान! मेरे लिए दुवा करो! दुवा करो कि फैसला मेरे माफिक हो!"

दरवेश ने रकम ले ली और दुवा करनी शुरू की। जैसे ही इबादत के आखिरी अल्फाज उसने कहे, गंजे ने उसकी तूंबी में एक सिक्का और डाल दिया ताकि वह फिर से दुवा मांगे।

दाढ़ीवाला शख्स परेशान होकर उठा और भीड़ पर नजर दौड़ाने लगा। काफी ढूंढने के बाद उसे एक दरवेश दिखायी दिया जो पहलेवाले से भी ज्यादा गंदा और फटेहाल था और इसीलिए ज्यादा पाक था। इस दरवेश ने बहुत बड़ी रकम मांगी। दाढ़ीवाला उससे मोल-भाव करना चाहता था। लेकिन, दरवेश ने अपनी टोपी के नीचे से टटोलकर मुट्ठीभर बड़े-बड़े जुएं निकाल दिये। अब दाढ़ीवाला उसकी पाकीजगी का कायल हो गया और मांगी हुई रकम मंजूर कर ली। जीत की नजर से अपने छोटे भाई की तरफ देखते हुए उसने रकम गिन दी।

दरवेश दोजानू बैठकर जोर-जोर से दुवा मांगने लगा और उसकी ऊंची आवाज में पहले दरवेश की आवाज डूब गयी। गंजा परेशान होने लगा और उसने अपने दरवेश को कुछ सिक्के और दिये। दढ़ियल ने भी यही किया। दोनों दरवेश एक-दूसरे से बाजी मारने के लिए इतना हल्ला मचाने लगे कि जरूर अल्लाह ने फरिश्तों से बहिश्त की खिड़कियां बन्द कर लेने को कहा होगा ताकि इस शोरगुल से बहरे न हो जायें।

लकड़ी के खूंटे को कुतरता हुआ बकरा लगातार दर्द भरी आवाज में अब भी मिमिया रहा था।

गंजे ने उसके सामने तिपतिया घास का आधा गट्ठर डाल दिया। दाढ़ीवाला चीखा:

"मेरे बकरे के सामने से हटा अपनी बदबूदार घास!"

लात से उसने घास हटा दी और भूसी का एक बरतन उसके सामने रख दिया।

गंजा गुस्से में चिल्लाया : "नहीं नहीं ! मेरा बकरा तुम्हारी भूसी नहीं खायेगा !"

भूसी का बरतन भी घास के पास जा पड़ा। बरतन गिरकर फूट गया। भूसी सड़क की धूल में मिल गयी। दोनों भाई गुस्से में एक-दूसरे से गुंथे हुए थे। एक-दूसरे पर वे गालियों व घूंसों की बौछार कर रहे थे और जमीन पर लोट रहे थे।

खोजा नसरुद्दीन ने सिर हिलाते हुए कहा : "दो बेवकूफ लड़ रहे हैं ! दो ठग दुवा मांग रहे हैं ! इस बीच बकरा भूख से मर चुका है ! ऐ नेक और आपसी मुहब्बतवाले भाइयो ! जरा इधर तो देखो ! अल्लाह ने तुमसे बकरा छीनकर अपने तरीके से तुम्हारा झगड़ा निपटा दिया है !"

भाइयों को अक्ल आयी। एक-दूसरे से अलग हुए। खून से लथपथ चेहरों से देर तक वे मरे बकरे को ताकते रहे। आखिर गंजा भाई बोला :

"इसका चमड़ा निकाल लेना चाहिए।"

दाढ़ीवाला फौरन बोला : "खाल मैं निकालूंगा !"

दूसरे ने कहा : "तुम क्यों निकालोगे ?" गुस्से से उसकी गंजी खोपड़ी लाल पड़ गयी थी।

"बकरा मेरा है और खाल भी मेरी है।"

"तेरी नहीं, मेरी है !"

इससे पहले कि खोजा नसरुद्दीन कुछ कह पाये, दोनों भाई फिर फुफकारते हुए एक-दूसरे से गुंथकर जमीन पर लोटने लगे। एक लमहे तक एक भाई की मुट्ठी में काले बालों का एक गुच्छा दिखायी दिया। खोजा नसरुद्दीन ने अन्दाज लगाया कि बड़े भाई की दाढ़ी का अच्छा खासा हिस्सा नुच गया है।

नाउम्मीदी से सिर हिलाकर वह आगे बढ़ गया है।

अपनी पेटी में एक चिमटा खोंसे उसे एक लुहार आता दिखायी दिया। यह वही लुहार था जिसने एक दिन पहले तालाब के किनारे खोजा नसरुद्दीन से बातचीत की थी।

खुशी से खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया : "लुहार भाई ! लुहार भाई ! सलाम ! हम फिर मिल गये, हालांकि मैं अब तक अपना कौल पूरा नहीं कर पाया हूं। तुम यहां क्या कर रहे हो ? क्या तुम भी अमीर से इंसाफ मांगने आये हो ?"

गमगीन आवाज में कुम्हार बोला : "ऐसे इन्साफ से क्या फायदा ? मैं लुहारों की कतार से एक शिकायत लेकर आया हूं। हमें पन्द्रह सिपाही मिले हैं,

जिन्हें तीन महीने तक खिलाने की जिम्मेदारी हम पर थी। एक साल गुजर चुका है। वे अब भी हमारे सिर पर सवार हैं। इससे हमें बड़ा नुकसान हो रहा है।"

"और मैं रंगरेजों की गली से आया हूं," एक दूसरा आदमी बोल उठा। उसके हाथों पर रंगों के दाग थे। हर रोज सवेरे से शाम तक जहरीला धुंआ सूंघते-सूंघते उसका चेहरा हरे रंग का हो गया था। "मैं भी ऐसी ही शिकायत लेकर आया हूं। हमें पच्चीस सिपाही खिलाने को मिले हैं। हमारा कारोबार चौपट हो गया और मुनाफा घट गया है। शायद अमीर हमारे ऊपर रहम करें। शायद हमें इस बोझ से छुटकारा दिला दें।"

खोजा नसरुद्दीन बोला : "तुम लोगों को बेचारे सिपाही इतने नापसन्द क्यों हैं? वे बुखारा के सबसे ज्यादा खराब और लालची बाशिन्दे तो हैं नहीं। तुम अमीर, वजीर और अफसरों को पालते हो। दो हजार मुल्लाओं और छः हजार दरवेशों को खिलाते-पिलाते हो। फिर बेचारे सिपाही ही क्यों भूखे रहें? क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी : जहां एक सियार को खाना मिलता है, वहीं फौरन दस सियार आ जमा होते हैं। ऐ लुहार और रंगरेज भाई! तुम्हारी नाराजी मेरी समझ में नहीं आयी।"

"इतने जोर से न बोलो।" चारों तरफ देखते हुए लुहार बोला।

रंगरेज खोजा नसरुद्दीन की तरफ तम्बीह की नजर से देखते हुए बोला :

"ऐ मुसाफिर! तुम खतरनाक आदमी हो और तुम्हारी बात में नेकी नहीं है। हमारे अमीर तो बड़े दानिशमन्द और फैयाज..."

उसने बात अधूरी ही छोड़ दी, क्योंकि तभी ढोल और तुरही बजने की आवाजें आने लगीं। महल के पीतल जड़े फाटक धीरे-धीरे खुलने लगे और पूरे खीमे में एकदम चहल-पहल मच गयी।

हर तरफ से "अमीर! अमीर!" की आवाजें आने लगीं। महल की तरफ बढ़कर लोग भीड़ लगाने लगे ताकि अपने शाह की शक्ल देख सकें। खोजा नसरुद्दीन ने आगे की कतार में एक सहूलियत की जगह तलाश कर ली।

फाटक से सबसे पहले नकीब दौड़ते हुए निकले। वे चिल्ला रहे थे : "अमीर के लिए रास्ता खाली करो। आला हजरत अमीर के लिए रास्ता खाली करो! अमीरुल मोमनीन मुसलमानों के रहबर के लिए जगह खाली करो!" इनके पीछे सिपाही निकले जो अपनी लाठियों से दाहिने-बायें उन लोगों के सिरों व पीठों पर चोट कर रहे थे जो बदकिस्मती से फाटक के बिलकुल पास आकर जमा हो गये थे। भीड़ में एक चौड़ा रास्ता बन गया। ढोल, बांसुरी, तंबूरे और कराने लिये मीरासी निकले। उनके पीछे कीमती जवाहरात जड़ी मखमली म्यानों में तलवारें लटकाये, सुनहरे काम के रेशमी कपड़े पहने, नौकर-चाकर

आये । फिर ऊंची कलंगियों से सजे दो हाथी निकले । सबसे आखीर में बहुत सजावटदार एक गाड़ी आयी । इसमें जरी के चंदोवे के भीतर खुद अजीम अमीर आराम से लेटे हुए थे ।

यह नजारा देखते ही भीड़ में एक दबी-दबी सी फुसफुसाहट उठी, मानो बाजार में हवा का एक झोंका आ गया हो, और अमीर के हुक्म के मुताबिक सब लोग जमीन पर लेट गये । अमीर का हुक्म था : सब वफादार रियाया आजिजी से पेश आये और कभी ऊंची नजर करके न देखे । दौड़-दौड़कर नौकर सवारी के सामने कालीन बिछा रहे थे । गाड़ी के एक तरफ महल का पंखा झलनेवाला अपने कंधे पर घोड़े की दुम के बालों का चंवर रखे चल रहा था । दूसरी तरफ अमीर का हुक्केवाला था जो बहुत संजीदगी और अहमियत से सोने का तुर्की हुक्का लिए साथ-साथ चल रहा था ।

जुलूस में सबसे पीछे पीतल की टोपियां पहने, ढाल, भाले, कमानें और नंगी तलवारें लिए सिपाही चल रहे थे । सबसे पीछे थीं दो छोटी तोपें । दोपहर का सूरज इस पूरे तमाशे पर चमक रहा था । जवाहरात दमक रहे थे । सोने और चांदी के जेवर चमचमा रहे थे । पीतल के टोप और ढालें चमचम कर रही थीं । नंगी तलवारों के सफेद हिस्से चकाचौंध फैला रहे थे ... लेकिन जमीन पर लेटी भीड़ में न जवाहरात दमक रहे थे, न चाँदी, न सोना — तांबा तक नहीं । सूरज की रोशनी में चमककर दिल खुश करने के लिए वहां कुछ भी नहीं था । वहां थी बस भूख, गरीबी और फटे चीथड़े । और अमीर का शानदार जुलूस जब गन्दे, जाहिल, दबे-पिसे और फटेहाल लोगों के समन्दर के बीच से गुजरा, तो ऐसा लग रहा था मानो किसी गन्दे चीथड़े में सोने का पतला डोरा डाल दिया गया हो ।

ऊंचे कालीनदार तख्त के चारों तरफ — जहां बैठकर अमीर अपने वफादार लोगों पर मेहरबानियां करनेवाले थे — पहले से ही पहरेदार तैनात थे । सजा देनेवाले जल्लाद सामने की जगह अमीर का हुक्म तामील करने की तैयारियां कर रहे थे । बेतों की लचक और डंडों की मजबूती आजमायी जा रही थी । कई आदमी नांदों में कच्ची खाल के दुमवाले चाबुक भिगो रहे थे, फांसियां खड़ी कर रहे थे, कुल्हाड़ियां तेज कर रहे थे और जमीन में सूलियां गाड़ रहे थे । जल्लादों का अफसर महल के पहरेदारों का अफसर था । इसका नाम था अर्सलां बेग । अपनी बेरहमी के लिए वह बुखारा से बाहर दूर तक बदनाम था । वह काले बालों और मोटे जिस्मवाला खूबसूरत शख्स था । उसकी दाढ़ी उसका सीना ढके हुए थी और उसके पेट तक पहुंच रही थी । उसकी आवाज ऊंट की बलबलाहट जैसी थी ।

दिल खोलकर लोगों पर लात घूंसों की बौछार करने के बाद वह एकाएक झुक गया और आजिजी से उसका बदन कांपने लगा।

धीरे-धीरे हिलती-डुलती सवारी तख्त पर चढ़ी और अमीर ने चंदोवे के पर्दे हटाकर अपनी सूरत लोगों को दिखायी।

: १० :

आखिर अमीर उतने खूबसूरत साबित न हुए, जितनी कि शोहरत थी। उनका चेहरा, दरबार के शायर जिसकी मिसाल हमेशा पूरे चांद की चमक से देते थे, जरूरत से ज्यादा पके, फदफदे, खरबूजे से मिलता था। वजीरों के सहारे वह सवारी से उतरे और सोने से मढ़े सिंहासन पर जा बैठे। खोजा नसरुद्दीन ने देखा कि दरबारी शायरों के कहने के माफिक उनका जिस्म नाजुक दरख्त की पतली शाख की तरह हरगिज नहीं था। उनका बदन मोटा और भारी था। बाहें छोटी थीं। पैर इतने टेढ़े थे कि खलअत भी उनके बदनुमापन को नहीं छिपा पाती थी।

वजीर उनकी दाहिनी तरफ खड़े हुए और मुल्ला व अफसर बायीं तरफ। मुहर्रिर अपनी बहियां और दावातें लिए नीचे की ओर बैठे। तख्त के पीछे आधा दायरा बनाकर दरबारी शायर खड़े हो गये और अमीर की गरदन पर बड़ी पाकीजगी से ताकने लगे। चंवर डुलानेवाला चंवर डुलाने लगा। हुक्केवाले ने सोने की निगाली अपने मालिक के होठों के बीच रख दी। तख्त के चारों तरफ की भीड़ सांस रोके खड़ी थी। खोजा नसरुद्दीन रकाबों पर ऊंचा उठ गया, गरदन आगे बढ़ायी और कान लगाकर सुनने लगा।

नींद में भरे अमीर ने सिर हिलाया। पहरेदारों ने बीच में जगह की और गंजे व दढ़ियल भाई, जो आखिरकार मौका पा ही गये थे, आगे बढ़े। वे घुटनों के बल घिसटकर तख्त तक पहुंचे और जमीन तक लटकते हुए कालीन को उन्होंने चूमा।

वजीरेआजम बख्तियार ने हुक्म दिया : "उठो!"

दोनों भाई उठ खड़े हुए। अपनी खलअतों से धूल झाड़ने की उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी। डर के मारे उनकी जुबान बन्द थी और उनकी आवाज मिमिया रही थी। उनकी बोली समझ में नहीं आ रही थी। तजरबेकार वजीर बख्तियार ने एक नजर में ही सारी बात समझ ली।

बेचैनी से उन दोनों भाइयों को टोककर उसने पूछा : "तुम्हारा बकरा कहां है?"

गंजे भाई ने जवाब दिया :

"ऐ खानदानी वजीर ! वह मर गया। अल्लाह ने उसे अपने पास बुला लिया। लेकिन उसका चमड़ा हम में से किसे मिलेगा ?"

बख्तियार अमीर की तरफ मुड़ा।

"ऐ शाहों में सबसे अक्लमन्द अमीर ! क्या फैसला होगा ?"

अमीर ने जम्हाई ली और बिलकुल लापरवाही से आंखें बन्द कर लीं। बख्तियार ने बड़ी आजिजी से सफेद साफे के साथ अपना सिर झुकाया।

"मेरे मालिक ! फैसला आपके चेहरे से जाहिर है !" भाइयों की तरफ मुड़कर वह बोला : "सुनो !"

दोनो भाई घुटनों के बल बैठ गये। वे अमीर के रहम, इंसाफ और दानिशमन्दी के लिए उनका शुक्रिया अदा करने को तैयार थे। बख्तियार ने फैसला सुनाया और मुहर्रिर बड़े-बड़े रजिस्टरों में उसे लिखते हुए कलमें घसीटने लगे।

"अमीरुल मोमनीन और आफताबे आलम हमारे अमीरेआजम ने—अल्लाह का करम उन पर रहे—फैसला करने की मेहरबानी की है कि अगर बकरा अल्लाह के पास चला गया है तो इंसाफ कहता है कि उसका चमड़ा इस दुनिया में अल्लाह के जानशीन खलीफा यानी खुद अमीरेआजम के पास जाय। इसलिए बकरे की खाल निकाली जायगी, उसे सुखाया और कमाया जायगा और महल में लाकर शाही खजाने में जमा कर दिया जायगा !"

भाइयों ने घबड़ाकर एक-दूसरे की तरफ देखा। वहां मौजूद भीड़ में हलकी भनभनाहट छा गयी। बख्तियार साफ और ऊंची आवाज में कहता गया :

"इसके अलावा फरियादियों को दो सौ तंके कानूनी कीमत, डेढ़ सौ तंके महल टैक्स और पचास तंके मुहर्रिरों के खर्च की मदों में देने होंगे और मसजिदों की अराइश के लिए अतिया अदा करना होगा। यह सब नकद, कपड़ों या दूसरी जायदाद की शक्ल में फौरन वसूल किया जाय।"

उसने बोलना खत्म ही किया था कि अर्सलां बेग के इशारे पर सिपाही उन दोनो भाइयों पर टूट पड़े, उनके पटके खोल डाले, उनकी जेबें खाली कर लीं, खलअतें फाड़ डालीं, जूते उतार लिए और उन्हें अधनंगा करके नंगे पांव खदेड़ दिया।

पूरे मामले में मुश्किल से एक मिनट लगा होगा। फैसला सुनाये जाते ही दरबारी आलिमों और शायरों ने तारीफ में कसीदे पढ़ने शुरू कर दिये :

"ए दानिशमन्द अमीर ! ए दानाओं के दाना ! दानाओं की दानाई से दाना अमीर ! ए दानाओं में सबसे बड़े दाना अमीर !"

बड़ी देर तक वे इसी तरह गाते रहे—अपनी गरदनें तख्त की ओर बढ़ाये हुए। हर एक इस कोशिश में था कि उसकी आवाज अमीर सुन ले और दूसरों

की आवाज न सुने। इस बीच तख्त के चारों तरफ जमा भीड़, चुपचाप दोनों भाइयों पर रहम की निगाह डाले देखती खड़ी रही।

उन दोनों भाइयों से, जो एक-दूसरे के गले में बांहें डाले जोर-जोर से रो रहे थे, खोजा नसरुद्दीन बड़ी नेक आवाज में बोला : "कोई फिक्र नहीं दोस्तो। आखिर बाजार में छः हफ्ते बैठकर तुम लोगों ने वक्त खराब नहीं किया। तुम लोगों को ठीक और बारहम फैसला मिला है—क्योंकि हर एक जानता है कि सारी दुनिया में हमारे अमीर से ज्यादा मेहरबान और दानिशमन्द दूसरा कोई शख्स नहीं है। अगर कोई इस बात में शक करता है..." इतना कहकर उसने अपने पड़ोस में खड़े लोगों की ओर देखा, "तो सिपाही बुलाने में देर न लगेगी। और वे ? अरे, वे उस नापाक दहरिये को जल्लादों के सुपुर्द कर देंगे और जल्लाद बहुत आसानी से उसकी गलती उसे समझा देंगे। ए दोनो भाइयो ! अमन के साथ घर जाओ। अगर आगे कभी किसी मुर्गे के बारे में तुम्हारा झगड़ा हो तो फिर अमीर की अदालत में आना। लेकिन आने से पहले इस बार अपने खेत, मकान, और अंगूर के बागीचे बेचना न भूलना, वर्ना तुम लोग टैक्स अदा न कर पायोगे। और, इसका मतलब होगा अमीर के खजाने को टोटा, जिसका खयाल भी वफादार रियाया की बरदाश्त के बाहर होना चाहिए।"

आठ-आठ आंसू रोते हुए दोनों भाई बोले : "इससे तो बेहतर होता कि बकरे के साथ हम लोग भी मर जाते।"

खोजा नसरुद्दीन ने पूछा : "क्या तुम समझते हो कि बहिश्त में काफी बेवकूफ लोग नहीं हैं ? मातबर आदमियों ने मुझे बताया है कि आजकल जन्नत और दोजख, दोनों जगह, बेवकूफ भरे पड़े हैं और वहां और ज्यादा बेवकूफों के लिए गुंजाइश नहीं है। भाइयो, मुझे साफ नजर आता है कि तुम लोगों के लिए मौत लिखी ही नहीं है...और अब यहां से रफूचक्कर होने में देर न करो, क्योंकि सिपाही इधर ही देखने लगे हैं और तुम्हारी तरह अमर होने का दावा मैं अपने लिए नहीं कर सकता।"

जोर-जोर से रोते, अपना मुंह नोचते, अपने सिरों पर सड़क की पीली धूल मलते, दोनों भाई वहां से चल दिये।

अब लुहार अमीर के सामने आया। उसने चिड़चिड़ी और भर्रायी आवाज में अपनी शिकायत सुनायी। वजीरेआजम बख्तियार अमीर की तरफ मुड़ा :

"मालिक ! आपका क्या फैसला है ?"

अमीर सो रहे थे और अपने खुले मुंह से हल्के खर्राटे ले रहे थे। बख्तियार शरमाया नहीं।

"मालिक ! फैसला मैं आपके पुरजलाल चेहरे से पढ़ रहा हूं।"

संजीदगी से उसने ऐलान किया :

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम ! रहम दिल और मेहरबान अल्लाह के नाम पर, मुसलमानों के रहनुमा और हमारे मालिक ने अपनी रियाया की लगातार फिक्र करने में, अपनी खिदमत में लगे वफादार सिपाहियों को रखने और खिलाने-पिलाने की इज्जत बख्शकर रियाया पर बड़ी मेहरबानी की है। बुखारा शरीफ के बाशिन्दों को यह रियायत देकर उन्होंने हर दिन और हर घंटे उन्हें अपने अमीर का अहसान मानने का शानदार मौका दिया है। ऐसी इज्जत हमारे पड़ोस के और मुल्कों के बाशिन्दों को नहीं बख्शी गयी है। इस सब के बावजूद लुहारों ने भलमनसाहत व पाकीजगी में कोई नाम नहीं कमाया। इसके बदले यूसुफ लुहार ने गुनाह करनेवालों के लिए बालों का बना पुल व दूसरी दुनिया की तकलीफें भूलकर अहसान फरामोशी में जुबान खोलने की गुस्ताखी की है। इसके अलावा उसने हमारे मालिक और रहनुमा आका अमीर वालाजाह, जिनकी रोशनी सूरज को भी ढंक लेती है, उनके कदमों में यह शिकायत पेश करने की गुस्ताखी की है।

"इसलिए हमारे अमीर वालाजाह ने बहुत मेहरबानी करके इस फैसले का ऐलान किया है: यूसुफ लुहार को दो-सौ कोड़े लगाये जायें। बेशक इससे उसे पछतावा होगा जिसके बिना जन्नत के फाटक खुलने के लिए वह बेकार इन्तजार करता। जहां तक लुहार टोले का ताल्लुक है ... अमीर वालाजाह उन पर फिर से सिपाही रखने और खिलाने-पिलाने की जिम्मेदारी डालने की मेहरबानी करते हैं और हुक्म देते हैं कि बीस सिपाही वहां और भेज दिये जायें। अब वे हर घंटे और हर दिन अपने अमीर के करम और दानिशमन्दी की तारीफ करने के बढ़िया मौके से महरूम न रहेंगे। यही उनका फैसला है। अल्लाह उन्हें लम्बी जिन्दगी दे, ताकि उनकी वफादार रियाया की भलाई हो सके।"

दरबारी चापलूसों का गीत एकदम फिर शुरू हो गया और अमीर की तरीफें गायी जाने लगीं। इस बीच सिपाहियों ने यूसुफ लुहार को पकड़ लिया और जल्लादों के पास ले गये। डरावने ढंग से हंसते हुए जल्लाद वहां पहले से ही अपने भारी कोड़ों का वजन आजमा रहे थे।

लुहार पेट के बल चटाई पर लेट गया। हवा में कोड़ा सनसनाया और नीचे को गिरा। लुहार की पीठ खून से रंग गयी।

जल्लाद उसे बेरहमी से पीटते रहे। उसकी खाल के उन्होंने चीथड़े उड़ा दिये। गोश्त और हड्डी तक को काट डाला। लेकिन लुहार न तो कराहा, न चीखा। वह जब उठा तो उसके होठों पर काला फेन बह रहा था। सजा पाते वक्त अपने दांत उसने जमीन में गड़ो दिये थे, ताकि चीखे-चिल्लाये नहीं।

खोजा नसरुद्दीन बोला : "नहीं! लुहार यह आसानी से नहीं भूलेगा।

मरते वक्त तक वह अमीर की मेहरबानियाँ याद रखेगा। रंगसाज ! तुम किस बात का इंतजार कर रहे हो ? जाओ, जाओ, अब तुम्हारी बारी है।"

रंगरेज ने एक बार थूका। फिर, बिना पीछे देखे, भीड़ चीरकर निकल भागा।

वजीरेआजम ने दूसरे मामले भी निपटाये और हर मामले में अमीर के खजाने के लिए मुनाफा कमाना न भूला। इसी सिफत की वजह से वह दूसरे अफसरों से ज्यादा कामयाब था।

जल्लाद बिना दम लिये बराबर काम कर रहे थे। उनकी तरफ से चीखें और चिल्लाहट आ रही थीं। वजीरेआजम ने जल्लादों के पास कई नये गुनहगारों को भेजा। एक लम्बी कतार वहाँ इन्तजार कर रही थी। इसमें बूढ़े आदमी थे, औरतें थीं और दस साल का एक बच्चा था जिसे अमीर के महल के सामने की जमीन को बगावतन गीली कर देने के जुर्म में सजा मिली थी। वह रो रहा था और कांप रहा और चेहरे पर आंसू मल रहा था। उसे देखकर खोजा नसरुद्दीन का दिल गुस्से और रहम से भर उठा।

वह जोर से बोला: "वाकई यह लड़का बड़ा खतरनाक मुजरिम है। ऐसे दुश्मनों से अपने तख्त की हिफाजत करने में अमीर की दूरंदेशी की जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है। ऐसे लोग ज्यादा खतरनाक हैं क्योंकि वे खतरनाक साबित होनेवाले खयालों को कमसिनी में छिपाये रहते हैं। आज ही मैंने एक और मुजरिम देखा जो इससे भी ज्यादा बुरा और खतरनाक था। यह दूसरा मुजरिम—आप यकीन नहीं मानेंगे—पहले से भी ज्यादा गलत काम कर रहा था और वह भी महल की दीवाल के ठीक नीचे। ऐसी गुस्ताखी के लिए जो भी सजा दी जाती, कम थी। उसे तो सूली पर चढ़ा देना चाहिए था, हालांकि मुझे डर है कि सूली उसके आरपार वैसे ही गुजर जाती जैसे सीखचा चूजे में होकर गुजर जाता है, क्योंकि यह लड़का सिर्फ चार साल का था। खैर, जैसा कि मैंने कहा, उसकी उम्र कोई बहाना नहीं है। हमारे बुखारे में खतरनाक बुराइयों ने किस कदर अपने घोंसले बना लिये हैं, यह देखकर ही मेरा दिल उदासी से भर उठता है। तब भी हमें यकीन है कि अमीर के सिपाहियों और जल्लादों की मदद से सब बुराइयां जल्दी ही दूर की जा सकेंगी और उनकी जगह नेकी ले लेगी।"

खोजा नसरुद्दीन वैसे ही बोल रहा था जैसे मुल्ला नसीहत देता है। उस की आवाज और अल्फाज दोनों ही ऊपर से ठीक मालूम होते थे। पर, जिनके कान थे वे सुन और समझ रहे थे और अपनी दाढ़ियों में कड़वाहट भरी मुस्कान छिपा रहे थे।

: ११ :

यकायक खोजा नसरुद्दीन ने देखा कि भीड़ छंट गयी है। बहुत से लोग जल्दी से खिसक गये हैं और कुछ तो भाग भी रहे हैं।

बेचैनी से उसने सोचा : "कहीं सिपाही मेरे लिए ही तो नहीं बढ़े आ रहे ?"

जब उसने पास आते सूदखोर को देखा तो वह फौरन समझ गया। उसके पीछे सिपाहियों से घिरा, मट्टी से सनी खलअत पहने, एक दुबला-पतला सफेद दाढ़ीवाला बूढ़ा आ रहा था और उसके साथ थी बुरका ओढ़े एक औरत—या जैसा कि खोजा नसरुद्दीन की तजरबेकार आंखों ने उसकी चाल से भांप लिया, एक जवान लड़की।

अपनी एक आंख से लोगों को ताकते हुए सूदखोर टर्राया : "ज़ाकिर, ज़ूरा, सईद और सादिक कहां हैं ?" उसकी दूसरी आंख बन्द थी। वह हिल-डुल भी नहीं रही थी। उस पर सफेद जाला छाया हुआ था। "अभी तो वे यहीं थे। मैंने दूर से उन्हें देखा भी था। उनके कर्ज अदा करने का वक्त आ रहा है। उनका भागकर छिपना बेकार है।"

अपने कूबड़ के बोझ से लंगड़ाता हुआ वह आगे बढ़ा।

लोग आपस में बातें करने लगे।

"देखो तो यह बूढ़ा मकड़ा नयाज कुम्हार और उसकी बेटी को अमीर के सामने खींच लाया है।"

"बेचारे कुम्हार को उसने एक दिन की भी मोहलत न दी।"

"खुदा उसे गारत करे ! मुझे भी एक पखवारे बाद अपना कर्ज अदा करना है।"

"मेरा तो एक हफ्ते बाद ही अदा होना है।"

"देखा न तुमने ? जब वह आता है तो लोग कैसे भागकर छिप जाते हैं—मानो वह हैजा या कोढ़ लेकर आ रहा हो।"

"सूदखोर तो कोढ़ी से भी बदतर है।"

खोजा नसरुद्दीन का दिल अफसोस से मसोस उठा। उसने अपनी कसम दोहरायी :

"मैं इसको उसी तालाब में डुबोकर दम लूंगा।"

अर्सलां बेग ने सूदखोर को अपनी बारी से पहले ही आ जाने दिया। उसके पीछे कुम्हार और उसकी बेटी आयी। वे घुटनों के बल गिर पड़े और कालीन के कोने को चूमने लगे।

वजीरेआजम ने खुशमिजाजी से कहा : "ऐ दानिशमन्द जाफर ! अस्स-लामालेकुम ! कहो, किस काम से आये हो ? अमीरेआजम से अब अपनी बात कहो।"

जाफर ने अमीर की तरफ मुखातिब होकर कहना शुरू किया। लेकिन, अमीर एक बार सिर हिलाकर फिर खर्राटे भरने लगा। "ए शाहंशाहेआजम ! ऐ मेरे आका ! मैं आपसे इंसाफ मांगने आया हूं। यह शख्स जिसका नाम नयाज है और जिसका पेशा कुम्हारगीरी है, मेरे सौ तंके चाहता है और उन पर तीन सौ रुपये का सूद है। कर्ज आज सबेरे अदा होना था। लेकिन कुम्हार ने अभी तक मुझे कुछ नहीं दिया। ऐ दुनिया के सूरज ! ऐ दानिशमन्द अमीर ! मुझे इंसाफ चाहिए !"

मुहर्रिर ने सूदखोर की शिकायत खाते में दर्ज की। वजीर कुम्हार की तरफ मुड़ा : "कुम्हार ! अमीरेआजम को जवाब दो ! तुम यह-कर्ज कुबूल करते हो ? शायद दिन और घंटों पर तुम्हें ऐतराज हो ?"

कुम्हार ने दबी आवाज में जवाब दिया : "नहीं, नहीं ! ऐ सबसे ज्यादा इंसाफपसन्द और अक्लमन्द वजीर ! मैं किसी बात पर एतराज नहीं करता — न कर्ज पर, न दिन पर, न घंटों पर। मैं सिर्फ एक महीने की मोहलत चाहता हूं। अपने अमीर के रहम और फैयाजी की मैं भीख मांगता हूं।"

बख्तियार बोला : "मालिक ! मुझे वह फैसला सुनाने की इजाजत दें, जो मैंने आपके चेहरे पर पढ़ा है। मेहरबान और रहमदिल अल्लाह के नाम पर फैसला : कानून के मुताबिक जो वक्त पर अपना कर्ज अदा नहीं करता वह अपने खानदान के समेत कर्ज देनेवाले का गुलाम हो जाता है और तब तक गुलामी में रहता है, जब तक वह पूरे वक्त के, गुलामी के वक्त के भी, सूद के साथ कर्ज नहीं चुका देता।"

कुम्हार का सिर नीचे झुक गया और वह कांपने लगा। भीड़ में बहुत से लोगों ने गहरी सांसें भरीं। छिपाने के लिए उन्होंने अपने मुंह मोड़ लिए। लड़की के कंधे कांपने लगे। वह बुरके के भीतर सिसकियां भर रही थी। खोजा नसरुद्दीन ने मन ही मन सौ-वीं बार दोहराया :

"गरीबों को सतानेवाला यह बेरहम शख्स डूबकर ही मरेगा।"

बख्तियार अपनी आवाज ऊंची करता हुआ बोला : "लेकिन हमारे मालिक की फैयाजी और रहमदिली की कोई हद नहीं है।"

भीड़ में सन्नाटा छा गया। बूढ़े कुम्हार ने सिर उठाया और उम्मीद से उसका चेहरा चमक उठा।

"हालांकि कर्ज अभी अदा होना है, लेकिन नयाज कुम्हार को मोहलत दी जाती है — एक घंटे की मोहलत। अगर इस एक घंटे के खत्म होने तक

नयाज कुम्हार सूद के साथ कर्ज अदा न कर दे और इस तरह इस्लाम के उसूलों की तौहीन करे तो, जैसा कि कहा जा चुका है, कानून लागू होगा। कुम्हार अब जा सकता है। अमीर की रहमत उस पर बरकरार रहे।"

बख्तियार चुप हुआ और चापलूस तख्त के पीछे इकट्ठे होकर मक्खियों की तरह भनभनाने लगे : "ऐ इंसाफपसन्द अमीर! ऐ दानिशमन्द और मेहरबान अमीर! ऐ फैयाज अमीर! ऐ इस दुनिया की जीनत और आसमान की अजमत हाकिम आदिल अमीर!"

इस बार चापलूसों ने इतने जोर से और एक-दूसरे से बढ़चढ़कर अमीर की तारीफ गायी कि अमीर की नींद खुल गयी और उन्होंने नाराज होकर इन लोगों से मुंह बन्द करने को कहा। वे खामोश हो गये। मैदान में इकट्ठे लोग भी खामोश थे। यकायक कान के पर्दे फाड़नेवाली रेंक ने सन्नाटा तोड़ दिया।

यह गधा खोजा नसरुद्दीन का ही था। या तो वह एक जगह खड़ा-खड़ा थक गया था या उसे लम्बे कानोंवाला अपना कोई भाई-बन्द दिखायी पड़ गया था जिसका वह इस्तकबाल कर रहा था। असलियत यह है कि वह दुम उठाकर, थूथनी आगे बढ़ाकर, अपने पीले दांत दिखाता हुआ बड़े जोर से रेंका। बहरा बना देनेवाली ऐसी आवाज में रेंका, जिस पर कोई काबू न था। अगर वह एक लमहे के लिए चुप भी होता तो सिर्फ सांस लेने के लिए। फौरन बाद ही वह फिर अपने जबड़े और ज्यादा खोलता और और भी ज्यादा जोर से रेंकने लगता।

अमीर ने अपने कान बन्द कर लिये। सिपाही भीड़ पर टूट पड़े। लेकिन तब तक खोजा नसरुद्दीन दूर निकल चुका था। वह अपने अड़ियल गधे को घसीटता जाता और जोर-जोर से उसे बुरा-भला कहता जाता :

"अबे गधे! लानत है तुझ पर! तू इतना खुश किस बात पर है? क्या तू अमीर की रहमत और फैयाजी की तारीफ़ इतना शोरगुल मचाये बिना नहीं कर सकता? शायद तू इन कोशिशों से दरबार का खास चापलूस बनने की उम्मीद कर रहा है!"

उसकी बातों पर भीड़ ठहाका मारकर हंस पड़ती और उसके लिए जगह कर देती। उसके जाते ही जगह फिर भर जाती और सिपाही उसके पास न पहुंच पाते। अगर वे खोजा नसरुद्दीन को पकड़ लेते तो इस गुस्ताखी से अमन में खलल डालने के लिए उसके कोड़े लगाते और उसका गधा जब्त कर लेते।

: १२ :

जहां इंसाफ हो रहा था वह जगह छोड़कर सूदखोर जाफर, नयाज कुम्हार और उसकी बेटी गुलजान जब आगे बढ़े तो जाफर कहने लगा : "ऐ मेरी हसीना! फैसला हो चुका है और अब तुम पूरी तरह मेरे कब्जे में हो! जब

से धोखे से एक बार तुम्हें देख लिया है, मेरे दिल और दिमाग को चैन नहीं है। मैं सो नहीं सकता। मुझे जल्दी अपना मुखड़ा दिखा दो। आज ठीक एक घंटे बाद तुम मेरे घर में दाखिल होगी। अगर तुम मुझ से नरमी से बरताव करोगी तो मैं तुम्हारे वालिद को हल्का काम और बढ़िया खाना दूंगा; पर अगर तुमने जिद की तो मैं अपनी आंखों की रोशनी की कसम खाकर कहता हूं कि मैं उसे कच्ची फलियां खाने को दूंगा, उससे पत्थर ढुलवाऊंगा और उसे खीवा में बेच दूंगा और तुम तो जानती ही हो कि खीवा के लोग अपने गुलामों के साथ बहुत बेरहमी का बरताव करते हैं। तुम जिद न करो, प्यारी गुलजान ! मुझे अपना चेहरा दिखा दो !"

उसकी टेढ़ी-मेढ़ी पुरहवस उंगलियों ने गुलजान का नकाब थोड़ा सा उठाया। गुस्से से लड़की ने जाफर का हाथ झटक दिया। गुलजान का चेहरा सिर्फ एक लमहे के लिए ही खुला था। लेकिन खोजा नसरुद्दीन के लिए, जो उधर से अपने गधे पर गुजर रहा था, इतना ही काफी था। लड़की इतनी खूबसूरत थी कि खोजा नसरुद्दीन सुध-बुध खो बैठा। उसकी आंखों के सामने दुनिया धुंधली पड़ गयी। उसका दिल थम गया। वह पीला पड़ गया। वह जीन में लड़खड़ा गया और घबड़ाहट में हाथों से आंखें बन्द कर लीं।

मुहब्बत ने उस पर बिजली की मार की थी।

उसे सम्हलने में कुछ वक्त लगा।

वह अपने आप गुस्से से सोचने लगा : "ओफ यह लंगड़ा, कुबड़ा, काना बन्दर ! यह इस हसीना को चाहने की गुस्ताखी करता है ? ऐसी गुस्ताखी आज तक दुनिआ में कभी देखी नहीं गयी ! हाय हाय ! मैंने कल उसे पानी से निकाला ही क्यों ? अब मेरी यह हरकत मेरे ही खिलाफ पड़ गयी। लेकिन देखा जायगा। अबे गन्दे सूदखोर ! तू अभी कुम्हार और उसकी बेटी का मालिक नहीं बना है। उन्हें अभी एक घंटे की मोहलत मिली है और खोजा नसरुद्दीन एक घंटे में वह कर दिखायगा जो औरों से साल भर में भी न हो सके।"

तभी सूदखोर ने जेब से लकड़ी की एक धूप-घड़ी निकालकर वक्त देखा : "ए कुम्हार ! मेरे लिए इसी पेड़ तले इन्तजार करना ! मैं एक घंटे में वापस लौट आऊंगा। और हां, छिपने की कोशिश न करना क्योंकि मैं तुम्हें समन्दर की तह से भी खोज निकालूंगा और तुम्हारे साथ भगोड़े गुलाम जैसा बरताव करूंगा। और तुम हसीन गुलजान ! मेरी बात पर गौर करना ! तुम्हारे बाप की तकदीर इस बात पर मुनहसर है कि तुम मुझ से कैसा बरताव करती हो।"

अपने बदनुमा चेहरे पर तस्कीन की मुस्कान बिखेरते हुए वह अपनी नयी रखैल के लिए जेवर खरीदने के लिए सर्राफों के टोले की ओर चल पड़ा।

गम का मारा कुम्हार अपनी बेटी के साथ सड़क के किनारे पेड़ के साये में रुक गया।

खोजा नसरुद्दीन उनके पास पहुंचा।

"कुम्हार भाई ! मैंने फैसला सुन लिया है। तुम बहुत मुसीबत में हो। लेकिन, शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं।"

कुम्हार ने नाउम्मीदी से कहा : "नहीं, मेहरबान ! मैं तुम्हारे पैबन्द लगे कपड़ों से देख रहा हूं कि तुम रईस नहीं हो। मुझे तो चार सौ तंके चाहिए ! कोई रईस मेरा दोस्त नहीं। मेरे सभी दोस्त गरीब हैं और टैक्सों व वसूलियों से बरबाद हो चुके है।"

खोजा नसरुद्दीन बोला : "बुखारा में मेरा भी कोई रईस दोस्त नहीं है। तो भी मैं यह रकम इकट्ठी करने की कोशिश करूंगा।"

सिर हिलाकर मायूसी से मुस्कराते हुए बूढ़ा बोला : "एक घंटे में चार सौ तंके इकट्ठे करोगे ? ऐ अजनबी ! तुम वाकई मेरा मजाक उड़ा रहे हो। इसमें तो सिर्फ खोजा नसरुद्दीन ही कामयाब हो सकता था।"

अपनी बाहें अपने बाप के गले में डालकर रोती हुई गुलजान बोली : "ऐ अजनबी ! हमें बचा लो, हमें बचा लो।"

खोजा नसरुद्दीन ने उसकी ओर देखा। उसने देखा कि उसके हाथ बड़े सुडौल हैं। लड़की ने भी खोजा नसरुद्दीन की ओर देखा और उसके नकाब के भीतर से उसकी आंखों की पानीदार चमक उसे दिखायी दी। इस एक नजर में दुवा और उम्मीद भरी हुई थी। खोजा नसरुद्दीन का खून तेजी से दौड़ने लगा। उसकी नसों में आग सी लग गयी। उसकी मुहब्बत हजार-गुनी बढ़ गयी। उसने कुम्हार से कहा :

"बुजुर्गवार ! आप यहीं ठहरें और मेरा इन्तजार करें। मैं इंसानों में सबसे नाचीज और हकीर हूंगा अगर सूदखोर की वापसी तक चार सौ तंके न इकट्ठे कर सका।"

वह कूदकर अपने गधे पर सवार हुआ और बाजार की भीड़ में गायब हो गया।

: १३ :

सबेरे के मुकाबले बाजार में इस वक्त भीड़ भी कम थी और शोरगुल भी कम था। खरीद-फरोख्त जिस वक्त सबसे तेजी पर थी उस वक्त हर कोई दौड़ रहा था, चिल्ला रहा था और मौका हाथ से निकल जाने के अंदेशे में हड़बड़ी मचा रहा था। अब दोपहर होनेवाली थी। गरमी से बचने के लिए, और नफे-नुकसान का चुपचाप हिसाब लगाने के लिए लोग चायखानों में जा रहे

थे। सूरज की गर्म रोशनी बाजार पर फैली थी। साये छोटे और साफ हो रहे थे—मानो सख्त जमीन पर खोद दिये गये हों। खामोशी भरे कोनों में फकीर इकट्ठे थे। गौरेया चिड़ियां खुशी से चहचहाती हुई आसपास बिखरे रोटी के टुकड़े ढूंढ रही थीं।

अपने फोड़ों और बदन के बेढंगेपन को खोजा नसरुद्दीन को दिखाते हुए भिखमंगों ने सदा लगायी : "ऐ नेक इंसान! अल्लाह के नाम पर हमें भी कुछ मिल जाय।"

खोजा नसरुद्दीन ने चिढ़कर जवाब दिया :

"अलग हटाओ अपने हाथ। मैं भी उतना ही गरीब हूं, जितने तुम। मैं खुद किसी ऐसे शख्स की तलाश में हूं जो मुझे चार सौ तंके दे सके।"

यह समझकर कि वह उन्हें ताने दे रहा है, भिखारियों ने खोजा नसरुद्दीन पर गालियों की बौछार शुरू कर दी। लेकिन खोजा नसरुद्दीन अपने खयालों में डूबा हुआ था। उसने जवाब नहीं दिया।

चायखानों की कतार में उसने वह चायखाना चुना जो सबसे बड़ा और भरा हुआ था, लेकिन जहां रेशमी गद्दे व कालीन नहीं थे। वह वहां पहुंचा। गधे को खूंटे से बांधने के बजाय वह अपने पीछे-पीछे सीढ़ियों पर चढ़ा ले गया।

अचम्भे और खामोशी से उसका स्वागत हुआ। उसे कोई परेशानी नहीं हुई। जीन में लगे झोले से उसने कुरआन निकाली, जो पिछले दिन उसे बूढ़े ने दी थी। कुरआन खोलकर उसने गधे के सामने रख दी।

यह काम उसने बिना किसी हड़बड़ी या हंसी-मुस्कराहट के किया मानो यह दुनिया का सबसे ज्यादा कुदरती काम था।

चायखाने में इकट्ठे लोग एक-दूसरे को ताकने लगे।

लकड़ी के फर्श पर गधे ने जोर से खुर पटका।

"अच्छा? इतनी जल्दी?" पन्ना पलटते हुए खोजा नसरुद्दीन ने कहा, "तू तो काबिले-तारीफ तरक्की कर रहा है।"

अब चायखाने का तुंदियल और मसखरा मालिक उठा और खोजा नसरुद्दीन के पास आया।

"सुन भलेमानस! क्या यह गधे लाने की जगह है? यह मुकद्दस किताब तूने इसके सामने क्यों खोल रखी है?"

"मैं इस गधे को दीनियात सिखा रहा हूं," खोजा नसरुद्दीन ने बड़े इतमीनान से कहा, "हम कुरआन खत्म कर रहे हैं और बहुत जल्द शरिअत शुरू होगी।"

चायखाने भर में फुसफुसाहट और भनभनाहट होने लगी। बहुत से लोग तमाशा ठीक से देखने के लिए खड़े हो गये। मालिक की आंखें फटी की फटी,

ग्रौर मुंह खुला का खुला रह गया। अपनी जिन्दगी में ऐसा अजूबा उसने कभी नहीं देखा था। तभी गधे ने फिर खुर पटका।

पन्ना पलटते हुए खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "ग्रच्छा ! ठीक है ! बहुत ठीक। बस जरा सी कसर है बेटे ! तू मीरे-ग्ररब मदरसे में उस्तादों की जगह लेने के काबिल हो जायगा। बस, यह किताब के पन्ने अपने ग्राप नहीं उलट सकता। किसी को इसकी मदद करनी पड़ती है। अल्लाह ने इसे बहुत जहीन बनाया है। बड़ी ग्रच्छी याददाश्त दी है इसे। बस, वह इसे उंगलियां देना भूल गया," यह बात उसने चायखाने के मालिक के लिए कही।

लोग-बाग चाय के प्याले छोड़ करीब ग्रा गये। कुछ ही देर में खोजा नसरुद्दीन के ग्रासपास एक भीड़-सी इकट्ठी हो गयी।

उसने समझाना शुरू किया : "यह कोई मामूली गधा नहीं है, भाइयो। यह ग्रमीर का गधा है। एक दिन ग्रमीर ने मुझे बुलाया ग्रौर कहा : 'क्या तुम मेरे प्यारे गधे को दीनियात सिखा सकते हो, ताकि वह भी उतना ही सीख जाय जितना कि मैं जानता हूं ?' उन्होंने मुझे गधा दिखाया ग्रौर मैंने उसकी ग्रक्ल जांची। मैंने जवाब दिया : 'ए ग्रमीर मुग्रज्जम ! यह काबिले जिक्र गधा उतना ही जहीन है जितने कि ग्रापके कोई वजीर या खुद ग्राप। मैं इसे दीनियात सिखाने की जिम्मेदारी लेता हूं। यह उतना ही सीख जायगा जितना कि ग्राप जानते हैं या शायद ज्यादा भी। लेकिन इस काम में बीस साल लगेंगे।' ग्रमीर ने खजाने से सोने के पांच हजार तंके मुझे दिलवाये ग्रौर कहा : 'गधे को ले जाग्रो ग्रौर पढ़ाग्रो। लेकिन मैं ग्रल्लाह की कसम खाता हूं कि ग्रगर बीस साल के बाद यह दीनियात न सीख पाया ग्रौर इसे कुरग्रान हिफ्ज न हुई तो मैं तुम्हारा सिर कलम करवा दूंगा।'"

चायखाने के मालिक ने कहा : "तो तुम ग्रपने सिर से ग्रलविदा कह लो। गधे को दीनियात पढ़ते-सीखते ग्रौर कुरग्रान सुनाते किसने देखा-सुना है ?"

खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "बुखारा में ऐसे बहुत से गधे हैं। मुझे सोने के पांच हजार तंके चाहिए ग्रौर ऐसे ग्रच्छे गधे रोज-रोज तो मिलते नहीं। मेरे सिर के कलम होने की फिक्र न करो दोस्त, क्योंकि बीस साल में हम में से एक न एक जरूर मर जायगा—या तो मैं, या ग्रमीर या यह गधा। ग्रौर तब यह पता लगाने में बहुत देर हो चुकेगी कि दीनियात का सबसे बड़ा ग्रालिम कौन है।"

चायखाना जोर के कहकहों से गूंज उठा। मालिक नमदे पर गिर पड़ा, हंसते-हंसते उसके पेट में बल पड़ गये ग्रौर उसका चेहरा ग्रांसुग्रों से भींग गया। चायखाने का मालिक बहुत खुशमिजाज ग्रौर हंसोड़ था।

हंसी से घुटी और घरघराती आवाज में वह बोला : "सुना तुमने ? हा-हा-हा-हा ... 'तब तक यह जानने के लिए बहुत देर हो चुकेगी कि सबसे बड़ा आलिम कौन है !' हा-हा-हा-हा ... ।" वह हंसी से सचमुच ही फट गया होता अगर यकायक उसे कोई खयाल न आ गया होता ।

हाथ हिला-हिलाकर सबको मुखातिब करते हुए वह चिल्लाया : "ठहरो ! ठहरो ! तुम हो कौन ? तुम आये कहां से ? ए दीनियात पढ़ानेवाले ! कहीं तुम खुद खोजा नसरुद्दीन तो नहीं हो ?"

"यह क्या कोई जिक्र के काबिल बात है ? तुमने ठीक ही अन्दाज लगाया है । मैं खोजा नसरुद्दीन ही हूं । बुखारा शरीफ के शहरियो ! आप लोगों को सलाम !"

काफी देर तक सब लोग खामोश रहे, मानो उन पर जादू कर दिया गया हो । एकाएक किसी ने खुशी की आवाज में कहा :

"खोजा नसरुद्दीन !"

एक-एक करके दूसरों ने भी चिल्लाना शुरू कर दिया — "खोजा नसरुद्दीन ! खोजा नसरुद्दीन !" यह आवाज दूसरे चायखानों तक पहुंची और वहां से सारे बाजार में फैल गयी । हर जगह आवाज गूंजने लगी और शोर मच गया :

"खोजा नसरुद्दीन ! खोजा नसरुद्दीन !"

हर तरफ से लोग दौड़-दौड़कर आने लगे — उजबक, ताजिक, ईरानी, तुर्कमानी, तुर्क, आर्मीनियाई, तातार, जार्जियाई । यहां आ-आकर वे जोर-जोर से चिल्लाकर अपने प्यारे खोजा नसरुद्दीन, खुशमिजाज, हंसोड़ और होशियार खोजा नसरुद्दीन का खैर मखदम करने लगे ।

भीड़ बढ़ती गयी ।

कहीं से एक बोरा जई, एक गट्ठर तिपतिया घास और एक बालटी साफ पानी आया और गधे के सामने रख दिया गया ।

भीड़ में से आवाजें आने लगीं : "खोजा नसरुद्दीन ! खूब आये ! तुम अब तक भटक कहां रहे थे ? आओ, खोजा नसरुद्दीन, हमें बताओ ।"

वह बरसाती के किनारे तक बढ़ आया और खूब झुककर भीड़ को सलाम किया ।

"बुखारा के बाशिन्दो ! मैं आपका खैर मखदम करता हूं ! दस साल तक मैं आपसे दूर रहा और अब फिर आपसे मिलकर मेरा दिल खुशी से नाच रहा है । आपने मुझ से कुछ पूछा है । मैं चाहता हूं कि यह दास्तान मैं गाकर सुनाऊं ।"

मिट्टी का एक बड़ा बरतन उसने उठा लिया और उसमें भरा पानी फेंक दिया। हाथ से उसे बजाते हुए उसने जोर से गाना शुरू किया :

बज-बज रे माटी के बरतन, गा-गा रे माटी के बरतन,
गुन गा अमीर के, बजा कसीदा-गोई कर
जाहिर कर दुनिया के करीब, हम रैयत कैसी खुशनसीब
ऐसा दरियादिल सखी अमीर बशर पाकर !

गुन-गुन करता खाकी बरतन, टन-टन बजता खाकी बरतन,
गुस्से से कंपती आवाजों में गाता है;
आवाज लगाता है करख्त, रंजीदा, गुस्सा-भरा, सख्त,
हर तरफ हर किसी को अहवाल सुनाता है !

सुनते भी तो जाओ भैया, कहना है उसको क्या किस्सा :
"बूढ़ा नयाज कुम्हार यहीं पर रहता है,
मिट्टी गूंधा करता है वह, ढेरों बरतन गढ़ता है वह,
फिर भी न मजूरी से दिन कभी निबहता है !
पाता जो उन्हें बेच करके, उससे चुक्कड़ भी भर न सके;
जैसे-तैसे गुरबत की मारें सहता है !

"लेकिन कूबड़वाला जाफर, सो भी न कभी पाता जी भर
जाता है सोने से लबरेज खजानों पर
सोना अमीर के भी घर है, लबरेज खजाने छलक रहे,
कितना सोना है वहां, कहेगा कौन मगर ?
दरबान महल के बेचारे, कब सो पाते डर के मारे ?
उन छलक रहे मटकों से जीना है दूभर !

"बूढ़े नयाज पर, हा किस्मत, चोरी-चुपके आयी आफत,
प्यादे अदालती उसके घर पर आ धमके !
करके बूढ़े को गिरफ्तार ले गये कचहरी मार-मार,
सुनवाने को फैसले अमीरे-आजम के !
पीछे-पीछे आया जाफर, कूबड़ घसीटता सड़कों पर
मूरत-शोहरत जिसकी, अजाब हैं आलम के !"

कह-कह रे माटी के बरतन, हर गोशदार से कह फौरन,
हम कब तक सहते जायें बेइन्साफी यह ?
मिट्टी की है तेरी जबान, सच कहने की है इसे बान,
बूढ़े कुलाल का क्या कुसूर है, यह तो कह ?

माटी का बरतन बजता है, बजता है नहीं, गरजता है;
देता है सोलह-आने सच-ही-सच जवाब :

"बूढ़े कुलाल का क्या कुसूर ? —इतना भी उसे न था शऊर,
मकड़ी के जाले से बचकर रहता, जनाब ?
अब तो मकड़ी के जाले ने फांसा है उसे, छुड़ा लेने
की राह न कोई, सहे गुलामी का अजाब !"

हाजिर हुजूर में है नयाज, बूढ़ा कुलाल बंदानवाज,
आंखों में आंसू, पैरों लिपटा हाकिम के
कहता है : "यह जग जाहिर है, हाकिम रहमत में नादिर है,
दिलख्वाह अमीरे-आजम हैं इस खादिम के,
होकर गरीब पर करम-सार, दिल को जरूर देंगे करार।"
बोला अमीर : "रो मत गरीब, ले करम किया,
ले पूरे घंटे की मुहलत ! नेकी करना मेरी खसलत,
जानता जमाना है, दिल है कैसा दरिया !"

कह-कह रे माटी के बरतन, हर गोशदार से कह फौरन,
कब तक हम सहते जायें बेइन्साफी यह ?

माटी का बरतन बजता है, बजता है नहीं, गरजता है,
देता है सोलह-आने सच-ही-सच जवाब !

"जो इस अमीर से अदलो-मिहर की करता है उम्मीद बशर
वह तो सचमुच पागल है, पागल है, जनाब !
यह तो न किसी से छिपी बात, कमजर्फ, कमीना, कमबिसात
है यह अमीर, दो-दो कौड़ी इसकी कीमत !
कूड़े की ढेरी है अमीर, सड़ियल-सी है उसकी जमीर,
सिर के बदले कंधों पर हंड़िया है साकित !"

कह-कह रे माटी के बरतन, कब तक सहना हमको जबरन
इस बद अमीर की बदतरीन सल्तनत बता ?
हैं ऊब चुके सारे अवाम, कब उन्हें मिलेगा इंतकाम,
सुख के दिन कब लौटेंगे, है कुछ अता-पता ?

गुन-गुन करता खाकी बरतन, टन-टन बजता खाकी बरतन,
सच-सच जवाब देता है चिल्ला-चिल्ला कर :

"माना, अमीर है ताकतवर, कायम हैं अभी निहंग-सिपर,
लेकिन ढह जायेगा वह, ज्यों महबसे-ताश,
कट जायेगा यह दौरे-सितम, आता है वह दिन जब जालिम
मिट्टी के इस बरतन सा होगा पाश-पाश !"

बरतन को अपने सिर से ऊंचा उठाकर खोजा नसरुद्दीन ने उसे जमीन पर पटक दिया जहां वह सैकड़ों टुकड़ों में बिखर गया। भीड़ की आवाज को अपनी आवाज में डुबाने की कोशिश करता हुआ खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया :

"नयाज कुम्हार को सूदखोर और अमीर की रहमदिली से बचाने के लिए हम सब मदद करें ! आप खोजा नसरुद्दीन से वाकिफ हैं ! कर्ज लेकर वह हमेशा चुकाता रहा है। कुछ वक्त के लिए मुझे चार सौ तंके कौन देगा ?"

एक भिश्ती नंगे पैर आगे बढ़ा।

"खोजा नसरुद्दीन ! हमारे पास रुपया कहां से आया ? हमें भारी टैक्स अदा करने पड़ते हैं। लेकिन मेरा यह पटका है। यह करीब-करीब नया ही है। इससे शायद तुम्हें कुछ मिल जाय।"

और उसने वह पटका खोजा नसरुद्दीन के कदमों पर डाल दिया। भीड़ में कानाफूसी होने लगी। खलबलाहट मच गयी। कुलाह, जूतियां, पटके, रूमाल और खलअतें तक उड़-उड़कर उसके कदमों के पास आने लगीं। हरेक शख्स खोजा नसरुद्दीन की मदद करने में फख्र समझने लगा। चायखाने का मोटा मालिक अपनी दो सबसे बढ़िया चायदानियां और तांबे की कश्तियां ले आया और अकड़कर दूसरों को देखने लगा क्योंकि वह दिल खोलकर दे रहा था। भेंट में दी गयी चीजों का ढेर बढ़ रहा था। खोजा नसरुद्दीन चीखकर बोला :

"बस ! बहुत काफी है, बुखारा के फैयाज शहरियो ! बहुत काफी हो गया ! आप मुझे सुन रहे हैं न ? जीनसाज तुम अपनी जीन उठा लो—काफी हो गया, मैं कह जो रहा हूं। क्या ? अरे क्या आप अपने खोजा नसरुद्दीन को गूदड़ बेचनेवाला बनाना चाहते हैं ? अब मैं नीलाम शुरू करता हूं। यह रहा भिश्ती का पटका। जो इसे खरीदेगा उसे कभी प्यास नहीं सतायेगी। चलो, मैं इसे सस्ते ही बेच रहा हूं। ये रहे कुछ मरम्मत किये हुए पुराने जूते। ये जूते जरूर दो दफा मक्का हो आये हैं। जो इन्हें पहनेगा उसे लगेगा कि वह जियारत कर रहा है ! ये हैं चाकू, जूते, खलअतें ! आओ, बोलो ! मैं इन्हें बिना मोलभाव किये, सस्ते में ही बेचे रहा हूं। वक्त बहुत कीमती है ! जल्दी करो !"

लेकिन वजीर बख्तियार ने वफादार रियाया की फिक्र में बड़ी मेहनत से बुखारा में ऐसा इन्तजाम किया था कि तांबे का एक फूटा सिक्का भी बाशिंदों की जेब में न टिकता था और फौरन अमीर के खजाने में जा पहुंचता था।

अपने सामान की खोजा नसरुद्दीन फिजूल ही जोर-जोर से तारीफ कर रहा था — वहां कोई खरीदार नहीं था।

: १४ :

तभी उधर से सूदखोर जाफर गुजरा। उसका थैला सोने-चांदी के छोटे-मोटे जेवरों से फूल रहा था। ये जेवर उसने सर्राफ टोले से गुलजान के लिए खरीदे थे।

हालांकि एक घंटे का दिया हुआ वक्त खत्म हो रहा था और सूदखोर हवस की बेताबी में जल्दी-जल्दी चल रहा था, तो भी रास्ते में खोजा नसरुद्दीन की नीलाम की आवाज सुनते ही लालच ने उसे धर दबाया।

सूदखोर को देखते ही भीड़ जल्दी से हट गयी क्योंकि हर तीसरा आदमी उसका कर्जदार था।

जाफर ने खोजा नसरुद्दीन को पहचान लिया। "तो तुम्हीं हो, जिसने कल मुझे पानी से निकाला था ? तुम यहां तिजारत कर रहे हो ? यह इतना माल तुम्हें कहां से मिल गया ?"

खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया।

"हजरत जाफर ! क्या आपको याद नहीं कि कल आपने मुझे आधा तंका दिया था। उसी से मैंने तिजारत की और तकदीर ने मेरा साथ दिया।"

सूदखोर बोला : "और तुमने सबेरे ही सबेरे इतना माल इकट्ठा कर लिया ? मेरे सिक्के से सचमुच बहुत फायदा हुआ। इस ढेर का क्या लोगे ?"

"छः सौ तंके।"

"पागल हो गये हो क्या ? जिसने तुम्हारा भला किया उससे इतनी रकम मांगने में तुम्हें शर्म आनी चाहिए। क्या तुम्हारी यह दौलतमन्दी मेरी ही वजह से नहीं है ? दो सौ तंके ... मैं तो यही दाम लगा सकता हूं।"

"पांच सौ तंके !" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया ! "मैं आपकी इज्जत करता हूं, जाफर साहब ! आप पांच सौ तंके ही दे दें।"

"अरे नाशुक्रे ! अहसान फरामोश ! मैं एक बार फिर कहता हूं, क्या तेरी दौलतमन्दी मेरी वजह से ही नहीं है ?"

खोजा नसरुद्दीन अब सब्र न कर सका। बोला : "अबे सूदखोर ! क्या तू मेरी ही वजह से जिन्दा नहीं है ? यह सच है कि तेरी जान बचाने के बदले तूने मुझे आधा तंका दिया था, पर चूंकि तेरी जिन्दगी की कीमत भी इससे ज्यादा नहीं है, इसलिए मैंने बुरा नही माना। अगर तुझे यह माल खरीदना है तो ठीक से दाम लगा।"

"तीन सौ !"

खोजा नसरुद्दीन चुप रहा।

सूदखोर तजरबेकार आंखों से माल की कीमत जांचने लगा। और, जब उसे तसल्ली हो गयी कि ये सब कुलाह, जूते, खलअतें कम से कम सात सौ तंकों में बिक जायेंगी, तभी उसने दाम बढ़ाना तय किया।

"साढ़े तीन सौ।"

"चार सौ।"

"पौने चार सौ।"

"चार सौ।"

खोजा नसरुद्दीन अड़ा रहा। कई बार सूदखोर ऐसे आगे बढ़ लिया मानो अब वह आगे दाम न बढ़ायेगा। फिर लौट-लौटकर एक-एक तंका करके उसने दाम बढ़ाये और आखिर वह राजी हो गया। सौदा पट गया। खांखते-कूंखते और शिकायत करते हुए उसने चार सौ तंके गिने। "अल्लाह की कसम! इस माल की दुगनी कीमत दे रहा हूं! पर मेरी खसलत ही यह है कि रहमदिली की वजह से मैं भारी नुकसान उठाता हूं।"

एक सिक्का लौटाते हुए खोजा नसरुद्दीन ने कहा: "यह सिक्का खोटा है और ये पूरे चार सौ तंके नहीं हैं। ये तो कुल तीन सौ अस्सी हैं। तुम्हारी नजर कमजोर होती जा रही है, जाफर साहब!"

सूदखोर खोटा सिक्का बदलने और बीस तंके और देने को मजबूर हो गया। यह हो चुका तो उसने चौथाई तंके पर एक मजदूर लिया और माल उस पर लादकर अपने पीछे-पीछे आने को कहा। बेचारा मजदूर माल के बोझ से करीब-करीब दब-सा गया।

खोजा नसरुद्दीन ने कहा: "हम-आप एक ही तरफ तो जा रहे हैं।"

वह गुलजान को देखने के लिए बेताब हो रहा था और जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहा था। अपने लंगड़ेपन से मजबूर सूदखोर पीछे-पीछे चल रहा था।

"तुम इतनी जल्दी में कहां जा रहे हो?" आस्तीन से पसीना पोंछते हुए सूदखोर ने पूछा।

अपनी काली आंखों में शरारत-भरी चमक लाकर खोजा नसरुद्दीन बोला: "उसी जगह, जहां आप जा रहे हैं। हम और आप, जाफर साहब, एक ही जगह और एक ही काम से जा रहे हैं।"

सूदखोर ने कहा: "पर तुम्हें मेरे काम की क्या खबर? अगर तुम समझ पाते तो तुम्हें रश्क होने लगता।"

इस बात के मानी खोजा नसरुद्दीन से छिपे नहीं रहे और खुशी से हंसता हुआ वह बोला: "ऐ सूदखोर! अगर तुम्हें मेरे काम की खबर होती तो तुम मुझ से दस गुना ज्यादा रश्क करने लगते।"

जवाब की गुस्ताखी समझकर जाफर ने नाराजी से भवें तानीं : "तू बहुत ज़ुबान चलाता है। तेरे जैसों को तो मेरे जैसों से बात करते वक्त डर से कांपना चाहिए। बुखारा में ऐसे कुछ ही लोग हैं जो मुझसे बड़े हैं और जिनसे मैं हसद करता हूं। मै रईस हूं और मेरी मनचाही बात होने में कोई रुकावट नहीं पड़ती। मैंने बुखारा की सबसे हसीन लड़की चाही थी और आज वह मेरी हो जायगी।"

उसी वक्त एक डलिया में चेरी के फल बेंचता हुआ एक शख्स उधर से गुजरा। खोजा नसरुद्दीन ने उसकी डलिया में से लम्बे डंठलवाली एक चेरी निकाल ली और सूदखोर को दिखाता हुआ बोला :

"जाफर साहब ! मेरी बात पूरी सुन लीजिए। लोग कहते हैं कि एक दिन एक सियार ने दरख्त में बहुत ऊंचे एक चेरी देखी। उसने अपने मन में सोचा : 'मैं तब तक चैन न लूंगा जब तक वह चेरी मुझे न मिल जाय।' और वह पेड़ पर चढ़ने लगा। टहनियों से बुरी तरह छिलता हुआ वह दो घंटे तक चढ़ता रहा। जब वह चेरी के पास पहुंचा और अपना मुंह फाड़कर उसे खाने की तैयारी कर रहा था तभी यकायक एक बाज झपटा और चेरी लेकर उड़ गया। इसके बाद सियार फिर दो घंटे तक पेड़ से उतरता रहा और उतरने में और भी ज्यादा छिल गया। वह बुरी तरह रो-रोकर कहता रहा : 'मैं वह चेरी लेने के लिए दरख्त पर चढ़ा ही क्यों ! यह तो सभी जानते हैं कि दरख्तों पर चेरी सियारों के लिए नहीं उगा करतीं।'"

सूदखोर ने नफरत से कहा : "तू बेवकूफ है। इस किस्से में मुझे तो कोई मतलब की बात दिखायी नहीं देती।"

खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "गहरे मतलब फौरन नहीं दिखायी देते।"

चेरी का डंठल उसके कुलाह में दबा था और चेरी उसके कान के पीछे लटक रही थी।

सड़क मुड़ी। मोड़ के सामने कुम्हार अपनी बेटी के साथ एक पत्थर पर बैठा था।

कुम्हार उठ खड़ा हुआ। उसकी आंखें, जिनमें उम्मीद की कुछ चमक अब तक बाकी थी, बुझ सी गयीं, क्योंकि उसे लगा कि अजनबी रुपया इकट्ठा करने में नाकामयाब रहा है। गुलजान ने एक आह भरी और अपना मुंह फेर लिया। वह ऐसी दर्द-भरी आवाज में बोली कि उसे सुनकर पत्थर के भी आंसू आ जाते : "अब्बा ! हम बरबाद हो गये।" लेकिन सूदखोर का दिल पत्थर से भी सख्त था। उसके चेहरे पर बेरहम जीत और हवस दिखायी दे रही थी। वह बोला :

"कुम्हार ! मियाद खत्म हुई। अब तुम मेरे गुलाम हो और तुम्हारी बेटी मेरी गुलाम और रखैल है।"

खोजा नसरुद्दीन को चोट पहुंचाने और जलील करने के लिए उसने मालिकाना ढंग से गुलजान का चेहरा बेनकाब कर दिया। "देखो, यह हसीन है न? आज मैं इसके साथ सोऊंगा। अब मुझे बताओ कि किसे किससे हसद करनी चाहिए?"

खोजा नसरुद्दीन बोला: "वाकई यह लड़की खूबसूरत है। लेकिन क्या तुम्हारे पास कुम्हार की रसीद है?"

"बेशक ! रसीद के बिना कोई शख्स काम कर ही कैसे सकता है? सभी लोग तो चोर और धोखेबाज हैं। यह रही रसीद, जिस पर कर्ज की रकम और उसे अदा करने की तरीख दर्ज है। कुम्हार ने नीचे अंगूठे का निशान लगा दिया है।"

उसने रसीद खोजा नसरुद्दीन को दिखायी। खोजा नसरुद्दीन ने कहा: "हां, रसीद तो ठीक है। अब रसीद के मुताबिक अपनी रकम लो। उधर से गुजरनेवाले कुछ लोगों को बुलाकर उसने कहा, "जरा ठहरिए भलेमानस, इस अदायगी के गवाह बनिये।"

रसीद फाड़कर खोजा नसरुद्दीन ने उसके दो टुकड़े कर डाले, फिर उन्हें मोड़कर चार टुकड़े कर डाले और हवा में उड़ा दिया। तब उसने अपना पटका खोलकर सूदखोर को वह सब रकम गिन दी जो उसने कुछ ही देर पहले हथियायी थी।

कुम्हार और उसकी बेटी खुशी और अचम्भे से और सूदखोर गुस्से से पत्थर की मूरत बन गये थे। गवाहों ने एक-दूसरे को आंख मारी और बदनाम सूदखोर की हार पर हंसने और खुश होने लगे।

खोजा नसरुद्दीन ने कान के पीछे से चेरी निकाली और सूदखोर को आंख मारकर उसे मुंह में रख लिया और होंठ चटखारने लगा।

सूदखोर का बदनुमा बदन धीरे-धीरे कांपने लगा। उसके हाथ हवा पकड़ने लगे। उसकी अच्छीवाली आंख गुस्से से बाहर को उभर आयी। उसका कूबड़ कांपने लगा।

कुम्हार और गुलजान ने प्यार-भरी आवाज में कहा: "अजनबी ! हमें अपना नाम बता दो ताकि हमें मालूम हो जाय कि हम किसके लिए दुआ करें।"

सूदखोर तुतलाया: "हां, मुझे अपना नाम बता दे, ताकि मुझे मालूम हो जाय कि किसके लिए बददुआ करूं।"

खोजा नसरुद्दीन का चेहरा चमक रहा था। उसने साफ और ऊंची आवाज में कहा : "बगदाद और तेहरान में, इस्ताम्बूल और बुखारा में, हर जगह मैं एक ही नाम से जाना जाता हूं और वह नाम है—खोजा नसरुद्दीन।"

सूदखोर डर के मारे सफेद पड़ गया और पीछे को हटता हुआ बोला : "खोजा नसरुद्दीन ?" और अपने कुली को आगे खदेड़ता हुआ वह डर के मारे भागने लगा।

जहां तक और लोगों का ताल्लुक था, वे उसका इस्तकबाल करते हुए चिल्लाये—"खोजा नसरुद्दीन ! खोजा नसरुद्दीन !" नकाब के नीचे गुलजान की आंखें चमक उठीं। बूढ़ा कुम्हार अभी तक अपने होश दुरुस्त नहीं कर पाया था। वह हवा में हाथ हिलाता रहा और कुछ भिनभिनाता रहा।

: १५ :

अमीर के इंसाफ के लिए लगी अदालत अब भी जारी थी। जल्लाद कई बार बदले जा चुके थे। बेत खाने के इन्तजार में खड़े लोगों की तादाद बढ़ती जा रही थी।

दो शख्स सूली पर लटक रहे थे। तीसरे का सिर धड़ से जुदा पड़ा था और खून से जमीन तर थी। लेकिन कराह और चीखें नींद में भरे अमीर के कानों तक नहीं पहुंच रही थीं क्योंकि दरबारी चापलूस अमीर के कानों पर कसीदों की बौछार कर रहे थे और अपनी इस कोशिश में उनके गले पड़ गये थे। तारीफों में वे वजीरे-आजम, दूसरे वजीरों और अर्सलां बेग को शामिल करना न भूलते थे। वे इन तारीफों में चंवर डुलानेवाले और हुक्केवाले को भी शामिल कर रहे थे, क्योंकि उनका यह खयाल ठीक ही था कि हर एक को खुश करने की कोशिश करनी चाहिए—कुछ को इसलिए कि वे फायदेमन्द साबित हों, कुछ को इसलिए कि वे खतरनाक न साबित हों।

कुछ देर से अर्सलां बेग दूर से आवाजों के एक अजीब शोर को बेचैनी से सुन रहा था। उसने अपने दो सबसे काबिल और तजरबेकार जासूसों को बुलाया : "जाओ और पता लगाकर आओ कि लोग इस कदर तैश में क्यों हैं ? जाओ और फौरन लौटकर मुझे बताओ।"

दोनों जासूस रवाना हुए, एक फकीर के भेस में, दूसरा दरवेश बनकर। पर, इसके पहले कि वे लौट पायें, सूदखोर भागता हुआ वहां आया। वह पीला पड़ रहा था और उसके पैर लड़खड़ा रहे थे। अपनी खलअत के दामन में उसके पैर बार-बार उलझ रहे थे।

अर्सलां बेग ने उतावली से पूछा : "क्या हुआ, क्या हुआ जाफर साहब ?"

कांपते होठों से कराहता हुआ सूदखोर चिल्लाया : "मुसीबत ! मुसीबत ! ऐ अर्सलां बेग साहब ! हम पर बड़ी भारी मुसीबत आ पड़ी है। खोजा नसरुद्दीन हमारे ही शहर में मौजूद है। मैंने अभी उसे देखा है और उससे बात की है।"

अर्सलां बेग की आंखें बाहर निकल पड़ीं और वह टकटकी लगाये देखता रह गया। तख्त की सीढ़ियां उसके बोझ से दबने लगीं। दौड़कर वह नींद में गाफिल अपने मालिक के पास पहुंचा और उनके कान के पास झुक गया।

अमीर चौंककर तख्त पर सीधे बैठ गये, मानो किसी ने उनके कांटा चुभा दिया हो। वह चिल्लाये : "तू झूठ बोलता है !" गुस्से और डर के मारे उनका चेहरा बदनुमा हो गया, "यह सच नहीं है ! कुछ ही दिन पहले बगदाद के खलीफा ने मुझे लिखा था कि उन्होंने उसका सिर कलम करवा दिया है ! तुर्की के सुलतान ने लिखा था कि उन्होंने उसे सूली पर लटकवा दिया है ! ईरान के शाह ने खुद अपने हाथ से मुझे लिखा था कि उन्होंने उसे फांसी दे दी है ! खीवा के खान ने पिछले साल आम ऐलान किया था कि उन्होंने उसकी जिन्दा खाल खिचवा ली है ! यह खोजा नसरुद्दीन — उस पर लानत बरसे — चार बादशाहों के हाथों से कैसे बेदाग बचकर निकल सकता है ?"

वजीर और रईस व अफसर खोजा नसरुद्दीन का नाम सुनकर पीले पड़ गये। चंवर डुलानेवाला चौंका और चंवर उसके हाथ से गिर पड़ा; हुक्केवाले के गले में धुआं फंस गया और वह जोर-जोर से खांसने लगा। चापलूसों की जुबानें डर के मारे सूखकर तालू से चिपक गयीं।

अर्सलां बेग ने दोहराया : "वह यहीं है।"

अमीर चिल्लाये : "तू झूठ बोलता है !"

और शाही हाथ ने उसके गालों पर जोर से तमाचा जड़ दिया : "तू झूठा है ! अगर वह वाकई यहां है, तो बुखारा में वह घुस ही कैसे पाया ? पहरेदारों और तेरे रहने से फायदा ही क्या ? कल रात बाजार में जो हुल्लड़ हुआ, यह उसी की शरारत थी ? जब तू सो रहा था, उसने रियाया को मेरे खिलाफ उभारने की कोशिश की और तू ने कुछ नहीं सुना ?"

और अमीर ने फिर अर्सलां बेग को मारा। वह झुक गया और अमीर का हाथ जैसे ही नीचे गिरा उसे चूम लिया।

"अरे मालिक ! वह यहीं है, बुखारा में ही ! क्या आप सुन नहीं रहे ?"

दूर पर जो शोर हो रहा था वह जलजले की तरह फैलने लगा। जो भीड़ अदालत में खड़ी थी, वह भी जोश में आ गयी। भनभनाहट होने लगी। पहले यह भनभनाहट धीमी थी और साफ सुनायी नहीं पड़ती थी। फिर वह ऊंची और बुलन्द होने लगी, यहां तक कि अमीर को अपना तख्त

ग्रौर सिंहासन अपने नीचे हिलता लगा। यकायक इस भनभनाहट ग्रौर ग्रावाजों के शोरगुल में एक नाम उठा ग्रौर एक सिरे से दूसरे सिरे तक कई बार दोहराया गया : "खोजा नसरुद्दीन !! खोजा नसरुद्दीन !!"

इस नाम से ग्रदालत गूंज उठी।

जलती हुई मशालें लेकर पहरेदार तोपों की तरफ दौड़ पड़े। ग्रमीर का चेहरा घबराहट से बिगड़ रहा था। वह चिल्लाये : "खत्म करो इजलास ! वापस चलो महल को !"

ग्रौर जरबफ्त की ग्रपनी खलग्रत का दामन बटोरते हुए वह महल को वापस भाग लिये। उनके पीछे नौकर-चाकर गिरते-पड़ते दौड़े ग्रौर उनकी सवारी खाली ही महल को वापस खींच भेजी गयी। डर से कांपते हुए, सबसे जल्द महल पहुंच जाने की हड़बड़ी में एक-दूसरे को धक्का देते हुए वजीर, सिपाही, मीरासी, जल्लाद, हुक्केवाला, चंवर डुलानेवाला ग्रपनी जान लेकर भागे। जल्दी में उनके जूते पीछे छूट गये ग्रौर उन्हें उठाने की भी फिकर उन्हें न रही। सिर्फ हाथी ही ग्रपनी पुरानी शानशौकत से वापस लौटे, क्योंकि ग्रमीर के जुलूस का हिस्सा होते हुए भी उन्हें रिग्राया से डरने की कोई जरूरत नहीं थी।

महल के पीतल जड़े फाटक ग्रमीर व उनके दरबार के भीतर पहुंचते ही भारी खड़खड़ाहट के साथ बन्द हो गये।

इस बीच बाजार खचाखच भर चुका था ग्रौर वहां खोजा नसरुद्दीन का नाम बार-बार गूंज रहा था। भीड़ बाजार में उबल रही थी ग्रौर शोरगुल व ग्रावाजें बढ़ रही थीं।



"ये अजीब वाकयात हैं; इन में से कुछ तो मेरी मौजूदगी में हुए और कुछ मुझे मातबर लोगों ने सुनाये।"

अस्मा इब्न मुन्किज, "किताबुन्नसायेह"

: १ :

बहुत पुराने जमाने से बुखारा के कुम्हार शहर के पूरब की तरफ के फाटकों के पास मिट्टी के बड़े ढूह के आस-पास बसे हुए थे। इससे बढ़िया जगह वह अपने लिए तलाश भी नहीं सकते थे। मिट्टी पास में ही मिल जाती थी और शहरपनाह की दीवाल के नीचे बहनेवाली सिंचाई की नहर से पानी मिल जाता था। कुम्हारों के दादों, परदादों, और लकड़दादों ने मिट्टी लेते-लेते ढूह को आधा कर दिया था। वे अपने घर मिट्टी से बनाते, मिट्टी से बरतन बनाते और इसी मिट्टी में उनके रिश्तेदार एक दिन रोते-धोते उन्हें दफना आते। अक्सर कुम्हार कोई घड़ा या सुराही बनाकर उसे धूप में सुखाकर और आग में पकाकर उसकी साफ तेज ठनक पर अचम्भा करता होगा। लेकिन उसे इसका शक भी न होगा कि उसके किसी परदादा ने अपने खानदान के अजीजों की भलाई और उनके बरतनों की बिक्री के खयाल से, अपनी खाक के जर्रों से इस मिट्टी को बढ़िया बनाया होगा, ताकि उसमें से खालिस चांदी जैसी खनक पैदा हो।

यहीं, नहर के बिलकुल किनारे, कदीमी सायेदार दरख्तों के साये में नयाज कुम्हार का घर था। पत्तियां हवा में झूमती रहतीं, पानी गाता-गुनगुनाता बहता रहता और घर का छोटा-सा बागीचा गुलजान नाम की दोशीजा के गानों से दिन-रात गूंजा करता।

खोजा नसरुद्दीन ने नयाज के घर डेरा डालने से इनकार कर दिया।

उसने कहा : "नहीं नयाज! तुम्हारे घर में पकड़ा जा सकता हूं। रातें मैं पास ही एक जगह बिताया करूंगा। यह जगह मैंने अपने लिए तलाश कर ली है। हां, दिन में आकर मैं तुम्हारे काम में मदद किया करूंगा।"

और उसने अपने कहे मुताबिक ही करना शुरू किया। हर सबेरे, सूरज निकलने से पहले, वह नयाज के घर आकर बूढ़े के पास बैठ जाता। दुनिया में

ऐसा कोई काम नहीं था जिसकी बारीकियों से खोजा नसरुद्दीन वाकिफ न हो। कुम्हारगीरी का काम उसे बखूबी आता था और जो बरतन वह बनाता वे चिकने और खनकदार होते और उनमें गर्म से गर्म मौसम में भी पानी बर्फ-सा ठंडा रहता। बूढ़ा नयाज, जिसकी निगाह अब कमजोर होती जा रही थी, दिन भर में पहले मुश्किल से पांच-छः घड़े बना पाता था, जब कि अब बरतनों की लम्बी कतारें—तीस, चालीस और कभी-कभी तो पचास घड़े—धूप में सूखा करतीं। बाजार के दिन बूढ़ा नयाज घर लौटता तो उसकी थैली भरी होती और रात में उसके घर में पकते पुलाव की खुशबू पूरे टोले में फैल जाती। पड़ोसी लोग इस बूढ़े के दिन फिरने पर खुश थे और कहा करते :

"आखिर नयाज की भी किस्मत पलटी। अलहमदुलिल्लाह (अल्लाह उस पर करम करे) ! उसकी गरीबी हमेशा के लिए दूर हो गयी।"

"सुना है कि अपनी मदद के लिए उसने कोई कारीगर रखा है ? लोग तो यहां तक कहते हैं कि यह कारीगर कुम्हारगीरी में बड़ों-बड़ों के कान काटता है।"

"हां, मैंने भी सुना है। एक दिन मैं नयाज के घर गया—उसका कारीगर देखने। लेकिन जैसे ही मैं बागीचे के फाटक से दाखिल हुआ, कारीगर उठा और वहां से रवाना हो गया और फिर पलट कर नहीं आया।"

"भाई, बूढ़ा अपने कारीगर को छिपाकर रखता है। जरूर उसे डर होगा कि हम लोगों में से कोई उसके कारीगर को लालच देकर फुसला न ले जाय। अजब इंसान है वह भी ! जैसे कि हम कुम्हारों के जमीर ही नहीं। मानो हम लोग इस बूढ़े की किस्मत, जिसे अब जिन्दगी में खुशी मिली है, बिगाड़ने की कोशिश करेंगे।"

इस तरह पड़ोसियों ने मसले को निपटाया। उनमें से किसी को शुबहा तक न हुआ कि बूढ़े नयाज का कारीगर कोई और नहीं, खुद खोजा नसरुद्दीन है। सबको पक्का यकीन था कि खोजा नसरुद्दीन बहुत पहले ही बुखारा छोड़कर चला गया है। यह अफवाह खुद उसने फैलायी थी, ताकि जासूसों को परेशानी हो और उसकी तलाश में जो जोश दिखाया जा रहा था, वह ठंडा पड़ जाय। अपने मकसद में उसे कामयाबी भी मिली। यह करीब दस दिन बाद साबित हो गया। शहर के सभी फाटकों पर से दोहरी पहरेदारी हटा ली गयी और हथियार खड़खड़ाते और रात में मशालों से चकाचौंध फैलाते सिपाहियों के गश्तों से बुखारा के बाशिन्दों को नजात मिली।

एक दिन बहुत देर तक खांसने-खखारने के बाद बूढ़े नयाज ने खोजा नसरुद्दीन को देखते हुए कहा :

"खोजा नसरुद्दीन तुमने मुझको गुलामी से और मेरी बेटी को बेइज्जती से बचाया। तुम मेरे साथ काम करते हो और मुझसे दस गुने ज्यादा घड़े तैयार कर डालते हो। जब से तुमने मेरी मदद शुरू की, तब से अब तक मैं खालिस नफे के तीन सौ पचास तंके कमा चुका हूं, जो ये हैं। इस रकम पर तुम्हारा हक है, तुम इसे लो।"

खोजा नसरुद्दीन ने कुम्हारी का चाक रोक लिया और ताज्जुब से बूढ़े को देखने लगा।

"ऐ नेक रूह नयाज साहब! जरूर तुम्हारी तबियत कुछ खराब है। तभी तुम ऐसी अजीब-अजीब बातें कर रहे हो। यहां तुम मालिक हो और मैं तुम्हारा नौकर। अगर तुम मुनाफे का एक छोटा-सा हिस्सा भी, यही कोई पैंतीस तंके, मुझे दे दो तो मुझे जरूरत से ज्यादा तस्कीन हो जायेगी।"

नयाज की फटी-पुरानी थैली से उसने पैंतीस तंके निकाले और अपने पटके में रख लिये; बाकी वापस कर दिये। लेकिन बूढ़े ने रकम वापस न लेने की जिद-सी पकड़ ली।

"ऐसा करना ठीक नहीं है, खोजा नसरुद्दीन। यह रकम तुम्हारी है। अगर तुम पूरी रकम नहीं लेते, तो कम से कम आधी तो लो ही।"

खोजा नसरुद्दीन को ताव आ गया।

"ऐ भले नयाज! अपनी थैली मेरे सामने से हटाओ। मेहरबानी करके दुनिया का रेहन न बिगाड़ो। अगर सभी मालिक अपने-अपने कारीगरों को मुनाफे का आधा हिस्सा देने लगे तो क्या होगा? तब तो इस दुनिया में न मालिक रह जायेंगे, न नौकर, न रईस, न गरीब, न पहरेदार, न अमीर। जरा सोचो तो: अल्लाह ऐसी बेइंसाफी कैसे बरदाश्त करेगा! वह फौरन तूफाने-नूह (दूसरा बड़ा सैलाब) भेजेगा। अपनी थैली लो और अच्छी तरह छिपाकर रखो, नहीं तो कहीं तुम्हारे पागल खयालात अल्लाह का कहर न बरपा करें और इंसानों की पूरी नस्ल ही नेस्तनाबूद कर दें!"

इतना कहकर खोजा नसरुद्दीन फिर अपना चाक चलाने लगा।

"यह घड़ा बड़ा बांका बनेगा!" गीली मिट्टी को हाथों से थपथपाता हुआ वह बोला: "यह हमारे अमीर के सिर की तरह बोलता है! यह घड़ा मुझे महल तक ले जाना पड़ेगा, ताकि कहीं अमीर का सिर फिर जाय तो यह घड़ा काम आ सके।"

"खोजा नसरुद्दीन! होशियार! ऐसी बातें कहने की बदौलत एक दिन कहीं तुम खुद अपना सिर न खो बैठो।"

"आहा! खोजा नसरुद्दीन का सिर उड़ा देना कोई हंसी-ठट्ठा नहीं है।"

मैं खोजा नसरुद्दीन, मियां !
आजाद हमेशा रहा किया !
यह झूठ न कोई बकता हूं,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं !
कह दो अमीर से, धारदार
बनवा रक्खे कोई कटार,
ऐलान करे, मैं हूं रहजन
मुझ से खतरे में पड़ा अमन !
मैं खोजा नसरुद्दीन, मियां !
आजाद हमेशा रहा किया !
यह झूठ न कोई बकता हूं,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं !
जीऊं-गाऊंगा, चाहूंगा,
मैं शम्सी ताब सराहूंगा !
डंके की चोट सुनाऊंगा,
मन की मुराद बतलाऊंगा :
"यह बद अमीर मर जाये रे,
मरकर दोजख में जाये रे !"
हां, सुलतानी फरमान है य'—
मेरा सिर कलम किया जाये !
यह शाह के लिए फांसी है,
खीवा में इस पर बाजी है !
मैं खोजा नसरुद्दीन, मियां !
आजाद हमेशा रहा किया !
यह झूठ न कोई बकता हूं,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं !
भूखा कंगला हूं, नंगा हूं,
परवाह नहीं है, चंगा हूं !
मैं इन्सानों का प्यारा हूं,
किस्मत का बड़ा दुलारा हूं,
डर नहीं किसी सुलतां का है,
डर नहीं अमीर कि खां का है !
मैं खोजा नसरुद्दीन, मियां,
आजाद हमेशा रहा किया ।

यह झूठ न कोई बकता हूं,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं !

नयाज की पीठ तरफ अंगूर की बेल के पीछे से गुलजान का हंसता हुआ चेहरा एक लमहे को दिखायी दिया। खोजा नसरुद्दीन ने अपना गीत बीच में ही रोक दिया और गुलजान से खुशगवार और राज भरे इशारे करने लगा।

"उधर क्या देख रहे हो ?" नयाज ने पूछा : "क्या चीज है उधर ?"

"बहिश्त की चिड़िया, जो दुनिया में सबसे ज्यादा खूबसूरत है !"

बूढ़ा बड़ी मेहनत से पीछे को घूमा, लेकिन तब तक गुलजान फूल-पत्तों में गायब हो चुकी थी और दूर से सिर्फ उसकी रुपहली हंसी सुनायी दे रही थी। धूप की चकाचौंध से बचने के लिए अपने हाथ की आड़ बनाये बूढ़ा बड़ी देर तक अपनी कमजोर आंखें उधर गड़ाये रहा, लेकिन उसे एक डाल से दूसरी डाल पर फुदकती एक गौरेया के सिवा और कुछ दिखायी न दिया।

"जरा समझ से काम लो, खोजा नसरुद्दीन ! यह बहिश्त की चिड़िया कैसे हो गयी ? यह तो मामूली गौरेया है।"

खोजा नसरुद्दीन ठहाका मारकर हंस पड़ा। बेचारा नयाज इस खुशी की कोई तुक न समझकर मायूसी से सिर हिलाता रह गया।

रात के खाने के बाद, खोजा नसरुद्दीन चला गया तो नयाज ऊपर छत पर पहुंचा और हल्की गर्म हवा के झोकों में सोने की तैयारियां करने लगा। थोड़ी ही देर में वह खर्राटे भरने लगा। तभी छोटे जंगले के पीछे से हलकी खांसी सुनायी दी। खोजा नसरुद्दीन वापस आ पहुंचा था।

"सो गये हैं।" गुलजान ने फुसफुसाकर कहा।

एक ही छलांग में खोजा नसरुद्दीन ने जंगला पार कर लिया।

दोनों चनार के दरख्तों के साये में आ गये। लम्बे हरे लिबास में लिपटे दरख्त हौले-हौले ऊंघते लग रहे थे। साफ नीले आसमान में चांद चमक रहा था। उसकी रोशनी हर चीज पर धुंधले नीले रंग की कूंची फेर रही थी। नहर का पानी हहर-हहर करता बह रहा था। यहां-वहां रोशनी में पानी चमकता और फिर परछाइयों में खो जाता।

चांद की पूरी रोशनी में गुलजान खोजा नसरुद्दीन के सामने खड़ी थी। खुद भी वह पूरे चांद की तरह चमक रही थी। यह नाजुक और लचकीली हसीना लम्बी-लम्बी चोटियों में बड़ी खूबसूरत लग रही थी। खोजा नसरुद्दीन ने बहुत धीमे से कहा :

"ऐ मेरी रूह की मलिका ! मैं तुझ पर जान देता हूं। जिन्दगी में मैंने यह पहली और आखिरी बार मुहब्बत की है। मैं तेरा गुलाम हूं, तेरे छोटे

से छोटे इशारे पर सब कुछ करने को तैयार हूं। मेरी पूरी जिन्दगी तेरा ही इन्तजार कर रही थी। अब मैंने तुझे पा लिया है और तुझे कभी न भूल सकूंगा। तेरे बिना मैं जिन्दा नहीं रह सकता।"

"मुझे पूरा यकीन है कि यह बात तुम पहली बार नहीं कह रहे हो!" हसद से गुलजान बोली।

"मैं?" नाराजगी से बौखलाकर खोजा नसरुद्दीन बोला। "आह, गुलजान! तेरे मुंह से ऐसी बात निकली ही क्यों कर?"

इस बात में ऐसी सच्चाई झलक रही थी कि गुलजान ने उसका यकीन कर लिया। अपने कहे पर अफसोस-सी करती हुई, उसके पास मिट्टी की तिपाई पर आ बैठी। उसका बोसा लेता हुआ खोजा नसरुद्दीन अपने होंठ इतनी देर तक उसके होंठो से सटाये रहा कि बेचारी का दम घुटने लगा।

"सुनो," जरा सुस्ताकर वह बोली। "हमारे यहां का रिवाज है कि जिस लड़की का बोसा लेते हैं उसे कोई न कोई तोहफा भेंट करते हैं। एक तुम हो कि एक हफ्ते से ज्यादा हो गया, रोज रात को तुम मेरा बोसा लेते हो लेकिन अभी तक तार का एक टूटा टुकड़ा तक नहीं दिया।"

"सिर्फ इसलिए कि मेरे पास पैसा नहीं था," वह बोला। "लेकिन आज तुम्हारे अब्बा ने मुझे पैसे दिये हैं और कल ही, ए मेरी गुलजान, मैं तेरे लिए एक बढ़िया तोहफा लाऊंगा। बोल, तू कौन सी चीज पसन्द करेगी? मोती या रूमाल? या बिल्लौर जड़ी अंगूठी?"

"कुछ भी सही," फुसफुसा कर वह बोली, "ऐ मेरे प्यारे, मुझे इसकी फिक्र नहीं कि चीज क्या है। सौगात तुम्हारी हो इससे ज्यादा मुझे और कुछ नहीं चाहिए। मैं उसी वक्त से तुम पर निछावर हो गयी जब तुम बाजार में हम लोगों के पास आये थे। जब से तुमने उस बदमाश सूदखोर जाफर को भगाया, तब से तो मेरी मुहब्बत और भी बढ़ गयी।"

गहरा नीला पानी हहर हहर करता अब भी बह रहा था। साफ आसमान में तारे चमक रहे थे। खोजा नसरुद्दीन लड़की से और सटकर बैठ गया। अपना हाथ उसने आगे बढ़ाया और हथेली से उसका उभरा हुआ गर्म गुदगुदा सीना थाम लिया। एक लमहे के लिए उसकी सांस रुक गयी। उस पर जादू सा छा गया। तभी यकायक उसे चिनगारियां उड़ती दिखायी दीं और एक गाल झन-झना उठा। वह पीछे को हटा और कोहनी से अपना बचाव किया। फनफनाती हुई गुलजान उठ खड़ी हुई।

"मुझे ऐसा लगा कि मैंने कहीं चांटे की आवाज सुनी है।" आहिस्ते से खोजा नसरुद्दीन बोला। "बातचीत का वक्त क्या लगड़ने-झगड़ने में खोना चाहिए?"

"बातचीत ?" उसे टोककर दिलजान बोली। "यही क्या कम बुरा है कि हया-शरम छोड़कर मैं तुम्हारे सामने बिना बुर्का डाले आ जाती हूं। तुम अपने लम्बे हाथ उधर क्यों बढ़ाते हो जिधर तुम्हें नहीं बढ़ाने चाहिए ?"

"मेहरबानी करके यह भी बता दो कि किसने तय किया है कि हाथ कहां बढ़ाने चाहिए, कहां नहीं ?" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। "लो, अगर तुमने सबसे बड़े आलिम इब्न तुफैल की किताबें पढ़ी होतीं..."

"खुदा का शुक्र है कि ऐसी गन्दी किताबें मैंने नहीं पढ़ीं !" गर्म होती हुई वह फिर बीच में बोल पड़ी। "मैं अपनी इज्जत की हिफाजत करती हूं जैसा हर शरीफ लड़की को करना चाहिए।"

वह उसके पास से उठी और चली गयी। जीने की सीढ़ियां उसके हलके कदमों से चरमरायीं और फौरन बाद बारजे की झिझरीदार खिड़की से रोशनी दिखायी देने लगी।

"मैंने उसके जज्बात को ठेस पहुंचायी है," खोजा नसरुद्दीन ने सोचा, "मैं बड़ा बेवकूफ हूं। कोई परवाह नहीं। कम से कम पता तो लगा कि उसका मिजाज कैसा है। इस तरह वह मेरे तमाचा जड़ सकती है तो इसका मतलब है कि वह किसी और के भी तमाचा जड़ सकती है, जिसका मतलब यह है कि वह बड़ी वफादार बीवी साबित होगी। शादी से पहले अगर वह मेरे दस बार दस-दस चांटे मार लेती है, लेकिन शादी के बाद गैरों से भी चांटो में ऐसी ही सख्ती बनी रहे, तो मुझे पूरी तस्कीन होगी।"

पंजों के बल चलकर वह बारजे तक पहुंचा और हल्के से आवाज दी :

"गुलजान !"

कोई जवाब नहीं।

"गुलजान !"

खुशबू, अंधेरा, खामोशी। खोजा नसरुद्दीन गमगीन हो गया। धीमी आवाज में, ताकि बूढ़ा नयाज जाग न जाय, उसने गाना शुरू किया :

'तेरी चितवन ने मेरी जां, मेरे दिल की चोरी की है
भले तेरी जबां मुझको करे रुसवा, भेजे लानत
मगर दिल को चुराने की तेरी नजरों की है आदत !
चुराने की मांगे कीमत, यह हद सीनाजोरी की है !
गजब की हैरानी है, यह कहीं देखा है दुनिया ने
शिकारे-दुज्दी चोरों को चुराने का हरजाना दे ?
नजर दो-चार बोसों की मुझे दे, क्या भली सी है !
उहूं, दो-चार बोसों की नजर काफी नहीं होती

य' आबे-तल्ख हैं, जितना पियो तस्कीं नहीं होती !
सितमगर, बंद करके आस्तां, यह क्या सजा दी है !
कहीं इससे तो अच्छा था, हुआ होता हमारा खूं
बता तो अब कहां तस्कीं, कहां ख्वाबे गिरां पाऊं ?
निगाहे नाज के जिस तीर ने मुझ को किया बिस्मिल
उसी कातिल को फिर से ढूंढ़ता फिरता है मेरा दिल
कहां वे मुश्क-बू गेसू, कहां बेताब यह जी है !

इस तरह वह गाता रहा और हालांकि गुलजान ने न तो उसे जवाब ही दिया और न उसे दिखायी दी, तो भी उसे यकीन था कि वह कान लगाकर सुन रही है। उसे भरोसा था कि कोई भी लड़की ऐसे गीत को सुनकर बैठी नहीं रह सकती। उसका अन्दाजा सही था। झिलमिली थोड़ी सी खुली।

"आओ !" गुलजान ने फुसफुसाकर कहा। "लेकिन आहिस्ते से आना। अब्बाजान कहीं जाग न जांय।"

वह जीना चढ़कर ऊपर पहुंचा और उसके करीब बैठ गया। भेड़ की चर्बीवाले चिराग में बत्ती बिल्कुल सबेरे तक जलती रही। वे बातें करते रहे, बातें करते रहे; तब भी पूरी बातें न कर पाये। मुख्तसिर में सब कुछ ठीक चलता रहा, गोया वैसे ही चलता रहा जैसे कि चलना चाहिए था, यानी जैसा कि दानिशमन्द आलिम अबू मुहम्मद अली इब्नहज्म ने अपनी किताब "बत्तख का हार" में मामलाते इश्कवाले सबक में लिखा है : "मुहब्बत—अल्लाह उसमें बरकत दे—एक खिलवाड़ की शक्ल में पैदा होती है और सबसे अहम बात बन जाती है। इसकी खूबियां इतनी आला हैं कि उनका बयान नहीं हो सकता और इसकी हकीकत मुश्किल से ही समझ में आती है। इस बात की वजह आसानी से समझ में आ जाती है कि ज्यादातर हसीन सूरत से ही क्यों मुहब्बत होती है। चूंकि इंसान की रूह खूबसूरत है, वह हर खूबसूरत चीज की तरफ, खास तौर से मुकम्मल हुस्न की तरफ झुकती है। ऐसी शक्ल देखकर रूह उसे जांचती है, और अगर सतह से नीचे अपनी तरह की कोई चीज पाती है, तो उनमें मेल हो जाता है और सच्ची मुहब्बत पैदा हो जाती है... सच ही, बाहरी शक्ल में रूह के जर्रे बड़े ताज्जुबखेज ढंग से गुंथे रहते हैं।"

: २ :

छत पर बूढ़ा नयाज खांसता, खरखर सांस लेता हुआ कुनमुनाया। नींद-भरी आवाज में गुलजान को पुकारकर उसने पानी मांगा। खोजा नसरुद्दीन को गुलजान ने दरवाजे की तरफ धकेला। वह जीने से हलके पांव उतरा, मानो

उसके पैर सीढ़ियों पर पड़ ही नहीं रहे थे और जंगला कूदकर पार हो गया। थोड़ी ही देर बाद, नहर से मुंह-हाथ धोकर और अपनी खलअत के दामन से बदन पोंछकर, वह फिर लौट आया और लकड़ी का फाटक खटखटाने लगा।

"सलामालेकुम खोजा नसरुद्दीन !" बूढ़े ने छत से ही उसका इस्तकबाल किया। "पिछले कई दिनों से तुम बड़े तड़के उठने लगे हो ! सोने का वक्त तुम्हें कब मिलता है ? चलो, काम शुरू करने के पहले हम लोग चाय पीलें।"

दोपहर में खोजा नसरुद्दीन बूढ़े नयाज को छोड़ गुलजान के लिए सौगात खरीदने बाजार के लिए रवाना हुआ। उसने रंगीन बदख्शा साफा और नकली दाढ़ी लगाने की होशियारी बरती, जो वह आम तौर से किया करता था। इस तरह भेस बदलने से वह पहिचाना नहीं जाता था और हिफाजत के साथ, जासूसों के डर के बिना, दूकानों और चायखानों में चला जाता था।

उसने मूंगे की एक माला पसन्द की जिसका रंग उसे अपनी माशूका के होठों की याद दिलाता था। जौहरी ज्यादा सख्त और झगड़ालू साबित नहीं हुआ। सिर्फ घंटे भर के भाव-तोल और जोर-जोर की चखचख-झिकझिक में ही तीस तंके में हार खोजा नसरुद्दीन का हो गया।

वापस लौटते हुए खोजा नसरुद्दीन ने बाजार की मसजिद के पास एक भीड़ देखी। लोग ठसाठस, खिचपिच खड़े, गरदनें उठाये, एक-दूसरे के कन्धों के पार कुछ देख रहे थे। पास आने पर खोजा नसरुद्दीन को एक चिड़चिड़ी और ऊंची आवाज सुनायी दी :

"ऐ मोमिनो ! तुम अपनी आंखों से देख लो ! इसे लकवा मार गया है और दस साल से यह बिना हिले-डुले ऐसे ही लेटा है। इसके बदन के हिस्से ठंडे और बेजान हो गये हैं। देखो, यह अपनी आंखें भी नहीं खोल पाता। बहुत दूर से यह हमारे शहर में आया है। मेहरबान दोस्त और रिश्तेदार इसे यहां इसलिए ले आये कि अब जो सिर्फ एक इलाज बचा है, उसे भी आजमा लें। आज से एक हफ्ते बाद लासानी बहाउद्दीन पाक-वली के उर्स के दिन इसे कब्र की सीढ़ियों पर लिटा दिया जायगा। ऐसे ही अंधे, लंगड़े, बिस्तर से न उठ सकनेवाले मरीज अच्छे हुए हैं, हर बार अच्छे हुए हैं। इसलिए हम लोग दुआ करें, ऐ सच्चे मुसलमानो, कि पाक शेख हम पर करम करें और इस बदकिस्मत शख्स को चंगा कर दें।"

वहां इकट्ठे लोगों ने दुआ की और इसके बाद फिर वही तर्रार आवाज सुनायी दी :

"ऐ मोमिनो ! अपनी आंखों से देख लो ! यह शख्स बिना हिले-डुले ऐसे ही दस साल से पड़ा हुआ है।"

खोजा नसरुद्दीन धक्का देता भीड़ में आगे बढ़ गया और पंजों के बल खड़े होकर एक लम्बे दुबले मुल्ला को देखा जिसकी आंखें छोटी और शरारत भरी थीं और जिसकी दाढ़ी कच्ची थी। वह चिल्ला-चिल्लाकर अपनी उंगली से अपने पैरों के पास पड़ी एक खाट की तरफ इशारा कर रहा था जिस पर लकवामारा शख्स लेटा हुआ था।

"ऐ मुसलमानो! देखो, किस कदर बदकिस्मत, किस कदर काबिले रहम है यह शख्स! लेकिन एक हफ्ते में बहाउद्दीन वली इसे चंगा कर देंगे और यह फिर अपनी जिन्दगी पा जायगा!"

बीमार आदमी वहीं लेटा हुआ था—आंखें बन्द किये; चेहरे पर उदास, पसमुर्दा, रहम मांगता भाव लिये हुए! खोजा नसरुद्दीन ने ताज्जुब से सांस खींची। यह चेचकरू चेहरा और चपटी नाक वह हजारों के बीच पहचान सकता था। वह शख्स शायद बहुत दिनों से लकवे का शिकार था। नतीजा यह कि काहिली और आराम ने उसके चेहरे को बहुत मोटा कर दिया था।

उस दिन के बाद, खोजा नसरुद्दीन जब भी उस खास मसजिद के पास से गुजरता, हमेशा उस दुबले मुल्ला और लकवे के शिकार शख्स को देखना न भूलता जिसका दर्दनाक चेचकरू चेहरा हर दिन और मोटा व चर्बीदार होता जाता था।

आखिर शेख साहब के उर्स का दिन आ गया। रवायत के मुताबिक रबी-उस्सानी (मई) के महीने में दोपहर को उनका इन्तकाल हुआ था और हालांकि आसमान में बादल नहीं थे और दिन साफ था, लेकिन उनकी मौत के वक्त सूरज धुंधला गया था, जमीन कांप उठी थी और बहुत से घर जिनमें गुनहगार रहते थे गिर गये थे और गुनहगार उन्हीं के नीचे दब गये थे। मसजिदों में यह कहानी सुनाकर मुल्ला लोग मुसलमानों को हिदायत करते थे कि वे शेख के मजार पर आयें और उनकी मजार की इज्जत करना न भूलें जिससे उनका शुमार दहरियों में न हो और उनकी किस्मत भी गुनहगारों जैसी न हो जाय।

अभी अंधेरा ही था कि जियारत करनेवाले घरों से निकल पड़े और सूरज निकलते-निकलते मजार के आसपास की जगह लोगों से खचाखच भर गयी। सड़कों पर आनेवालों का तांता लगा हुआ था। पुराने रिवाज के मुताबिक सब लोग नंगे पैर थे। यहां, और लोगों के अलावा ऐसे लोग भी थे जो बहुत दूर से आये थे और जो या तो खास तौर पर मजहबी खयाल के थे या जिन्होंने कोई बहुत भारी गुनाह किया था और यहां उससे तौबा करने आये थे। शौहर अपनी बांझ बीवियों को लाये थे, मां बीमार बच्चों को। बूढ़े बैसाखियों पर

लंगड़ा रहे थे। कोढ़ी दूर पर इकट्ठे थे और मजार के सफेद गुम्बद पर उम्मीद भरी निगाहें लगाये थे।

इबादत बहुत देर में शुरू हुई। अमीर का इन्तजार था। सूरज की झुलसानेवाली गरमी में ठसाठस भीड़ थी। लोगों को बैठने की हिम्मत नहीं हो रही थी। उनकी आंखों से लालच और भूख भरी लपट-सी निकल रही थी। इस दुनिया में सुख पाने की उम्मीद से महरूम वे आज किसी करिश्मे के इन्तजार में थे। जोर से कहा कोई भी लफ्ज सुनते ही वे चौंक पड़ते थे। उम्मीद का दबा हुआ जज्बा अब बरदाश्त से बाहर होता जा रहा था। दो दरवेशों को हाल आ चुका था। जमीन में मुंह गाड़े वे मिट्टी खा रहे थे और उनके मुंह से फेन बह रहा था। भीड़ उफन रही थी। हर तरफ औरतें चीख रही थीं।

यकायक हजारों गलों से दबी हुई आवाज फूट पड़ी :

"अमीर ! अमीर !"

महल के पहरेदारों ने लाठियां घुमा-घुमाकर भीड़ में रास्ता बनाया और इस चौड़े रास्ते पर अमीर जियारत के लिए बढ़े। नंगे पांव, सिर झुका हुआ, आसपास के शोरगुल से बेखबर, पाक खयालों में डूबे हुए। नौकर-चाकरों की फौज चुपचाप पीछे चल रही थी। नौकर कालीन बिछाने और अमीर के चल चुकने पर उसे लपेटकर आगे ले जाने के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे।

ऐसे पुरअसर जोश को देखकर बहुतों की आंखों में आंसू आ गये।

अमीर चलकर मिट्टी के उस ढेर तक पहुंचे जो मजार के सामने था। सामने जांनमाज बिछाया गया। दोनों तरफ खड़े वजीरों ने सहारा दिया और अमीर घुटनों के बल बैठ गये। सफेद लिबास में ढंके मुल्ला आधा दायरा बनाकर पीछे आ खड़े हुए और गर्म धुंध भरे आसमान की तरफ हाथ उठाकर जोर-जोर से आयतें पढ़ने लगे।

इबादत का न खत्म होनेवाला सिलसिला जारी रहा। बीच-बीच में नसीहत की तकरीरें होती जातीं। खोजा नसरुद्दीन आस-पास खड़े लोगों की नजरें बचाता एक वीरान कोने में उस कोठरी के पास जा पहुंचा जहां अंधे, लंगड़े-लूले और बीमार रखे गये थे। इन्हें आज के दिन नजात मिलने की उम्मीद दिलायी गयी थी और वे अपनी बारी आने का इन्तजार कर रहे थे।

कोठरी के दरवाजे खुले हुए थे। लोग-बाग भीतर झांक-झांककर पूछ-ताछ कर रहे थे। जो मुल्ला यहां तैनात थे उनके हाथों में खैरात लेने के लिए तांबे के बड़े-बड़े थाल थे। बड़ा मुल्ला कह रहा था :

"... और तभी से शेख बहाउद्दीन पाक-वली की दुआ हमेशा-हमेशा के लिए बुखारा शरीफ और इसके सूरज के मानिन्द अमीरों पर है। और हर

साल इसी दिन बहाउद्दीन वली, खुदा के हम नाचीज बन्दों को करिश्मा कर दिखाने की ताकत बख्शते हैं। ये सभी अंधे, लंगड़े-लूले, जिनों व आसेब के मारे और बीमार लोग रोग-दुःख से नजात पाने का इन्तजार कर रहे हैं। हमें उम्मीद है कि बहाउद्दीन वली की मदद से हम उन्हें तकलीफों से नजात दिला भी देंगे।"

मानो इस तकरीर के जवाब में, छप्पर के भीतर से रोने, चिल्लाने और दांत किटकिटाने की आवाजें आने लगीं। अपनी आवाज और ऊंची करता हुआ मुल्ला बोला :

"ऐ खुदा पर ईमान रखनेवाले मोमिनो! मसजिदों की अराइश के लिए फैयाजी से खैरात दो! अल्लाह तुम्हारी खैरात को कुबूल करेगा!"

खोजा नसरुद्दीन ने छप्पर के भीतर झांका। दरवाजे के पास ही मोटे, थलथल, चेचकरू चेहरेवाला नौकर खाट पर पड़ा था। उससे कुछ ही दूर अंधेरे में पट्टियों में लिपटे, खटोलों पर पड़े, बैसाखियों की मदद से चलनेवाले लोगों का भम्भड़ था। यकायक मजार की तरफ से उस बड़े मुल्ला की आवाज आयी, जिसने अभी-अभी नसीहत की थी :

"अन्धे को! अन्धे आदमी को मेरे पास लाओ।"

रास्ते से खोजा नसरुद्दीन को अलग धकेलते हुए कई मुल्ला अंधेरे और हब्सवाले छप्पर में घुस गये और भिखमंगों जैसे फटे चीथड़ोंवाले अन्धे आदमी को निकाल लाये। हाथों को आगे बढ़ाये वह टटोलता हुआ पत्थरों से लड़खड़ाता गिरता-पड़ता आगे बढ़ रहा था।

अन्धा बड़े मुल्ला के पास पहुंचा। उसके कदमों पर मुंह के बल गिर पड़ा और मजार की सीढ़ियों पर अपने होंठ चिपका दिये। बड़े मुल्ला ने उसके सिर पर हाथ फेरा और वह फौरन चंगा हो गया।

"मेरी नजर लौट आयी! मैं देख सकता हूं! वाह वाह! मैं देख सकता हूं!" कांपती हुई ऊंची आवाज में वह चिल्ला रहा था। "ऐ बहाउद्दीन वली! मुझे दिखायी देने लगा! मैं देख सकता हूं! वाह वाह! कैसा शानदार और ताज्जुबखेज करिश्मा हुआ है! वाह वाह!"

इबादतवालों की भीड़ उसके पास घिर आयी और तरह-तरह की आवाजों का शोर होने लगा। बहुत से लोग उसके पास आये और पूछने लगे :

"बताओ तो, कौन सा हाथ उठाया है मैंने—दाहिना या बांया।"

उसने ठीक जवाब दिये और सबको यकीन हो गया कि उसकी नजर सचमुच लौट आयी है। तभी मुल्लाओं की एक फौज की फौज तांबे के थाल लिये हुए भीड़ में घुसी और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी :

"ऐ सच्चे मुसलमानो ! अपनी आंखों से तुमने अभी एक मोजेजा देखा है। ऐ मोमिनो ! मसजिदों की अराइश के लिए कुछ खैरात दो।"

थाल में मुट्ठी भर अशर्फियां डालने में अमीर ने पहलकदमी की। उनके बाद वजीरों और अफसरों ने खैरात दी और थाल में एक-एक अशरफी डाली। और तब भीड़ भी फैयाजी से चांदी और तांबे के सिक्के थालों में डालने लगी। थाल जल्दी-जल्दी भर रहे थे। मुल्लाओं को तीन बार उन्हें बदलना पड़ा।

जैसे ही खैरात में कुछ सुस्ती आयी, एक लंगड़े आदमी को छप्पर से निकालकर लाया गया। और जैसे ही उसने कब्र की सीढ़ियों को छुआ वह चंगा हो गया और बैसाखियां फेंक टांगे उठा-उठाकर नाचने लगा। तभी फिर खाली थाल लिये मुल्ला लोग भीड़ में आ पहुंचे और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे :

"ऐ नेक इंसानो ! ऐ सच्चे ईमानवालो ! खैरात करो ! खैरात करो !"

सफेद दाढ़ीवाला एक मुल्ला खोजा नसरुद्दीन के पास आया। खोजा नसरुद्दीन खयालों में डूबा हुआ था और टकटकी लगाये कोठरी की दीवालें देख रहा था।

"ऐ मोमिन ! तुमने अभी-अभी एक करिश्मा देखा है। खैरात करो और तुम्हारी खैरात का अल्लाह फल देगा।"

खोजा नसरुद्दीन ने काफी जोर से, ताकि पास खड़े लोग सुन सकें, जवाब दिया :

"तुम इसे करिश्मा कहते हो और मुझ से खैरात मांगते हो ? पहली बात तो यह कि मेरे पास खैरात के लिए पैसा नहीं है। दूसरी बात यह कि ऐ मुल्ला, क्या तुम्हें नहीं मालूम है कि मैं खुद एक पहुंचा हुआ फकीर हूं और इससे भी बड़ा करिश्मा दिखा सकता हूं ?"

"तू फकीर है ?" मुल्ला जोर से चिल्लाया। "ऐ मुसलमानो ! इसकी बात पर यकीन न लाओ ! इसकी जुबान से शैतान बोल रहा है !"

खोजा नसरुद्दीन भीड़ की तरफ मुड़ा।

"मुल्ला को यकीन नहीं कि मैं करिश्मे दिखा सकता हूं। मैंने जो कहा है, मैं उसका सबूत दूंगा। इस छप्पर में अन्धे, लंगड़े, बीमार और बिस्तर पर पड़े लोग इकट्ठे हैं। मैं इन्हें बिना हाथ लगाये अच्छा कर देने का दावा करता हूं। मैं सिर्फ कुछ अल्फाज कहूंगा और ये लोग अपने-अपने रोगों से नजात पा जायेंगे, उठकर इधर-उधर बिखर जायेंगे और इतनी तेजी से भागेंगे कि तेज अरबी घोड़े भी इनको न पकड़ पायेंगे।"

कोठरी की मिट्टी की दीवालें पतली थीं और जगह-जगह चटख रही थीं। खोजा नसरुद्दीन ने एक ऐसी जगह तलाश की जहां बहुत सी दरारें थीं और वहीं अपने कन्धे से अन्दर को धक्का दिया। कुछ मिट्टी गिरी। मिट्टी के गिरने

की हल्की-सी मनहूस सरसराहट हुई। खोजा नसरुद्दीन ने जोर का धक्का दिया। इस बार मिट्टी का एक बड़ा-सा लोंदा जोर की आवाज करता हुआ भीतर को गिरा। दीवाल के इस बड़े छेद से अंधेरे की तरफ से गर्द उड़ती दिखाई दी।

खोजा नसरुद्दीन पागलों की तरह चिल्लाया :

"जलजला ! जलजला ! भागो ! दौड़ो ! बचाओ ! बचाओ !" दीवाल में उसने एक और धक्का मारा। भरभरती हुई मिट्टी गिरी।

एक लमहे के लिए तो कोठरी के भीतर सन्नाटा रहा। लेकिन, फौरन बाद हंगामा मच गया। चेचकरू लकवे का मरीज सबसे पहले दरवाजे की तरह लपका। लेकिन उसकी खाट दरवाजे से अड़ गयी और पीछेवालों का रास्ता रुक गया। अन्धे, लंगड़े, लूले, बीमार, अपाहिज, एक-दूसरे को धक्के देते चीख-चिल्ला रहे थे। और खोजा नसरुद्दीन ने जब दीवाल में एक और धक्का मारकर तीसरा ढोंका गिराया, तो एक जोर के धक्के के साथ सब मरीज चेचकरू नौकर, दरवाजे व चूल-चौखट को बाहर ठेलकर, अपनी-अपनी बीमारियां भूल, इधर-उधर निकल भागे।

भीड़ में हंसी पड़ गयी। लोग ताने कस रहे थे। सीटियां बजा रहे थे। शोर मचाकर बू-बू कर रहे थे। इस शोरगुल को भी दबानेवाली ऊंची आवाज में खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया : "देखा तुमने मुसलमानो ? मैंने कहा था न कि मेरे चन्द अल्फाज ही इन्हें चंगा कर देंगे !"

मुल्ला की नसीहत में लोगों की दिलचस्पी खत्म हो चुकी थी। हर तरफ से दौड़-दौड़कर लोग इधर ही आ रहे थे। जब उन्हें इस वाकये का पता चलता तो वे ठहाका मारकर हंस पड़ते और दूसरों को इस वाकये को सुनाते। जल्द ही दुआ करनेवालों को पता लग चुका था कि कोठरी में क्या हुआ है और बड़े मुल्ला ने जब हाथ उठाकर लोगों को खामोश होने की हिदायत दी तो भीड़ ने सीटियों, गालियों और बू-बू के शोर-शराबा से जवाब दिया।

और फिर भीड़ में "खोजा नसरुद्दीन ! खोजा नसरुद्दीन ! लौट आया खोजा नसरुद्दीन ! हमारा प्यारा खोजा नसरुद्दीन !" की आवाज गूंज उठी। हर तरफ यही आवाज उठने लगी। एक शोर उठ खड़ा हुआ।

चिढ़ाने-चिल्लानेवाली आवाजों से घबराकर मुल्ला लोग खैरात के थाल छोड़-छोड़कर भीड़ से निकल भागे। खोजा नसरुद्दीन अब तक बहुत दूर पहुंच चुका था। उसने अपना रंगीन साफा और नकली दाढ़ी खलअत के नीचे छिपा ली थी क्योंकि उसे अब जासूसों से मुठभेड़ का डर नहीं था। वे अभी मजार के आस-पास ही खाक छान रहे थे।

लेकिन गफलत में खोजा नसरुद्दीन यह नहीं देख पाया कि सूदखोर जाफर उसका पीछा कर रहा है और मकानों के नुक्कड़ों और सड़क के दरख्तों की आड़ में लुकता-छिपता उसके पीछे-पीछे आ रहा है।

एक सुनसान गली में पहुंचकर खोजा नसरुद्दीन एक दीवाल के करीब आया, हाथों के सहारे दीवाल पकड़कर उछला और धीमे से खांसा। फौरन ही हलके कदमों की आहट और एक औरत की आवाज सुनाई दी :

"आ गये मेरे दिलबर!"

पेड़ के पीछे छिपे सूदखोर को इस दोशीजा की आवाज पहचानते देर न लगी। फिर उसे फुसफुसाहट, दबी हंसी और बोसों की आवाज सुनायी दी।

"अच्छा तो तू उसे मुझसे अपने लिए छीन ले गया!" हसद से तड़पते सूदखोर ने सोचा।

गुलजान से रुखसत होकर खोजा नसरुद्दीन ने ऐसे तेज कदम बढ़ाये कि सूदखोर पीछा न कर सका। जल्द ही तंग गलियों की भूल-भुलैयों में खोजा नसरुद्दीन उसकी आंखों से ओझल हो गया।

"हाय! अब मैं उसे गिरफ्तार कराने का इनाम न पाऊंगा!" अफसोस करता हुआ सूदखोर जाफर सोचने लगा। "लेकिन कोई परवाह नहीं। होशियार खोजा नसरुद्दीन! होशियार! मैं बदला लेकर छोड़ूंगा।"

: ३ :

अमीर के खज़ाने को बहुत बड़ा घाटा हुआ था। बहाउद्दीन वली के मजार पर हर साल जितनी खैरात इकट्ठी होती थी, इस बार उसका दसवां हिस्सा भी न हो पाया था। इससे भी बुरी बात यह थी कि लोगों के दिमाग में आजाद-खयाली के बीज फिर बो दिये गये थे। जासूसों ने खबर दी थी कि मजार पर जो वाकया हुआ था उसकी खबर सल्तनत के कोने-कोने में पहुंच गयी है और इसके नतीजे सामने आ रहे हैं। तीन गांवों की रैयत ने मसजिदों की तामीर पूरी करने में मदद देने से इनकार कर दिया था। चौथे गांव से बेइज्जती से मुल्ला को मार भगाया गया था।

अमीर ने वजीरे-आजम बख्तियार को दरबार लगाने का हुक्म दिया। महल के उस बाग में, जो दुनिया के सबसे खूबसूरत बागों में से था, दरबार लगा। यहां, छायेदार दरख्तों में खूबसूरत और नायाब फल-फूल लगे थे : कई तरह के आड़ू, अंजीर, खट्टी नारंगियां, पुलम और बहुत सी दूसरी किस्मों के फल, जिनको यहां गिना सकना नामुमकिन है। गुलाब, बनफशा, सोसन गुच्छों में लगे थे और हवा में बहिश्त जैसी खुशबू बिखेर रहे थे। नरगिस रीझी हुई सी गुलबहार से ताक-झांक कर रही थीं। फव्वारे नाच रहे थे। संगमरमर

के हौजों में सुनहरी मछलियों के झुंड तैर रहे थे। जगह-जगह चांदी के पिंजरे लटक रहे थे। इनमें दूर-दूर से लायी गयी चिड़ियां गा रही थीं, चहक रही थीं और सीटी बजा रही थीं।

लेकिन वजीर, रईस और आलिम जादू जैसी इस खूबसूरती की तरफ से आंख-कान बन्द किये, बहरे और अन्धे बने, बेखबर से चले जा रहे थे, क्योंकि उनके खयाल उनके जाती फायदों पर, दुश्मनों के हमलों से बचने और उन पर अपने दांव चलाने में, लगे हुए थे और इसलिए उनके सूखे और सख्त दिलों में और किसी चीज की गुंजाइश नहीं थी। अगर सारी दुनिया के फूल यकायक मुरझा जाते, अगर पूरे खल्क की चिड़ियां यकायक गाना बन्द कर देतीं, तो भी वे इस सबसे बेखबर रहते, क्योंकि उनके दिमाग लालच और हवस की साजिशों से भरपूर थे।

वे आये तो उनकी आंखें बुझी हुई थीं, होंठ सफेद थे। रेतीले रास्ते पर चमड़े के उनके सलीपर घिसटते चल रहे थे। वे खुशबूदार तुलसी की घनी पत्तियों के झुरमुट के पीछे ठंडे बंगले में घुस गये। यहां फीरोज की मूठवाली अपनी छड़ियां उन्होंने दीवाल से टिकायीं और रेशमी गद्दों पर बैठ गये। भारी-भरकम सफेद साफों के बोझ से दबे अपने सिर झुकाये वे अमीर के आने का इंतजार करने लगे।

गमगीन खयालों में डूबे, माथे पर सिलवटें डाले, भारी कदमों से अमीर जब दाखिल हुए तो सभी उठकर खड़े हो गये, जमीन तक झुककर सलामी दी और तब तक खड़े रहे जब तक अमीर ने एक हलका सा इशारा नहीं किया। और तब अदबी कायदे के मुताबिक वे अपने घुटनों के बल दोजानूं बैठ गये और बदन का बोझ एड़ियों पर डालकर उंगलियों से कालीन छूने लगे। हर कोई इसी खयाल में डूबा था कि आज अमीर का कहर किस पर बरपा होगा और इससे मैं क्या फायदा उठा सकता हूं।

दरबारी शायर बदस्तूर अमीर के पीछे आधे चांद की गोलाई में खड़े हो गये और धीरे-धीरे खांसकर गले साफ करने लगे।

इनमें जो सबसे आला शायर था और जिसे 'शायरे-आजम' का खिताब मिला था मन ही मन उन शेरों को दोहरा रहा था जो उसने सबेरे-सबेरे लिखे थे और जिन्हें अमीर के सामने वह इस ढंग से सुनाना चाहता था मानो उन्हें इलहाम में कह डाला हो।

चंवरकश और हुक्काबरदार अपनी-अपनी जगह तैनात हो गये।

"बुखारा पर किसकी हुकुमत है?" धीमी आवाज में अमीर ने बोलना शुरू किया। सुननेवालों को कंपकंपी आ गयी। "मैं तुम लोगों से पूछता हूं,

बुखारा में किसकी हुकुमत है? हमारी या उस कम्बख्त काफिर खोजा नसरुद्दीन की?" इतना कहते-कहते गुस्से से उनका गला रुंध गया।

गुस्से पर काबू पाते हुए वह गुर्राकर बोले: "हम तुम्हारा जवाब सुनना चाहते हैं। बोलो।"

उनके सिर पर घोड़े की दुम का चंवर डुलाया जा रहा था। दरबारी चुप थे। डर से वे अधमरे हो रहे थे। वजीर चोरी-चोरी एक-दूसरे को कोहनी मार रहे थे।

"पूरी सल्तनत में उसने कहर मचा रखा है।" अमीर ने फिर कहना शुरू किया। "दारुल सल्तनत के अमन में उसने खलल डाला है। हमारा आराम और हमारी नींद उसने हराम कर दी है और हमारे खजाने की जायज आमदनी उड़ा ली है। खुले आम वह अवाम को बगावत और गदर के लिए ललकार रहा है। इस बदमाश से कैसे निपटा जाय। बोलो, मैं जवाब मांगता हूं!"

वजीर, रईस, अफसर, आलिम एक साथ एक सुर में बोल उठे: "ऐ खलकत के मरकज! ऐ अमन के पासबां! बेशक उसको सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए।"

"तो फिर अभी तक वह जिन्दा क्यों है?" अमीर ने पूछा। "या कि यह हमारा—तुम्हारे आका, जिनका नाम भी तुम्हें इज्जत और खौफ के साथ लेना चाहिए, और जमीन पर लेटे बिना न लेना चाहिए और मैं यहां यह कह दूं कि काहिली, गुस्ताखी और लापरवाही की वजह से तुम लोग यह नहीं करते—मैं फिर कहता हूं, क्या यह हमारा काम है कि खुद बाजार में जाकर उसे पकड़ें और तुम लोग अपने-अपने हरम में अपनी हवस और भूख पूरी करने में मशगूल रहो, और सिर्फ तनख्वाह मिलने के दिन ही अपने फर्ज याद किया करो? बख्तियार! क्या जवाब है तुम्हारा?"

बख्तियार का नाम सुनते ही दूसरों ने आराम की सांस ली और अर्सला बेग के होठों पर डाह-भरी मुस्कान खेल गयी। बख्तियार से उसका बहुत पुराना झगड़ा चल रहा था। बख्तियार अपने पेट पर हाथ बांधकर अमीर के सामने जमीन पर झुक गया। उसने कहना शुरू किया:

"मुसीबतों और परेशानियों से अल्लाह हमारे अजीज अमीर की हिफाजत करे! इस नाचीज गुलाम की वफादारी और खिदमतें अमीर को खुद मालूम हैं—इस गुलाम की वफादारी, जो अमीर की अजमत के सामने जर्रे के मानिन्द है। मेरे वजीरे-आजम के रुतबे पर मुकर्रर होने से पहले सल्तनत का खजाना करीब-करीब खाली था। लेकिन मैंने कई टैक्स जारी किये, मैंने नौकरी पाने पर टैक्स लगाया, मैंने हर उस चीज पर टैक्स लगाया जिस पर लगाया जा सकता

था और अब खजाने में रकम जमा किये बगैर कोई छींकने तक की जुरअत नहीं कर सकता।

"इसके अलावा मैंने सरकार के छोटे नौकरों और सिपाहियों की तनख्वाहें आधी कर दीं, बुखारा के लोगों से उनके खाने-कपड़े का खर्च दिलवाना शुरू किया। और इस तरह, ऐ मेरे मालिक, शाही खजाने की काफी बड़ी रकम बचने लगी। लेकिन मैंने अब तक अपनी सारी खिदमतें बयान नहीं की हैं। मेरी ही कोशिशों से बहाउद्दीन वली के मजार पर फिर से करिश्मे होने लगे हैं और मजार पर हजारों लोग जियारत के लिए आने लगे हैं। इस तरह हमारे शाहंशाह के खजाने में, जिनके मुकाबले दुनिया के और शाह धूल के मानिन्द हैं, हर साल इतना चन्दा आने लगा है कि खजाना लबालब भर जाता है और शाही आमदनी कई गुनी बढ़ गयी है ..."

अमीर ने टोका :

"कहां है वह आमदनी? खोजा नसरुद्दीन की वजह से वह हम से छिन गयी। हम तुम से तुम्हारी खिदमतों के बारे में नहीं पूछ रहे। उन्हें तो हम एक से ज्यादा बार सुन चुके हैं। बेहतर यह हो कि तुम बताओ कि खोजा नसरुद्दीन पकड़ा कैसे जाय।"

बख्तियार ने जवाब दिया : "मालिक! वजीरे-आजम के फर्ज में मुजरिमों को पकड़ना शामिल नहीं है। हमारी सल्तनत में यह काम अर्सलां बेग साहब के सुपुर्द है जो फौज और महल के पहरेदारों के आला हाकिम हैं।"

बोलने के बाद बख्तियार ने अमीर के सामने कोर्निश की और अर्सलां बेग पर जीत और बैर भरी निगाह डाली।

अमीर ने अर्सलां बेग को हुक्म दिया : "बोलो!"

अर्सलां बेग, बख्तियार को गुस्से से देखता उठ खड़ा हुआ। उसने लम्बी सांस ली और उसकी काली दाढ़ी तोंद पर उठी और गिरी।

"अल्लाह हमारे सूरज के मानिन्द जहांपनाह को हर आफत से बचाये! बीमारी और गम से उनकी हिफाजत करे! मेरी खिदमतें अमीर को बखूबी मालूम हैं। जब खीवा के खान ने बुखारा के खिलाफ जंग छेड़ी, खलकत के मरकज, जिलिल्लाह अमीर ने मुझे बुखारा की फौज की कमान देने की मेहरबानी फरमायी। मैं दुश्मन को, बिना खून खराबी, खदेड़ने में कमायाब हुआ और पूरा मामला हमारे हक और फायदे में रहा।

"मैंने किया यह कि खीवा की सरहद से कई दिन के रास्ते तक, अपनी सल्तनत के सभी गांवों और कस्बों को, फसलों, बागों, सड़कों और पुलों को बरबाद करने का हुक्म जारी किया। जब खीवा के लोग हमारे इलाके में आये और उन्होंने बेजान रेगिस्तान ही देखा, जहां बाग-बागीचे नहीं थे, तो वे कहने

लगे : हम बुखारा नहीं जायेंगे क्योंकि वहां न तो लूटने को कुछ मिलेगा और न खाने को ही। वे लौट पड़े। मेरी चाल में फंसकर बेइज्जत हो वापस लौट गये। हमारे शाहंशाह अमीर ने तसलीम फरमाया कि अपनी फौज से ही मुल्क बरबाद करवाना बहुत कारगर और दूरंदेशी का काम था। उन्होंने हुक्म दिया कि जो कुछ उजाड़ दिया गया था वह फिर हरगिज न बसाया जाय; शहर, गांव, खेत, सड़कें सभी बरबाद हालत में छोड़ दी जायें ताकि आइन्दा मुखालिफ कबीले हमारी सरजमीन पर कदम रखने की हिम्मत न करें। इसके अलावा मैंने बुखारा में हजारों जासूसों को ट्रेनिंग दी ...

"खामोश जबांदराज !" अमीर चिल्लाये। "तुम्हारे इन जासूसों ने खोजा नसरुद्दीन को पकड़ा क्यों नहीं ?"

परेशानी और घबराहट में अर्सलां बेग बहुत देर तक खामोश रहा। आखिर उसे कबूल करना पड़ा : "मालिक ! मैंने हर तरीका आजमा लिया है, लेकिन इस बदमाश काफिर के मुकाबले मेरा दिमाग काम नहीं करता। ऐ मेरे आका ! मैं समझता हूं कि आलिमों की राय लेनी चाहिए।"

गुस्से से अमीर भड़क उठे : "बुजर्गों की कसम, तुम लोगों को तो शहरपनाह पर फांसी दे देनी चाहिए !" गुस्से और खीज में उन्होंने हुक्का-बरदार के जोर का झांपड़ मार दिया; गलत मौके पर उसने शाही हाथ के नजदीक होने की कमबख्ती की थी। "बोलो !" उन्होंने सबसे बुजुर्ग आलिम को हुक्म दिया, जो अपनी उस लम्बी दाढ़ी की वजह से मशहूर था, जिसे वह दो बार अपनी कमर में लपेट सकता था।

आलिम उठा, दुआ की और धीरे-धीरे बायें हाथ की उंगलियों में लेकर दाहिने हाथ से मशहूर दाढ़ी खींचने लगा। वह बोला : "रियाया की बहबूदी और खुशी के लिए परवरदिगार हमारे बादशाह रौशन के जमाने को दराज करे ! चूंकि जिस बदकार बागी खोजा नसरुद्दीन का अभी जिक्र हुआ है, वह इन्सान ही है, इसलिए यह नतीजा निकाला जा सकता है कि उसका जिस्म भी इन्सानों की तरह का ही बना हुआ है, यानी उसके जिस्म में भी दो सौ चालीस हड्डियां और तीन सौ साठ मांसपेशियां हैं, जो फेफड़े, जिगर, दिल, पित्ते, तिल्ली वगैरह पर काबू रखती हैं। जैसा कि आलिम हकीमों ने बताया है, बुनियादी पेशी दिल की होती है, जिससे और सारी पेशियां निकलती हैं और यह लाजवाब और हक की बात है और दहरिये अबू इसहाक की काफिर तालीम के खिलाफ है जो यह कहने की गुस्ताखी करता है कि इन्सान की जिन्दगी की बुनियाद फेफड़े की पेशी है।

"हकीम आला अबूअली सीना, यूनानी हकीम हिपोक्रात और करतबे के अबुर्रास (इब्न रुश्द) के कौल के मुताबिक, जिनकी खोजों का हम आज भी

फायदा उठाते हैं और अलकिन्दी, अल फाराबी और फखराजी की हिदायतों के मुताबिक मैं कहता हूं और ताईद करता हूं कि अल्लाह ने आदम को चार अनासिर —पानी, मिट्टी, आग और हवा — को मिलाकर बनाया और तरकीब यह रखी कि पीले पित्ते में आग की तासीर हो जो हम देखते भी हैं क्योंकि यह गर्म और खुश्क होता है; काली तिल्ली में मिट्टी की तासीर हो क्योंकि वह ठंडी और खुश्क होती है; थूक की तासीर पानी की होती है क्योंकि वह नम और ठंडा होता है; और खून की तासीर हवा की होती है क्योंकि वह गर्म और नम होता है। अगर किसी इन्सान के जिस्म में से इनमें से एक भी रस निकाल दिया जाय तो वह आखिरकार मर जायगा। इससे, ऐ मेरे आका, मैंने यह नतीजा निकाला है कि अमन में खलल डालनेवाले इस नापाक खोजा नसरुद्दीन को उसके खून से महरूम कर दिया जाय, और बेहतर हो कि यह काम उसका सिर उसके जिस्म से जुदा करके किया जाय, क्योंकि जिस्म से बहनेवाले खून के साथ इन्सान की जिन्दगी भी बह जाती है और फिर कभी वापस लौटकर नहीं आती। ऐ शाहंशाह अजीम ! ऐ जहांपनाह ! मेरी यही राय है।"

अमीर ने उसकी बात गौर से सुनी और बिना कुछ कहे, अपनी भवों से दूसरे आलिम को इशारा किया, जिसकी दाढ़ी तो पहले आलिम के मुकाबले कुछ नहीं थी, लेकिन जिसका साफा तड़क-भड़क और वजन में बहुत बड़ा था। इतने दिनों तक वजनी साफा बांधते-बांधते उसकी गरदन एक तरफ को झुक गयी थी, जिससे लगता था कि वह किसी पतली दराज से ऊपर की तरफ घूर रहा है। अमीर को कोर्निश बजा लाने के बाद वह बोला : "ऐ सूरज के मानिन्द रौशन शाहंशाह अजीम ! खोजा नसरुद्दीन को खत्म करने के इस तरीके से मैं इत्तिफाक नहीं करता, क्योंकि यह जाहिर है कि इन्सान की जिन्दगी के लिए सिर्फ खून की ही नहीं बल्कि हवा की भी जरूरत है और अगर किसी का गला रस्से से दबा दिया जाय और इस तरह हवा को उसके फेफड़ों तक पहुंचने से रोक दिया जाय तो वह शख्स मर जायगा और फिर उसे जिन्दा नहीं किया जा सकता ..."

"अच्छा ?" अमीर ने खतरे-भरी धीमी आवाज में कहा। "ऐ दानाओं में दाना हजरत ! आप बजा फरमाते हैं और आपकी राय हमारे लिए बड़ी बेशकीमत है। वाकई, अगर आपने हमें यह बेशकीमत राय न दी होती तो हम खोजा नसरुद्दीन से पीछा कैसे छुड़ा पाते ?"

गुस्से और खफगी पर काबू पाने में मजबूर अमीर खामोश हो गये। उनके गाल फड़कने लगे, नथुने फूल उठे, आंखों से चिनगारियां बरसने लगीं। लेकिन दरबारी मुसाहबों, शायरों, चापलूसों और फलसफियों को, जो अमीर के पीछे आधे चांद की गोलाई में खड़े थे, अपने आका का चेहरा न दिखायी

दिया और इसलिए उस गजबनाक तंज (व्यंग्य) को वे न भांप सके जो अमीर ने आलिमों के लिए इस्तेमाल किया था। उनके जुमलों को सच मानकर उन्होंने सोचा कि आलिमों ने वाकई अमीर की रजा व फैयाजी हासिल कर ली है और बखूबी काम अंजाम दिया है, इसलिए इन आलिमों की मेहरबानी फौरन हासिल करनी चाहिए ताकि उससे फायदा उठाया जा सके।

उन्होंने गाना शुरू किया : "ए दानाओं में दाना ! हमारे शानदार शाहंशाह के ताज की सजावट के मोती ! ऐ दानाई में खुद दानाई को मात करनेवाले दानिशमन्द ! ऐ दानाओं के इल्म से रौशन दाना !"

इसी तरह के कसीदे कहते गये और उमंग व शेरों की सफाई में एक-दूसरे को मात देते गये। उन्हें मालूम तक न हुआ कि अमीर घूमकर पीछे देख रहे थे और गुस्से से बल खाते हुए उन्हें घूर रहे थे। एक भयानक खामोशी छा गयी थी।

"ऐ इल्म के तारो ! अक्ल के खजानो !" इन्तसारी की उमंग में आंखें बन्द किये वे गाते रहे।

यकायक शायरे-आजम को अमीर की निगाह दिखायी पड़ी और वह ऐसे चौंक पड़ा मानो चापलूसी भरी अपनी जुबान ही निगल गया हो। अपनी उमंग में ज्यादती की गलती महसूस करते हुए बाकी शायर भी उसके बाद चुप हो गये और डर के मारे कांपने लगे।

"जाहिलो ! बदमाशो !!" गुस्से से अमीर चिल्लाये। "क्या तुम समझते हो कि हमें यह भी नहीं मालूम कि किसी शख्स का सिर काट लेने या रस्सी बांधकर उसका गला घोंट देने से वह जिन्दा नहीं बच सकता ? लेकिन ऐसा करने के लिए उस आदमी को पकड़ पाना तो जरूरी है ! और तुम बदमाशों, बेवकूफों, जाहिलों और काहिलों ने एक लफ्ज भी इस बाबत नहीं कहा कि उसे पकड़ा कैसे जाय। यहां मौजूद सभी वजीरों, अफसरों, शायरों को तब तक तनख्वाह नहीं मिलेगी, जब तक खोजा नसरुद्दीन का पता नहीं लगता। यह ऐलान करवा दिया जाय कि उसे पकड़नेवाले को तीन हजार तंके इनाम में दिये जायेंगे। तुम लोगों को भी हम आगाह करते हैं कि तुम्हारी बेवकूफी, काहिली और लापरवाही देखकर हमने बगदाद से एक नया आलिम बुलाकर नौकर रखा है। इस आलिम का नाम मौलाना हुसैन है और अभी तक वह अमीरुल मोमनीन, बगदाद के खलीफा, की नौकरी में था। वह यहां के लिए रवाना हो चुका है और जल्द ही यहां आ पहुंचेगा। पड़े-पड़े खाट तोड़नेवालो ! पेटुओ ! बेपेंदी की अपनी जेबें भरनेवालो ! लानत है तुम पर ! ... निकालो इनको यहां से।" गुस्से में अमीर चिल्लाये। "खदेड़ो यहां से इन सब को। निकाल दो बाहर !"

सिपाही बौखलाये हुए दरबारियों पर टूट पड़े। उनकी इज्जत या रुतबे का खयाल किये बगैर पकड़कर उन्हें फाटक तक घसीट लाये और वहां से सीढ़ियों पर धकेल दिया। सीढ़ियों के नीचे दूसरे सिपाही थे। उन्होंने दरबारियों को मारा-पीटा और लतियाकर खदेड़ दिया। दरबारी एक-दूसरे से पहले निकल जाने की हड़बड़ी में भागे। सफेद बालोंवाला आलिम अपनी दाढ़ी में उलझकर गिर पड़ा। दूसरा आलिम पहलेवाले से टकराया। वह भी गिरा। उसका सिर गुलाब की क्यारी में लगा। गिरने की चोट से वह वहीं सुन्न पड़ गया। उसकी टेढ़ी गरदन से अब भी ऐसा लगता था कि वह किसी पतली दराज से ऊपर को घूर रहा है।

: ४ :

अमीर दिन भर गुस्से में भरे बैठे रहे। दूसरे दिन सबेरे भी खौफजदा दरबारियों ने उनके चेहरे पर गुस्से की काली छाया देखी।

उनकी दिलबस्तगी और मनबहलावे की सारी कोशिशें बेकार गयीं। तंबूरे लिये, इत्रकी खुशबू के बादल उड़ातीं, पतली कमर लचकातीं, मोती से दांत चमकातीं और इत्तिफाकन ही अपने उभरे हुए बालाई जैसे सीने दिखातीं रक्कासाएं अमीर को खुश करने की नाकाम कोशिश कर रही थीं। अमीर ने उनकी तरफ आंख उठाकर देखा भी नहीं। उनका चेहरा गुस्से से चढ़ा रहा जिससे दरबारियों को हौल-दिल होता रहा। दरबार के मसखरों, कलाबाजों, जादूगरों और हिन्दुस्तानी फकीरों के, जो महुअर बजाकर सांपों को बस में करते थे, खेल-तमाशे बेकार साबित हुए।

दरबारी आपस में फुसफुसा रहे थे: "ओफ यह कम्बख्त खोजा नसरुद्दीन! यह हरामजादा! हमारे ऊपर इसने कैसी-कैसी आफतें ढायी हैं।" और वे उम्मीद भरी निगाहों से अर्सलां बेग को ताकने लगे।

अर्सलां बेग ने अपने सबसे होशियार जासूसों को, जिनमें वह चेचकरू शख्स भी शामिल था जिसे खोजा नसरुद्दीन ने करिश्मा दिखाकर चंगा कर दिया था, सिपाहियों के कमरे में इकट्ठा किया और उनसे कहा :

"तुम सब लोगों को मालूम हो कि जब तक यह बदमाश, खोजा नसरुद्दीन, पकड़ा नहीं जाता तब तक बहुक्म अमीरे-आजम तुम लोगों की तनख्वाहें बन्द रहेंगी। अगर उसका पता तुम लोग नहीं लगा पाये तो न सिर्फ यह कि तुम लोग तनख्वाह से हाथ धोओगे, बल्कि अपने सिरों से भी। मैं किसी को न छोड़ूंगा। लेकिन, जो शख्स खोजा नसरुद्दीन को पकड़ने में सबसे ज्यादा हौसला दिखायेगा और उसे पकड़ लेगा, उसे तरक्की मिलेगी और तीन हजार तंके का इनाम दिया जायेगा। उसे 'जासूस खास' का रुतबा भी हासिल होगा।"

जासूस फौरन दरवेश, फकीर, भिश्ती, ताजिर बनकर रवाना हो गये। इस बीच चेचकरू जासूस, जो औरों से ज्यादा कांइयां था, कमली, दाने, तस्बीह और कुछ पुरानी किताबों से लैस होकर जौहरियों और अत्तारों के टोले के नुक्कड़ पर बाजार में जा खड़ा हुआ। नजूमी के भेस में उसने औरतों से सुराग लगाने का इन्तजाम किया।

घंटे भर बाद बाजार के चौराहों पर सैकड़ों नकीब आ पहुंचे। सभी मुसलमानों को सुनाते हुए उन्होंने अमीर के हुक्म का ऐलान किया :

"खोजा नसरुद्दीन अमीर का दुश्मन और काफिर ऐलान किया जाता है! उससे किसी तरह का ताल्लुक रखने की, खास तौर पर उसे पनाह देने की, मुमानियत की जाती है और इसकी सजा मौत तय की गयी है! जो भी उसे पकड़कर अमीर के सिपाहियों के सिपुर्द करेगा उसे तीन हजार तंके इनाम में दिये जायेंगे और दूसरी बख्शीस भी मिलेगी!"

चायखानों के मालिक, लुहार, भिश्ती, जुलाहे, ऊंट-खच्चरवाले, तांबागर आपस में फुसफुसाने लगे :

"इसके लिए अमीर को मुद्दत तक इन्तजार करना पड़ेगा।"

"हमारा खोजा नसरुद्दीन ऐसा नहीं जो गफलत में पकड़ लिया जाय।"

"बुखारावाले पैसे के लालच में नसरुद्दीन को दगा नहीं दे सकते।"

लेकिन सूदखोर जाफर रोज की तरह बाजार में उन लोगों को परेशान करता हुआ घूम रहा था जिन्होंने उससे कर्ज लिया था।

"तीन हजार तंके!" बहुत अफसोस के साथ उसने सोचा। "कल यह रकम करीब-करीब मेरी जेब में थी। खोजा नसरुद्दीन उस लड़की से मिलने फिर जायेगा, लेकिन अकेला मैं उसे पकड़ नहीं सकता। यह राज अगर मैं किसी और को बताऊं तो इनाम मुझ से छिन जायेगा। नहीं, मुझे दूसरे ढंग से काम करना होगा।"

वह महल की तरफ रवाना हुआ। बहुत देर तक फाटक खटखटाता रहा। दरवाजे बन्द रहे। पहरेदारों ने सुना ही नहीं, क्योंकि वे खोजा नसरुद्दीन को पकड़ने की तरकीबों पर गरमागरम बहस करने में मशगूल थे।

नाउम्मीदी में सूदखोर चिल्लाया : "ऐ बहादुर सिपाहियो! क्या तुम सब नींद में गाफिल हो?" उसने फाटक में लगा लोहे का कड़ा खटखटाया। काफी देर बाद किसी के कदमों की आहट सुनाई दी और। सांकल खोलने की खनखनाहट हुई। लकड़ी का छोटा फाटक खुल गया।"

सूदखोर की बात सुनकर अर्सलां बेग ने सिर हिलाया : "जाफर साहब! आज तुम्हें अमीर से मिलने की राय नहीं दूंगा। वह नाराज और गमगीन हैं।"

"मेरे पास उनका गम दूर करने का इलाज मौजूद है," सूदखोर ने फौरन जवाब दिया। "असलां बेग साहब ! सुतूने-सल्तनत ! दुश्मनों को पस्त करनेवाले ! मेरे काम में देर नहीं की जा सकती। जाकर अमीर से फरमायें कि मैं उनका गम दूर करने के लिए आया हूं।"

अमीर ने उसे बुलाया तो, लेकिन नाराजगी से : "बोलो, जाफर ! अगर तुम्हारी खबर से मेरे दिल को खुशी न हुई, तो तुम्हें दो सौ बेंतों की सजा मिलेगी।"

सूदखोर ने कहना शुरू किया : "ऐ शाहंशाहे-अजीम ! जिसकी चमक से सभी शाहों, सभी पहले के, आज के व आगेवाले सुल्तानों की रोशनी फीकी पड़ जाती है ! आपके इस नाचीज गुलाम को मालूम है कि हमारे इस शहर में एक ऐसी नाजनीन है जिसे मैं हसीनों का हुस्न कहने का हौसला करता हूं ..."

अमीर उठकर बैठ गये। सिर उठाकर उसकी तरफ देखा।

सूदखोर हिम्मत पाकर बोला : "ऐ मेरे आका ! उसके हुस्न का बयान करने के काबिल मेरे पास लफ्ज नहीं हैं। वह लम्बी है, खूबसूरत है, नाजुक है। उसका जिस्म सुगढ़ है। उसकी पेशानी चमकदार है, दमिश्की गाल हैं, आँखें हिरनी जैसी हैं, भवें दूज के चाँद के मानिन्द हैं। उसके गाल हवाई फूल जैसे हैं। मुंह हजरत सुलेमान की अंगूठी के मानिन्द है। होंठ याकूत की तरह हैं। दांत मोतियों जैसे हैं। उसका सीना ...? ऐ है ... जैसे संगमरमर तराशकर उस पर दो लाल चेरी नक्श कर दी गयी हों ! उसके कन्धे ..."

अमीर ने उसके तेज बयान को रोककर कहा :

"अगर वह ऐसी ही है, जैसा तुम बयान कर रहे हो, तब वह हमारे हरम में आने के काबिल है। कौन है वह ?"

"ऐ आका ! वह नीचे खानदान की है। वह एक कुम्हार की बेटी है। डर से उस नाचीज कुम्हार का नाम लेने की भी मैं जुरअत नहीं कर सकता कि कहीं मेरे शाहंशाह के कानों की बेइज्जती न हो जाय। मैं बता सकता हूं कि वह रहती कहां है। लेकिन अमीर के इस वफादार गुलाम को क्या कोई इनाम मिलेगा ?"

अमीर ने बख्तियार को इशारा किया। सूदखोर के पैरों के पास एक थैली आ गिरी। जाफर ने लालच भरी फुर्ती से उसे लपक लिया।

अमीर ने कहा : "अगर वह वैसी ही साबित हुई जैसी कि तुम तारीफ कर रहे हो, तो तुम को इतनी ही रकम और मिलेगी।"

सूदखोर जल्दी से बोला : "हमारे आका हजरत की फैयाजी की तारीफ हो ! लेकिन हुजूर जरा जल्दी फरमायें क्योंकि मुझे मालूम है कि इस नाजुक हिरनी का पीछा किया जा रहा है।"

अमीर की भवें मिल गयीं। नाक के ऊपर गहरी सिलवटें पड़ गयीं। पूछा : "कौन कर रहा है पीछा ?"

सूदखोर ने जवाब दिया : "खोजा नसरुद्दीन।"

"फिर खोजा नसरुद्दीन ? ... इसमें भी खोजा नसरुद्दीन ? हर जगह खोजा नसरुद्दीन ? जब कि तुम ..." इतना कहकर अमीर इस तेजी से वजीरों की तरफ मुड़े कि तख्त हिल उठा, "तुम लोग माबदौलत की बेइज्जती के सिवा कुछ नहीं करते। ऐ अर्सलां बेग ! तुम जाकर देखो। वह लड़की फौरन महल में आ जानी चाहिए। अगर तुम नाकामयाब हुए तो वापसी में तुम्हें जल्लाद मिलेगा।"

कुछ ही मिनटों में सिपाहियों का एक बड़ा दस्ता महल के फाटक से रवाना हुआ। उनके हथियार खड़क रहे थे। ढालें सूरज की रोशनी में चमक रही थीं। आगे-आगे अर्सलां बेग चल रहा था। जरबफ्त की खलअत पर, उसके ऊंचे ओहदे की पहचान के बतौर, सोने का तमगा लगा था। सिपाहियों के साथ-साथ बदनुमा ढंग से लंगड़ाता-घिसटता सूदखोर चला आ रहा था। बीच-बीच में वह पीछे छूट जाता था और उन तक पहुंचने के लिए रुक-रुककर दौड़ लगाता था। लोग एक तरफ हटकर इस जलूस को दुश्मनी की निगाहों से ताक रहे थे और कयास लगा रहे थे कि वे अब कौन सी नयी बदमाशी करने वाले हैं।

: ५ :

खोजा नसरुद्दीन ने नवां बरतन बनाकर खत्म कर दिया था। वह धूप में बैठा था। नांद में से दसवें बरतन के लिए उसने मिट्टी का एक बड़ा लोंदा उठाया ही था कि...

एकाएक दरवाजे पर जोरदार और हाकिमाना दस्तक पड़ी। वे पड़ोसी जो कभी नमक या प्याज मांगने नयाज के पास आते थे इस तरह दस्तक नहीं देते थे। खोजा नसरुद्दीन और नयाज ने एक दूसरे को परेशान निगाहों से देखा। भारी मुक्कों की बौछार से फाटक खड़खड़ा रहा था। इस बार खोजा नसरुद्दीन के तेज कानों में लोहे की खनक सुनायी दी। उसने नयाज से फुसफुसा कर कहा : "सिपाही !"

बूढ़े नयाज ने जोर देकर उससे कहा :

"भागो !"

खोजा नसरुद्दीन बागवाली दीवाल कूद गया। उसे दूर निकल जाने का मौका देने के लिए नयाज ने दरवाजा खोलने में काफी वक्त लगाया। नयाज ने जैसे ही सांकल खोली, अंगूर की बेलों में बैठी कुछ चिड़ियां फुर्र से उड़कर

तितर-बितर हो गयीं। लेकिन बूढ़े नयाज के तो पर थे नहीं। बेचारा उड़ नहीं सकता था। असंलां बेग के सामने पीला पड़ गया। झुककर कांपने लगा।

असंलां बेग बोला: "ऐ कुम्हार! तुम्हारे खानदान को बहुत बड़ी इज्जत बख्शी जा रही है। इस जमीन पर अल्लाह का साया, इस खलकत के मरकज हमारे आका और मालिक, खुदा उनको उम्र दराज करे, अमीरे-आजम ने तुम्हारा नाचीज नाम याद करने की इज्जत तुम पर बख्शी है। उन्हें पता चला है कि तुम्हारे बागीचे में एक हसीन गुलाब खिला है। इस गुलाब से वह अपने महल को सजाना चाहते हैं। तुम्हारी बेटी कहां है?"

सफेद बालों से भरा बूढ़े का सिर हिला और उस की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। सिपाही उस की बेटी को मकान से खींचकर सहन में लाने लगे, तो उसकी चीख बूढे के कानों ने सुनी। उसकी टांगें लड़खड़ायीं। मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ा। इसके आगे उसने न कुछ देखा, न सुना।

असंलां बेग ने सिपाहियों से कहा: "बेचारा, खुशी की इन्तिहा से बेहोश हो गया है। इसे छोड़ दो। जब इसे होश आयेगा, महल आकर अमीर की मेहरबानियों का शुक्रिया अदा करेगा। चलो, वापस चलो।"

इसी बीच खोजा नसरुद्दीन पीछे की गलियों से चक्कर काटता हुआ सड़क के दूसरे सिरे पर आ पहुंचा। कुछ झाड़ियों के पीछे से उसे नयाज का फाटक, दो सिपाही और एक शख्स दिखायी पड़ रहे थे। यह तीसरा शख्स था सूदखोर जाफर और उसे खोजा नसरुद्दीन ने पहचान लिया।

"अच्छा? लंगड़े कुत्ते! तू लाया है इन सिपाहियों को! मुझे गिरफ्तार करवाने के लिए!" असली मामला भांप न पाकर, खोजा नसरुद्दीन सोचने लगा। "बहुत अच्छा! खूब होशियारी से तलाशी ले! लेकिन तुझे खाली हाथ लौटना होगा।"

लेकिन सिपाही खाली हाथ नहीं लौटे। खोजा नसरुद्दीन ने उन्हें फाटक से अपनी माशूका को ले जाते देखा। खौफ से उसका खून जम गया। गुलजान छूटने के लिए लड़ रही थी और इस कदर फूट-फूटकर रो रही थी कि सुननेवालों का दिल टूट रहा था। लेकिन, सिपाही उसे कसकर पकड़े हुए थे और ढालों की दोहरी कतार से घेरे हुए थे।

जून के गर्म महीने का दिन था; लेकिन खोजा नसरुद्दीन के बदन में ठंडी लहर सी दौड़ गयी। जहां वह छिपा था, उधर से ही गुजरने के लिए सिपाही करीब आ रहे थे। उसके दिमाग पर धुंधलापन छा गया था। उसने एक बड़ा-सा खंजर म्यान से निकाला और जमीन से सटकर दुबक गया। असंलां बेग अपना चमकता हुआ सोने का तमगा लटकाये उस गिरोह में आगे-आगे चल रहा था। खंजर उसकी दाढ़ी के नीचे उसकी मोटी गरदन

में गहरा धंस गया होता, लेकिन तभी एकाएक एक भारी हाथ खोजा नसरुद्दीन के कन्धे पर गिरा और उसे जमीन पर दबा दिया। खोजा नसरुद्दीन चौंका। घूमकर हमला करने के लिए उसने हाथ उठाया, लेकिन यूसुफ लुहार का कालिख भरा चेहरा पहिचानकर हाथ रोक लिया।

"चुपचाप लेटे रहो!" लुहार ने धीमे से कहा। "चुपचाप लेटे रहो। तुम पागल हो। वे बीस हैं और हथियारों से लैस हैं। तुम अकेले हो और निहत्थे हो। उस बेचारी की मदद तो तुम कर नहीं पाओगे, हां, खुद नेस्त-नाबूद हो जाओगे। मैं तुमसे कहता हूं, चुपचाप लेटे रहो!"

जब तक सड़क के मोड़ पर गिरोह ओझल नहीं हो गया, वह खोजा नसरुद्दीन को दबाये रहा।

"तुमने मुझे रोका क्यों?" खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया। "बेहतर होता कि मैं मर गया होता।"

"शेर के मुकाबले हाथ उठाना या तलवार के मुकाबले मुक्का उठाना अक्लमंदों का काम नहीं!" लुहार ने सख्ती से जवाब दिया। "मैं बाजार से ही सिपाहियों का पीछा कर रहा था। तुम्हारी बेवकूफी रोकने के लिए मैं वक्त पर आ पहुंचा। तुम्हें उसके लिए मरना नहीं है, बल्कि लड़ना और उसे बचाना है। यह ज्यादा मुश्किल है; लेकिन ज्यादा बेहतर भी है। गमगीन होकर सोच-विचार करने में वक्त जाया न करो। जाओ और काम में लगो। उनके पास तलवारें हैं, ढालें हैं, भाले हैं। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें भी ताकतवर हथियार दिये हैं। तुम जहीन हो और चालबाज भी और इन दोनों में तुम्हारा कोई मुकाबला नहीं कर सकता।"

लुहार इस तरह बोला। उसकी बातें मर्दों जैसी और उस लोहे की तरह सख्त थीं, जिसे वह जिन्दगी भर ढालता रहा था। उसकी बातें सुनते-सुनते खोजा नसरुद्दीन का डगमगाता हुआ दिल लोहे की तरह सख्त हो गया।

"शुक्रिया, लुहार भाई!" वह बोला। "इससे ज्यादा नाउम्मीदी की घड़ियां मेरी जिन्दगी में कभी नहीं आयीं। लेकिन नाउम्मीद हो जाना ठीक नहीं। मैं जाता हूं और जाने से पहले तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि अपने हथियारों का ठीक इस्तेमाल करूंगा।"

झाड़ियों से निकलकर वह सड़क पर आया। तभी नजदीक के एक मकान से सूदखोर निकला। एक कुम्हार को कर्ज की याद दिलाने के लिए वह ठहर गया था, जिसके अदा करने की तारीख आनेवाली थी। खोजा नसरुद्दीन और उसका आमना-सामना हो गया। सूदखोर पीला पड़ गया। पीछे भागा, भड़ से दरवाजा बन्द किया और सांकल चढ़ा ली।

खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया : "होशियार ! ऐ सांप के बच्चे जाफर ! मैंने सब कुछ देख-सुन लिया है और मैं सब कुछ जानता हूं।"

एक लमहे की खामोशी के बाद सूदखोर बोला : "ऐ मेरे दोस्त ! चेरी न सियार को मिली और न बाज को। चेरी तो शेर के मुंह में पहुंच गयी।"

खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "खैर, देखा जायगा कि आखिरकार चैरी मिली किसे। लेकिन मेरी बात याद रखना, जाफर ! मैंने तुझे पानी से निकाला था और मैं कसम खाता हूं कि तुझे उसी तालाब में डुबोऊंगा ! काई से तेरा बदन ढंका होगा और घास-करकुल में फंसकर तेरा दम टूटेगा।"

जवाब का इन्तजार किये बिना खोजा नसरुद्दीन आगे बढ़ चला। नयाज के घर के सामने रुके बिना वह आगे बढ़ गया कि कहीं सूदखोर छिपा देख न रहा हो और बाद में बूढ़े नयाज के खिलाफ शिकायत करे। सड़क के सिरे पर जाकर उसने यकीन कर लिया कि उसका पीछा नहीं किया जा रहा और तब दौड़कर एक परती मैदान पार किया जिसमें घास-फूस उग रही थी। दीवाल कूदकर वह फिर नयाज के घर में दाखिल हो गया।

बूढ़ा अब भी जमीन में सिर डाले पड़ा था। अर्सलां बेग के फेंके चांदी के कुछ सिक्के उसके पास पड़े चमक रहे थे। धूल और आंसुओं से सना अपना चेहरा बूढ़े ने उठाया। उसके होंठ हिले, पर वह बोल न सका। तभी उसे वह रूमाल नजर आया जो उसकी बेटी का था और वहीं गिर गया था। बूढ़ा अपनी दाढ़ी नोचने और सख्त जमीन पर अपना सिर पटकने लगा।

उसको चुप करने में खोजा नसरुद्दीन को कुछ वक्त लगा। आखिर वह उसे उठाने में कामयाब हुआ। बूढ़े को उसने एक तिपाई पर बैठा दिया। वह बोला : "सुनिए बुजुर्गवार ! यह गम अकेला आपका नहीं है। शायद आपको मालूम न हो कि मैं उससे मुहब्बत करता था और वह मुझसे मुहब्बत करती थी। क्या आपको मालूम है कि हम लोगों ने शादी करने का फैसला कर लिया था ? मैं सिर्फ इसी मौके के इन्तजार में था कि काफी रुपया इकट्ठा कर लूं जिससे आपको अच्छा सा दहेज दे सकूं।"

बूढ़ा रोता हुआ बोला : "मुझे दहेज की क्या परवाह ! क्या मैं अपनी बच्ची की मरजी के खिलाफ कोई काम करता ? अफसोस ! अब ये बातें बेवक्त और बेसूद हैं। वह चली गयी, खो गयी। अब तक वह हरम में जा चुकी होगी...हाय, लानत है ! तुफ है ! मैं खुद महल जाऊंगा। हां, मैं अमीर के पैरों पर गिर पड़ूंगा और रो-रोकर उससे भीख मांगूंगा। और, अगर उनका दिल पत्थर का बना न हुआ तो..."

वह उठकर डगमगाता हुआ फाटक की तरफ चल दिया।

"ठहरिए !" खोजा नसरुद्दीन बोला। "आप यह भूल जाते हैं कि अमीर और इंसानों की तरह नहीं होते। उनके दिल नहीं होता। उनसे इल्तिजा करना बेकार है। उनसे तो सिर्फ छीना जा सकता है। और मैं, खोजा नसरुद्दीन, अमीर से गुलजान को छीन लाऊंगा।"

"वह बहुत ताकतवर है। उसके पास हजारों सिपाही, हजारों पहरेदार, हजारों जासूस हैं। तुम उसके खिलाफ कर क्या सकोगे ?"

"मैं क्या करूंगा यह मैं अभी नहीं सोच पाया हूं। लेकिन मैं जानता हूं कि अमीर गुलजान पर काबू नहीं पा सकेगा। आज नहीं, कल नहीं, परसों नहीं—वह कभी उसे अपना न सकेगा और कभी अपनी न बना सकेगा। इस बात में जरा भी शक नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे कि इसमें शक नहीं कि बुखारा से बगदाद तक मेरा नाम खोजा नसरुद्दीन है। इसलिए ऐ बुजुर्गवार ! आप अपने आंसू पोंछें और मेरे कानों तक आपका रोना न पहुंचने पाये। आप मेरे सोचने में खलल न डालिए !"

खोजा नसरुद्दीन थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर बोला : "जरा बताइए बुजुर्गवार ! आपने अपनी बीवी के पुराने कपड़े कहां रखे हैं। आपकी बेगम का इन्तकाल हो गया है। उनकी पोशाकें कहां हैं ?"

"वहां, उस बक्स में।"

खोजा नसरुद्दीन ने ताली ली और घर में घुसकर गायब हो गया और थोड़ी ही देर बाद औरतों के लिबास में बाहर निकला। घोड़े के बालों से बुने नकाब में उसका चेहरा ढंका हुआ था।

"मेरा इन्तजार कीजियेगा बुजुर्गवार, और अकेले कोई काम करने की कोशिश न कीजियेगा।"

अनाज-गोदाम से उसने अपना गधा निकाला, उस पर जीन कसी और नयाज के घर से रवाना हो गया।

: ६ :

गुलजान को महल के बाग में ले जाकर अमीर के सामने पेश करने से पहले असलां बेग ने हरम की बूढ़ी औरतों को बुलाया और उन्हें हुक्म दिया कि गुलजान को इस तरह खूबसूरती से सजाया जाय और ऐसी पोशाक पहिनायी जाय कि अमीर उसके मुकम्मल हुस्न के खयाल में खुशी हासिल करें।

बूढ़ी औरतों ने फौरन अपना जाना-पहिचाना काम शुरू कर दिया। उन्होंने गर्म पानी से गुलजान का आंसू-भरा चेहरा धोया। उसे महीन झीने रेशम के कपड़े पहिनाये, सुर्मा लगाया, भवें काली कीं, गालों पर सुर्खी मली, बालों में गुलाब का इत्र डाला और नाखून लाल रंग से रंगे। तब उन्होंने हरम

के अस्मत मश्राब ख्वाजा सरा को बुलाया। एक जमाने में यह शख्स अपनी बदकारियों के लिए सारे बुखारा में बदनाम था। इस ऊंचे ओहदे पर उसके मुकर्रर किये जाने की वजह ऐसे मामलों में उसका तजरबा और मालूमात थी। दरबार के हकीम ने उसे इस काम के लिए तैयार किया था। उसका काम था अमीर की एक सौ साठ दाश्ताओं पर बराबर नजर रखना और उन्हें इतना हसीन बनाये रखना कि वे अमीर की हवस जगा सकें।

जैसे-जैसे साल गुजरते जाते, उसका काम मुश्किल होता जाता क्योंकि अमीर की हवस कम हो रही थी और उम्र चढ़ रही थी। कई बार ख्वाजा सरा का सवेरे का इनाम एक दर्जन कोड़े हो चुका था। लेकिन, उसके लिए यह सजा मामूली थी। बड़ी सजा तो उसे तब मिलती जब वह हसीन दाश्ताओं को अमीर से मिलने के लिए तैयार करता था—क्योंकि तब उसे बहुत ज्यादा तकलीफ होती थी, वैसी तकलीफ जैसी ऐयाशों को दोजख में होती है। सभी जानते हैं कि दोजख में ऐयाशों को खम्भों से हमेशा के लिए बंधे रहना पड़ता है और उनके आसपास नंगी हूरों की जमात घूमा करती हैं।

ख्वाजा सरा ने गुलजान का हुस्न देखा तो चौंक पड़ा।

"वाकई यह खूबसूरत है!" पिंपयाती हुई पतली आवाज में वह बोला। "इसे अमीर के पास ले जाओ! ले जाओ इसे यहां से! मेरी नजरों के सामने से जल्दी हटा लो इसे!"

और वह दीवाल से अपना सिर टकराता दांत किटकिटाता हुआ बिलख-बिलखकर "हाय कम्बख्ती! ओफ नाउम्मीदी!" कहता हुआ जल्दी से वहां से टल गया।

बूढ़ी औरतों ने कहा: "यह नेक शुगुन है। इसका मतलब है कि हमारे आका खुश होंगे।"

खामोश और पीली पड़ी गुलजान महल के बागीचे में ले जायी गयी।

अमीर उठे, उसके पास पहुंचे और उसका नकाब उलट दिया।

सभी वजीरों, अफसरों व आलिमों ने खलअतों की आस्तीनों से आंखें छिपा लीं।

बहुत देर तक अमीर उसे देखते रहे। उसके हसीन चेहरे से अपनी निगाह वह नहीं हटा पाते थे।

"सूदखोर हम से झूठ नहीं कहता था," बुलन्द आवाज में वह बोले, "जितने इनाम का उससे वादा किया गया था, उससे तिगुनी रकम दे दी जाय!"

गुलजान वहां से ले जायी गयी। जाहिर था कि अमीर खुश हो गये थे।

दरबारी आपस में फुसफुसाने लगे: "अमीर को अब मन बहलाने का सामान मिल गया है। वह खुश हैं; उनके दिल का बुलबुल उनके चेहरे के गुलाब

पर झुक रहा है, कल सबेरे वह और खुश होंगे। अलहमदुलिल्लाह! बिना हम किसी पर बिजली गिरे या पत्थर पड़े, तूफान निकल गया।"

हिम्मत पाकर दरबारी शायर आगे बढ़े और एक-एककर अपनी नज्मों में अमीर की तारीफ गाने लगे। उनके चेहरे को पूरे चांद से, उनके जिस्म को पतले दरख्त की लचक से और उनके राज को केरानुस्सादैन (दो नक्षत्रों के योग) से मिलाने लगे।

आखिर, मानों उसे यकायक ही सूझ गयी हो, शायरे-आजम ने वह नज्म सुनाने का मौका निकाल लिया जो पिछले दिन सबेरे से ही उसकी जुबान पर थी। अमीर ने मुट्ठी भर सिक्के उसकी तरफ फेंक दिये और शायरे-आजम कालीन पर गिरकर रेंग-रेंगकर उन्हें बटोरने लगा। इस मौके पर वह अमीर की जूतियां चूमना न भूला।

तब उन पर अहसान-सा करते हुए अमीर हंसकर बोले: "मावदौलत ने भी एक नज्म कही है:

"हम जब शाम को बागीचे में पहुंचे,
चांद अपने को नाचीज पा, शर्म से बादल के पीछे छिप गया,
सारी चिड़ियां हो गयीं खामोश, हवा भी थम गयी,
हम खड़े थे, अजीमुश्शान, मशहूर, सूरज की तरह ताकतवर।"

सभी शायर घुटनों के बल गिरकर चिल्लाने लगे:

"वाह वाह! क्या शायरी है। क्या अजमत है! वाह वाह! रूदकी को मात कर दिया!"

कुछ ने तो तारीफ करते-करते कालीन पर सिर रख दिया, मानो बेहोश हो गये हों।

रक्कासाएं आयीं। उनके पीछे मसखरे, बाजीगर, फकीर आये। और अमीर ने उन सबको फैयाजी से इनाम दिये।

वह बराबर कह रहे थे: "मेरा एक गम यह है कि सूरज पर मेरा हुक्म नहीं, वर्ना मैं आज उससे जल्दी गुरूब (अस्त) होने को कहता।"

और दरबारी इस मजाक पर फर्ज की हंसी हंसते रहे।

: ७ :

बाजार में खूब चहल-पहल थी। खरीद-फरोख्त का यह सबसे अहम वक्त था। जैसे-जैसे सूरज आसमान पर चढ़ता जाता, खरीद, बिक्री और तबादले का व्यापार बढ़ता जाता। गर्मी की वजह से लोग छप्परदार कतारों की घनी, महकती छांह में जा रहे थे। नरकुल के छप्परों के बीच सूराखों से सूरज की चमकीली किरनें छनतीं और ऐसा लगता कि धुएंदार चमकीले खम्भे गड़े हैं। अपनी हल्की

चमक में जरबफ्त चमचमाती, चिकना रेशम चमकता और मखमल से जैसे कोई हलकी रोशनी छिपकर उसे रौशन करती। हर तरफ साफे, खलअतें और रंगी हुई दाढ़ियां चमकतीं। पालिशदार तांबा कौंधता-सा लगता और यह कौंध सर्राफों के चमड़े के कालीनों पर पड़े असली सोने की दमक के सामने फीकी पड़ जाती।

खोजा नसरुद्दीन ने उसी चायखाने के सामने गधा रोका जिसकी बरसाती में खड़े होकर महीने भर पहले उसने बुखारा के बाशिन्दों से नयाज कुम्हार को अमीर से बचाने के लिए मदद की अपील की थी। इसी थोड़े अर्से में खोजा नसरुद्दीन ने इस खुशमिजाज, तुंदियल, सीधे और भरोसेलायक ईमानदार अली से गहरी दोस्ती कर ली थी।

ठीक मौका तलाशकर खोजा नसरुद्दीन ने पुकारा :

"अली !"

चायखाने के मालिक ने चारों तरफ देखा। वह चकराया हुआ था। उसे पुकारा था मरदानी आवाज ने, लेकिन दिखायी दे रही थी एक औरत।

अपनी नकाब हटाये बिना खोजा नसरुद्दीन बोला : "मैं हूं, अली ! तुम मुझे पहचान रहे हो न ? अल्लाह के वास्ते, इस तरह घूरो मत। क्या तुम जासूसों की मौजूदगी भूल गये हो ?"

चारों तरफ होशियारी से नजर दौड़ाकर अली उसे पिछवाड़े के एक कमरे में ले गया, जहां वह ईंधन और फालतू केतलियां व बरतन इकट्ठे करता था। यहां ठंड और सीलन थी और बाजार का शोरगुल बहुत हलका-हलका सुनायी पड़ता था।

खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "अली ! मेरा गधा ले लो। इसे खिलाओ-पिलाओ और तैयार रखो, क्योंकि किसी वक्त भी मुझे इसकी जरूरत पड़ सकती है। किसी से भी एक लफ्ज मेरे बारे में न बताना।"

"लेकिन खोजा नसरुद्दीन, तुम औरतों की पोशाक में क्यों हो ?" बहुत होशियारी से दरवाजा बन्द करते हुए अली ने पूछा।

"मैं महल को जा रहा हूं।"

"पागल हो गये हो क्या ?" चायखाने का मालिक चिल्लाया। "अपना सिर शेर के मुंह में देने जा रहे हो ?"

"अली, यह तो करना ही होगा। तुम्हें जल्द ही पता लग जायगा कि यह क्यों जरूरी है। मैं बहुत खतरनाक मुहिम पर जा रहा हूं। आओ हम तुम गले मिल लें क्योंकि अगर मैं ..."

वे एक-दूसरे से गले मिले। चायखाने के मालिक के आंसू आ गये और उसके गोल, लाल-लाल गालों पर ढुलकने लगे। उसने खोजा नसरुद्दीन को विदा

किया। फिर लम्बी सांसों को रोकता हुआ—जिनकी वजह से उसकी तोंद ऊपर नीचे हिलती थी—वह अपने गाहकों के पास चला गया।

उसका दिल भारी था और डर से वह परेशान था। वह खोया-खोया सा और उदास था। उसके गाहकों को अपनी प्यास की याद दिलाने के लिए केतली के ढक्कन को दुबारा, तिबारा बजाना पड़ता था। उसकी रूह अपने बेधड़क दोस्त के साथ महल में थी।

पहरेदारों ने खोजा नसरुद्दीन को रोका। होशियारी से अपनी आवाज छिपा व औरतों की आवाज में बोलता हुआ, खोजा नसरुद्दीन बार-बार कहता:

"मैं बहुत बढ़िया, बहुत लासानी अम्बर, मुश्क गुलाब का इत्र लायी हूं। मुझे हरम में जाने दो न बहादुर सिपाहियो! मैं माल बेचने के बाद मुनाफे में तुम्हें भी हिस्सा दूंगी।"

"भाग बुढ़िया! जा और बाजार में अपना माल बेच!" पहरेदारों ने भारी आवाज में उसे जवाब दिया।

अपने मकसद में इस तरह नाकामयाब हो, खोजा नसरुद्दीन बहुत गमगीन और संजीदा हो गया। उसके पास वक्त कम था, क्योंकि सूरज दोपहर के बाद ढलने लगा था। उसने महल की चहारदीवारी के चारों तरफ चक्कर लगाया। चीनी-चूने से दीवार के पत्थर इस मजबूती से जमे थे कि खोजा नसरुद्दीन को कहीं एक भी सूराख या छेद नहीं दिखायी दिया। जहां तक नालियों का ताल्लुक था, उनके मुंह पर इस्पात की जालियां जड़ी थीं।

खोजा नसरुद्दीन अपने आपसे बोला: "मुझे महल जाना ही है। मैं जाना चाहता हूं और जाऊंगा। तकदीर के मुताबिक अमीर ने अगर मेरी मंगेतर को छीन लिया है, तो उसे वापस पाने की मेरी तकदीर क्यों न हो? मुझे तो लग रहा है कि मेरी बात पूरी होगी।"

वह बाजार वापस लौट आया। उसका खयाल था कि अगर कोई शख्स पक्का इरादा कर ले और उसकी हिम्मत बराबर उसका साथ देती रहे तो तकदीर भी उसकी मदद करती है। हजारों बैठकों, बातचीतों और झगड़ों में से एक जरूर ऐसा निकलेगा जिससे मकसद पूरा करने का मौका मिलेगा और होशियारी से उस मौके का फायदा उठाकर इंसान सभी मुसीबतों पर फतह पाकर अपनी मंजिल पर जा पहुंचेगा और इस तरह उसके मुकद्दर का लिखा ठीक साबित होगा। बाजार में कहीं-न-कहीं ऐसा ही कोई मौका खोजा नसरुद्दीन का इन्तजार कर रहा था। उसका यकीन पक्का था और वह इसी मौके की तलाश में रवाना हो गया।

खोजा नसरुद्दीन की नजर से कुछ भी न चूकता था—हजारों की भीड़ में एक चेहरा भी नहीं, एक लफ्ज भी नहीं। उसके आंख-कान और दिमाग इस

तरह सधे हुए थे कि कुदरत ने उनके काम पर हद की जो पाबन्दी लगायी थी, वे उससे आगे पहुंच गये थे। ऐसे वक्त उसकी फतह तय होती क्योंकि इस बीच उसके दुश्मनों के दिमाग उसी सतह पर काम करते होते, जो इंसानी पाबंदियों के मातहत होती है।

जहां जौहरियों और अत्तारों के टोले मिलते थे, वहां खोजा नसरुद्दीन को भीड़ के शोरगुल के बीच उकसाहट की आवाज सुनाई दी :

"तुम कहती हो कि तुम्हारे खाविंद ने तुमसे मुहब्बत करना छोड़ दिया है और तुम्हारे साथ सोता तक नहीं? तुम्हारी इस मुसीबत का एक इलाज है। लेकिन उसके लिए मुझे खोजा नसरुद्दीन से मशविरा करना पड़ेगा। इसमें शक नहीं कि तुमने सुना होगा कि खोजा नसरुद्दीन यहीं है? तुम पता लगाओ कि वह कहां है और मुझे खबर दो। हम और वह मिलकर तुम्हारे खाविंद को तुम्हारे पास वापस ले आयेंगे।"

खोजा नसरुद्दीन और नजदीक पहुंचा तो उसे नजूमी जासूस का चेचकरू चेहरा दिखायी दिया। चांदी का एक सिक्का लिये एक औरत उसके सामने खड़ी थी। नजूमी नमदे पर मनके फैलाये एक बहुत पुरानी किताब के पन्ने पलट रहा था।

"लेकिन, अगर तू खोजा नसरुद्दीन को तलाश करने में कामयाब न हुई," वह कह रहा था, "तो ऐ औरत! तुझ पर लानत बरसेगी, क्योंकि तेरा शौहर तुझे हमेशा के लिए छोड़ देगा।"

खोजा नसरुद्दीन ने तय कर लिया कि इस नजूमी को थोड़ा सबक सिखाना बुरा न होगा। वह नमदे के सामने बैठ गया।

"दूसरों की तकदीर देखनेवाले ऐ दानिशमंद! मुझे मेरा मुकद्दर बताओ।"

जासूस ने मनके बिखेर दिये। फिर एकाएक बोला, मानो एकदम खौफजदा हो गया हो, "ऐ है! तुझ पर खुदा की मार है औरत! मौत अपना काला हाथ तेरे सिर पर उठा चुकी है!"

आसपास खड़े कई तमाशबीन नजदीक आ गये।

"हां, मौत का वार बचाने में मैं तेरी मदद कर सकता हूं," वह बोला, "लेकिन यह काम अकेले नहीं हो सकता। मुझे खोजा नसरुद्दीन से मशविरा करना होगा। तू अगर उसकी तलाश करे और मुझे बता सके कि वह कहां है, तो तेरी जान बच जायगी।"

"अच्छी बात है। मैं खोजा नसरुद्दीन को तुम्हारे पास ले आऊंगी।"

खुशी से चौंकते हुए वह चिल्ला उठा : "तू उसे मेरे पास ले आयेगी? कब?"

"मैं उसे अभी ला सकती हूं! फौरन! बहुत नजदीक है वह।"

"कहां, कहां ?"

"यहीं, एकदम नजदीक।"

"लेकिन कहां, मैं तो उसे देख नहीं रहा।"

"और तुम अपने को नजूमी कहते हो ? क्या तुम हिसाब नहीं लगा सकते ? सोच नहीं सकते ? लो, यह रहा वह।"

नजूमी के सामने बैठी औरत ने झटके से नकाब उतार दिया। ख़ोजा नसरुद्दीन का चेहरा देखते ही नजूमी घबराकर पीछे हट गया।

ख़ोजा नसरुद्दीन ने फिर दोहराया :

"यह रहा वह ! बोल, मुझसे किस बारे में मशविरा करना चाहता था ? तू झूठा है। तू नजूमी नहीं। तू अमीर के जासूसों में से एक है। ऐ मुसलमानो ! इसका यकीन न करो ! यह शख्स तुम लोगों को धोखा दे रहा है। यहां बैठा हुआ यह सिर्फ खोजा नसरुद्दीन का पता लगाने की कोशिश कर रहा है।"

जासूस ने इधर-उधर निगाहें दौड़ायीं, लेकिन कोई सिपाही नजर नहीं आया। नाउम्मीदी से रोआसा होकर वह खोजा नसरुद्दीन को जाते देखता रहा। उसके आसपास खड़ी भीड़ गुस्से से भर उठी और पास सिमट आयी। हर तरफ से आवाजें उठने लगीं : "जासूस ! जासूस ! अमीर का जासूस ! गन्दा कुत्ता !!"

नजूमी उठा और अपना नमदा लपेटने लगा। उसके हाथ कांप रहे थे। फिर, वह जितनी तेजी से दौड़ सकता था, दौड़ता हुआ महल की तरफ भाग गया।

: ८ :

धूल भरे, धुआं भरे, बदबूदार, गन्दे सिपाही-घर में पहरेदार एक घिसे हुए नमदे पर बैठे थे, जो पिस्सुओं का अखाड़ा बना हुआ था। अपने जिस्मों को खुजलाते हुए वे खोजा नसरुद्दीन को पकड़ने के इमकानों पर मशविरा कर रहे थे।

"तीन हजार तंके !" वे कह रहे थे। "जरा सोचो तो ! तीन हजार तंके और जासूस-खास का ओहदा !"

"कोई न कोई तो किस्मतवर होगा ही।"

"काश, मैं ही वह 'कोई' होता !" एक मोटा काहिल पहरेदार बोला। यह पहरेदार सबसे ज्यादा बेवकूफ था। बरखास्तगी से वह सिर्फ इसलिए बच गया था कि उसने बिना छिलका उतारे, पूरे, कच्चे अंडे निगल जाने का हुनर सीख लिया था। अक्सर यह हुनर दिखाकर वह अमीर का मन बहलाया करता

था और उनसे बख्शीस पा जाता था—हालांकि, बाद में उसे सख्त शिद्दत के दर्द का शिकार होना पड़ता था।

चेचकरू जासूस तूफान की तरह सिपाही-घर में घुसा।

"खोजा नसरुद्दीन! खोजा नसरुद्दीन! यहीं है! बाजार में है! बाजार में! औरत की पोशाक पहने है! यहीं है यहीं! बाजार में!"

सिपाही फाटक की तरफ लपके और रास्ते में अपने हथियार उठाते हुए बाहर निकल गये। वे कहते जा रहे थे:

"इनाम मेरा है! सुन रहे हो न? मैंने उसे पहले देखा। इनाम मुझे मिलना चाहिए!"

सिपाहियों को देखते ही लोग तितर-बितर होने लगे। इस हड़बड़ी में बाजार में घबराहट व भगदड़ मच गयी। सिपाही भीड़ में घुस गये। उनमें जो सबसे ज्यादा जोश में था और आगे-आगे दौड़ रहा था, उसने एक औरत को पकड़ा और उसका नकाब फाड़ डाला। औरत का चेहरा भीड़ में खुल गया।

औरत जोर से चीखी। दूसरी तरफ से एक और चीख सुनायी दी। फिर एक तीसरी औरत की चीख सुनायी पड़ी जो सिपाहियों से जूझ रही थी। और तब चौथी...पांचवीं...! पूरा बाजार औरतों की चीखों, सुबकियों, रोने-चिल्लाने की आवाजों से भर उठा।

हक्की-बक्की भीड़ चुपचाप खड़ी देखती रह गयी। बुखारा में पहले कभी ऐसी वहशियाना हरकत देखी-सुनी नहीं गयी थी। कुछ लोग तो डर से पीले पड़ गये। कुछ गुस्से से लाल हो उठे। हरेक के दिल में वलवला था। सिपाही औरतें पकड़ने, उन्हें इधर-उधर धकेलने, मारने-पीटने और उनके कपड़े फाड़ने की जालिम हरकतें करते रहे।

"बचाओ! बचाओ!!" औरतें चिल्ला रही थीं।

यूसुफ लुहार ने भीड़ पर काबू पाकर ऊंची आवाज में कहा:

"मुसलमानो! तुम झिझक क्यों रहे हो? क्या यही काफी नहीं कि सिपाही हमें लूटते रहें! क्या दिन दहाड़े अब हम अपनी औरतों की बेइज्जती भी बरदाश्त करें?"

"बचाओ! बचाओ!!" औरतें चिल्लाती रहीं।

अब तो भीड़ में गुर्राहट सुनायी पड़ने लगी। एक बेचैनी-सी भर गयी। एक भिश्ती ने अपनी बीबी की आवाज पहिचानी। उसे बचाने दौड़ा। सिपाहियों ने उसको धकेल दिया। लेकिन दो जुलाहे और तीन तांबागर उसकी मदद के लिए दौड़ पड़े और सिपाहियों को खदेड़ दिया। झगड़ा छिड़ गया।

धीरे-धीरे हर शख्स इसमें शामिल हो गया। इधर सिपाही तलवारें भांज रहे थे, उधर हर तरफ से उन पर बरतनों, कश्तियों, घड़ों, केतलियों,

लकड़ी के टुकड़ों और नालों की मार हो रही थी। बेचारे इस हमले से बच नहीं पा रहे थे। लड़ाई पूरे बाजार में फैल गयी।

अमीर सुकून के साथ महल में ऊंघ रहे थे। यकायक वह उछले और खिड़की की तरफ दौड़े। उसे खोला। फिर खौफजदा हो फटाक से उसे बन्द कर दिया।

बख्तियार दौड़ता हुआ आया। वह पीला पड़ रहा था। उसके होंठ कांप रहे थे।

अमीर ने भिनभिनाकर पूछा: "क्या है? क्या हो रहा है वहां? तोपें कहां हैं? अर्सलां बेग कहां है?"

अर्सलां बेग दौड़ता हुआ आया और मुंह के बल गिर पड़ा। "आका! ऐ मेरे आका! मेरा सिर धड़ से जुदा करने का हुक्म दें।"

"क्या है? क्या है यह? हुआ क्या?"

जमीन से बिना उठे ही अर्सलां बेग ने जवाब दिया: "ऐ सूरज के मानिन्द आका! ऐ मेरे ..."

गुस्से में भरे अमीर बेताबी से पैर पटककर बोले: "खामोश! यह 'ऐ मेरे, ऐ मेरे...' तू फिर कर लेना! बता कि वहां हो क्या रहा है...?"

"खोजा नसरुद्दीन! ऐ मेरे आका, खोजा नसरुद्दीन!! ...वह औरत का भेस रखकर आया है। सारी बदमाशी उसी की है। यह सब उसी की वजह से है! मेरा सिर कलम करवा दीजिए।"

लेकिन अमीर को दूसरी परेशानियां थीं।

: ६ :

उस दिन खोजा नसरुद्दीन अपने वक्त की, मिनट-मिनट की, परवाह कर रहा था। बाजार में चहलकदमी में वक्त खराब करना उसने ठीक न समझा। सो, एक सिपाही का जबड़ा, दूसरे के दांत और तीसरे की नाक तोड़ता हुआ वह बखैरियत अली के चायखाने में जा पहुंचा। वहां, पीछेवाले कमरे में उसने औरतों का लिबास उतारा। रंगीन बदखशां साफा और नकली दाढ़ी पहनी और इस तरह भेस बदलकर एक ऊंची जगह पर बैठ गया और लड़ाई के मैदान का नजारा देखने लगा।

हर तरफ से भीड़ से घिरे और भीड़ के हमले से हर तरफ दबे सिपाहियों ने डटकर मुकाबला करना शुरू किया। खोजा नसरुद्दीन के कदमों के पास ही एक गुत्थमगुत्थी हो रही थी। एक सिपाही के ऊपर अपनी चाय उंडेलने के लालच को वह न रोक सका और यह काम उसने इतनी होशियारी से किया कि उबलती चाय अंडे निगलनेवाले सिपाही की गरदन पर ही गिरी। जोर

से चिल्लाकर सिपाही पीठ के बल गिर पड़ा और हाथ-पैर हवा में फेंकने लगा। उसकी तरफ देखने तक की परवाह किये बगैर खोजा नसरुद्दीन अपने खयालों में मशगूल हो गया। यकायक उसे एक बूढ़ी, कांपती हुई, आवाज सुनायी दी।

"मुझे जाने दो ! मुझे आगे बढ़ने दो ! अल्लाह के नाम पर ! यहां हो क्या रहा है ?"

चायखाने के पास ही, लड़ाई के बीचोबीच, झुकी-पतली नाक और सफेद दाढ़ीवाला एक शख्स ऊंट पर बैठा दिखायी दिया। शक्ल से वह अरब लगता था। उसकी पगड़ी का शमला टंका हुआ था, जिससे साबित था कि वह शख्स आलिम है। डर के मारे वह ऊंट के कूबड़ से चिपका हुआ था। उसके चारों तरफ मारपीट जारी थी। एक शख्स उसका पैर पकड़कर उसे ऊंट से उतारने की कोशिश कर रहा था। बूढ़ा बुरी तरह छटपटा रहा था। चीख-पुकार और शोर-गुल से कान के पर्दे फटे जा रहे थे।

हिफाजत की जगह पहुंचने की जी-तोड़ कोशिश के बाद बूढ़ा चायखाने तक पहुंचने में कामयाब हुआ। पीछे मुड़-मुड़कर देखते हुए और लड़खड़ाते हुए उसने अपना ऊंट खोजा नसरुद्दीन के गधे के पास बांध दिया और बरसाती में चढ़ आया।

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम ! इस शहर में हो क्या रहा है ?"

"बाजार !" खोजा नसरुद्दीन ने मुख्तसर-सा जवाब दिया।

"क्या बुखारा में हमेशा ऐसा ही बाजार लगता है ? इस भीड़ में होकर मैं महल तक कैसे पहुंच सकता हूं ?"

'महल' लफ्ज सुनते ही खोजा नसरुद्दीन समझ गया कि बस इस बुजुर्ग शख्स की मुलाकात में ही वह मौका छिपा हुआ है, जिसका इतनी देर से वह इन्तजार कर रहा था और जिससे वह अमीर के हरम में घुसकर गुलजान को बचा ला सकता है।

लेकिन, जैसा सभी जानते हैं, जल्दबाजी शैतान का काम होता है। शीराज के सबसे बड़े आलिम शेख सादी ने कहीं कहा है : "सब्र से ही काम बनता है, बेसब्री से नाकामी।" इसलिए खोजा नसरुद्दीन ने बेताबी का कालीन लपेट लिया और उसे उम्मीद के बक्स में बन्द कर दिया।

बुजुर्ग कराहे और लम्बी सांसें लेकर बोला : "ऐ पाक परवरदिगार ! मोमिनों के सहारे ! मैं महल तक पहुंचूंगा कैसे ?"

"कल तक इन्तजार कीजिए।" खोजा नसरुद्दीन बोला।

"मैं ठहर नहीं सकता।" बुजुर्ग जोर से बोले। "महल में मेरा इन्तजार हो रहा है।"

खोजा नसरुद्दीन जोर से हंसकर बोला : "ऐ बाइज्जत, आला-हजरत शेख ! मैं न आपका काम जानता हूं, न पेशा। लेकिन क्या आपको यकीन है कि महल में लोग कल तक आपका इन्तजार नहीं कर सकते ? बुखारा में बहुत से लोग महल में दाखिल होने के लिए हफ्तों इन्तजार करते हैं। आप यह क्यों समझते हैं कि आपके लिए इस तरीके में फर्क किया जायगा।"

खोजा नसरुद्दीन की बात से तपकर, तेवर चढ़ाकर, बुजुर्ग बोला : "तुम्हे मालूम होना चाहिए कि मैं बहुत मशहूर आलिम, नजूमी और हकीम हूं। अमीर की दावत पर मैं बगदाद से आया हूं — सल्तनत का काम चलाने में उनकी मदद करने और उनकी खिदमत करने !"

बहुत इज्जत दिखाते हुए, झुककर अदब से खोजा नसरुद्दीन बोला : "ओह ! खुशामदीद, ऐ आलिम शेख ! एक बार मैं बगदाद गया था और वहां के आलिमों को जानता हूं। आपका इस्मे-गरामी (शुभ नाम) ?"

"अगर तुम कभी बगदाद गये हो तो तुम्हें मेरी वे खिदमतें जरूर मालूम होंगी जो मैंने वहां के खलीफा के लिए अंजाम दी थीं। मैंने उनके प्यारे बेटे की जान बचायी थी और इस बात का सारे मुल्क में ऐलान भी किया गया था। मेरा नाम मौलाना हुसैन है !"

"मौलाना हुसैन ?" ताज्जुब भरे लहजे में खोजा नसरुद्दीन बोला। "क्या आप खुद मौलाना हुसैन हैं ?"

अपने वतन बगदाद से बाहर इतनी दूर तक अपनी शोहरत फैली देखकर तस्कीन और खुशी की मुस्कान छिपाने में नाकामयाब बुजुर्ग बोला : "तुम्हें ताज्जुब क्यों होता है ? हां, दानाई में लासानी, इलाज करने और सितारों को पढ़ने के हुनर में माहिर, मशहूर आलिम मौलाना हुसैन मैं ही हूं। लेकिन मुझे गुरूर और घमंड छू तक नहीं गया। देखो मैं तुम जैसे नाचीज इंसान से भी कितनी मिलनसारी से बातें कर रहा हूं।"

बुजुर्ग ने हाथ बढ़ाकर मसनद उठायी और उस पर कोहनी टेक ली। वह अपने इस साथी को अपनी दानाई का हवाला देने की तैयारी कर रहे थे। उन्हें पूरी उम्मीद थी कि शेखी में यह शख्स मशहूर आलिम मौलाना हुसैन से अपनी मुलाकात का जिक्र हरेक से करेगा और अपने मुल्क के लोगों में इस आलिम के लिए इज्जत का जज्बा पैदा करने के लिए हर बात बढ़ा-चढ़ाकर कहेगा। इसी तरह का बरताव तो वे लोग करते हैं, जिनकी बड़े आदमियों से मुलाकात होती है।

मौलाना हुसैन सोच रहे थे : "जरूर, आम लोगों में मेरी शोहरत बढ़ाने में यह शख्स मदद देगा। शोहरत नफरत करने की चीज तो है नहीं। आम लोगों में होनेवाला चर्चा भेदियों और जासूसों के जरिए अमीर के कानों तक

पहुंचेगा और मेरी दानाई का सिक्का जम जायेगा। बाहर हुई ताईद बेशक सबसे बेहतर ताईद होती है और इस तरह आखीर में मेरा ही फायदा होगा।"

अपने साथी पर अपने इल्म का सिक्का जमाने के लिए बुजुर्ग ने पुराने आलिमों के बहुत सारे जुमले दोहराये और सितारों के केरान (योग) और उनके आपसी रिश्ते बताने शुरू किये।

खोजा नसरुद्दीन बहुत गौर से सुनता रहा और लफ्ज याद करने की कोशिश करता रहा। आखिर वह बोला : "नहीं! मुझे अब भी यकीन नहीं आ रहा! आप क्या सचमुच ही मौलाना हुसैन हैं?"

बुजुर्ग बोले : "हां, हां, बेशक! इसमें ताज्जुब क्या है?"

खोजा नसरुद्दीन मानो सोच में पड़ गया। वह चुप रहा। फिर यकायक डर और तरस भरी आवाज में बोला: "ऐ बदनसीब! अब तुम बरबाद हुए!"

बुजुर्ग के हाथ से चाय का गिलास छूट पड़ा और उसका गला फंस गया। सारी शेखी और अहमियत गायब हो गयी।

"कैसे? क्यों? क्या बात हुई?" उसने परेशानी से पूछा।

बाजार की तरफ इशारा करते हुए, जहां मारपीट अब भी पूरी तरह खत्म नहीं हुई थी, खोजा नसरुद्दीन ने कहा :

"क्या आपको मालूम नहीं कि यह सारी गड़बड़ी आप की वजह से हो रही है? हमारे अमीर के कानों तक यह बात पहुंच गयी है कि बगदाद से रवाना होने से पेश्तर आपने खुले आम यह ऐलान किया था कि आप अमीर के हरम में पहुंच जायेंगे और उनकी बेगमों को फंसा लेंगे। लानत है आप पर, मौलाना हुसैन साहब!"

बूढ़े का मुंह खुला का खुला रह गया। उसकी आंखें फट-सी गयीं। डर के मारे उसे हिचकियां आने लगीं। हकलाकर बोला : "मैं ...?... मैं... हरम में? मैं ...?"

"आपने काबे की कसम खायी थी कि ऐसा करेंगे। यही तो आज नकीब ऐलान करते रहे थे। अमीर ने हुक्म जारी किया है कि जैसे ही आप बुखारा की सरजमीन पर कदम रखें, आपको पकड़ लिया जाय और फौरन आपका सिर कलम कर दिया जाय।"

बूढ़ा घबड़ाकर कराहने लगा। वह सोच नहीं पा रहा था कि उसकी बरबादी की यह चाल किस दुश्मन ने चली थी। उसे इस किस्से की सच्चाई पर सुबहा तक नहीं था। खुद उसने कई बार दरबार की साजिशों में अपने दुश्मनों को खत्म करने के लिए ऐसे ही तरीकों पर अमल किया था और अपने दुश्मनों को सूली पर लटकते देख बहुत इतमीनान और चैन की सांस ली थी।

खोजा नसरुद्दीन कहता गया : "इसलिए जासूसों ने आज अमीर को खबर दी कि आप तशरीफ ले आये हैं। उन्होंने हुक्म दिया कि आपको गिरफ्तार कर लिया जाय। सिपाही दौड़कर बाजार आये और हर जगह आपको तलाश करने लगे। दूकानों के पीछे भी उन्होंने आपको ढूंढ़ा। खरीद-फरोख्त बन्द हो गयी। अमन में खलल पड़ गया। सिपाहियों ने गलती से एक शख्स को पकड़ लिया जिसकी शक्ल-सूरत आपसे मिलती-जुलती थी और जल्दी में उसका सिर धड़ से जुदा कर दिया। लेकिन वह शख्स था एक मुल्ला जो अपनी पाकीजगी और काबलियत के लिए मशहूर था। सो, उसकी मसजिद के लोग नाराज हो गये। अब देखिए कि यह जो कुछ हो रहा है, सब आपकी बदौलत।"

खौफ और नाउम्मीदी से बूढ़ा कहने लगा : "तुफ है! लानत है मुझ पर!" इसी तरह वह रोता, चिल्लाता, कराहता रहा और यह साबित करता रहा कि खोजा नसरुद्दीन की चाल काम कर गयी।

इस बीच लड़ाई महल के फाटकों की तरफ बढ़ चुकी थी। बुरी तरह पिटे और घायल सिपाही महल में घुस रहे थे। अब तक उनके हथियार छिन चुके थे। बाजार में भी शोरगुल और बेचैनी थी। पर अब मामला ठंडा पड़ रहा था।

"मुझे बगदाद लौट जाना चाहिए!" आलिम रो रहा था। "मैं बगदाद लौट जाऊंगा!"

"आप शहर के फाटक पर धर लिये जायेंगे!" खोजा नसरुद्दीन ने आलिम को खबरदार किया।

"हाय कम्बख्ती! यह कहर मुझ पर क्यों गिरा। अल्लाह जानता है कि मैं बेकुसूर हूं। ऐसी गुस्ताख और नापाक कसम मैंने कभी खायी ही नहीं थी। मेरे दुश्मनों ने मुझे अमीर के सामने बदनाम किया। ऐ मेहरबान मुसलमान! मेरी मदद कर!"

खोजा नसरुद्दीन तो इस बात के इन्तजार में था ही। खुद मदद करने की तजबीज पेश करके वह आलिम में शुबहा की गुंजाइश नहीं पैदा करना चाहता था।

"मदद करूं?" खोजा नसरुद्दीन बोला। "मैं कैसे मदद कर सकता हूं? मुझे तो चाहिए कि अपने आका का वफादार और सच्चा गुलाम होने के नाते आपको पकड़कर फौरन सिपाहियों के हवाले कर दूं ताकि मुझ पर आपके साथ सांठ-गांठ करने का इल्जाम न लगे।"

हिचकियां भरते और कांपते हुए आलिम ने खोजा नसरुद्दीन की तरफ आजिजी से देखा।

बूढ़े को तस्कीन दिलाने के लिए खोजा नसरुद्दीन ने जल्दी से कहा : "तब भी, आप कहते हैं कि आप बेगुनाह हैं और लोगों ने झूठी अफवाह उड़ाई है। मुझे आपकी बात पर यकीन आ रहा है, क्योंकि मैं सोचता हूं कि इस बुजुर्गी में भला आपका हरम से क्या सरोकार !"

"बिल्कुल सही बात है," बूढ़ा जल्दी से बोला, "लेकिन मेरे लिए नजात का रास्ता क्या है ?"

"है ! जरूर एक रास्ता है !" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। वह बूढ़े को पीछेवाले अंधेरे कमरे में ले गया और औरतों की पोशाक का बंडल देकर बोला :

"मैंने अपनी बीवी के लिए आज ही ये कपड़े खरीदे थे। अगर आप चाहें तो आपकी पोशाक और साफे से मैं इन्हें बदल सकता हूं। औरत का नकाब डालकर आप सिपाहियों और जासूसों से बच सकते हैं।"

अहसानमंदी और खुशी से बूढ़े ने वे कपड़े पहन लिए। खोजा नसरुद्दीन ने उसकी पोशाक पहनी, शमला टंका साफा सिर पर रखा, सितारे जड़ा चौड़ा पटका कमर में बांधा। फिर, बूढ़े को ऊंट पर बैठाते हुए बोला : "खुदा हाफिज ! ऐ आलिम, औरतों की तरह ऊंची पतली आवाज में बोलना न भूलना !"

बूढ़ा अपनी सवारी पर भाग निकला।

खोजा नसरुद्दीन की आंखें चमकने लगीं। महल का रास्ता उसके लिए साफ था।

: १० :

संजीदा अमीर को जब एक बार तस्कीन हो गयी और उन्होंने अपने को यकीन दिला लिया कि बाजार की जंग ठंडी पड़ गयी है, तो उन्होंने दरबारे-आम में जाकर मुसाहिबों से मिलना तय किया। अपने चेहरे पर वह ऐसा भाव लाने की कोशिश कर रहे थे जिससे सुकून और साथ ही कुछ तकलीफ भी जाहिर हो और जिससे दरबारियों को यह सोचने की मजाल न हो कि शाही दिल में खौफ भी आ सकता है।

जैसे ही अमीर पहुंचे, सभी दरबारी खामोश हो गये। उन्हें डर था कि उनकी आंखों या चेहरों से कहीं यह बात जाहिर न हो जाय कि वे अमीर के जज्बों की सही हालत जानते हैं।

अमीर खामोश थे। दरबारी भी खामोश थे। आखिरकार, यह डरावनी खामोशी खुद अमीर ने खत्म की और कहा : "तुम लोगों को हमसे क्या

कहना है ? तुम्हारी क्या सलाह है ? यह पहला मौका नहीं, जब हम तुमसे ये सवाल कर रहे हैं।"

किसी ने जवाब नहीं दिया, सिर भी नहीं उठाया। यकायक बिजली की तरह आयी एक ऐंठन से अमीर का चेहरा बिगड़ गया। इस वक्त कितने ही सिर जल्लाद के काठ पर रखे होते, चापलूसी करनेवाली कितनी ही जुबानें हमेशा के लिए खामोश हो चुकी होतीं—झूठी और पूरी न होनेवाली उम्मीदों, हवसों और कोशिशों, धोखे की रियासतों की उनकी जिन्दगी की याद दिलानेवाली जुबानें—जो सफेद पड़े होठों से मौत की तकलीफ में बाहर निकल आयी होतीं ? लेकिन कंधों पर सिर बदस्तूर कायम रहे और फौरन चापलूसी करने के लिए जुबानें तैयार रहीं, क्योंकि उसी वक्त महल के गुमाश्ते ने आकर इत्तिला दी : "अलहमदुलिल्लाह ! खलकत के मरकज की खुदा खैर करे ! एक अजनबी महल के फाटक पर आया हुआ है और अपने को बगदाद का आलिम मौलाना हुसैन बताता है। वह कहता है कि उसे बहुत जरूरी काम है और जहांपनाह की रौशन नजर के सामने उसे फौरन पेश किया जाय।"

उतावली में अमीर चिल्ला पड़े : "मौलाना हुसैन ? उन्हें आने दो ! आने दो ! उन्हें यहां ले आओ !"

आलिम आये नहीं, बल्कि दौड़ते हुए एकदम धंस पड़े और अपने धूल भरे जूते भी उतारना भूल गये। तख्त के सामने उन्होंने झुककर कोर्निश की।

"मशहूर आलिम ! इस जहान के चांद और सूरज ! दुनिया के जमाल और जलाल ! अमीरे-आजम ! यह गुलाम आपके लिए दुआ करता है। मैं दिन और रात लगातार चलकर अमीर को एक बड़े खतरे से आगाह करने के लिए भागता आ रहा हूं। अमीर मुझे बतायें कि आज वह किसी औरत से तो नहीं मिले ? मेरे आका अमीर, इस नाचीज गुलाम को जवाब देने की मेहरबानी करें... मेरी इल्तिजा है..."

अमीर ने परेशानी भरी आवाज में पूछा : "औरत ?... आज ? नहीं। हमारा इरादा जरूर था, पर हमने ऐसा किया नहीं..."

आलिम उठ खड़े हुए। उनका चेहरा पीला पड़ रहा था। उन्होंने इस जवाब का इन्तजार बहुत बेताबी से किया था। एक लम्बी सांस उनके होठों से निकल गयी। धीरे-धीरे उनके गालों पर रंग आ गया। वह जोर से बोले : "अलहमदुलिल्लाह ! अल्लाह ने दानाई और संजीदगी के सितारे को डूबने से बचा लिया ! अमीरे-आजम को मालूम हो कि कल रात सितारों और सैयारों का ऐसा जमाव था जो उनके लिए बहुत नुकसानदेह साबित होता। और मैं, नाचीज गुलाम, जो अमीर के कदमों की खाक चूमने काबिल भी नहीं

सैयारों का हिसाब लगाता हूं और जानता हूं कि जब तक सितारे मुबारक घरों में न पहुंचें अमीर को किसी औरत से न मिलना चाहिए, नहीं तो उनकी बरबादी बिलकुल यकीनी है। अल्लाह का शुक्र है कि मैं उन्हें वक्त पर आगाह कर सका!"

अमीर ने टोका: "खामोश, मौलाना हुसैन! तुम समझ में न आनेवाली बातें कह रहे हो..."

लेकिन आलिम कहते रहे: "अलहमदुलिल्लाह! मैं वक्त पर आ पहुंचा! ताउम्र मुझे इस बात का फख्र रहेगा कि आज के दिन मैंने अमीर को औरत छूने से रोक लिया। इस तरह मैंने सारी खल्कत को गमजदा होने से बचा लिया है।"

वह इस खुशी और जोश से बोल रहे थे कि अमीर को उनका यकीन करना पड़ा।

"जब मुझ हकीर और नाचीज पर इस आलम के परवरदीगार का यह पयाम जहूर हुआ कि मैं बुखारा जाऊं और अमीर की खिदमत में हाजिर होकर उन्हें आगाह करूं, तो मुझे लगा कि मैं खुशी के समन्दर में गोते लगा रहा हूं। कहना फिजूल है कि मैंने फौरन पाक परवरदिगार के इस हुक्म की तामील की और सफर पर रवाना हो गया।

"लेकिन चलने के पेश्तर मैंने कई दिन अमीर का जायचा (जन्मपत्र) तैयार करने में सर्फ किये। इस तरह मैंने उन सितारों और सैयारों की चाल जांचकर उसी वक्त से अमीर की खिदमत करनी शुरू कर दी जिनका उनकी तकदीर पर असर पड़ता है। कल रात आसमान की तरफ देखा तो मुझे पता चला कि सितारे और सैयारे दोनों अमीर के लिए खतरा पैदा करनेवाले बुर्ज में हैं। सितारा अश् शुला, जो डंक की अलामत है, सितारा अल-कल्ब, जो दिल को जाहिर करता है, के मुकाबले मुसीबत के चक्कर में है। आगे मैंने तीन सितारे-अलगफ़ जो औरत के नकाब की अलामत हैं, दो सितारे अल-इकलील जो ताज की अलामत हैं और दो सितारे अश्-शरतान जो सींग की अलामत हैं, देखे।

"यह मैंने मंगल को देखा जो मिर्रिख सैयारे का दिन है और यह दिन जुमेरात (गुरुवार) के मुखालिफ बड़े लोगों व अजीम शख्सियतों की मौत का है और अमीरों के लिए बहुत बदशुगुनी का है। यह सब बुर्ज और रास देखकर मैं, नाचीज नजूमी, समझ गया कि ताज पहननेवाले को मौत के डंक का खतरा है—अगर वह किसी औरत के नकाब को छूता है। इसीलिए मैं ताज पहननेवाले को आगाह करने के लिए जल्दी में भागा आया। मैं दिन और रात लगातार चला। मैंने दो ऊंट दौड़ाकर मार डाले और बुखारा शरीफ पैदल पहुंचा।"

अमीर पर इस बात का बड़ा असर हुआ। वह बोले : "अल्ला हो अकबर ! क्या यह मुमकिन है कि माबदौलत पर इतना बड़ा खतरा आया हुआ है ? मौलाना हुसैन, तुम्हें ठीक मालूम है कि तुम गलती नहीं कर रहे हो ?"

"गलती ? मैं ?" आलिम जोर से बोले। "अमीर पर वाजे हो कि बुखारा से बगदाद तक कोई भी ऐसा शख्स नहीं है जो सितारों का अन्दाज समझने, इलाज करने या इल्म में मेरी बराबरी कर सकता हो। मैं गलती कर ही नहीं सकता। आफताबे-जहां, ऐ मेरे आका, ऐ अमीरे-आजम, खुद अपने आलिमों से आप दरियाफ्त कर लें कि मैंने जायचे में सितारों को ठीक बताया है या नहीं और उनकी कैफियत ठीक तजवीज की है या नहीं।"

अमीर के इशारे पर टेढ़ी गरदनवाला आलिम आगे बढ़ा :

"इल्म में मेरे लासानी साथी मौलाना हुसैन ने सितारों के सही नाम बताये हैं जिससे साबित होता है कि उनके इल्म पर शुबहा नहीं किया जा सकता। लेकिन," आलिम ने ऐसी आवाज में कहना जारी रखा जिससे खोजा नसरुद्दीन को जलन और बदनीयती की झलक मिली, "दानाई में अव्वल, मौलाना हुसैन ने अमीरे-आजम को चांद की सोलहवीं मंजिल के बारे में और उन बुर्जों के बारे में क्यों नहीं बताया जिनमें यह मंजिल आती है, क्योंकि इन कैफियतों के बिना यह कहना बेबुनियाद होगा कि मिर्रिख (मंगल) का दिन अजीम शख्सियतों की मौत का दिन है और इनमें ताजदार भी शामिल हैं ! सैयारे-मिर्रिख की मंजिल एक बुर्ज में है, उरूज दूसरे में, ठहराव एक तीसरे में और उतार चौथे में। इस हिसाब से सैयारे-मिर्रिख के एक नहीं, चार अन्दाज हैं। लेकिन दाना अव्वल हजरत मौलाना हुसैन ने एक ही बताया है।"

काइयांपन से मुस्कराता हुआ आलिम खामोश हो गया। दरबारियों ने तस्कीन और खुशी के साथ आपस में कानाफूसी शुरू की। वे समझे थे कि नया आलिम परेशानी में पड़ गया है। अपने रुतबे और आमदनी का खयाल रखते हुए हर बाहरी शख्स को वे बाहर ही रखने की कोशिश करते थे। हर नये आनेवाले को वे खतरनाक हरीफ समझते थे।

लेकिन, खोजा नसरुद्दीन जब भी किसी मामले में पड़ता था तो उसे बीच में नहीं छोड़ता था। अब तक उसने अमीर, आलिमों और दरबारियों की इल्मी गहराई को भांप लिया था। वह बिना झिझक या परेशानी दिखाये, बहुत ही नरमी से बोला : "मेरे दाना और होशियार साथी इल्म के किसी दूसरे शोबे (शाखा) में भले ही मुझसे ज्यादा जानते हों, लेकिन जहां तक सितारों का ताल्लुक है, उनके लफ्जों से जाहिर है कि अक्लमन्दतरीन इब्न बज्जा की तालीम से वह बिलकुल बेबहरा हैं। इब्न बज्जा का दावा है कि सैयारे-मिर्रिख की मंजिल हमल और अकरब (मेष और वृश्चिक) के बुर्ज (राशि) में है,

उसका उतार सरतान (कर्क), उरूज जद्दी (मकर) और ठहराव जान (तुला) के बुर्ज में है। लेकिन बहरसूरत, वह मंगल का ही है और उस पर उसकी नजर टेढ़ी होने से ताजदारों के लिए कारी (घातक) है।"

यह जवाब देते वक्त खोजा नसरुद्दीन को जहालत के इल्जाम का बिलकुल अन्देशा नहीं था, क्योंकि वह जानता था कि ऐसी बहसों में जीत उसी की होती है जो सबसे ज्यादा बातूनी हो। जाहिर है, इसमें बहुत कम लोग उसका मुकाबला कर सकते थे।

वह आलिम के ऐतराज के इन्तजार में इस तैयारी में खड़ा था कि उसको मुनासिब जवाब दे। लेकिन, आलिम ने चुनौती नहीं ली और खामोश खड़ा रहा। बहस जारी रखने की उसकी हिम्मत नहीं थी, क्योंकि वह अपनी लाइल्मी बखूबी जानता था, हालांकि, उसे पूरा यकीन था कि खोजा नसरुद्दीन भी जाहिल और काइयां है। इस तरह नये आलिम को नीचा दिखाने की कोशिश का उलटा असर हुआ। दरबारी उस पर फुफकारने लगे।

अपनी निगाह से उसने उन्हें समझा दिया कि इस तरह खुले आम बहस करने में हरीफ बहुत खतरनाक साबित होगा।

ये इशारे भी खोजा नसरुद्दीन की निगाह से नहीं बचे।

"जरा ठहरो," उसने मन ही मन कहा, "मैं अभी बताता हूं।"

अमीर गहरे खयाल में डूब गये। हर शख्स चुपचाप, कोई हरकत किये बगैर, खड़ा रहा ताकि अमीर के खयालात में खलल न पड़े।

आखिरकार अमीर बोले : "तुमने अगर सभी सितारों का सही नाम और अन्दाज बताया है, मौलाना हुसैन, तब वाकई तुम्हारे मानी ठीक हैं। लेकिन जो बात हमारी समझ में नहीं आती वह यह है कि हमारे जायचे में सितारे अशशरतान कहां से आ गये जो सींगों की अलामत हैं? वाकई, मौलाना हुसैन, तुम ठीक वक्त पर आ गये, क्योंकि आज ही सुबह एक जवान लड़की हमारे हरम में लायी गयी है और हम तैयारी ......"

खोजा नसरुद्दीन ने खौफजदा होते हुए हाथ हिलाया और कहा : "ऐ संजीदा अमीर! उसे अपने खयालों से निकाल दीजिए : उसके बारे में सोचिए भी मत।"

वह चिल्लाकर बोला, मानो इस वक्त वह यह भी भूल गया हो कि अमीर से सिर्फ जमा गायब (अन्य पुरुष) में ही बात की जाती है। वह सोच रहा था कि इस तरह बोलना दरबारी तहजीब के खिलाफ तो जरूर है लेकिन इसे अमीर के लिए वफादारी और उनकी जिन्दगी को बचाने का जज्बा समझा जायगा और यह न सिर्फ उसके खिलाफ नहीं पड़ेगा, बल्कि, उलटे

इससे वह अमीर के करीब आ जायगा और अमीर की नजरों में ऊंचा उठ जायगा।

उसने अमीर से उस लड़की को न छूने की पूरे जोश से आरजू-मिन्नत की, इल्तिजा की, और कहा कि "मुझ हुसैन को आंसुओं का दरिया न बहाना पड़े और गम का काला लिबास न पहिनना पड़े!" अमीर पर इसका बहुत गहरा असर हुआ। वह बोले :

"घबराओ नहीं! परेशान न हो! तस्कीन रखो, मौलाना हुसैन! हम रियाया के दुश्मन नहीं हैं जो उसे गम और अफसोस में डालें। हम वादा करते हैं कि अपनी बेशकीमत जिन्दगी की परवाह करेंगे और इस लड़की से नहीं मिलेंगे। आमतौर पर हम हरम में तब तक नहीं जायेंगे, जब तक सितारे मुबारक न हों—और यह तुम मुझे ठीक वक्त पर बता देना। इधर आओ।"

यह कहकर उन्होंने हुक्काबरदार को इशारा किया, जोर का कश लिया और अपने हाथ से सोने की मुंहनाल नये आलिम की तरफ बढ़ा दी। यह उसके लिए बहुत बड़ी इज्जत और मेहरबानी की बात थी। नीची नजर किये, झुककर, नये आलिम ने अमीर की इस मेहरबानी को कुबूल किया। इस खयाल से उसके बदन में खुशी की लहर दौड़ गयी कि दरबारी बदनीयती और जलन से मरे जा रहे हैं।

अमीर ने कहा: "मावदौलत आलिम मौलाना हुसैन को अपनी सल्तनत का सदर-उल-उलेमा मुकर्रर करने की मेहरबानी फरमाते हैं। उनकी दानाई व इल्म और साथ ही मावदौलत के लिए वफादारी औरों के लिए नजीर हैं।"

दरबार के मुहर्रिर ने, अमीर के हर काम और लफ्ज का तारीफाना बयान लिखना जिसका फर्ज था, ताकि आगे आनेवाली नस्लों के लिए उनका बड़प्पन छिपा न रह जाय—और इसकी अमीर को बहुत फिक्र थी—अपनी कलम घसीटनी शुरू कर दी।

दरबारियों की तरफ मुखातिब होकर अमीर कहने लगे : "जहां तक तुम लोगों का ताल्लुक है, मावदलौत अपनी नाराजगी जाहिर करते हैं, क्योंकि खोजा नसरुद्दीन की पैदा की हुई तमाम परेशानियों के अलावा, तुम्हारे आका पर खुद मौत का साया मंडला रहा था और तुम में से किसी ने इसके खिलाफ अपनी उंगली तक न उठायी! मौलाना हुसैन! इन लोगों को देखो, बेवकूफी से भरे इन नालायकों के चेहरे देखो। क्या ये बिलकुल गधों से नहीं मिलते हैं? वाकई किसी भी बादशाह ने ऐसे बेवकूफ और लापरवाह वजीर न रखे होंगे!"

खामोश दरबारियों को ताकते हुए, मानो उन पर पहले हमले के लिए निशाना ले रहा हो, खोजा नसरुद्दीन बोला: "हुजूर अमीर बजा फरमाते है। जैसा मुझे दिखायी पड़ रहा है, इन लोगों के चेहरों पर दानाई की छाप नहीं है।"

बहुत खुश होकर अमीर बोले : "बिलकुल सही ! बिलकुल ठीक ! इनके चेहरों पर दानाई की मुहर नहीं है। सुन रहे हो कुन्दजहनो ?"

खोजा नसरुद्दीन ने आगे कहा: "मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इन चेहरों पर ईमानदारी और नेकी की छाप भी नहीं है।"

पूरे यकीन से अमीर बोले : "ये लोग चोर हैं ! सब-के-सब चोर हैं ! ये दिन-रात हमें लूटते हैं ! हमें महल की हर चीज की हिफाजत करने को मजबूर होना पड़ता है। हर बार जब हम चीजों का शुमार करते हैं, कोई न कोई चीज गायब मिलती है। आज ही सबेरे हम अपना रूमाल बाग में छोड़ आये और आधे घंटे बाद वह गायब !... इनमें से भला कौन ... तुम समझ रहे हो न, मौलाना हुसैन ?"

जब अमीर बोल रहे थे, तभी टेढ़ी गरदनवाले आलिम ने एक अजब ऐय्यारी से आंखें नीची कीं। किसी और वक्त यह छोटी सी हरकत शायद दिखायी न पड़ती, पर इस वक्त खोजा नसरुद्दीन चौकन्ना था। वह फौरन भांप गया कि माजरा क्या है।

बहुत इतमीनान से खोजा नसरुद्दीन आलिम के पास पहुंचा, उसकी खलअत के अन्दर हाथ डाला और बहुत खूबसूरती से कढ़ा एक रूमाल बाहर निकाल लिया।

"अमीरे-आजम क्या इसी रूमाल के खोने पर अफसोस कर रहे हैं ?"

अचम्भे और डर से सभी दरबारी जैसे सकते में आ गये हों। नया आलिम सचमुच ही खतरनाक हरीफ साबित हो रहा था, क्योंकि उनमें जिस एक ने उसकी मुखालफत की थी, उसका भांडा-फोड़ हो गया था और वह बरबाद हो गया था। बहुत से आलिमों, शायरों, अफसरों, और वजीरों के दिल डर से बैठने लगे।

अमीर चिल्लाये : "अल्लाह गवाह है ! यही मेरा रूमाल है !! वाकई, मौलाना हुसैन ! तुम्हारी दानाई लासानी है ! आहा !" और वह तसल्ली और कामरानी के दरबारियों की तरफ मुड़े। "आहा ! आखिरकार रंगे हाथों पकड़े गये ! अब तुम हमारा एक धागा भी चुराने की कोशिश नहीं कर सकोगे। तुम्हारी लूट हम बहुत काफी भुगत चुके हैं। और जहां तक इस हकीर चोर का ताल्लुक है जिसने ऐसी गुस्ताखी से हमारा रूमाल चुराया, इसके सिर, बदन, मुंह से सारे बाल नोच लिये जायें, इसके तलवों में सौ कोड़े लगाये जायें, इसे नंगा करके उल्टा गधे पर बैठाया जाय, और सरे आम इसे चोर बताकर लानत करते हुए शहर में घुमाया जाय।"

अर्सलां बेग के इशारे पर जल्लादों ने आलिम को पकड़ लिया और उसे बाहर धकेल ले गये, जहां वे उस पर टूट पड़े। कुछ ही देर बाद वह फिर दरबार

में वापस धकेल दिया गया। वह नंगा था, उसके बाल गायब थे। वह बेहद बदनुमा और गन्दा लग रहा था। जाहिर था कि अब तक उसकी दाढ़ी और बेडौल साफा उसके चेहरे की बदकारी व कमअक्ली छिपाये हुए थे और ऐसी शक्लवाला शख्स नम्बरी चोर और बदमाश ही हो सकता था।

हिकारत से मुंह बिगाड़कर अमीर ने हुक्म दिया: "ले जाओ इसे !"

जल्लाद उसे खींच ले गये। फौरन बाद खिड़की के बाहर से चीखें और डंडों की फटाफट सुनायी पड़ने लगी। आखिरकार उसे गधे पर दुम की तरफ मुंह करके बैठा दिया गया और तुरही व ढोल की आवाजों के साथ बाजार को रवाना कर दिया गया।

अमीर देर तक नये आलिम से बातें करते रहे। दरबारी बिना हिले-डुले खामोश खड़े रहे—जो बजात खुद एक बड़ी तकलीफदेह चीज थी। गर्मी बढ़ रही थी और खलअतों के नीचे उनके बदन खुजला रहे थे।

वजीरे-आजम बख्तियार इस वक्त नये आलिम से सबसे ज्यादा डर रहा था और दरबारियों से मशविरा कर इस नये हरीफ को बरबाद करने की कोई चाल निकालने की कोशिश में था। दूसरी तरफ, दरबारी यह सोच रहे थे कि इस मोर्चे में किसकी फतह होगी और आसार देखकर ऐन मौके पर अपने फायदे के लिए बख्तियार को दगा देने की तैयारी कर रहे थे, ताकि वे नये आलिम की दोस्ती हासिल कर सकें।

अमीर खोजा नसरुद्दीन से खलीफा की सेहत, बगदाद की खबरें, सफर में गुजरे वाकयात के बारे में सवाल कर रहे थे और वह जितने अच्छे और सही जवाब बन पड़ रहे थे, दे रहा था। सब कुछ ठीक चल रहा था, और बातचीत से थकान महसूसकर अमीर ने आराम करने के लिए अपना बिस्तर तैयार करने का हुक्म जारी कर दिया था, तभी यकायक बाहर से चीख-पुकार और शोरगुल सुनाई दिया। महल का गुमाश्ता दौड़कर दरबार में दाखिल हुआ। उसका चेहरा दमक रहा था। उसने ऐलान किया: "अमीरे-आजम को मालूम हो कि अमन में खलल डालनेवाला काफिर खोजा नसरुद्दीन पकड़ लिया गया है और महल में ले आया गया है !"

उसने यह ऐलान किया ही था कि अखरोट की लकड़ी का नक्काशीदार दरवाजा खुला और हथियारों की खड़खड़ाहट के बीच पहरेदार लम्बी झुकी नाकवाले और सफेद दाढ़ीवाले बूढ़े को भीतर ले आये, जो औरतों के लिबास में था। उन्होंने उसे तख्त के सामने कालीन पर पटक दिया।

खोजा नसरुद्दीन जैसे जम गया हो। उसे लग रहा था कि उसकी आंखों के सामने दरबार की दीवालें गिरी पड़ रही हैं और दरबारियों के चेहरे हरे धुंध में तैर रहे हैं...

बगदाद का आलिम मौलाना हुसैन शहर के फाटक पर पकड़ गया था, जहां वह अपने नकाब के भीतर से चारों तरफ जानेवाली सड़कें देख रहा था। उसे हर सड़क कमबख्ती से नजात दिलानेवाली दिखायी पड़ रही थी।

लेकिन, फाटक पर सन्तरी का काम करनेवाले सिपाही ने पुकार कर उसे टोका था : "ऐ औरत ! तू कहां जा रही है ?"

आलिम ने ऐसी आवाज में जवाब दिया जो उस मुर्गे की बांग लग रही थी जिसका गला पड़ गया हो — "मैं जल्दी में अपने शौहर से मिलने घर जा रही हूं। ऐ बहादुर सिपाहियो ! मुझे जाने दो।"

सिपाहियों ने आवाज पर शुबहा किया और एक दूसरे को ताका। एक ने ऊंट की नकेल थामकर उससे पूछा : "तुम रहती कहां हो ?"

आलिम ने आवाज और ऊंचीकर जवाब दिया : "यहीं बिलकुल पास।" आवाज ऊंची करने से उसे खांसी आ गयी और सांस घरघराने लगी। सिपाहियों ने उसका नकाब फाड़ डाला। उन्हें बेहद खुशी हुयी। वे चिल्लाने लगे — "वही है ! वही शख्स है यह। पकड़ लो ! बांध लो इसे ! गिरफ्तार करलो !"

इसके बाद वे बूढ़े को महल ले आये। रास्ते में वे बहस करते रहे थे कि उसकी मौत किस तरह होगी और तीन हजार तंकों का इनाम, जिसे पाने का उन्हें पूरा भरोसा था, कैसे मिलेगा। उनका हर लफ्ज बूढ़े के दिल पर जलते हुए अंगारे की तरह लग रहा था।

इस वक्त तख्त के सामने पड़ा वह बुरी तरह रो रहा था और रहम की भीख मांग रहा था।

अमीर ने हुक्म दिया : "इसे खड़ा करो !"

सिपाहियों ने उसे खड़ा कर दिया। दरबारियों की भीड़ में से अर्सलां बेग आगे बढ़ा : "अमीर इस वफादार गुलाम की बात सुनने की मेहरबानी अता फरमायें ! यह शख्स खोजा नसरुद्दीन नहीं है। खोजा नसरुद्दीन जवान है। उसकी उम्र तीस से कुछ ही ऊपर है, जबकि यह शख्स बूढ़ा है।"

सिपाही नाउम्मीद हो गये। इनाम उनके हाथ से निकला जा रहा था। हर शख्स चक्कर में था और खामोश खड़ा था।

कांपता हुआ बूढ़ा बोला : "मैं मेहरबान अमीरे-आजम के महल के लिए रवाना हुआ और यहीं आ रहा था। पर मेरी मुलाकात एक बिलकुल अजनबी शख्स से हुई जिसने मुझ से कहा कि मेरे बुखारा पहुंचने से पहले ही अमीर ने

मेरा सिर काट लेने का हुक्म जारी कर दिया है। डर के मारे मैंने भेस बदलकर निकल भागने का फैसला कर लिया।"

अमीर हंसे, मानो सब कुछ समझ रहे हों। "तुम्हारी एक शख्स से मुलाकात हुई ... जो बिलकुल अजनबी था ? ... और तब भी तुमने उसका यकीन कर लिया ? ... यह किस्सा तो अजीब है ! और हम तुम्हारा सिर क्यों कलम करवा रहे थे ?"

"क्योंकि कहा गया था कि मैंने खुले आम ऐलान किया है कि मैं अमीरे-आजम के हरम में घुस जाऊंगा ... पर खुदा गवाह है, मेरे दिमाग में ऐसा खयाल कभी भी नहीं आया। मैं बूढ़ा और कमजोर हूं और बहुत दिन पहले ही मैंने औरतों से अपने ताल्लुक खत्म कर दिये थे।"

होंठ भींचते हुए अमीर बोले : "हमारे हरम में घुस जाओगे ?" उनके चेहरे से जाहिर था कि इस बूढ़े शख्स पर उनका शुबहा बढ़ता जा रहा था : "तुम हो कौन और आये कहां से हो ?"

"मैं आलिम, नजूमी, हकीम, बगदाद का मौलाना हुसैन हूं। अमीरे-आजम के फरमान पर मैं बुखारा आया हूं।"

"मौलाना हुसैन ?" अमीर ने दोहराया। "तुम मौलाना हुसैन हो ? तुम्हारा नाम मौलाना हुसैन है ? ऐ हकीर बुड्ढे, यह सफेद झूठ ?" वह इतने जोर से गरजकर बोले कि गलत मौके पर शायरे-आजम घुटनों के बल गिर पड़े। "तुम झूठ बोलते हो ! यह रहा मौलाना हुसैन !"

अमीर के इशारे पर खोजा नसरुद्दीन हिम्मत के साथ आगे बढ़ आया और बूढ़े के सामने खड़ा होकर बेधड़क और खुले खजाने उसको घूरने लगा।

बूढ़ा अचम्भे से पीछे हट गया। लेकिन फौरन ही उसने अपने को सम्हाला और चिल्लाया : "आहा ! अरे, यही तो है वह शख्स जो मुझे बाजार में मिला था और जिसने कहा था कि अमीर ने मुझे मरवा डालने का हुक्म जारी किया है !"

अमीर ने परेशानी से पूछा : "मौलाना हुसैन ! यह कह क्या रहा है ?"

बूढ़ा चिल्लाया : "मौलाना हुसैन वह नहीं, मैं हूं ! वह जालिया है ! उसने मेरा नाम चुरा लिया है !"

खोजा नसरुद्दीन ने अमीर के सामने झुककर कहा : "शहंशाहे-आजम मेरी गुस्ताखी माफ हो। लेकिन इसकी बेशर्मी वाकई हद से गुजर गयी है ! यह कहता है कि मैंने इसका नाम चुरा लिया है। शायद यह कहेगा कि मैंने इसकी पोशाक भी चुरा ली है ?"

बूढ़ा चिल्लाया : "हां, हां ! यह मेरी पोशाक है !"

चिढ़ाने के ढंग से खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "और शायद यह साफा भी तुम्हारा है ?"

"अरे हां ! यह मेरा ही साफा है ! तुमने मुझे औरतों के कपड़े देकर यह पोशाक और साफा ले लिया था।"

और ज्यादा तंज (व्यंग्य) भरे लहजे में खोजा नसरुद्दीन बोला : "तो यह पटका भी तुम्हारा है ? यह कमरबन्द भी ?"

बूढ़े ने गुस्से में आकर कहा : "हां यह भी मेरा है।"

खोजा नसरुद्दीन तरुन की तरफ मुड़ा : "जहांपनाह, अमीरे-आजम ने खुद गौर फरमाया है कि यह शख्स किस किस्म का है। आज यह झूठा और काबिले-नफरत बूढ़ा कहता है कि मैंने इसका नाम छीन लिया है। कहता है कि यह पोशाक, यह साफा, यह पटका उसका है। कल यह कहेगा कि यह महल और यह सारी सल्तनत इसकी है और बुखारा का असली अमीर हमारे सूरज के मानिंद चमकनेवाले शहंशाहे-आजम नहीं—जो इस वक्त हमारे सामने तख्त की शान बढ़ा रहे हैं—बल्कि, यह जलील बूढ़ा है ! ऐसे शख्स से तो हर बात की उम्मीद की जा सकती है ! यह बुखारा क्यों आया है ? अमीर के हरम में घुसने के लिए तो नहीं, मानो यह हरम उसी का हो ?"

अमीर बोले : "तुम सही कहते हो, मौलाना हुसैन। हां, हमें यकीन है कि यह बूढ़ा खतरनाक है और मुझे इस पर शक है कि इसकी नीयत बद है और इसके दिल में कोई खराब चाल है। हमारी राय है कि इसका सिर फौरन धड़ से अलग कर दिया जाय।"

बूढ़ा कराहा और अपने हाथों से मुंह ढंककर घुटनों के बल गिर पड़ा।

लेकिन खोजा नसरुद्दीन ऐसे शख्स को नहीं मरने दे सकता था जिस पर झूठा इलजाम लगा हो—भले ही वह दरबारी आलिम हो और भले ही उसने फरेब से बहुतों को बरबाद किया हो। इसलिए वह अमीर के सामने अदब से झुककर बोला :

"अमीरे-आजम मेरी बात सुनने की मेहरबानी फरमाएं। इसका सिर काटने में कभी देर न लगेगी। यह तो कभी भी किया जा सकता है। लेकिन इसका सिर काटने से पेश्तर क्या यह जान लेना मुनासिब न होगा कि इसका असली नाम और यहां आने का मकसद क्या है ? इस तरह यह भी पता चल जायगा कि इसके और भी कोई साथी हैं या नहीं। हो सकता है कि यह कोई बदमाश जादूगर हो, जो सितारों के नामुनासिब अन्दाज का फायदा उठाना चाहता हो। अगर ऐसा है तो यह अमीरे-आजम के कदमों की धूल लेकर उसमें चमगादड़ का दिमाग मिलाकर हुजूर के हुक्के में डाल देगा और इससे हुजूर

की सेहत को बहुत खतरा पैदा हो जायगा। फिलहाल, अमीर इसकी जिन्दगी बख्श दें और इसे मेरे सिपुर्द कर दें। मामूली सिपाहियों पर तो यह जादू के जोर से काबू पा सकता है, लेकिन मेरे सामने यह बिलकुल बेकार साबित होगा, क्योंकि मैं इल्म से जादूगरों की सारी चालें जानता हूं और उनका जादू तोड़ देने की तरकीब भी जानता हूं। मैं इसे ताले में बन्द कर दूंगा और फिर ताले पर ऐसी दुआ फूकूंगा जो सिर्फ मुझी को मालूम है। इस तरह यह अपने जादू के जोर से ताला खोलने में नाकामयाब रहेगा। इसके बाद इसे तकलीफें दे-देकर मैं पूरा बयान ले लूंगा।"

"अच्छा," अमीर बोले, "जो कुछ तुम कह रहे हो, बजा है मौलाना हुसैन। इसे ले जाओ और जो मर्जी हो करो। लेकिन इतना खयाल रखना कि यह भागने न पाय।"

"यह जिम्मेदारी मैं अपनी जान देकर भी पूरी करूंगा।"

आधे घंटे बाद अमीर के "सदर-उल-उलेमा और नजूमी-ए-खास" खोजा नसरुद्दीन अपने नये मकान में पहुंचे। यह महल की दीवाल पर बने उंचे मीनार पर उसके लिए तैयार किया गया था। खोजा नसरुद्दीन के पीछे-पीछे, सिपाहियों से घिरा, सिर झुकाये, मुजरिम, यानी असली मौलाना हुसैन, आ रहा था।

मीनार में खोजा नसरुद्दीन के मकान में एक छोटा-सा गोल कमरा था। इसमें सीखचेदार एक खिड़की थी। खोजा नसरुद्दीन ने एक बड़ी ताली से पीतल के पुराने ताले को खोला। लोहा-जड़ा दरवाजा खुला। सिपाहियों ने बूढ़े को उसी में धकेल दिया, एक मुट्ठा पुआल भी उसे बिछाने को न दिया। बन्द दरवाजे पर खोजा नसरुद्दीन बड़ी देर तक पीतल के ताले पर ऊंची आवाज में, जो साफ सुनायी न पड़ती थी, बहुत तेजी से कुछ पढ़ा। सिपाही उसमें सिर्फ अल्लाह का नाम सुन-समझ पाते थे।

खोजा नसरुद्दीन अपने मकान से बहुत खुश था। अमीर ने उसे एक दर्जन गद्दे, आठ मसनदें, बहुत से प्याले-तश्तरियां, एक टोकरी सफेद रोटियां, मर्तबान भरकर शहद और अपने दस्तरखान से बहुत से बढ़िया खाने भेज दिये थे। खोजा नसरुद्दीन बहुत भूखा और थका हुआ था। लेकिन पेश्तर इसके कि खाने पर बैठे वह छः गद्दे और चार मसनदें लेकर अपने कैदी के पास पहुंचा।

बूढ़ा एक कोने में सिकुड़ा बैठा था। उसकी आंखें बौखलायी बिल्ली की आंखों की तरह चमक रही थीं।

"कहिए, मौलाना हुसैन!" बहुत नरमी से खोजा नसरुद्दीन बोला। "इस मीनार में हम लोग बहुत आराम से रहेंगे — मैं नीचे, आप ऊपर, यानी, जैसा कि आपकी उम्र और इल्म के लिए मुनासिब है। ओफ्! यहां कितनी धूल है! मैं जरा सफायी कर दूं।"

नीचे से वह एक झाड़ू और एक घड़ा पानी लाया। फिर, बड़ी एहतियात से उसने पत्थर के फर्श को धोया, उस पर गद्दे बिछाये और मसनद सजायी। फिर वह नीचे गया और कुछ हलवा, पिस्ते, शहद और रोटी-पुये ले आया और अपने कैदी के सामने ईमानदारी से सारे खाने को दो बराबर हिस्सों में बांटा।

"मौलाना हुसैन!" वह बोला। "यहां आप भूख से परेशान न रहेंगे। हम लोग यहां खाने-पीने का अच्छा इन्तजाम कर लेंगे। यह रहा हुक्का और तम्बाकू।"

उस छोटे से कमरे में हर चीज इस तरह सजाकर कि वह कमरा खुद उसके अपने कमरे से बेहतर लगने लगा, खोजा नसरुद्दीन दरवाजे में ताला जड़कर वापस लौट आया।

बूढ़ा अकेला रह गया। वह बिलकुल भौचक्का था। बहुत देर तक वह सोच और परेशानी में डूबा रहा। लेकिन उसकी समझ में कुछ न आया कि यह सब क्या हो रहा है। गद्दे नर्म थे, मसनदें आरामदेह थीं। अभी तक न तो रोटी-पुये में, न शहद और तम्बाकू में ही जहर मिलाया गया था ... दिन भर के थकावटदेह तजरबे से चूर, अपनी किस्मत अल्लाह के हाथ में सिपुर्द कर, वह सोने की तैयारी करने लगा।

इस बीच, वह शख्स जो इस बूढ़े की मुसीबतों और परेशानियों के लिए जिम्मेदार था, नीचे के कमरे में दरीचे में बैठा शफक को आहिस्ता-आहिस्ता गहरी रात में बदलते देख रहा था और अपनी गैर-मामूली, तूफानी जिन्दगी पर गौर करता, अपनी माशूका के बारे में सोच रहा था। वहीं, बिलकुल करीब थी उसकी माशूका। लेकिन अभी तक उसे उसकी मौजूदगी की खबर तक न थी। ठंडी हवा खिड़की के रास्ते चुपके-चुपके भीतर आ रही थी। मुअज्जिनों की उदास, खनकती-सी अजानें, शहर पर रुपहले धागों की तरह फैल रही थीं। गहरे काले आसमान में सितारे फैले हुए थे। वे चमक रहे थे और कहीं दूर, खालिस, ठंडी आग की तरह टिमटिमा रहे थे। उनमें सितारा अल-कल्ब भी था जो दिल की अलामत है, तीन सितारे अल-गफ़ थे, जो कुंआरी लड़की के नकाब की अलामत है, और दो सितारे अश्-शरतान थे जो सींगों की अलामत हैं।

अकेला मनहूस अश-शुला, जो मौत के डंक की अलामत है, आसमान की गहरी नीली ऊंचाइयों से गायब था।



"पाक है वह जो जीता है और
मरता नहीं !"

अलिफ लैला

अमीर खोजा नसरुद्दीन पर भरोसा करने लगे थे और उस पर मेहरबान थे। वह हर मामले में उनका सबसे नजदीकी सलाहकार बन गया था। खोजा नसरुद्दीन फैसले करता, अमीर उन पर दस्तखत करते और वजीर बख्तियार सिर्फ उन पर पीतल की मुहर लगाता।

सड़कों व पुलों पर से गुजरने के टैक्स को खत्म करने और बाजार लगाने पर टैक्स कम करने का अमीर का हुक्म पढ़ते हुए बख्तियार ताज्जुब से सोचने लगा : "ऐ रहीम ! ऐ अल्लाह ! वाकई हमारी सल्तनत में इन्तिहा हो रही है। जल्द ही खजाना खाली हो जायगा ! इस नये आलिम ने—खुदा करे इसके पेट में कीड़े पड़ें—एक हफ्ते में वह सब खत्म कर दिया, जो मैंने दस बरसों में बनाया था !"

एक दिन उसने अपना यह शुबहा अमीर पर जाहिर करने की हिम्मत की।

उन्होंने जवाब दिया : "ऐ नाकारा इंसान ! तू जानता क्या है ? तू समझता ही क्या है ? इन हुक्मों से, जिनसे खज़ाना खाली हो जायगा, हम कम गमजदा नहीं हैं। लेकिन अगर सितारों का यही हुक्म है, तो हम कर ही क्या सकते हैं ? सब्र कर, बख्तियार ! यह थोड़े ही दिनों की बात है। सितारों को नेक होने दे। मौलाना हुसैन ! जरा इसे समझाओ तो।"

खोजा नसरुद्दीन वजीरे-आजम को एक तरफ ले गया। उसे गद्दे पर बैठाया और तफसील से उसे समझाया कि लुहारों, तांबागरों और छिपिलगरों पर लगे नये टैक्स फौरन खत्म होने क्यों जरूरी हैं।

"सितारा अल-अव्वा संबुला (कन्या) के बुर्ज में है और सितारा अल्-बल्द कौस के बुर्ज में है; ये दोनों सितारे दल्व (कुम्भ) के बुर्ज में बैठे सितारे सादबुला के मुखालिफ हैं। आप समझ रहे हैं न वजीर साहब ? ये सितारे मुख़ालिफ हैं और केरान (योग) में नहीं हैं !"

"तो क्या हुआ ?" बख्तियार ने जवाब दिया। "क्या हुआ अगर वे मुखालिफ हैं ? पहिले भी तो वे मुखालिफ थे। लेकिन इससे लगातार टैक्स वसूल करते रहने में तो कोई रुकावट नहीं पड़ी।"

खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "लेकिन आप सौर (वृष) की रास में बैठे सितारे अल-दबारां को भूल रहे हैं ! ऐ वजीर ! जरा आसमान की तरफ नजर उठाओ। तुम्हें यह खुद दिखायी दे जायगा।"

वजीर जिद में बोलता रहा : "मैं आसमान को क्यों देखूं ? मेरा फर्ज तो खजाने को देखना है ! उसमें इजाफा करना और उसकी हिफाजत करना है। और मैं देख यह रहा हूं कि जबसे तुम महल में आये हो, खजाने की आमदनी कम हो गयी है। टैक्सों की वसूली भी कम हो गयी है। शहरी कारीगरों से टैक्स वसूल करने का यही वक्त है। मुझे बताओ कि हम टैक्स क्यों न वसूल करें ?"

खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया : "क्यों ...? अरे पिछले एक घंटे से मैं तुम्हें बता क्या रहा हूं ? क्या अब भी तुम्हारी समझ में नहीं आता कि हर रास के लिए चांद के दो अन्दाज होते है और एक तिहाई .."

"लेकिन मुझे तो टैक्स वसूल करना है।" वजीर ने टोका। "टैक्स ! क्या तुम समझ नहीं पा रहे हो मौलाना साहब ?"

खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "सब्र से काम लो भाई, सब्र से। मैंने अभी तुम्हें सितारे अस्-सुरैया और आठ सितारों अन्-नाएम ..."

खोजा नसरुद्दीन ने इतनी पेचीदा और लम्बी बात शुरू कर दी कि वजीर के कान बजने लगे और नजर धुंधली पड़ने लगी। वह उठा और लड़खड़ाता हुआ बाहर निकल गया। खोजा नसरुद्दीन अमीर की तरफ मुखातिब हुआ और बोला : "ऐ मेरे आका ! उम्र ने भले ही उसके सिर पर चांदी बिखेर दी हो, लेकिन यह सजावट सिर्फ बाहरी है; उसके सिर के भीतर जो कुछ है उम्र ने उसे नहीं बदला। वह मेरे इल्म को समझ ही नहीं पाया। ऐ मेरे आका ! वह कुछ नहीं समझा। काश, उसे अमीर की जहानत और अक्ल का—जो खुद लुकमान को भी मात करते हैं—हजारवां हिस्सा भी मिला होता।"

इतमीनान और मेहरबानी से अमीर मुस्करा दिये। कई दिन से लगातार खोजा नसरुद्दीन अमीर को समझा रहा था कि उनकी दानाई की कोई मिसाल नहीं। इसमें वह पूरी कामयाबी भी हासिल कर चुका था। इसलिए अब जब भी वह कोई बात अमीर को समझाता तो वह बहुत गौर से सारी बात सुनते और इस डर से बहस न करते कि कहीं उनके इल्म की असली गहराई का पता न लग जाय।

... अगले दिन बख्तियार ने कई दरबारियों के सामने अपने दिल का बोझ हलका किया : "यह नया आलिम तो हम लोगों को बरबाद करके

छोड़ेगा। जिस दिन टैक्सों की वसूली होती है उसी दिन हम लोगों को अमीर के खजाने में आनेवाले रुपयों के सैलाब का कुछ फायदा उठाने और दौलत इकट्ठी करने का मौका मिलता है। लेकिन अब, जब इस सैलाब से कुछ फायदा उठाने का मौका आया है, तब यह मौलाना हुसैन रास्ते में हायल हो गया है। यह फौरन सितारों की कैफियत बताने लगता है। क्या कभी किसी ने यह भी सुना है कि अल्लाह के हुक्म से चलनेवाले सितारे आला शख्सियतों और बड़े लोगों के लिए तो बदशुगुनी के हों, लेकिन कुछ गुमनाम कारीगरों के लिए, जो मुझे यकीन है कि इस वक्त अपनी कमाई हड़प किये जा रहे हैं और हमें नहीं दे रहे, मुबारक हों ? सितारों की ऐसी कैफियत भला सुनी है किसी ने ? यह बात किसी किताब में तो लिखी हो नहीं सकती, क्योंकि ऐसी किताब फौरन जला दी गयी होती और उसे लिखनेवाले को लानत देकर, काफिर व मुजरिम बताकर मार डाला जाता।"

दरबारी कुछ बोले नहीं, क्योंकि वे समझ नहीं पा रहे थे कि किसका साथ देने में फायदा है — बख्तियार का या नये आलिम का।

बख्तियार कहता गया : "टैक्सों की वसूली दिनों-दिन गिरती जा रही है। अब क्या होगा ? इस मौलाना हुसैन ने अमीर को यह समझाकर भटका दिया है कि टैक्स वसूली सिर्फ थोड़े से दिनों के लिए टाली गयी है; बाद में ये टैक्स लगाये, बल्कि बढ़ाये भी जा सकते हैं। अमीर उसकी बात का यकीन करते हैं। हम जानते हैं कि टैक्स मंसूख करना आसान है, लेकिन नया टैक्स लगाना बड़ा मुश्किल है। किसी शख्स को कोई रकम जब दूसरों की समझने की आदत पड़ जाती है, तो आसानी से वह अपनी कमाई उसे दे देता है। लेकिन एक मर्तबा वह खुद उस रकम को अपने ऊपर खर्च करने लगे, तो वह यही चाहेगा कि दुबारा-तिबारा भी यह रकम अपने ऊपर ही खर्च करे।

"खजाना खाली हो जायगा और अमीर के हम दरबारी बरबाद हो जायेंगे। जरी की पोशाक पहिनने के बजाय हमें सादा मोटा कपड़ा पहनना पड़ेगा। चार बीवियां रखने बजाय दो बीवियों पर ही गुजर करनी पड़ेगी। चांदी के बरतनों की जगह, मिट्टी की रकाबियों में खाना खाना पड़ेगा। मुलायम मेमने की जगह पुलाव में गाय का सख्त गोश्त खाना पड़ेगा, जो सिर्फ कुत्तों और कारीगरों के लायक होता है। ये ही वे बातें हैं जो नया आलिम हमारी किस्मत में लिखवा रहा है। जो शख्स यह न देखे–समझे, वह अन्धा है उस पर खुदा की मार !"

नये आलिम के खिलाफ दरबारियों को उभारने के लिए बख्तियार इसी तरह बोलता रहा। लेकिन उसकी कोशिश नाकाम रही। अपने नये ओहदे पर मौलाना हुसैन एक के बाद एक कामयाबी हासिल करता गया।

'तारीफ के दिन' तो वह खास तौर पर चमक गया। एक पुरानी रस्म के मुताबिक हर महीने अमीर के सामने एक दिन सभी वजीर, ओहदेदार, आलिम व शायर इकट्ठे होते थे और उनकी तारीफ करने में होड़ करते थे। इसमें जो अव्वल आता, उसे इनाम मिलता।

उस दिन हरेक ने अपना-अपना कसीदा पढ़ा, लेकिन अमीर को तसल्ली नहीं हुयी। वह बोले :

"पिछली दफा भी तुम लोगों ने ये ही बातें कही थीं। हम देखते हैं कि तारीफ करने में तुम लोग माहिर और मुकम्मल नहीं हो। तुम लोग अपने दिमागों पर जोर डालने को तैयार नहीं हो। लेकिन, आज हम तुम से काम लेकर मानेंगे। हम सवाल करेंगे और तुम्हें इस तरह जवाब देना होगा कि हमारी तारीफ भी हो और जवाब में सचाई का पुट भी रहे।

"गौर से सुनो! हमारा पहला सवाल यह है : अगर बुखारा के अमीरे-आजम, माबदौलत, बहुत ताकतवर, और जैसा कि तुम लोगों का दावा है, नाकाबिले-फतह हैं तो अभी तक पड़ोस के मुस्लिम देशों के सुल्तानों ने हमारी शहंशाहियत को मानकर अपनी उम्दा सौगातें क्यों नहीं भेजीं? हम तुम्हारे जवाबों का इन्तजार कर रहे हैं।"

दरबारी परेशानी में डूब गये। सीधा जवाब न देकर वे भिनभिनाने लगे। अकेला खोजा नसरुद्दीन बिना जरा भी घबड़ाये बैठा रहा। उसकी बारी आयी तो वह बोला :

"अमीरे-आजम मेरे हकीर लफ्जों को सुनने की मेहरबानी अता फरमाएं। हमारे शहंशाह के सवाल का जवाब बहुत आसान है। पड़ोस के सभी मुल्कों के सुल्तान हमारे आका की ताकत के डर से हमेशा कांपते रहते हैं। वे सोचते हैं कि 'अगर हम बढ़िया सौगात भेजेंगे तो बुखारा के ताकतवर, अजीमुश्शान अमीर समझेंगे कि हमारा मुल्क रईस है, जिससे उन्हें फौज लेकर यहां आने और हमारे मुल्क पर कब्जा करने का लालच होगा। लेकिन अगर हम उन्हें मामूली सौगात भेजें तो वह नाराज होकर अपनी फौजें भेज देंगे। बुखारा के अमीर बड़े हैं, ताकतवर हैं, अजीमुश्शान हैं। सो, हिफाजत इसी में है कि अपनी नाचीज हस्ती की उन्हें याद ही न दिलायी जाय।'

"दूसरे सुलतानों के दिमागों में भी इसी तरह के खयाल आते हैं। बढ़िया सौगात लेकर अपने सफीर बुखारा न भेजने की वजह उन लोगों के लगातार डर और अन्देशे की हालत में ढूंढनी होगी जो हमारे शहंशाह की ताकत ने पैदा कर दी है।"

खोजा नसरुद्दीन के जवाब में जो तारीफ थी, उससे खुश होकर अमीर चिल्ला उठे : "वाह! अमीर के सवालों का इसी तरह जवाब दिया जाना

चाहिए ! सुना तुम लोगों ने ? ओ बेवकूफो और कुन्दजहनो ! इनसे सीखो ! वाकई, इल्म में मौलाना हुसैन तुम सबसे दस गुने बड़े हैं। माबदौलत तुम्हारा शाही तौर पर शुक्रिया अदा करते है, मौलाना हुसैन।"

दौड़कर मीर बकावल खोजा नसरुद्दीन के पास पहुंचा और उसके मुंह में मिठाइयां और हलवा ठूंस दिया। खोजा नसरुद्दीन के गाल फूल गये। उसका दम घुटने लगा। गहरी चाशनी उसकी ठुड्डी तक बहने लगी।

अमीर ने उलझन भरे कई और सवाल किये। हर बार खोजा नसरुद्दीन का जवाब सबसे बेहतर साबित हुआ।

"दरबारी का सबसे पहला फर्ज क्या है ?" अमीर ने पूछा।

खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "ऐ अजीमुश्शान बादशाह ! दरबारी का पहला फर्ज रोजाना अपनी रीढ़ को कसरत कराना है जिससे उसमें जरूरी लोच रहे, जिसके बिना वह वफादारी और आदाब का इजहार कर ही नहीं सकता। दरबारी की रीढ़ को आसानी से हर तरफ मुड़ और घूम सकना चाहिए। मामूली इंसान की अकड़ी हुई रीढ़ की तरह उसे नहीं होना चाहिए, जो ठीक से झुककर सलाम करना भी नहीं जानता।"

बहुत खुश होकर अमीर बोले : "बहुत खूब ! बिलकुल सही ! रीढ़ की रोजाना कसरत ! वाह, वाह ! हम दूसरी बार मौलाना हुसैन के शाही शुक्रिये का ऐलान करते हैं।"

एक बार फिर खोजा नसरुद्दीन के मुंह में गर्म मिठाइयां और हलवा ठूंस दिया गया।

उस दिन से बहुत से दरबारियों ने बख्तियार की जगह खोजा नसरुद्दीन की वफादारी शुरू कर दी।

उसी दिन बख्तियार ने असर्ला बेग को अपने घर दावत दी। नया आलिम दोनों के लिए एक-सा खतरनाक था और उसे बरबाद करने के लिए दोनों ने कुछ दिनों के लिए आपसी अदावत ताक पर रख दी थी।

"उसके पुलाव में कुछ मिला देना ठीक रहेगा," असर्ला बेग ने कहा। वह इस फन में माहिर था।

बख्तियार बोला : "लेकिन अमीर हमारे सिर कलम करवा देंगे। नहीं, असर्ला बेग साहब, हमें कोई दूसरा तरीका सोचना होगा। हमें हर तरह मौलाना हुसैन के इल्म और अक्ल की तारीफ करके उसे आसमान पर चढ़ा देना चाहिए, ताकि अमीर के दिल में शुबहा पैदा हो जाय कि कहीं दरबारी लोग मौलाना हुसैन की अक्ल को अमीर की अक्ल से भी बढ़कर तो नहीं समझने लगे। हमें लगातार मौलाना हुसैन की तारीफ के पुल बांधने चाहिए। तब जल्द ही वह दिन आयगा, जब अमीर को उससे जलन होने लगेगी। वह

दिन मौलाना हुसैन की बड़ाई का आखिरी और गिरावट का पहला दिन होगा।

लेकिन तकदीर खोजा नसरुद्दीन के साथ थी और उसकी बड़ी से बड़ी गलती का नतीजा भी उसी के हक में होता।

अर्सलां बेग और बख्तियार जब मौलाना हुसैन की तारीफें करके अपनी तिकड़म में कामयाब हो रहे थे और अमीर के दिल में हसद की पहली चिनगारी जला रहे थे—गो यह चिनगारी अभी छिपी हुई थी—तभी हुआ यह कि खोजा नसरुद्दीन एक भारी भूल कर बैठा।

एक दिन अमीर के साथ वह बाग में फूलों की महक लेता और चिड़ियों के गाने सुनता टहल रहा था। अमीर खामोश थे। इस खामोशी में खोजा नसरुद्दीन को अदावत की छिपी झलक महसूस हुई। लेकिन वह इस अदावत की वजह नहीं समझ पा रहा था।

अमीर ने पूछा : "उस बुड्ढे—तुम्हारे कैदी—का क्या हाल है? क्या तुमने उसका असली नाम और बुखारा आने का सबब जान लिया?"

खोजा नसरुद्दीन के खयालों में इस वक्त बसी हुई थी गुलजान। सो उसने अनमने ढंग से जवाब दिया : "ऐ बादशाह सलामत! इस नाचीज गुलाम की खता माफ फरमाएं। अभी तक मैं उस बुड्ढे से एक लफ्ज भी नहीं कबूलवा पाया हूं। वह तो मछली की तरह एकदम गूंगा है।"

"क्या तुमने उसे तकलीफें देने की कोशिश की?"

"जी हां, आका-ए-नामदार! परसों मैंने उसकी गांठों को उमेठा। कल दिन भर गर्म चिमटे से मैं उसके दांत हिलाता रहा।"

अमीर ने ताईद करते हुए कहा : "दांत ढीले करना तो अच्छी सजा है। ताज्जुब है कि वह तब भी खामोश रहा। तुम्हारी मदद के लिए किसी तजर्बेकार, होशियार जल्लाद को भेजूं!"

"नहीं, हुजूर! आप अपने आपको ऐसी फिक्रों से परेशान न करें। कल मैं उसे एक नये ढंग की सजा दूंगा। बूढ़े की जुबान और मसूड़ों में मैं जलता हुआ बरमा घुसेड़ूंगा।"

"ठहरो! ठहरो!" अमीर चिल्लाये। उनका चेहरा खुशी से दमक रहा था। "अगर तुम उसकी जुबान जलते हुए बरमे से छेद दोगे, तो वह अपना नाम कैसे बतायेगा? मौलाना हुसैन! तुमने इस बात पर गौर किया ही नहीं, या किया था? देखो न, अमीरे-आजम, माबदौलत, ने फौरन इस बात पर गौर किया और तुम्हें एक बहुत बड़ी गलती करने से रोक लिया। इससे साबित है कि हालांकि तुम एक लासानी आलिम हो, तो भी हमारी दानाई तुमसे बढ़-चढ़कर है। तुमने अभी-अभी यह बात देखी है न?"

बेहद खुश अमीर ने दमकते चेहरे से हुक्म दिया कि दरबारी फौरन बुलाये जायें। दरबार लग गया। अमीर ने पहुंचकर ऐलान किया कि आज के दिन उन्होंने मौलाना हुसैन से ज्यादा दानाई दिखायी है और एक ऐसी गलती करने से उन्हें रोक लिया है, जो वह करने ही वाले थे। दरबार के मुहर्रिर ने बड़ी मेहनत से अमीर के बयान का एक-एक लफ्ज दर्ज किया ताकि आगे आनेवाली नस्लें उन्हें भूल न जायें।

उस दिन के बाद से अमीर के दिल में जलन पैदा नहीं हुई। इस तरह, इस इत्तिफाकिया गलती से खोजा नसरुद्दीन ने दुश्मनों की काइयां तिकड़मों को बेकार कर दिया।

तब भी दुविधा में पड़े खोजा नसरुद्दीन को, लम्बे, और परेशान करनेवाले घंटों में रोज-ब-रोज ज्यादा तकलीफ होती। बुखारा शहर के आसमान पर पूरा चांद अपनी छटा बिखेर रहा था। अनगिनत मीनारों पर पालिशदार खपरैलें चमक रही थीं। बुनियादों के बड़े-बड़े पत्थर नीले कुहासे से ढंके थे। हल्की हवा हौले-हौले चल रही थी। ऊपर छतों पर ठंडक थी। लेकिन नीचे, जहां जमीन और धूप से तपी दीवालों को रात की हवा में ठंडा होने का वक्त न मिला था, दम घोटनेवाली गर्मी थी। महल, मसजिदों व झोंपड़ों में—हर तरफ—नींद छायी थी। महज उल्लू अपनी तीखी आवाजों से पाक शहर के गर्म आराम में खलल डाल रहे थे।

खोजा नसरुद्दीन खुली खिड़की में बैठा था। उसके दिल को यकीन था कि गुलजान अभी सोयी नहीं है, कि वह जाग रही है और उसी के बारे में सोच रही है। शायद, इस घड़ी वे दोनों एक ही मीनार को ताक रहे हों, मगर एक-दूसरे को न देख पा रहे हों, क्योंकि उनके बीच दीवालों, लोहे के सीखचोंवाली जालियों, जनखों, पहरेदारों और बूढ़ी औरतों की रोकें थीं। खोजा नसरुद्दीन को महल में घुसने का मौका तो मिल गया था, लेकिन हरम में पहुंचने का अब भी कोई रास्ता नहीं था। कोई इत्तिफाकी वाकया ही उसे वहां पहुंचाने का रास्ता बता सकता था। लगातार वह ऐसे ही मौके की तलाश में था, लेकिन बेकार। गुलजान तक कोई खबर भिजवाने में अब तक वह कामयाब न हुआ था। झरोखे में बैठे-बैठे हवा को चूमकर उसने कहा : "ऐ हवा! तेरे लिए यह काम बहुत आसान है। एक लमहे के लिए गुलजान की खिड़की से होकर भीतर चली जा, उसके होंठ और कान छू। उसे मेरा प्यार दे और मेरा संदेशा उससे कह। उससे कह कि मैं उसे भूला नहीं हूं। उससे कह कि मैं आऊंगा, जरूर आऊंगा और तुझे छुड़ा लूंगा।"

हवा तेजी से निकल गयी। गमजदा खोजा नसरुद्दीन को वह जहां का तहां छोड़ गयी।

परेशानियों व मुसीबतों के दिन एक के पीछे एक इसी तरह गुजरते रहे। रोज ही खोजा नसरुद्दीन को दरबारे-ग्राम में पहुंचकर अमीर का इन्तजार करना पड़ता, दरबारियों की चापलूसी सुननी पड़ती, बख्तियार की काइयां साजिशों की असलियत समझनी पड़ती और जहर से बुझी उसकी नजर देखनी पड़ती। फिर, अमीर के सामने बन्दगी करनी पड़ती, उनकी तारीफें गानी पड़तीं और दिल में नफरत छिपाये घंटों उनका ऐयाश और थलथल चेहरा देखते रहना पड़ता, कान लगाकर उनकी बेवकूफी की बातचीत सुननी पड़ती और सितारों की कैफियत समझानी पड़ती। खोजा नसरुद्दीन इस सबसे इतना ऊब गया था और इतना थक गया था कि अब उसने नयी वजहें ढूंढ़नी बन्द कर दी थीं। हर बात को—चाहे अमीर का सिरदर्द हो, चाहे गल्ले की मंहगाई—उन्हीं लफ्जों और केरानों (योगों) के जरिये समझाना शुरू कर दिया था।

मक्खी की तरह भनभनाता हुआ वह कहता: "सितारे सादज्जबीह दल्व (कुम्भ) के बुर्ज (राशि) के मुखालिफ है और सैयारा मुश्तरी अकरब (वृश्चिक) के बुर्ज के बायें पर है। कल रात अमीर को नींद न आने की यही वजह थी।"

अमीर दोहराते: "सितारे सादज्जबीह सैयारे मुश्तरी के मुखालिफ हैं... मुझे यह याद कर लेना चाहिए... फिर से तो कहना, मौलाना हुसैन...।"

अमीर की याददाश्त बहुत कमजोर थी।

अगले दिन फिर वही बातचीत शुरू होती: "पहाड़ियों पर मवेशियों की मौत का सबब यह है कि सितारा सादज्जबीह दल्व के बुर्ज में है और सैयारा मुश्तरी अकरब के बुर्ज के मुखालिफ है...।"

"तो सितारे सादज्जबीह ... मुझे यह याद कर लेना चाहिए," अमीर फिर कहते।

थककर खोजा नसरुद्दीन सोचने लगता: "या खुदा! यह कैसा बेवकूफ है। यह तो मेरे पिछले मालिक से भी बढ़-चढ़कर बेवकूफ निकला। मैं तो इससे ऊब उठा हूं। ऐ अल्लाह, कब मैं इस महल से छुटकारा पाऊंगा!"

इस बीच अमीर बातचीत का कोई दूसरा सिलसिला शुरू कर देते: "मौलाना हुसैन! हमारे राज में हर तरफ अमन-चैन है, रिआया खुश है। अब बदमाश खोजा नसरुद्दीन का जिक्र भी सुनायी नहीं पड़ता। कहां चला गया है वह? वह खामोश क्यों है? हमें यह बताइये तो सही!"

थकान से चूर खोजा नसरुद्दीन वे ही बातें भनभनाना शुरू कर देता जो वह पहले कितनी ही बार दोहरा चुका था: "ऐ बादशाह सलामत! ऐ कादिरे-मुतलक! सितारे सादज्जबीह...और इसके अलावा,

ऐ अमीरे-आजम, बदमाश खोजा नसरुद्दीन बगदाद जा चुका है। मेरे इल्म के बारे में उसे जरूर जानकारी है। जब उसे पता चला कि मैं बुखारा आ गया हूं, तो वह डर और कंपकंपी के मारे फौरन छिप गया, क्योंकि वह जानता था कि मैं उसे कितनी आसानी से गिरफ्तार कर सकता हूं।"

"गिरफ्तार ? यह तो बहुत ही अच्छी बात होगी ! लेकिन उसे गिरफ्तार करोगे कैसे ?" अमीर पूछते।

"इसके लिए मैं सितारे सादज्जबीह और सैयारे मुश्तरी के मुबारक बुर्ज में पहुंचने का इन्तजार करूंगा।"

अमीर दोहराते : "सैयारा मुश्तरी .. मुझे याद रखना चाहिए। मौलाना हुसैन ! क्या तुम्हें मालूम है कि कल माबदौलत को एक बहुत बढ़िया खयाल आया। हमने सोचा कि बख्तियार को निकालकर तुम्हें वजीरे-आजम बना दिया जाय।"

इस पर खोजा नसरुद्दीन को अमीर के सामने जमीन पर लेटकर कोर्निश करनी पड़ी, उनकी तारीफें करनी पड़ीं, उनका शुक्रिया अदा करना पड़ा और उन्हें समझाना पड़ा कि सितारे सादज्जबीह की कैफियत इस वक्त वजीरों में तब्दीली के लिए बदशुगुनी की है। उसने मन ही मन सोचा, अब जल्द यहां से भाग निकलने का वक्त आ गया है।

मौके की तलाश में खोजा नसरुद्दीन नाउम्मीदी की कठिन डगर काट रहा था।

उसका दिल बाजार, भीड़, चायखानों, धुएं-भरी सरायों के लिए ललक उठता। अमीर के बढ़िया से बढ़िया लज़ीज खाने को वह बाजार के सस्ते पुलाव की कड़ी बोटियों या प्याज व चरपरी काली मिर्चोंवाले पाये के शोरबे से बदलने को तैयार था। चापलूसी और तारीफ के बदले सादी बातचीत और जोर की दिल-खोल हंसी के लिए वह अपने सोने के लिबास को फौरन दे डालने को तैयार था।

लेकिन किस्मत खोजा नसरुद्दीन का इम्तिहान ले रही थी और उसे वह मौका नहीं दे रही थी, जिसका वह इतनी बेताबी से इन्तजार कर रहा था। इस बीच अमीर लगातार उससे पूछताछ करते रहते कि वह अपनी नयी दाश्ता का नकाब उठाने का मौका कब पायेंगे, यानी सितारे कब मुबारक होंगे।

: २ :

अमीर ने खोजा नसरुद्दीन को एक दिन बेवक्त बुला भेजा। अभी तड़का था। सारा महल सो रहा था। फव्वारे नाच रहे थे। फाख्ताएं गुटर-गूं-गुटर-गूं करती हुई पर फड़फड़ा रही थीं।

शाही आरामगाह जाते वक्त लाल और सफेद ज्यराब पत्थर की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ खोजा नसरुद्दीन सोचने लगा: "अमीर को मुझ से इस वक्त क्या काम हो सकता है?"

रास्ते में उसकी मुलाकात बख्तियार से हुई जो आरामगाह से चुपचाप साये की तरह निकला था। बिना रुके उनकी दुआ-सलाम हुई। खोजा नसरुद्दीन को लगा कि कोई साजिश की गयी है और वह होशियार हो गया।

आरामगाह में उसे ख्वाजा सरा मिला। अस्मत मआब ख्वाजा सरा शाही कौच के सामने पड़ा जोर-जोर से कराह रहा था। उसके पास ही कालीन पर सोने की मूठवाले बेंत के टुकड़े बिखरे पड़े थे।

भारी-भरकम मखमली पर्दे सुबह की ताजी हवा, सूरज की किरनों और चिड़ियों की चहचहाट को आरामगाह में घुसने से रोक रहे थे। लैम्प से हलकी रोशनी फैल रही थी। मामूली मिट्टी के दिये के लैम्प की तरह इससे भी बू और धुंआ निकल रहा था।

एक कोने में नक्काशीदार धूपदान से मीठी चरपरी महक आ रही थी। लेकिन लैम्प में जलती भेड़ की चर्बी की बू पर यह महक काबू न पा रही थी। आरामगाह की हवा इतनी घुटी हुई थी कि खोजा नसरुद्दीन की नाक खुजलाने लगी और गले में खरखराहट पैदा हो गयी।

अमीर रेशमी लिहाफ के बाहर बालों भरी टांगें लटकाये बैठे थे। खोजा नसरुद्दीन ने देखा कि उनकी एड़ियां गहरी पीली हैं मानो उन्हें वह हिन्दुस्तानी धूपदान के ऊपर सेंकते रहे हों।

"मौलाना हुसैन!" अमीर बोले: "माबदौलत बहुत गमजदा हैं। हमारा ख्वाजा सरा, जिसे तुम यहां पड़ा देख रहे हो, इस गम का सबब है।"

खोजा नसरुद्दीन घबरा उठा: "ओह! शहंशाह, क्या इसने कोई गुस्ताखी करने की मजाल की थी?"

"अरे नहीं!" अमीर ने हाथ हिलाकर मुंह बनाते हुए कहा। "अपनी अक्लमन्दी से हमने पहले ही सब बातें सोच-समझकर होशियारी बरत रखी थी। भला इसकी मजाल ऐसी हो ही कैसे सकती थी? इसे ख्वाजा सरा बनाने से पहले ही पूरी होशियारी बरती गयी थी। नहीं, वह बात नहीं है। हमें आज पता लगा है कि यह बदमाश हिजड़ा, सल्तनत के सबसे बड़े ओहदों में से एक पर

मुकर्रर किये जाने की हमारी मेहरबानी भूलकर, अपना फर्ज पूरा करने में गफलत करता रहा है।

'इस बात का फायदा उठाकर कि इधर हम अपनी रखैलों के पास नहीं जा रहे हैं, इसने तीन दिन तक लगातार हरम न जाकर हशीश (गांजा) पीने की लत में मशगूल रहने की गुस्ताखी की है। और हमारी दाश्ताएं, अपने को अकेला पाकर, आपस में लड़ती-झगड़ती रहीं और एक-दूसरे के मुंह और बाल नोचती रहीं। जाहिर है, इससे बहुत नुकसान हुआ है, क्योंकि नुचे हुए मुंह या गंजे सिरवाली औरत हमारी निगाह में मुकम्मल हुस्नवाली नहीं होती। अलावा इसके, एक दूसरी बात भी हुई, जिसका हमें बहुत अफसोस है। हमारी नयी दाश्ता बीमार पड़ गयी है। तीन दिन से उसने खाना नहीं खाया।"

खोजा नसरुद्दीन चौंक उठा। अमीर ने इशारे से उसे खामोश किया।

"ठहरो! अभी हमने बात खत्म नहीं की। वह बीमार है और शायद बचे नहीं। अगर हम उससे एक मर्तबा मिल चुके होते तो उसकी बीमारी या मौत से हमें ज्यादा तकलीफ न होती। लेकिन, मौलाना हुसैन! तुम खुद समझ सकते हो कि जो हालत है उससे हम किस कदर नाराज हैं। इसलिए," अमीर ने यहां आवाज ऊंची की, "हमने तय किया है कि आइन्दा की परेशानियों और तकलीफों से बचने के लिए हम इस बदमाश गंजेड़िये को अपने ओहदे से बरखास्त कर दें और इसे दो सौ कोड़ों की सजा दें। जहां तक तुम्हारा ताल्लुक है, मौलाना हुसैन, हमने तुम्हें हरम के ख्वाजा सरा की खाली जगह पर मुकर्रर करने की मेहरबानी फरमायी है।"

खोजा नसरुद्दीन को लगा कि उसकी सांस गले में फंसकर रह गयी है। उसे अपने पेट में अजब ठंडापन महसूस हुआ। पैरों में कमजोरी मालूम हो रही थी।

भवें चढ़ाकर नाराजी से अमीर ने पूछा: "क्या तुम बहस करना चाहते हो, मौलाना हुसैन? हमारी शाही शख्सियत की खिदमत करने की खुशी हासिल करने के बजाय क्या तुम नाकाम और चन्दरोजा हवस को पूरा करना हो?"

खोजा नसरुद्दीन अब तक सम्हल चुका था और होश-हवास दुरुस्त कर चुका था। झुककर कोर्निश करता हुआ बोला:

"अल्लाह हमारे ताजदार का साया हमेशा हमारे सिर पर कायम रखें। मुझ नाचीज गुलाम पर अमीर की बेशुमार मेहरबानियां हैं। हमारे शहंशाहे-आजम को अपनी रिआया के दिल की पोशीदा से पोशीदा ख्वाहिशें मालूम कर लेने का जादू जैसा हुनर हासिल है। इसी से वह अपनी रिआया को लगातार रहम और करम से लाद देते हैं। बहुत मर्तबा मुझ नाचीज गुलाम ने इस काहिल और बेवकूफ इंसान की जगह, जो इस वक्त बिलकुल मुनासिब सजा पाकर फर्श

पर पड़ा रो रहा है, लेने की तमन्ना की है। न जाने कितनी बार यह तमन्ना मेरे दिल में उठी। लेकिन मैं अमीर से इसका जिक्र करने की हिम्मत नहीं कर पाया। अब चूंकि हुजूर ने खुद ही ..."

खुश होकर अमीर ने मुलायमियत से कहा: "तो फिर देर क्यों हो? माबदौलत अभी हकीम को बुलाते हैं। वह अपने चाकू ले आयेगा और तुम उसके साथ कहीं तनहाई में चले जाना। इस बीच हम बख्तियार को बुलाकर तुम्हें ख्वाजा सरा मुकर्रर करने का हुक्म जारी करते है।"

अमीर ने ताली बजायी।

दरवाजे की तरफ घबराहट से देखता हुआ खोजा नसरुद्दीन जल्दी से बोला: "बादशाह सलामत इस नाचीज के हकीर लफ्जों को सुनने की तकलीफ फरमाएं। मैं बखुशी फौरन हकीम के साथ तनहाई में जाने को तैयार हूं। सिर्फ बादशाह की खुशी की फिक्र मुझे ऐसा करने से रोक रही है। हकीम से मिलने के बाद मुझे कई दिन बिस्तरे पर गुजारने पड़ेंगे और इस बीच नयी दाश्ता मर भी सकती है। तब तो अमीर का दिल सदमे के धुन्ध से घिर जायगा और इस बात का खयाल भी इस गुलाम को बरदाश्त नहीं हो सकता। इसलिए मेरी सलाह तो यह है कि पहले उस दाश्ता की सेहत को ठीक कर दिया जाय और फिर मैं अपने को हकीम के सिपुर्द करके ख्वाजा सरा के ओहदे के काबिल बनने की तैयारी में लग जाऊं ..."

"हूं!" शक की निगाह से नसरुद्दीन को देखते हुए अमीर ने कहा।

"ऐ आका! उसने तीन दिन से खाना नहीं खाया है।"

"हूं!" अमीर फिर बोले। फिर वह फर्श पर पड़े हिजड़े की तरफ पलटे और बोले: "अबे! मकड़ी की नाकिस औलाद! जवाब दे! क्या हमारी नयी दाश्ता बहुत बीमार है और क्या हमें उसकी मौत का अंदेशा होना चाहिए?"

जवाब के इन्तजार में खोजा नसरुद्दीन की रीढ़ पर ठंडा पसीना आ गया।

"ऐ अजीमुश्शान अमीर!" हिजड़े ने जवाब दिया। "वह बहुत दुबली हो गयी है और नये चांद के मानिन्द पीली पड़ गयी है। उसका चेहरा मोम जैसा हो गया है और उंगलियां ठंडी पड़ गयी हैं। बूढ़ी औरतें कह रही हैं कि ये आसार बहुत खराब हैं ..."

अमीर सोच में पड़ गये। खोजा नसरुद्दीन साये में हो गया। इस वक्त वह आरामगाह के धुंआभरे अंधेरे का शुक्रगुजार था, क्योंकि इससे उसके चेहरे का पीलापन छिप गया था।

आखिर अमीर बोले: "हां! अगर ऐसी बात है, तो शायद वह सचमुच मर जाय। उसके मरने से हमें सदमा होगा। लेकिन मौलाना हुसैन, क्या तुम्हें यकीन है कि तुम उसे अच्छा कर दोगे?"

"हुजूरे-आला को मालूम है कि बगदाद से बुखारा तक मुझ से ज्यादा होशियार दूसरा हकीम नहीं है।"

"जाओ मौलाना हुसैन, उसके लिए दवा तैयार करो।"

"जहांपनाह, मुझे पहले उसकी बीमारी का पता लगाना होगा। इसके लिए मुझे जांच करनी होगी।"

"जांच ?" अमीर हंसे। "मौलाना हुसैन! जब तुम ख्वाजा सरा बन जाओ तब इतमीनान से उसकी जांच कर लेना।"

खोजा नसरुद्दीन झुककर जमीन से लग गया : "बादशाह सलामत! मुझे जांच ..."

"नाचीज गुलाम!" अमीर चिल्लाये। "क्या तू जानता नहीं कि मौत से पहले कोई भी इंसान हमारी दाश्ताओं के चेहरे नहीं देख सकता ?"

"बादशाह सलामत," खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया, "मैं यह बात जानता हूं। लेकिन मेरा मतलब उसके चेहरे की जांच करने से नहीं था। उसके चेहरे की तरफ नजर उठाने की गुस्ताखी मैं कभी कर ही नहीं सकता। मुझे अपने पेशे का इतना ज्यादा इल्म है कि मैं नाखूनों की रंगत देखकर ही बीमारी का पता लगा सकता हूं। इसलिए, मेरे लिए उसका हाथ देख लेना ही काफी होगा।"

"हाथ ?" अमीर बोले। "यह तुमने पहले क्यों नहीं कहा, ताकि मुझे गुस्सा न आता ? हाथ ? हां, यह तो हो सकता है। तुम्हारे साथ हम हरम में चलेंगे। हमें उम्मीद है कि तुम हमारी दाश्ता का सिर्फ हाथ देखोगे तो हमें हसद न होगी।"

खोजा नसरुद्दीन ने तसल्ली देते हुए कहा : "बादशाह सलामत को कतई हसद नहीं होगी।"

वह सोच रहा था कि गुलजान से अकेले में तो कभी मुलाकात हो नहीं सकेगी और किसी न किसी गवाह की मौजूदगी जरूरी है, इसलिए बेहतर है कि गवाह खुद अमीर हों, ताकि वह शक-शुबहा न कर सकें।

: ३ :

आखिर हरम में पैर रखने का खोजा नसरुद्दीन को वह मौका मिल ही गया, जिसकी तलाश में वह इतने दिनों से बेचैन था।

अदब से झुककर पहरेदार एक तरफ को हट गये। पत्थरों का जीना पारकर अमीर के पीछे-पीछे चलते खोजा नसरुद्दीन ने लकड़ी का एक फाटक पार किया और एक खूबसूरत बागीचे में जा पहुंचा। यहां ढेरों गुलाब, गुलबहार

व गुलमेहदी के फूलों के बीच काले और सफेद संगमर्मर के हौजों में फव्वारे चल रहे थे और उन पर हलकी भाप छायी हुई थी। फूलों और घास पर शबनम की बूंदें चमक रही थीं।

खोजा नसरुद्दीन पर एक रंग आता था, एक जाता था। हिजड़े ने अखरोट की लकड़ी का नक्काशीदार दरवाजा खोला। अन्दर के अंधेरे हिस्से से काफूर, मुश्क और गुलाब के इत्र की गहरी खुशबू आयी। यही वह हरम था जहां अमीर की हसीन दाश्ताएं कैद थीं।

खोजा नसरुद्दीन ने बड़ी होशियारी से कोनों, नुक्कड़ों, मोड़ों और गलियों का हिसाब लगाया ताकि फैसलाकुन मौके पर वह रास्ता न भूल जाय और इस तरह अपने और गुलजान के ऊपर मुसीबत बरपा करे। दिल ही दिल में वह याद करता जाता था : "दाहिने, फिर बायें; यहां रहा जीना — जिस पर एक बुढ़िया का पहरा है; अब फिर दाहिने ..."

रंगीन चीनी शीशों से छनकर आनेवाली नीली, हरी, गुलाबी रोशनी से रास्ता रौशन था। नीचे एक महराबी दरवाजे के सामने हिजड़ा रुक गया।

"ऐ मेरे आका, यहीं है वह।"

अमीर के पीछे-पीछे खोजा नसरुद्दीन ने भी उस दरवाजे को पार किया जिसके अन्दर उसकी किस्मत कैद थी।

कमरा छोटा था। उसका फर्श व दीवारें कालीनों से ढंकी थीं। ताकों पर सींक की टोकरियों में बुन्दे, गुलूबन्द, बाजूबन्द रखे थे और चांदी का एक बड़ा आईना दीवाल से लटक रहा था। बेचारी गुलजान ने इतनी दौलत सपने में भी नहीं देखी थी। खोजा नसरुद्दीन ने मोती-जड़ी उसकी जूतियां देखीं तो सिहर उठा। जूतियों की एड़ियां घिसने का वक्त गुलजान ने यहीं गुजारा था।

कमरे के एक कोने में रेशम के एक पर्दे की तरफ इशारा करता हुआ हिजड़ा बोला : "वहां सो रही है वह।"

खोजा नसरुद्दीन को फुरफुरी आ गयी। इतने करीब थी उसकी दिलरुबा। अपने को डांटकर उसने मन ही मन कहा : "खोजा नसरुद्दीन ! खबरदार ! जब्त तर ! फौलाद बन जा।"

वह पर्दे के पास पहुंचा तो नींद में गाफिल गुलजान की सांसें सुनायी दीं। मसेहरी के ऊपर उसने रेशम को उठते-गिरते देखा। उसका गला भर आया और आवाज फंस गयी — मानो लोहे में जकड़ दी गयी हो। आंखों से आंसू बहने लगे और सांस थम गयी।

"मौलाना हुसैन," अमीर ने कहा, "क्या बात है ? इतनी सुस्ती क्यों दिखा रहे हो ?"

"बादशाह सलामत ! मैं उसकी सांसें सुन रहा हूं। पर्दे के पीछे से मैं नाजनीन के दिल की धड़कनों को सुनने की कोशिश कर रहा हूं। ऐ हुजूर, इसका नाम क्या है ?"

"इसका नाम है—गुलजान।" अमीर ने जवाब दिया।

खोजा नसरुद्दीन ने हौले से पुकारा : "गुलजान !"

मसेहरी के ऊपरी हिस्से पर उठता-गिरता रेशम रुका। गुलजान जाग गयी थी। वह सांस रोके पड़ी थी। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि सचमुच वह अपने प्यारे की आवाज सुन रही है। वह सोच रही थी—शायद यह सपना है।

खोजा नसरुद्दीन ने फिर पुकारा : "गुलजान !"

इस बार गुलजान के मुंह से एक हल्की-सी चीख निकली।

खोजा नसरुद्दीन जल्दी से बोला : "मेरा नाम मौलाना हुसैन है। मैं नया हकीम, नजूमी व आलिम हूं। अमीर की खिदमत के लिए मैं बगदाद से आया हूं। तुम समझ रही हो न, गुलजान ! मैं नया हकीम, नजूमी व आलिम हूं। मेरा नाम मौलान हुसैन है।"

अमीर की तरफ पलटकर वह बोला : "किसी सबब से मेरी आवाज सुनकर यह डर गयी है। मुमकिन है कि शहंशाह की गैर-मौजूदगी में हिजड़ा इससे बेरहमी से पेश आया हो।"

अमीर ने लाल-लाल आंखों से हिजड़े को ताका। कांपकर वह जमीन तक झुक गया। बोलने तक की उसकी हिम्मत न हुई।

खोजा नसरुद्दीन बोला : "ऐ गुलजान, तुम्हारे सिर पर खतरा मंडरा रहा है। लेकिन मैं तुम्हें बचा लूंगा। तुम्हें मुझ पर पूरा यकीन करना चाहिए। मैं हर मुश्किल और मुसीबत पर काबू पा सकता हूं।"

"बगदाद के आलिम, मौलान हुसैन," गुलजान धीमी और बारीक आवाज में बोली, "मैं आपकी बातें सुन रही हूं। मैं आपको जानती हूं और आपका यकीन करती हूं। मैं यह बात खुद शहंशाह की मौजूदगी में कहती हूं जिनके कदम मुझे परदे के बीच की दराज से दीख रहे हैं।"

इस बात का खयाल रखते हुए कि अमीर की मौजूदगी में उसे आलिमाना और इज्जतदार लहजे में ही बातें करनी चाहिएं, खोजा नसरुद्दीन जरा सख्ती से बोला : "जरा मुझे अपना हाथ दो गुलजान, ताकि तुम्हारे नाखूनों के रंग से मैं तुम्हारी बीमारी का सबब जान सकूं।"

रेशम का पर्दा कुछ हिला और एक तरफ सरका। खोजा नसरुद्दीन ने आहिस्ते से गुलजान का नाजुक हाथ थाम लिया। सिर्फ उसका हाथ दबाकर ही वह अपने दिल की बात कह सकता था। गुलजान ने भी जवाब में उसका हाथ हौले से दबाया। खोजा नसरुद्दीन देर तक उसकी हथेली देखता रहा।

मन ही मन वह सोच रहा था : "कितनी दुबली हो गयी है बेचारी !"

उसके दिल में एक हूक-सी उठी। अमीर उसके कन्धे पर से झांक रहा था। उसके कानों पर अमीर की गहरी सांस सुनायी पड़ रही थी। खोजा नसरुद्दीन ने गुलजान की सबसे छोटी उंगली का नाखून अमीर को दिखाया और बहुत बदशुगुनी के ढग से सिर हिलाया। हालांकि यह नाखून भी बिलकुल दूसरे नाखूनों जैसा ही था, लेकिन अमीर ने उसमें कुछ अजब चीज भांप ली, होठ भींचे और जानकारी की निगाह से खोजा नसरुद्दीन को देखा।

"कहां दर्द होता है ?" खोजा नसरुद्दीन ने पूछा।

"दिल में।" लम्बी सांस लेकर गुलजान बोली। "मेरा दिल गम और चाहत के दर्द से भरा है।"

"तुम्हारे गम की वजह ?"

"वजह है यह कि जिससे मैं मुहब्बत करती हूं, वह मुझ से जुदा है।"

"यह बीमार है," खोजा नसरुद्दीन ने अमीर के कान में फुसफुसाया, "क्योंकि यह शहंशाह से जुदा है।"

खुशी से अमीर का चेहरा खिल उठा। उनकी सांस जोर से चलने लगी।

"मैं जिससे मुहब्बत करती हूं, वह मुझ से जुदा है," गुलजान बोली, "और अब मुझे लगता है कि मेरा प्यारा बिलकुल करीब है। लेकिन मैं न तो उसे गले लगा सकती हूं, न उससे प्यार कर सकती हूं। हाय ! वह दिन कब आयेगा जब वह मुझे दिल से लगायेगा और अपने नजदीक रखेगा।"

"या अल्लाह !" बनावटी अचम्भे से खोजा नसरुद्दीन बोला। "इतने थोड़े अरसे में ही बादशाह सलामत ने इसके दिल में किस कदर हवस जगा दी है ! वल्लाह ! वल्लाह !"

खुशी के मारे अमीर आपे से बाहर हो गये। वह एक जगह खड़े नहीं रह पा रहे थे। आस्तीन से मुंह छिपाये, बेवकूफी से 'ही-ही' करते हुए उछल-कूद रहे थे।

खोजा नसरुद्दीन बोला : "ऐ गुलजान ! फिक्र न करो। जिससे तुम मुहब्बत करती हो, वह तुम्हारी बात सुन रहा है।"

अपने पर काबू रखने में मजबूर अमीर बीच में ही बोल उठे : "बेशक, बेशक, गुलजान ! वह सुन रहा है ! तेरा प्यारा तेरी बात सुन रहा है !"

पर्दे के पीछे से पानी की सुहावनी कलकल जैसी हंसी उठी।

लेकिन खोजा नसरुद्दीन ने कहना जारी रखा : "ऐ गुलजान ! खतरा तुम्हारे सिर पर मंडरा रहा है। लेकिन डरो मत ! मैं, मशहूर आलिम, नजूमी और हकीम मौलाना हुसैन, तुम्हें बचा लूंगा।"

अमीर ने भी ये ही लफ्ज दोहराये :

"हां, हां ! यह तुम्हें बचा लेंगे ! जरूर बचा लेंगे !"

खोजा नसरुद्दीन कहता गया : "सुना तुमने, शहंशाह क्या फरमा रहे हैं ? सुन रही हो न ? तुम मुझ पर यकीन रखो। खतरे से मैं तुम्हें बचा लूंगा। तुम्हारी खुशी का दिन बहुत नजदीक है। फिलहाल, बादशाह सलामत तुम्हारे पास नहीं आ सकेंगे क्योंकि मैंने उन्हें आगाह कर दिया है कि सितारों का हुक्म है कि वह किसी औरत का नकाब न छुयें। लेकिन सितारे अपना अन्दाज बदल रहे हैं। तुम समझ रही हो न, गुलजान ? सितारे अपना अन्दाज बदल रहे हैं ! जल्द ही सितारे मुबारक होंगे और तुम अपने प्यारे की बाहों में होगी। जिस दिन मैं तुम्हें दवा भेजूंगा उसका अगला दिन तुम्हारी खुशी का दिन होगा। समझ रही हो न तुम मेरी बात ? हां, दवा पाने के अगले दिन तुम तैयार रहना !"

खुशी से हंसती और रोती हुयी गुलजान बोली :

"शुक्रिया ! ऐ मौलाना हुसैन, लाख-लाख शुक्रिया। बीमारियों का लासानी इलाज करनेवाले दाना आलिम, आपका शुक्रिया ! मेरा प्यारा मेरे नजदीक है। मुझे लगता है कि मेरे और उसके दिल की धड़कन एक हो गयी है।"

अमीर और खोजा नसरुद्दीन वापस लौटे। ख्वाजा सरा दौड़कर फाटक पर आया और घुटनों के बल गिरकर बोला :

"ऐ मेरे आका ! वाकई, ऐसा होशियार हकीम दुनिया में दूसरा नहीं। तीन दिन से वह बिना हिले-डुले पड़ी थी। लेकिन अब यकायक पलंग छोड़कर वह उठ बैठी है। वह गा रही है, हंस-हंसकर नाच रही है। ऐ हुजूर, मैं उसके पास गया तो उसने मेरे कान पर घूंसा जड़ने की मेहरबानी की।"

"सचमुच वह मेरी ही गुलजान है !" खोजा नसरुद्दीन ने सोचा। "अपने घूसों का इस्तेमाल करने में गुलजान हमेशा फुर्ती दिखाती है।"

सुबह के खाने के वक्त अमीर ने सभी दरबारियों को बख्शीस दी। खोजा नसरुद्दीन को उन्होंने दो थैलियां दीं—चांदी के सिक्कों से भरी एक बड़ी थैली और सोने के सिक्कों से भरी एक छोटी थैली।

हंसते हुए अमीर बोले : "हा-हा-हा .... ! हमने भी कैसी जोर की हवस जगा दी है उसमें ! मानना पड़ेगा तुम्हें भी मौलाना हुसैन, ऐसी आग तुमने अक्सर नहीं देखी होगी। कैसी कांप रही थी उसकी आवाज; कैसे एक साथ वह हंस और रो रही थी ! लेकिन उस नजारे के मुकाबले यह कुछ भी नहीं है जो तुम ख्वाजा सरा के ओहदे पर पहुंचकर देखोगे।"

दरबारियों की कतारों में फुसफुसाहट फैल गयी। बख्तियार काइयांपन से मुस्कराया। अब खोजा नसरुद्दीन की समझ में आया कि उसे ख्वाजा सरा बनाने की सलाह अमीर को किसने दी थी।

अमीर बोले : "अब उसकी तबीअत सम्भल गयी है और तुम्हें नया ओहदा संभालने में देर नहीं करनी चाहिए, मौलाना हुसैन। तुम अभी हकीम के साथ जाओ ! अरे तुम..." वह हकीम की तरफ मुखातिब हुए, "जाओ, और अपने चाकू ले आओ। बख्तियार, तुम वह हुक्म लिखकर मेरे पास लाओ।"

गर्म चाय से खोजा नसरुद्दीन का हलक जल गया और वह खांसने लगा। लिखा हुआ हुक्म लेकर बख्तियार आगे बढ़ा। खुशी और बदले की तमन्ना से उसका दिल बांसों उछल रहा था। अमीर को कलम दिया गया। हुक्म पर उन्होंने दस्तखत किये और हुक्मनामा बख्तियार को लौटा दिया।

इस पूरे वाकये में एक मिनट से भी कम वक्त लगा होगा।

"ऐ दाना आलिम, मौलाना हुसैन साहब ! खुशी की इन्तिहा से शायद आप बोल भी नहीं पा रहे ! तो भी, अदब की मांग है कि आप शुक्रिया अदा करें !" बख्तियार बोला।

खोजा नसरुद्दीन तख्त के सामने झुक गया।

"आखिर मेरी तमन्ना बर आयी।" वह बोला। "अमीर की दाश्ता के लिए दवा तैयार करने में जो देर होगी, सिर्फ उसका मुझे गम है। उसके इलाज के बाबत पूरी तस्कीन होनी चाहिए, नहीं तो बीमारी फिर घर कर जायगी।"

"क्या दवा बनने में इतनी देर लगेगी ?" परेशानी से बख्तियार ने सवाल किया। "आध घंटे में तो दवा जरूर तैयार हो जायगी ... "

"बिलकुल ठीक ! आधा घंटा काफी होगा।" अमीर ने भी हामी भरी।

अब अपना सबसे आखिरी, लेकिन सबसे ज्यादा कारगर, हरबा इस्तेमाल करता हुआ खोजा नसरुद्दीन बोला :

"ऐ आका-ए-नामदार ! यह तो सितारे सादज्जबीह पर मुनहसर है। उसकी जगह के मुताबिक दवा तैयार करने में मुझे दो से पांच दिन तक लग सकते हैं।"

"पांच दिन ?" बख्तियार चिल्ला उठा। "मौलाना हुसैन ! दवा तैयार होने में पांच दिन लगते तो मैंने कभी नहीं सुने।"

अमीर को मुखातिब कर खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "अमीरे-आजम शायद उस नयी दाश्ता का इलाज आइन्दा वजीर बख्तियार से कराना पसन्द करें। वह कोशिश करें तो शायद उसे चंगा भी कर दें। लेकिन उस हालत में उसकी जिन्दगी की जिम्मेदारी मैं नहीं लूंगा।"

घबराकर अमीर बोले : "क्या कहा, मौलाना हुसैन ? तुम कह क्या रहे हो ? बख्तियार तो दवादारू के बारे में कुछ भी नहीं जानता। न ही वह इतना होशियार है। माबदौलत यह बात तुम्हें पहले भी बता चुके हैं—जब तुम्हें वजीरे-आजम का ओहदा देने की बात कही थी।"

वजीरे-आजम बख्तियार को कंपकंपी आ गयी। जहर बुझी नजरों से उसने खोजा नसरुद्दीन को देखा।

अमीर बोले : "जाओ और दवा तैयार करो, मौलाना हुसैन ! लेकिन पांच दिन बहुत होते हैं। क्या तुम इससे कम वक्त में दवा नहीं तैयार कर सकते ? हम चाहते हैं कि अपने नये ओहदे को तुम जल्द से जल्द संभाल लो।"

"ऐ शहंशाहे-आजम ! मैं तो उस ओहदे के लिए खुद ही उतावला हूं। मैं खुद ही जल्द से जल्द दवा तैयार करने की कोशिश करूंगा।"

कोर्निश करता, उलटे पैरों चलता, खोजा नसरुद्दीन दरबार से लौट चला। बख्तियार उसे देखता रहा। उसकी शक्ल से जाहिर था कि अपने दुश्मन और रकीब के बखैरियत लौट जाने से वह कितना कुढ़ रहा है।

उधर, गुस्से से दांत किटकिटाता हुआ खोजा नसरुद्दीन कह रहा था : "बख्तियार ! साप के बच्चे ! दगाबाज लकड़बग्घे ! तेरा दांव खाली गया। अब तू मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकेगा, क्योंकि मैं जो कुछ जानना चाहता था, जान गया हूं। अमीर के हरम में जाने के रास्ते, दरवाजे और वापसी के रास्ते मुझे मालूम हो चुके हैं। और तू, मेरी दिलबर गुलजान ! कम्बख्त शाही हकीम के नश्तर से खोजा नसरुद्दीन को बचाने के लिए तू ऐन मौके पर बीमार पड़ी। सचमुच तू बहुत अक्लमन्द है—हालांकि ईमानदारी की बात यह है कि तू सोच सिर्फ अपनी बाबत रही थी !"

वह मीनार की तरफ वापस लौटा। मीनार के नीचे साये में पहरेदार पांसे फेंक रहे थे। उनमें से एक सब-कुछ हार चुका था। दांव पर लगाने के लिए अब वह अपने जूते उतार रहा था।

दिन गर्म था। लेकिन मीनार की मोटी दीवालों के भीतर नम और ताजी ठंडक थी। खोजा नसरुद्दीन ने तंग सीढ़ियों को पार किया। अपने कमरे के दरवाजे पर पहुंचा, लेकिन वहां से आगे बढ़कर ऊपर बगदाद के आलिम के कमरे में चला गया।

बूढ़े की शक्ल इस वक्त वहशियाना हो रही थी। कैद में रहते-रहते उसकी दाढ़ी और बाल बढ़ गये थे। घनी भवों के नीचे आंखें चमक रही थीं।

खोजा नसरुद्दीन पर उसने गालियों की बौछार शुरू कर दी : "अबे हरामजादे ! तू यहां मुझे कब तक बन्द रखेगा ? खुदा करे तेरे सिर पर पत्थर गिरें और तलवों से निकलें। बदमाश ! दगाबाज ! फरेबी ! तूने मेरा नाम, मेरी पोशाक, मेरा साफा, मेरा पटका चुरा लिया ! तेरे बदन में कीड़े पड़ें ! तेरा जिगर और पेट सड़ जाय !"

खोजा नसरुद्दीन ऐसी बौछार का आदी हो चुका था। उसने बुरा न माना।

"किबला मौलाना हुसैन ! आपके लिए आज मैंने एक नयी सजा तजबीज की है। रस्सी के फन्दे में लकड़ी बांधकर आपका सिर दबाया जायगा। पहरेदार नीचे बैठे हैं। आपको इतनी जोर से चीखना चाहिए कि वे सुन लें।"

बूढ़ा सीखचेवाली खिड़की के पास गया और वहां से एक सांस में चिल्लाने लगा :

"या अल्लाह ! मुझे कितनी तकलीफ है ! हाय, हाय ! मेरा सिर न दबाओ ! रस्सी के फन्दे से सिर न दबाओ ! मर गया ! ऐसी तकलीफ से तो मौत भली !"

खोजा नसरुद्दीन ने बीच में ही टोका : "ठहरिए, मौलाना हुसैन ! रुकिए ! देखिए, आप चिल्लाने में भी काहिली बरतते हैं। आपकी चीख से यकीन नहीं होता कि सचमुच आपका सिर बेरहमी से दबाया जा रहा है। याद रखिए, पहरेदार ऐसे मामलों में बड़े तजर्बेकार हैं। अगर उन्हें शक हो गया कि आप बनावटी चीख-पुकार मचा रहे हैं तो अर्सलां बेग को खबर दे देंगे और तब आप किसी असली जल्लाद के हाथों में पड़ जायेंगे। चिल्लाने में जोर लगाना तो आप के ही फायदे की बात है। देखिए, मैं बताता हूं कैसे चीखना चाहिए ?"

वह खिड़की के पास गया, सांस भरी और यकायक इतने जोर से चीखा कि बूढ़ा कान बन्द करके पीछे को हट गया।

शिकायती लहजे में वह बोला : "अबे, काफिर की औलाद ! मैं ऐसा गला कहां से लाऊं ? आखिर, मैं इस तरह कैसे चिल्लाऊं कि आवाज शहर के दूसरे कोने तक पहुंच जाय ?"

"असली जल्लादों के हाथ नहीं पड़ना चाहते, तो यही एक सूरत है।" खोजा नसरुद्दीन ने कहा।

बूढ़े ने फिर कोशिश की और पूरा जोर लगा दिया। अब वह इतनी दर्दभरी आवाज में चिल्ला रहा था कि मीनार के नीचे बैठे पहरेदारों ने जुआ रोक दिया और उसकी तकलीफ का मजा लेने लगे।

चीखने की कोशिश में बूढ़े को खांसी आ गयी और गला घरघराने लगा। रिरियाता हुआ वह बोला :

"हाय, हाय ! हाय मेरा गला ! ओफ मरा ! हाय कितना जोर पड़ा है इस पर ! अबे नाकिस आवारे ! अब तो तू खुश है ? इजराईल (मौत का फरिश्ता) तुझे उठा ले !"

"हां, अब मुझे इतमीनान हुआ।" खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया। "मौलाना हुसैन ! अपनी इस कोशिश के लिए यह इनाम लीजिए।"

अमीर से मिली थैलियां निकालकर उसने उन्हें एक कश्ती में उंडेला और दो बराबर-बराबर हिस्सों में बांट दिया। बूढ़ा बैठा कोसता और गाली देता रहा।

खोजा नसरुद्दीन नरमी से बोला : "आप मुझे इस तरह गाली क्यों देते हैं ? मौलाना हुसन के नाम में क्या मैंने किसी तरह का बट्टा लगाया है ? क्या मैंने उनके इल्म को बदनाम किया है ? आप यह रकम देख रहे हैं ? अमीर ने यह रकम मशहूर नजूमी और हकीम मौलाना हुसैन को अपने हरम की एक लड़की का इलाज करने के लिए दी है।"

"लड़की का इलाज किया था तूने ?" बूढ़े का गला रुंध गया। "जाहिल ! बदमाश ! ठग ! बीमारियों के बारे में तू जानता ही क्या है ?"

"मैं बीमारियों के बारे में तो कुछ नहीं जानता," खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया, "लेकिन लड़कियों के बारे में जरूर बहुत-कुछ जानता हूं। सो, मुनासिब यही है कि अमीर से मिला यह इनाम दो हिस्सों में बांट दिया जाय—एक हिस्सा आपका हो, आपके इल्म का; एक हिस्सा मेरा हो, मेरे इल्म का। मैं आपको बता दूं, मौलाना साहब, कि मैंने इस लड़की को यूं ही अच्छा नहीं कर दिया, बल्कि सितारों की कैफियत समझकर अच्छा किया है। कल रात मैंने देखा कि सितारे सादस्सऊद सितारे साद्-अल अकबिया के केरान (योग) में थे और अकरब (वृश्चिक) सरतान की तरफ मुखातिब था।"

गुस्से से बौखलाकर कमरे में इधर-उधर दौड़ता हुआ बूढ़ा चिल्लाया :

"क्या कहा, जाहिल ? तू सिर्फ गधे हांकने के काबिल है ! तू यह भी नहीं जानता कि सितारे सादस्सऊद सितारे साद्-अल अकबिया के केरान में जा ही नहीं सकते। वे एक ही केरान के सितारे तो हैं। अकरब का बुर्ज तुझे इस महीने में दिखायी ही कैसे दे गया ? कल सारी रात मैंने आसमान देखने में गुजारी। सितारे साद्-बुला और अस्सिमक केरान में थे और अल-जवह उतार पर। सुन रहा है न तू, काठ के उल्लू ! अकरब इस वक्त है ही नहीं ! तू सब गड़बड़ कर देता है। देखो तो, इस गधे हांकनेवाले ने उन मामलों में भी दखल देना शुरू कर दिया जिनका इसे कोई इल्म नहीं ! सितारे अल्-बुतैन को, जो अल्-हक के मुखालिफ है, तू अकरब समझ बैठा ?"

खोजा नसरुद्दीन की जहालत को नुमाया करने के इरादे से बूढ़ा देर तक उसे सितारों की सही कैफियत समझाता रहा। खोजा नसरुद्दीन हर लफ्ज को जेहन में बैठाने में लगा था, ताकि आलिमों के सामने अमीर से बात करते वक्त वह गलतियां न कर बैठे।

"जाहिल ! जाहिल की औलाद ! तेरी सात पुश्तें जाहिल हैं !" बूढ़ा नाराजी में बकता रहा, "तू यह भी नहीं जानता कि आज-कल, यानी

चांद की उन्नीसवीं मंजिल में, जो अश्-शुला कहलाती है, और जो कौस (धनु) के बुर्ज में है, इंसान की किस्मत इसी बुर्ज के सितारों के मातहत होती है और किसी के नहीं। आला दानिशमन्द शहाबुद्दीन महमूद अलकराजी ने अपनी किताब में यह बात बहुत साफ-साफ लिख दी है ..."

खोजा नसरुद्दीन याद करता गया: "शहाबुद्दीन महमूद अलकराजी ... कल मैं अमीर की मौजूदगी में लम्बी दाढ़ीवाले आलिम का, इस किताब की बाबत न जानने पर, पर्दाफाश करूंगा। उसके दिल और दिमाग में मेरे इल्म के लिए बहुत इज्जत और खौफ छा जायगा। यह बहुत मुनासिब बात होगी।"

: ४ :

सूदखोर जाफर के मकान में सोने से भरे, मुहरबन्द, बारह मर्तबान थे। लेकिन उसकी हवस थी कि कम से कम बीस मर्तबान हों। तकदीर से उसे शक्ल ऐसी मिली थी कि उसकी बेईमानी और उसका लालच उसकी शक्ल पर साफ झलक आते थे। जो लोग गैर-तजरबेकार, सीधे-सादे और भलेमानस थे, वे भी उससे खबरदार रहते थे। उसके लिए नये शिकार फांसना बहुत मुश्किल था। इसीलिए, उसके मर्तबान बहुत धीमी रफ्तार से भर रहे थे।

लम्बी सांस लेकर वह सोचता: "काश! मैं अपने जिस्म के बदनुमापन से नजात पा जाता। तब लोग मुझे देखकर भागने न लगते। मेरी चालबाजी भांपे बिना वे मेरा भरोसा कर लेते। ओह, तब उन्हें फंसाना कितना आसान होता! कितनी जल्दी मेरी आमदनी बढ़ती!"

शहर में जब यह अफवाह फैली कि अमीर के नये आलिम मौलाना हुसैन ने इलाज में बड़े हुनर दिखाये हैं, तो सूदखोर जाफर ने बहुत उम्दा सौगातों से एक टोकरी भरी और महल जा पहुंचा।

टोकरी का सामान देखकर अर्सलां बेग ने मदद करने की पूरी रजामन्दी जाहिर की।

"किबला जाफर साहब! तुम बहुत ठीक मौके पर आये। हमारे आका शहंशाह का मिजाज आज बहुत अच्छा है। वह तुम्हारी दरखास्त जरूर मान लेंगे।"

अमीर ने सूदखोर की बात सुनी, सोने की हाथीदांत-जड़ी शतरंज में भेंट कुबूल की और नये आलिम मौलाना हुसैन को बुला भेजा।

खोजा नसरुद्दीन ने आकर कोर्निश की। अमीर बोले: "मौलाना हुसैन! यह शख्स सूदखोर जाफर है। यह हमारा वफादार गुलाम है और इसने हमारी कई खिदमतें की हैं। हम हुक्म देते हैं कि तुम फौरन इसका लंगड़ापन, कूबड़पन, कानापन व दूसरे नुक्सों को दूर करदो।..."

यह हुक्म सुनाकर अमीर फौरन चल दिये—मानो यह दिखाने के लिए कि इस हुक्म के खिलाफ वह कोई बात सुनने को तैयार नहीं। सिर झुकाकर खोजा नसरुद्दीन ने आदाब बजाया और वह भी चल दिया। उसके पीछे-पीछे अपना कूबड़ घसीटता हुआ सूदखोर भी कछुए की तरह चलने लगा।

"ऐ हजरत मौलाना हुसैन साहब! हम लोग जरा जल्दी चलें," नकली दाढ़ीवाले खोजा नसरुद्दीन को न पहचानकर सूदखोर बोला, "क्योंकि अभी सूरज नहीं ढला है और मैं रात होने से पहले ठीक हो जाऊंगा...। जैसा कि आपने सुना, अमीर ने आपको हुक्म दिया है कि आप मुझे फौरन चंगा कर दें।"

दिल ही दिल में खोजा नसरुद्दीन अमीर को, सूदखोर को व अपने-आपको बुरा-भला कह रहा था कि क्यों उसके इल्म का इतना चर्चा हुआ और ऐसी शोहरत मिली। इस मुश्किल से कैसे छुटकारा मिलेगा? जल्दी चलने के लिए सूदखोर बार-बार आस्तीनें समेट रहा था।

सड़कें सुनसान थीं। खोजा नसरुद्दीन के पांव बार-बार गर्म रेत में धंस जाते थे। आगे बढ़ता हुआ वह सोच रहा था: "ओफ, कैसे इस मुश्किल से छुटकारा पाऊं?"

एकाएक वह रुक गया: "लगता है मेरी कसम पूरी होने का वक्त आ गया है।"

फौरन उसने एक चाल सोची और हर पहलू से उसे ठोंक-बजाकर देखा। मन ही मन उसने कहा: "हां, वक्त आ गया है! गरीबों को सतानेवाले ऐ बेरहम सूदखोर! तू आज ही डूबकर मरेगा।"

वह दूसरी तरफ ताकने लगा ताकि सूदखोर उसकी काली आंखों की चमक न देख सके।

वे लोग अब एक गली में मुड़े जहां हवा रेत के बगूले उठा रही थी। सूदखोर ने अपने घर का चोर दरवाजा खोला। सहन के दूसरे सिरे पर एक नीची बाड़ के पीछे, जहां से जनानखाना शुरू होता था, खोजा नसरुद्दीन ने हरे पत्तों और शाखों के पीछे हलकी आवाज व हंसी सुनी और कुछ हिलते हुए देखा। सूदखोर की बीवियां और रखैलें नये अजनबी की आमद का मजा ले रही थीं। वे खुशी की उमंगों में थीं, क्योंकि अपनी कैद में मन बहलाने का उनके पास दूसरा तरीका था नहीं। सूदखोर रुक गया और उन लोगों की तरफ घूरकर देखा। खामोशी छा गयी।

खोजा नसरुद्दीन ने मन ही मन कहा: "ऐ हसीन कैदियो! मैं आज तुम्हें नजात दिला दूंगा।"

जिस कमरे में सूदखोर खोजा नसरुद्दीन को ले गया, उसमें एक भी खिड़की नहीं थी और दरवाजे में तीन ताले और कई सांकलें लगी हुई थीं,

जिन्हें खोलने का राज सिर्फ सूदखोर को ही मालूम था। उसे काफी देर मेहनत करनी पड़ी, तब कहीं जाकर दरवाजा खुला।

यहीं वह अपने सोने से अटे मर्तबान रखता था। तहखाने के दरवाजे पर लगे तख्तों पर ही वह सोता था।

"कपड़े उतारो !" खोजा नसरुद्दीन ने हुक्म दिया।

सूदखोर ने कपड़े उतार दिये। नंगा होकर वह बेहद भद्दा और बदनुमा लगता था। खोजा नसरुद्दीन ने दरवाजा बन्द किया और दुआएं पढ़नी शुरू कीं।

इसी बीच जाफर के बेशुमार रिश्तेदार आ-आकर सहन में इकट्ठे होने लगे। उनमें से कई पर जाफर का कर्ज था। वे उम्मीद कर रहे थे कि इस मुबारक मौके की यादगार में वह इन कर्जों को माफ कर देगा। लेकिन उनकी उम्मीदें गलत थीं। बन्द कमरे के बाहर अपने कर्जदारों की आवाजें सुनकर शैतान जाफर खुशी से फूल उठा।

उसने सोचा : "आज मैं इन लोगों से कह दूंगा कि मैंने कर्ज माफ किया, लेकिन रसीदें इन्हें वापस नहीं करूंगा। चकमे में आकर ये लोग कर्ज चुकाने में लापरवाही बरतने लगेंगे। मैं कुछ कहूंगा नहीं। बस, चुपचाप कर्ज का हिसाब रखूंगा। और जब एक-एक तंके पर दस-दस तंके सूद हो जायगा और कुल रकम उनके मकानों, बागीचों और अंगूर के बागों की कीमत से ज्यादा हो जायगी, तो मैं काजी को बुलाऊंगा और अपना वादा भूल जाऊंगा। रसीदें पेश कर दूंगा, उनकी जायदादें बेच लूंगा, फिर उन्हें फकीर बना दूंगा और अपना एक और मर्तबान सोने से भर लूंगा !"

खोजा नसरुद्दीन बोला : "चलो जाफर ! अब हम लोग तुरखान के पाक तालाब चलेंगे, जहां तुम पाक पानी में नहाओगे। इलाज के लिए यह निहायत जरूरी है।"

"तुरखान के पाक तालाब ?" सूदखोर बदहवासी से चिल्ला उठा। "एक मर्तबा मैं उसमें डूबते-डूबते बचा। ऐ दाना मौलाना हुसैन ! आपको मालूम हो कि मैं तैरना नहीं जानता।"

"कोई बात नहीं ! तालाब जाते वक्त तुम्हें बराबर दुआएं पढ़नी होंगी और दुनियावी चीजों से बिलकुल बेखबर हो जाना होगा। साथ में तुम्हें सोने के सिक्कों से भरी एक थैली भी ले चलनी होगी ताकि रास्ते में जो भी मिले उसे तुम एक-एक सिक्का दे सको।"

सूदखोर ने सर्द आह भरी और कराहा। लेकिन उसने लफ्ज-ब-लफ्ज हुक्म की तामील की। रास्ते में उन दोनों को कारीगर, भिखमंगे, हर किस्म के लोग मिले। हालांकि ऐसा करने में उसका दिल टूट रहा था तो भी हर एक को

सूदखोर ने सोने का एक-एक सिक्का दिया। रिश्तेदार पीछे-पीछे आ रहे थे। खोजा नसरुद्दीन ने जान-बूझकर उन लोगों को साथ ले लिया था, ताकि सूदखोर को डुबो देने की तोहमत उस पर न लगे।

सूरज छतों के पीछे छिप रहा था। दरख्तों का साया तालाब पर पड़ रहा था। मच्छर हवा में भनभना रहे थे।

जाफर ने कपड़े उतारे और पानी की तरफ बढ़ा।

शिकायती लहजे में वह बोला : "पानी यहां बहुत गहरा है, मौलाना हुसैन ! आप भूले तो नहीं — मैं तैरना नहीं जानता।"

रिश्तेदार खामोश खड़े देख रहे थे। शर्म से अपने हाथों से अपना जिस्म छिपाता हुआ, डर से दुबकता हुआ सूदखोर, तालाब के चारों तरफ कोई छिछली जगह ढूंढ़ रहा था। एक जगह वह बैठ गया। ऊपर से लटकती टहनियों को थामकर, डरते-डरते, अपने एक पैर का पंजा उसने पानी में डाला।

"बाबा रे ! यह तो बहुत ठंडा है !" वह बड़बड़ाया। घबराहट के मारे उसकी आंखें बाहर निकली पड़ रही थीं।

नजर बचाते हुए खोजा नसरुद्दीन बोला : "तुम वक्त खराब कर रहे हो, जाफर।" वह अपना दिल कड़ा कर रहा था ताकि गलत मौके पर रहम उस पर हावी न हो जाय। उसने उन सब लोगों की तकलीफों के बारे में सोचना शुरू किया, जिन्हें जाफर ने बरबाद कर दिया था। बीमार बच्चे के सूखे होंठ ... बूढ़े नयाज के आंसू ...!

उसका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा।

"तुम वक्त खराब कर रहे हो जी !" उसने दोहराया। "अगर तुम्हें इलाज कराना है तो पानी में उतरो।"

सूदखोर पानी में बढ़ने लगा। वह इतने आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ रहा था कि पानी जब उसके घुटनों तक पहुंचा, तो उसका पेट किनारे पर ही था। आखिर वह पानी में खड़ा हुआ। पानी उसकी कमर तक पहुंच गया। घास और करकुल पानी में हिले। ठंडे पत्ते उसका बदन छूने लगे, जिससे उसे गुदगुदी महसूस हुई। ठंड से जाफर के कंधे कांपने लगे। उसने एक कदम और आगे बढ़ाया और मुड़कर पीछे देखा। उसकी आंखें, गूंगे जानवर की तरह, रहम मांग रही थीं। लेकिन, खोजा नसरुद्दीन की आंखों में इसका जवाब नहीं था। सूदखोर पर रहम करने और उसे छोड़ देने का मतलब था, हजारों गरीब इंसानों पर और ज्यादा मुसीबत ढाना।

पानी सूदखोर के कूबड़ तक आ पहुंचा। लेकिन खोजा नसरुद्दीन आगे बढ़ने के लिए उसे बेरहमी से ललकारता रहा : "आगे बढ़ो ... और आगे बढ़ो ! पानी कानों तक पहुंचने दो भाई ! मैं बताये देता हूं, आगे नहीं बढ़ोगे

तो मैं तुम्हारे इलाज की जिम्मेदारी नहीं लूंगा। हां, हां, शाबाश ! आगे बढ़ो ! किबला जाफर साहब, जरा-सी हिम्मत दिखाओ ! हिम्मत करो, हिम्मत ! एक कदम और ! जरा और आगे !"

सूदखोर के मुंह से गलगल की आवाज आयी और वह पानी की सतह के नीचे गायब हो गया।

रिश्तेदार चिल्लाने लगे : "डूब रहा है ! अरे वह डूब रहा है।"

हड़बड़ी मच गयी। दरख्तों की शाखें और झाड़ियां डूबते हुए जाफर की तरफ बढ़ायी जाने लगीं। कुछ लोग सिर्फ रहमदिल होने की वजह से उसे बचाना चाहते थे; कुछ लोग बचाने का महज बहाना कर रहे थे। खोजा नसरुद्दीन उन्हें देखकर ही आसानी से बता सकता था कि उनमें किस पर जाफर का कितना कर्ज है। वह खुद औरों से ज्यादा दौड़-दौड़कर चिल्ला रहा था और शोर मचा रहा था : "यहां, इधर ! जाफर साहब ! अपना हाथ हमें दीजिए ! सुनिए न ! जरा अपना हाथ इधर बढ़ाइए !"

उसे इस बात का पूरा यकीन था कि सूदखोर अपना हाथ नहीं बढ़ायेगा ! 'दीजिए' का लफ्ज सुनकर ही उसे लकवा मार जाता था।

सभी रिश्तेदार एक साथ चिल्लाए : "दीजिए ! अपना हाथ इधर दीजिए !"

सूदखोर डूबता और फिर ऊपर आता; हर बार ऊपर आने में उसे पहली बार से ज्यादा देर लगती।

सचमुच उस पाक तालाब में उसकी जिन्दगी खत्म हो गयी होती, अगर तभी खाली मशक पीठ पर लादे, नंगे पैर भागता हुआ एक भिश्ती वहां न आ पहुंचता।

डूबते हुए को देखकर वह चौंककर बोला : "अरे, यह तो सूदखोर जाफर है !"

बिना झिझक, पूरी पोशाक पहने हुए ही वह पानी में कूद पड़ा और हाथ बढ़ाकर चिल्लाया : "यह लो ! मेरा हाथ पकड़ लो !"

सूदखोर ने हाथ थाम लिया और हिफाजत के साथ बाहर निकल आया।

उधर सूदखोर किनारे पर पड़ा होश-हवास दुरुस्त कर रहा था, इधर भिश्ती जोश के साथ उसके रिश्तेदारों को बता रहा था :

"तुम लोग गलत तरीके से उसकी मदद कर रहे थे। बराबर 'लीजिए' 'लीजिए' की जगह 'दीजिए' 'दीजिए' चिल्ला रहे थे। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि एक मर्तबा पहले भी जाफर साहब इसी तालाब में करीब-करीब डूब चुके थे और एक अजनबी ने उन्हें बचाया था जो इधर से एक गधे पर सवार होकर

गुजर रहा था ? उस अजनबी ने भी जाफर को बचाने की यही तरकीब की थी और यह तरकीब मुझे याद थी। आज वह जानकारी काम आ गयी।"

खोजा नसरुद्दीन ने सुना तो अपना होंठ काट लिया। तो उसने दो बार सूदखोर को बचाया था ? एक बार खुद अपने हाथों से और अब भिश्ती के जरिए ? वह सोचने लगा : "खैर, कोई बात नहीं। यह डूबकर रहेगा, यह मेरा जिम्मा है—चाहे इसके लिए मुझे साल भर बुखारा में क्यों न रहना पड़े।"

अब तक सूदखोर के दम में दम आ गया था और वह शिकायत के लहजे में कराह-कराहकर कहने लगा : "अरे, मौलाना हुसैन ! तुमने तो कहा था कि तुम मेरा इलाज करोगे ! लेकिन तुमने तो मुझे डुबा ही दिया था। अल्लाह गवाह है। मैं कसम खाता हूं कि इस तालाब के सौ कदम करीब भी कभी नहीं आऊंगा ! तुम हो किस तरह के आलिम जो डूबते हुए शख्स को कैसे बचाना चाहिए, यह भी नहीं जानते। यह बात तुम्हें एक मामूली भिश्ती से सीखनी पड़ी ? लाओ मेरा साफा और खलअत। चलो मौलाना ! अंधेरा हो रहा है और हमें वह काम पूरा करना है जो हमने शुरू किया था। और तुम, भिश्ती," खड़े होते हुए सूदखोर बोला, "हफ्ते भर बाद तुम्हें मेरा कर्ज चुकाना है, यह मत भूलना। लेकिन मैं तुम्हें कुछ इनाम देना चाहता हूं और इसलिए मैं तुम्हारा आधा ... मेरा मतलब है चौथाई ... यानी तुम्हारे कर्ज का दसवां हिस्सा माफ कर दूंगा। यह काफी है, हालांकि तुम्हारी मदद के बिना भी मैं आसानी से अपने को बचा सकता था।"

भिश्ती सहमकर बोला : "अरे ओ जाफर साहब ! आप मेरी मदद के बिना नहीं बच सकते थे। क्या आप मेरे कर्ज का एक-चौथाई भी माफ नहीं कर सकते ?"

"आ-हा ! तो तू ने मुझे खुदगरजी से बचाया था ?" सूदखोर चिल्लाया। "तू नेक मुसलमान के जज्बे से नहीं बल्कि लालच से मुझे बचाने आया था ? इस बात की तो तुझे सजा मिलनी चाहिए ! अबे भिश्ती ! मैं कर्ज की एक पाई भी माफ नहीं करूंगा।"

झेंपा और सहमा हुआ भिश्ती आगे बढ़ चला। खोजा नसरुद्दीन रहम से उसको देखता रहा। फिर वह घूमा और नफरत और हिकारत की नजर से जाफर को देखा और भिश्ती की तरफ बढ़ गया।

जाफर ने जल्दबाजी मचायी : "चलो, मौलाना हुसैन ! तुम्हें उस लालची भिश्ती के कान में फुसफुसाने को क्या मिल गया ?"

खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "ठहरो ! तुम यह भूल गये हो कि जिस किसी से भी तुम मिलो, उसे सोने का एक सिक्का दोगे। भिश्ती को तुमने अभी तक सिक्का क्यों नहीं दिया ?"

सूदखोर रिरियाने लगा : "लानत है मुझ पर ! ओफ, मैं तो बिलकुल बरबाद हो जाऊंगा ! जरा सोचो तो, मुझे इस लालची और नाचीज भिश्ती तक को सोने का सिक्का देना पड़ेगा ?"

उसने थैली खोली और एक सिक्का निकालकर फेंका : "बस, यह आखिरी मर्तबा है। अब अंधेरा हो गया और वापसी में रास्ते में हमें कोई नहीं मिलेगा।"

लेकिन भिश्ती से फुसफुसाकर खोजा नसरुद्दीन ने बेकार ही बातें नहीं की थीं।

वे वापस रवाना हुए। आगे-आगे सूदखोर, उसके पीछे खोजा नसरुद्दीन था। सबसे पीछे रिश्तेदार चल रहे थे। अभी वे लोग पचास कदम भी न चले होंगे कि एक गली से वही भिश्ती फिर निकला—हां, वही जिसे इन लोगों ने अभी तालाब के किनारे छोड़ा था।

उसे नजरअन्दाज करने की गरज से सूदखोर मुड़ा, लेकिन खोजा नसरुद्दीन ने डांटा : "जाफर साहब, याद रखो ! हरेक को, जो तुम्हें मिले !"

अंधेरे में तकलीफ भरी कराह सुनायी पड़ी। जाफर थैली खोल रहा था।

भिश्ती ने सिक्का लिया और रात के अंधेरे में गायब हो गया। वे लोग कोई पचास कदम चले होंगे कि वह फिर उनके सामने आ खड़ा हुआ। सूदखोर पीला पड़ गया और कांपने लगा। बहुत आजिजी से वह बोला :

"मौलाना, यह तो फिर वही ..."

बेरहमी से खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "जो भी मिले, हरेक को।"

एक बार फिर एक कराह रात की बन्द हवा में उभरी। जाफर थैली खोल रहा था।

यही हरकत सारे रास्ते होती रही। हर पचास कदम बाद वही भिश्ती आ खड़ा होता। जाफर हांफ रहा था। पसीना उसके चेहरे से टपक रहा था। वह समझ ही नहीं पा रहा था कि यह हो क्या रहा है। सिक्का थमाकर वह सीधा भागता कि आगे सड़क पर झाड़ियों के पीछे से न जाने कहां से निकलकर वही भिश्ती फिर सामने आ खड़ा होता।

अपनी रकम बचाने के लिए सूदखोर ने जल्दी-जल्दी चलना शुरू किया और फिर एकदम दौड़ने लगा। लेकिन वह लंगड़ा था और उस भिश्ती से कैसे टक्कर ले सकता था जो अपनी उमंग में हवा से बातें कर रहा था और बाड़ों व चहारदीवारियों को फांद रहा था। सूदखोर को वह रास्ते में कम से कम पन्द्रह बार मिला। सूदखोर के घर के बिलकुल नजदीक आखिरी बार वह एक छत से कूदकर सामने आ गया और फाटक में घुसने का रास्ता रोक लिया। आखिरी सिक्का पाकर बेदम होकर वह वहीं जमीन पर गिर पड़ा।

सूदखोर घर के सहन में पहुंचा। खोजा नसरुद्दीन उसके पीछे-पीछे था। जाफर ने अपनी खाली थैली नसरुद्दीन के कदमों पर फेंक दी और गुस्से से चिल्लाया : "मौलाना हुसैन साहब ! मेरा इलाज बहुत महंगा पड़ रहा है ! मैं अब तक सौगात, खैरात और इस मलऊन भिश्ती पर तीन हजार तंके से ज्यादा खर्च कर चुका हूं !"

खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "इतमीनान रखो, भाई ! आधे घंटे के भीतर ही तुम इसका इनाम पाओगे। सहन के बीच खूब बड़ी आग जलाने को कहो।"

इधर नौकर ईंधन ला रहे थे और आग जला रहे थे, उधर खोजा नसरुद्दीन तेजी से कोई ऐसी चाल खोज निकालने के लिए दिमाग दौड़ा रहा था जिससे सूदखोर मात खा जाय और इलाज न हो पाने की जिम्मेदारी उसी पर पड़े। उसने कई तरकीबें सोचीं। लेकिन हर एक को नामुनासिब समझकर तर्क कर दिया। इस बीच आग खूब भड़क उठी थी और हलकी हवा पाकर लपटें ऊंची उठ रही थीं जिससे पास के अंगूर के बागीचे की हरियाली पर लाल रोशनी फैल रही थी।

खोजा नसरुद्दीन बोला : "जाफर साहब ! कपड़े उतारिए और आग के तीन चक्कर लगाइए !"

कोई ठीक चाल उसकी समझ में अब तक नहीं आयी थी और वह सिर्फ वक्त काट रहा था। वह खयाल में डूबा लग रहा था। रिश्तेदार खामोशी से देख रहे थे। सूदखोर आग के चारों तरफ घूम रहा था, मानो जंजीर से बंधा कोई बनमानुस हाथ हिलाता नाच रहा हो; उसके हाथ करीब-करीब घुटनों तक पहुंचते थे।

खोजा नसरुद्दीन का चेहरा खिल उठा। उसने आराम की सांस ली और कन्धे चौड़ाये। फिर वह बोला : "मुझे एक कम्बल दो ! जाफर और तुम सब लोग यहां आओ !"

रिश्तेदारों को उसने एक गोल घेरे में खड़ा किया और बीच में जमीन पर सूदखोर को बैठाया। फिर उसने उन सब लोगों को मुखातिब करके कहा : "मैं जाफर को इस कम्बल से ढंक दूंगा और दुआ पढ़ूंगा। तुम सब लोग, और जाफर भी, आंखें बन्द करके मेरे साथ दुआ दोहराना। जब मैं कम्बल हटाऊंगा, तो जाफर का इलाज पूरा हो चुकेगा। लेकिन एक बहुत जरूरी शर्त है। अगर यह शर्त पूरी न हुई, तो जाफर का इलाज नहीं हो सकेगा। तुम लोग कान लगाकर सुनो कि मैं क्या कहता हूं।"

रिश्तेदार उसके हर लफ्ज को ध्यान से सुनने और उसे याद रखने के लिए खामोश हो गये और पास आ खड़े हुए।

खोजा नसरुद्दीन जोरदार और साफ आवाज में कहने लगा: "मेरे बाद जब तुम दुआ के लफ्ज दोहराओ, तो तुम में से कोई भी बन्दर के बारे में—कम से कम जाफर तो हरगिज ही—नहीं सोचे ! अगर तुम में से किसी ने बन्दर के बारे में सोचा—या इससे भी बदतर, कोई अपने खयाल में भी उसे लाया—उसकी दुम, लाल पिछाड़ी, बदनुमा चेहरा और पीले दांत देखे, तो इलाज नहीं हो सकेगा। ऐसे में इलाज हो भी नहीं सकता क्योंकि किसी भी पाक काम में बन्दर जैसे गन्दे और नापाक जानवर का खयाल ठीक नहीं। तुम लोग समझ रहे हो न ?"

"हम लोग समझ रहे हैं।" रिश्तेदारों ने जवाब दिया।

कम्बल से सूदखोर को ढंकते हुए खोजा नसरुद्दीन ने बड़ी संजीदा आवाज में कहा : "जाफर साहब ! तैयार हो जाइए और अपनी आंखें बन्द कर लीजिए।" फिर रिश्तेदारों की तरफ पलटकर वह बोला : "अब तुम लोग भी अपनी आंखें बन्द कर लो और मेरी शर्त याद रखो। खबरदार ! बन्दर के बारे में बिलकुल ही न सोचना।"

फिर उसने दुआ पढ़नी शुरू की : "ऐ रब्बुल आलमीन व दाना-ए-पाक अलिफ, लाम, मीम (कुरआन की एक आयत के पहले लफ्ज) की खुसूसियत से इस अपने हकीर गुलाम जाफर को अच्छा कर दे..."

रिश्तेदार भी बेमेल आवाज में दुआ दोहराने लगे : "ऐ रब्बुल आलमीन व दाना-ए-पाक..." यहां खोजा नसरुद्दीन ने एक चेहरे पर कुछ परेशानी और घबराहट देखी। एक दूसरा रिश्तेदार खांसने लगा। तीसरा दुआ के लफ्जों पर अटक गया। चौथे ने सिर हिलाया, मानो आंखों के सामने से कोई नजारा हटा रहा हो।

एक लमहे के बाद ही कम्बल के नीचे जाफर खुद बेचैनी से हिलने लगा। बेहद नफरत पैदा करनेवाला, बहुत बदनुमा, एक बन्दर अपनी लम्बी दुम और पीले दांत दिखाता उसके दिमाग के पर्दे पर आ खड़ा हुआ था और कभी जीभ दिखाकर और कभी अपनी लाल गोल पिछाड़ी और बदन के वे हिस्से दिखाकर चिढ़ाने लगा जो ऐसे वक्त किसी भी सच्चे मुसलमान के खयाल में आने के काबिल नहीं।

खोजा नसरुद्दीन जोरदार आवाज में दुआ करता रहा। यकायक वह रुक गया, मानों कुछ सुन रहा हो। रिश्तेदार भी खामोश हो गये। कुछ तो पीछे को हट गये।

कम्बल के नीचे जाफर दांत किटकिटा रहा था क्योंकि उसके खयालात में बन्दर बिलकुल खुले तौर पर गन्दी हरकतें करने लगा था।

"काफिरो ! शरारत पसन्दो !" खोजा नसरुद्दीन गरज उठा। "मैंने जो बात मना की थी, उसे करने की मजाल ? उस चीज का खयाल करते हुए तुम लोग दुआ कैसे कर सके जिसकी मैंने खास तौर पर मुमानियत की थी ?"

कम्बल फुर्ती से हटाते हुए वह सूदखोर की तरफ झपटा : "तू ने मेरी मदद क्यों मांगी थी ? अब मैं समझ गया कि तू इलाज करवाना ही नहीं चाहता था। तू तो सिर्फ मुझे जलील करना चाहता था। तू मेरे दुश्मनों का साथ दे रहा था ! ऐ जाफर, होशियार ! कल अमीर को सारा माजरा मालूम हो चुकेगा। मैं उन्हें बताऊंगा कि किस तरह दुआ मांगते वक्त तू ने जानबूझकर — काफिराना इरादे से — बन्दर के बारे में सोचा ! और तुम सब लोग भी होशियार हो जाओ ! तुम लोग आसानी से छुटकारा नहीं पाओगे। कुफ्र की जो सजा होती है वह तुम लोग जानते होगे ..."

चूंकि कुफ्र के लिए हमेशा बहुत सख्त सजा मिलती थी, इसलिए रिश्तेदार मिमियाने-रिरियाने लगे। वे डरे हुए थे। जाफर ने घिघियाकर न समझ में आनेवाले लफ्जों में अपनी सफाई पेश करनी चाही। लेकिन उसे सुनने के लिए खोजा नसरुद्दीन रुका नहीं। वह घूमा और खटाक से फाटक बन्द करता बाहर निकल गया।

थोड़ी देर में चांद निकल आया। सारा शहर हलकी चांदनी में नहा गया। रात को देर तक सूदखोर के घर शोरगुल होता रहा, तकरार होती रही। हर शख्स जोर-जोर से बहस कर रहा था और यह जानने की कोशिश कर रहा था कि बन्दर की बाबत सोचनेवाला पहला शख्स कौन था।

: ५ :

सूदखोर को बेवकूफ बनाकर खोजा नसरुद्दीन महल को वापस लौटा।

दिन भर की मेहनत के बाद बुखारा के बाशिन्दे सोने की तैयारी कर रहे थे। गलियां ठंडी और अंधेरी थीं। पुलों के नीचे से पानी के बहने की आवाज आ रही थी। हवा में नम धरती की सोंधी महक थी। कहीं-कहीं कीचड़ में ऐसी जगह खोजा नसरुद्दीन का पैर फिसल जाता जहां किसी जोशीले भिश्ती ने सड़कों पर जरूरत से ज्यादा छिड़काव कर दिया था, ताकि रात में हवा का झोंका उन थके-मांदे लोगों की नींद में खलल न डाले जो छतों पर और अहातों में आराम करने के लिए लेट गये थे। अंधेरे में डूबे हुए बागीचे दीवालों के ऊपर से खुशबू फैला रहे थे। दूर चमकते सितारे खोजा नसरुद्दीन को कामयाबी का यकीन दिला रहे थे।

वह हंसा : "आखिर दुनिया इतनी बुरी जगह नहीं है—कम-से-कम एक ऐसे आदमी के लिए तो कतई बुरी नहीं—जिसके पास दिमाग है और जिसके कन्धों पर खाली घड़ा नहीं है।"

वापसी में वह बाजार की तरफ मुड़ गया। वहां उसे अपने दोस्त अली के चायखाने की रोशनी दिखायी दी।

मालिक ने उसके लिए दरवाजा खोल दिया। दोनों गले मिले और एक अंधेरे कमरे में चले गये। पतली दीवाल के दूसरी तरफ से बोलने, हंसने और चीनी के बरतनों के खड़कने की आवाज आ रही थी। अली ने दरवाजा बन्द कर दिया और चिराग जलाया।

"सब चीजें तैयार हैं।" अली फुसफुसाया। "मैं गुलजान के लिए चायखाने में इन्तजार करूंगा। यूसुफ लुहार ने गुलजान को हिफाजत से छिपाने के लिए एक अच्छी जगह सोच रखी है। तुम्हारे गधे पर दिन-रात जीन कसी रहती है। वह मजे में है। खूब खाता है और बहुत मोटा हो गया है।"

"शुक्रिया, अली! मैं नहीं जानता कि मैं कभी तुम्हारी नेकी का बदला चुका सकूंगा।"

अली बोला : "हां, हां! खोजा नसरुद्दीन! हमें शुक्रियों के बारे में और बहस नहीं करनी चाहिए। क्या तुम थोड़ी-सी चाय पियोगे?"

वह बाहर गया और थोड़ी देर बाद चाय लेकर वापस लौट आया।

दोनों धीरे-धीरे बातें करने लगे। अली ने गुलजान के लिए मर्दों की खलअत और उसके बालों की लटों को ढकने के लिए एक बड़ी और सफेद पगड़ी निकाली।

हर चीज तफसील से तय हो गयी। खोजा नसरुद्दीन जाने ही वाला था कि उसे दीवाल की दूसरी तरफ से एक पहचानी हुई आवाज सुनाई दी। चायखाने की तरफ खुलनेवाला दरवाजा उसने जरा-सा खोला और कान खड़े कर लिए। यह आवाज थी चेचकरू जासूस की।

खोजा नसरुद्दीन ने दरवाजे की दरार बड़ी की और झांका।

कीमती खलअत पहने, पगड़ी और नकली दाढ़ी लगाये, चेचकरू खुफिया चन्द आदमियों से घिरा बैठा था और गुस्से से कह रहा था :

"यहां जो आदमी खोजा नसरुद्दीन के नाम से घूमता-फिरता है वह जालिया है। असली खोजा नसरुद्दीन मैं हूं दोस्तो! लेकिन काफी अरसा हुआ, मैंने अपनी गलतियों से तौबा करली है, क्योंकि मैंने समझ लिया है कि मेरी गलतियां कितनी खराब और नापाक हैं। इसलिए मैं, असली खोजा नसरुद्दीन, तुमको नसीहत करता हूं कि मेरी मिसाल के नक्शे-कदम पर चलो

और मेरी तरह कहो कि हमारा अजीम, सानी-ए-आफताब अमीर वाकई इस दुनिया में अल्लाह का नायब है। इसका सबूत उसकी बेमिसाल जहानत, मेहरबानी और दानाई है। मैं, असली खोजा नसरुद्दीन, तुमको यही सलाह देता हूं।"

"ओ हो!" खोजा नसरुद्दीन ने धीरे से कहा और अली को कोहनी मारी। "अच्छा? चूंकि उनका यह खयाल है कि मैंने यह शहर छोड़ दिया है, इसलिए इनके ये इरादे हैं। मुझे इन लोगों को अपनी याद दिलानी पड़ेगी। अली, मैं अपनी दाढ़ी, जरबफ्त की खलअत और अमामा यहीं छोड़ दूंगा। मुझे कुछ फटे-पुराने कपड़े दो।"

अली ने उसे एक फटी-पुरानी और दीमक खायी खलअत दी जिसकी जिन्दगी पूरी हो चुकी थी।

खोजा नसरुद्दीन ने वह पोशाक पहनते हुए कहा: "क्या तुम पिस्सू पैदा करते हो भाई? जरूर तुम्हारा इरादा पिस्सू हलाल करके बेचने का है। लेकिन मेरे दोस्त, इससे पहले ही वे तुम्हें वह चट कर जायेंगे।

वह गली में चला गया। चायखाने का मालिक अपने गाहकों के पास लौट आया और अब होनेवाले वाकयात का इन्तजार करने लगा। उसे बहुत देर इन्तजार नहीं करना पड़ा। खोजा नसरुद्दीन एक गली से आता हुआ दिखायी दिया। वह एक ऐसे आदमी की तरह पैर घसीट रहा था जिसने दिन भर सफर किया हो। उसने चायखाने की सीढ़ियां पार कीं, एक अंधेरे कोने में जाकर बैठ गया और चाय मांगी। किसी ने उसकी तरफ ध्यान न किया। बुखारा की सड़कों पर सभी तरह के मुसाफिर आते-जाते थे।

चेचकरू खुफिया कह रहा था: "मेरी गलतियां बेशुमार थीं। लेकिन मैं, खोजा नसरुद्दीन, अब उन गलतियों पर शर्मिन्दा हूं। मैंने हमेशा नेक रहने, इसलाम पर चलने और अमीर, उनके वजीर, हाकिमों और सिपाहियों का हुक्म मानने का फैसला किया है। जब से मैंने यह फैसला किया, मुझे चैन और खुशी हासिल हुई है और मेरी दुनियावी दौलत बढ़ गयी है। पहले मैं एक ऐसा आवारा था, जिससे लोग नफरत करते थे। लेकिन अब मैं एक दीनदार मुसलमान की हैसियत से जिन्दगी बसर करता हूं।"

एक गाड़ीवान ने, जो कमर में चाबुक खोंसे था, बहुत इज्जत से उसके सामने चाय का एक प्याला पेश किया और कहा: "ऐ बेमिसाल खोजा नसरुद्दीन! मैं कोकन्द से बुखारा आया हूं। मैंने आपके इल्म की बहुत तारीफ सुनी है। लेकिन मैंने यह कभी न सोचा था कि मुलाकात तो दरकिनार, एक दिन मुझे

आपसे बातचीत का मौका भी मिलेगा। अब मैं हरेक से इस मुलाकात का जिक्र करूंगा और आपकी नसीहत को दोहराऊंगा।"

चेचकरू खुफिया ने कहा : "बिलकुल ठीक ! हरेक को बताओ कि खोजा नसरुद्दीन सुधर गया है, तौबा करके दीनदार मुसलमान और अमीरे-आजम का वफादार गुलाम बन गया है। जिससे भी मिलो, उसे यही खुशखबरी सुनाओ।"

गाड़ीवान ने कहा : "ऐ लासानी खोजा नसरुद्दीन ! मुझे आपसे एक सवाल पूछना है। मैं एक दीनदार मुसलमान हूं और कम-अक्ली की वजह से कोई ऐसी हरकत नहीं कर बैठना चाहता जो मजहब के खिलाफ साबित हो। मैं यह जानना चाहता हूं कि अगर मैं नहा रहा होऊं और मुअज्जिन की अजान सुन लूं तो किस तरफ मुड़ूं ?"

चेचकरू खुफिया ने मेहरबानी से मुस्कराते हुए कहा : "बेशक, मक्का की तरफ !"

"अपने कपड़ों की तरफ !" अंधेरे कोने से एक आवाज सुनायी दी। "घर तक नंगे जाने से बचने का यही सबसे अच्छा तरीका है।"

चेचकरू खुफिया के बनावटी इज्जत के माहौल के बावजूद लोगों ने मुस्कराहट छिपाने के लिए अपने मुंह फेर लिये।

"कौन बड़बड़ा रहा है उस कोने से ? ऐ भिखमंगे," गुरूर से उसने पूछा, "क्या तू खोजा नसरुद्दीन की काबलियत से टक्कर लेने की कोशिश कर रहा है ?"

खोजा नसरुद्दीन ने चाय पीते हुए जवाब दिया : "उसके मुकाबले में बहुत नाचीज हूं।"

इसके बाद किसान ने पूछा : "ऐ पाक खोजा नसरुद्दीन ! मुझे बताओ कि इसलाम के मुताबिक मैयत में शरीक होते वक्त सबसे अच्छी जगह कौन सी है—ताबूत के पीछे या आगे ?"

खुफिया ने जवाब देने के लिए पुरअसर अन्दाज में उंगली उठायी ही थी कि कोनेवाली आवाज उससे पहले ही बोल उठी :

"अगर तुम खुद ताबूत के अन्दर नहीं हो तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम आगे हो या पीछे।"

जरा सी बात में ही हंस पड़नेवाला चायखाने का मालिक दोनों हाथों से अपनी तोंद सम्हाले हुए कहकहा लगाने लगा। दूसरे लोग भी हंसी न रोक सके। कोनेवाला आदमी हाजिरजवाब था और मजे से खोजा नसरुद्दीन का मुकाबला कर रहा था।

खुफिया ने, जिसका गुस्सा बराबर बढ़ रहा था, धीरे से अपना सिर घुमाया : "अबे, तेरा नाम क्या है ? मैं तेरी जबांदराजी देख रहा हूं ! याद रख कि कहीं तुझे अपनी जबान से बिलकुल ही हाथ न धोने पड़ें !"

लोगों की तरफ मुड़ते हुए उसने कहा : "मैं उसे एक ही तंजिया और चुभते हुए लफ्ज से खामोश कर सकता हूं। लेकिन फिलहाल हम पाक और संजीदा बातचीत कर रहे हैं, जहां तंज मौजूं नहीं। हर चीज का मौका होता है, इसलिए इस वक्त मैं भिखमंगे की छींटाकशी का जवाब नहीं दूंगा। ...हां, तो मैं कह रहा था कि मैं, खोजा नसरुद्दीन, तुमको सलाह देता हूं कि ऐ मुसलमानो, हाकिमों का हुक्म मानो और खुशहाली तुम्हारे घरों में उतर आयेगी। लेकिन सबसे बड़ी बात तो यह है कि खोजा नसरुद्दीन होने का झूठा दावा करनेवाले मशहूर आवारों की तरफ ध्यान न दो। इसी किस्म के एक आवारे ने अभी हाल में गड़बड़ी मचायी थी और यह सुनकर कि मैं, असली खोजा नसरुद्दीन आ गया हूं, गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो गया। ऐसे सब जालियों को पकड़ लो और उन्हें अमीर के सिपाहियों के हवाले करो।"

"बिल्कुल दुरुस्त," बनावटी पोशाक फेंककर खोजा नसरुद्दीन साये से रोशनी में आकर बोला।

सभी लोगों ने उसे पहचान लिया और उसके यकायक आ खड़े होने से ताज्जुब में पड़ गये। जासूस पीला पड़ गया। खोजा नसरुद्दीन उसके करीब आ गया। अली चुपचाप उसके पीछे आ खड़ा हुआ।

"तो, तुम हो असली खोजा नसरुद्दीन ?"

खुफिया ने घबड़ाकर चारों तरफ देखा। उसके होंठ कांप रहे थे। आंखें चारों तरफ कुछ ढूंढ रही थीं। उसने जवाब देने के लिए हिम्मत बटोरी :

"हां मैं ही सच्चा और असली खोजा नसरुद्दीन हूं। बाकी सब जालिये हैं, जालिये। तुम भी जालिये हो।"

"मुसलमानो ! भाइयो ! अब किस बात का इन्तजार है ?" खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया। "इसने खुद कुबूल किया है ! पकड़ लो इसे ! क्या तुमने अमीर का हुक्म नहीं सुना ? क्या तुम नहीं जानते कि खोजा नसरुद्दीन के साथ क्या सलूक करना चाहिए ? पकड़ लो इसे, वर्ना तुम पर बहुत कड़ा इल्जाम लगेगा।"

खोजा नसरुद्दीन ने खुफिया की नकली दाढ़ी उखाड़ फेंकी।

चायखाने के सभी लोगों ने चेचकरू चेहरा, चपटी नाक—जिससे उन्हें नफरत थी—और मक्कार आंखें पहचान लीं।

"इसने खुद कुबूला है," खोजा नसरुद्दीन ने दाहिनी तरफ आंख मारते हुए कहा, "पकड़ लो इस खोजा नसरुद्दीन को !" उसने बायीं तरफ आंख मारी।

चायखाने के मालिक अली ने ही सबसे पहले खुफिया पर हाथ छोड़ा। खुफिया ने अपने को छुड़ाने की बहुत कोशिश की, मगर भिश्ती, किसान और कारीगर सब हाथा-पायी करने लगे। थोड़ी देर तक तो वहां घूंसों के उठने-गिरने के अलावा और कुछ नजर ही न आता था। खोजा नसरुद्दीन सबसे ज्यादा जोर से हाथ चला रहा था।

"य ... य ...यह तो मैं...म...जाक कर रहा था," कराहता हुआ खुफिया बोला। "ऐ मुसलमानो ! मैं तो बस ...म...जाक कर रहा था। मैं खोजा न...सरुद्दीन नहीं हूं ! मुझे छोड़ दो !"

"तुम झूठ बोलते हो," खोजा नसरुद्दीन ने उसे डांटा। वह उसी तेजी से घूंसे चला रहा था, जिस तेजी से नानबाई आटा गूंधता है। "तुमने खुद कबूल किया है कि तुम खोजा नसरुद्दीन हो। हम सबने अभी-अभी सुना है। ऐ मुसलमानो ! यहां पर मौजूद हम सब लोग अमीर के बेइंतहा वफादार हैं। वफादारी के साथ हमें उनके हुक्म पर अमल करना चाहिए। इसलिए, ऐ सच्चे मुसलमानो, इस खोजा नसरुद्दीन की अच्छी तरह मरम्मत करो। इसे महल तक घसीट ले जाओ और सिपाहियों के सुपुर्द कर दो। अल्लाह और अमीर के नाम पर इसे अच्छी तरह पीटो।"

भीड़ खुफिया को महल तक ले गयी। रास्ते भर लोग उसे जोर-शोर से पीटते रहे। खुफिया की रवानगी के वक्त खोजा नसरुद्दीन ने उसके एक ठोकर मारी और चायखाने में लौट आया।

"उफ् !" माथे का पसीना पोंछते हुए उसने कहा, "हमने उसकी ऐसी मरम्मत की है कि जिन्दगी भर नहीं भूलेगा। मालूम पड़ता है अब भी उसकी ठुकाई हो रही है।"

दूर से जोर की आवाजें और खुफिया की चीखें सुनायी पड़ रही थीं। हर एक को उससे कुछ न कुछ बदला लेना था। अमीर के हुक्म की बदौलत उन्हें इसका अच्छा मौका भी मिल गया था।

खुशी से हंसता हुआ चायखाने का मालिक अपना तोंद थपथपा रहा था : "यह अच्छा सबक मिला बच्चू को। अब वह दोबारा मेरे चायखाने में कदम रखने की हिम्मत नहीं करेगा।"

खोजा नसरुद्दीन ने पीछेवाले कमरे में कपड़े बदले, नकली दाढ़ी लगायी और एक बार फिर बगदाद का आलिम मौलाना हुसैन बन गया।

वह महल में वापस पहुंचा तो महल की हवालात से कराहने की आवाजें सुनायी दीं। उसने अन्दर झांककर देखा। सूजा हुआ और जख्मी बदन लिये चेचकरू खुफिया नमदे पर पड़ा था। लालटेन लिये अर्सलां बेग उसके पास खड़ा था।

खोजा नसरुद्दीन ने बड़ी मासूमियत से पूछा : "किबला अर्सलां बेग ! क्या मामला है भाई ।"

"बड़ी बुरी खबर है, मौलाना हुसैन ! बदमाश खोजा नसरुद्दीन फिर शहर में लौट आया है । हमारे सबसे होशियार जासूस को उसने पीट डाला है। यह जासूस उस बदमाश के बदग्रसर को दूर करने के लिए मेरे हुक्म से अपने को खोजा नसरुद्दीन बताकर वफादारी की और मजहबी बातें करता था। नतीजा आपके सामने है ।"

"ओह ! ओह !" खुफिया अपना जख्मी चेहरा ऊपर को उठाता हुआ कराहा । "अब कभी उस दोजखी आवारे के मामले में नहीं पड़ूंगा । अगली दफा तो वह मुझे मार ही डालेगा । मैं अब खुफियागीरी नहीं करूंगा । कल ही मैं यहां से बहुत दूर चला जाऊंगा — जहां मुझे कोई न जानता हो । वहां मैं कोई भली-सी नौकरी कर लूंगा ।"

"मेरे दोस्तों ने वाकई ढंग से काम पूरा किया है," लालटेन की रोशनी में खुफिया की हालत देखते हुए और उसके लिए थोड़ा सा अफसोस जाहिर करते हुए खोजा नसरुद्दीन ने मन ही मन सोचा । "अगर महल दो सौ कदम और दूर होता तो यह यहां तक जिन्दा न पहुंचता । अब देखना यह है कि इसने सबक सीखा है या नहीं ।"

सुबह का वक्त था । खोजा नसरुद्दीन ने खिड़की से चेचकरू खुफिया को एक छोटी-सी गठरी लेकर बाहर निकलते देखा । वह लंगड़ा रहा था और बराबर अपनी छाती, कंधों और बगलों पर हाथ फेर रहा था । बीच-बीच में दम लेने के लिए वह बैठ भी जाता था । सबेरे की पहली किरनों से रौशन बाजार को उसने पार किया और दीवालों के साये में गायब हो गया ।

सुबह की किरनों से रात का अंधेरा भाग गया था । शबनम से धुली, चमकदार, साफ और पुरअमन सुबह थी । चिड़ियां चहचहा रही थीं, गा रही थीं और तरह-तरह की सुरीली आवाजें निकाल रही थीं । तितलियां सूरज की पहली किरनों का मजा लूटने के लिए इधर से उधर उड़ रही थीं । खोजा नसरुद्दीन के सामने खिड़की पर एक मक्खी आ बैठी और आलमारी में एक मर्तबान में रखे हुए शहद की महक पाकर उसे तलाश करने लगी ।

सूरज खोजा नसरुद्दीन का पुराना और वफादार दोस्त था । वह अब निकल रहा था । हर सुबह उनकी मुलाकात होती और हर सुबह खोजा नसरुद्दीन को ऐसा मजा आता, गोया उसने साल भर से सूरज को न देखा हो । सूरज उभर रहा था — एक ऐसा नेक और सखी देवता जो सब पर एक-सा मेहरबान है । और, सुबह की धूप में चमकती हुई दुनिया अपना

हुस्न निखारकर उसका इस्तकबाल करती है। उड़ते हुए ऊन जैसे बादल, मीनारों की चमकती हुई ईंटें, नयी पत्तियां, पानी, घास, धूल—यहां तक कि कुदरत की बेरुखी के शिकार, उसके सौतेले बच्चे, बेरौनक पत्थरों, में भी सूरज के इस्तकबाल के लिए एक अजीब हुस्न निखर आता। पत्थरों के खुरदरे किनारे इस तरह चमकने लगते गोया उन पर जवाहरात की कनी छिनक दी गयी हो।

अपने दोस्त के मुस्कराते चेहरे को देखकर खोजा नसरुद्दीन कैसे उदास रह सकता था? चमकती किरनों में एक दरख्त जगमगा उठा और उसके साथ ही खोजा नसरुद्दीन भी जगमगा उठा—गोया वह खुद भी हरियाली में लिपटा हुआ हो। सबसे नजदीकी मीनार पर कबूतर गुटर-गूं गुटर-गूं कर रहे थे और अपने पर चोंचों से संवार रहे थे। खोजा नसरुद्दीन की भी तबियत हो रही थी कि वह अपने पर संवारे। खिड़की के सामने तितलियों का एक जोड़ा उड़ रहा था; खोजा नसरुद्दीन की तबियत हो रही थी वह भी एक तीसरी तितली बनकर उनके इस हसीन खेल में शामिल हो जाय।

खोजा नसरुद्दीन की आंखें खुशी से चमक रही थीं। चेचकरू खुफिया के बारे में उसने सोचा: काश! आज की यह खास सुबह उसकी नयी, साफ और अच्छी जिन्दगी का सबेरा बन सके। लेकिन जैसे ही उसने यह सोचा, उसे अफसोस के साथ खयाल आया कि उस आदमी की रूह में बहुत ज्यादा बदकारियां जमा हो गयी हैं जिनकी तौबा मुश्किल थी; जैसे ही वह पूरी तरह ठीक होगा वह अपनी पुरानी बदकारियां फिर शुरू कर देगा।

बाद के वाकयात ने साबित कर दिया कि खोजा नसरुद्दीन का खयाल गलत नहीं था। वह आदमियों को इतनी अच्छी तरह पहचानता था कि गलती करना उसके लिए मुश्किल था, हालांकि अगर उसका खयाल गलत निकलता तो उसे खुशी ही होती और वह खुफिया की नयी रूहानी जिन्दगी का इस्तकबाल करता। लेकिन जो चीज सड़ जाती है, वह दोबारा ताजा नहीं हो सकती, न खिल सकती है; बदबू खुशबू में नहीं बदल सकती।

अफसोस करते हुए खोजा नसरुद्दीन ने एक आह भरी।

उसके खयालात की दुनिया ऐसी थी जहां इंसान भाई-भाई की तरह रहें, जहां लालच, हसद, दगा और गुस्से का नाम न हो, जहां सब एक-दूसरे की वक्त पर मदद करें और एक-दूसरे की खुशी में शामिल हों। मगर इस किस्म के हसीन खयालों में डूबे हुए उसे यह कड़वी सचाई नजर आयी कि इंसान को, जैसे वह रहता है, नहीं रहना चाहिए—यानी दूसरे पर जब्र करते हुए और दूसरों को गुलाम बनाते हुए। वे अपनी रूह को बदनुमा बनाते जा रहे थे। पाक और ईमानदार जिन्दगी के उसूलों को समझने में इंसानों को आखिर कितना वक्त लगेगा?

खोजा नसरुद्दीन को इस बात में शक नहीं था कि एक दिन लोग इन उसूलों को समझेंगे। उसे पूरा यकीन था कि दुनिया में बुरे लोगों के मुकाबले अच्छे लोगों की तादाद ज्यादा है। सूदखोर जाफर और चेचकरू खुफिया और उनकी जलील रूहें महज ऐसी नापाक और गंदी मिसालें थीं जो आम नहीं हैं। उसे पूरा यकीन था कि कुदरत ने आदमी में नेकी भरी है और उसकी सारी बदी वह जहर है जिसे जिन्दगी के गलत और बेजा निजाम ने बाहर से उसकी रूह में भरा है। उसे पूरी उम्मीद थी कि वह वक्त भी आयेगा जब इंसान अपनी जिन्दगी के निजाम को बदलेगा और उसे बेहतर बनायेगा—ईमानदारी की मेहनत से अपनी रूहों को पाक बनायेगा।

खोजा नसरुद्दीन के खयालात इसी किस्म के थे। यह बात उसके बारे में उन कहानियों से साबित होती है, जिन पर उसके दिल की छाप है। हालांकि उसकी याद को नीचता भरी जलन और बदगुमानी से स्याह करने की कोशिशें की गयीं, लेकिन इसमें कामयाबी न मिली क्योंकि झूठ कभी सच्चाई पर फतह नहीं पा सकती।

खोजा नसरुद्दीन की याद हमेशा नेक और पाक रहेगी—उस हीरे के मानिंद जो हमेशा चमकता रहता है। आज भी तुर्की में जो मुसाफिर अक-शहीर में उसके मामूली से मजार के सामने रुकते हैं, उसकी बड़ाई करते हैं। एक शायर के अल्फाज में वे कहते हैं:

"उसने अपना दिल जमीन को दे दिया, हालांकि खुद आंधी की तरह वह सारी दुनिया का चक्कर लगाता रहा। वह एक ऐसी आंधी थी, जिसने अपनी मौत के बाद अपने दिल में खिले सारे गुलाबों की खुशबू को दुनिया में बिखेर दिया। सारी दुनिया की खूबसूरती देखने में जो जिन्दगी गुजरे, वह बहुत हसीन जिन्दगी है। और, हसीन है वह जिन्दगी जो खत्म होने पर अपनी रूह की पाकीजगी छोड़ जाये।"

यह सच है कि कुछ लोग कहते हैं कि अक-शहीर के मजार के अन्दर कोई नहीं है, कि खोजा नसरुद्दीन ने अपनी मौत की अफवाह फैलाने के लिए इसे जान-बूझकर बनवाया था और खुद सफर के लिए निकल पड़ा था। यह बात सच है या गलत? मैं समझता हूं, हमें इस चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। हम तो सिर्फ यह जानते हैं कि खोजा नसरुद्दीन से कोई चीज दूर नहीं।

: ६ :

सुबह का वक्त जल्द गुजर गया। उमस-भरी दोपहरी शुरू हुई। अब सांस लेना भी मुश्किल हो रहा था।

भाग निकलने की तैयारी पूरी हो चुकी थी। खोजा नसरुद्दीन अपने कैदी के पास पहुंचा और उससे कहा :

"ऐ दानिशमन्द मौलाना हुसैन ! आपकी कैद की मियाद पूरी हुई। आज रात मैं महल छोड़ दूंगा। एक शर्त पर मैं आपका दरवाजा खुला छोड़ जाऊंगा : आप यहां से दो दिन और नहीं निकलें। अगर आप इससे जल्दी निकल पड़े, तो हो सकता है कि मैं उस वक्त महल में ही मौजूद रहूं और तब मैं आप पर यह इल्जाम लगाने को मजबूर हो जाऊंगा कि आप निकल भागना चाहते थे। तब मैं आपको जल्लाद के सुपुर्द कर दूंगा। इसलिए, बगदाद के ऐ आलिम मौलाना हुसैन, अलविदा ! मेरे बारे में ज्यादा बेरहमी से न सोचना। एक काम और मैं आपके सुपुर्द करता हूं। वह यह है कि आप अमीर को मेरा असली नाम और सही वाकया बतायें। जरा गौर से सुनिये मौलाना हुसैन : मेरा नाम है—खोजा नसरुद्दीन।"

"क-क-क्या...?" बूढ़ा घबड़ाकर पीछे को हटता हुआ अचम्भे से बोला। इसके आगे वह एक लफ्ज भी न बोल सका। इस नाम ने ही मानो उसे गूंगा बना दिया हो।

दरवाजे के बन्द होने की आवाज हुई। जीने से उतरते खोजा नसरुद्दीन के कदमों की आवाज धीमी पड़ती सुनाई दी। बूढ़े ने आहिस्ते से दरवाजा टटोला। दरवाजा खुला हुआ था। आलिम ने झांककर बाहर देखा। कोई नहीं दिखाई दिया। उसने जल्दी से दरवाजा बन्द कर लिया और सांकल चढ़ा दी। वह बड़बड़ाने लगा : "नहीं, मुझे यहां एक हफ्ते भले ही और रहना पड़े, लेकिन मैं खोजा नसरुद्दीन से और सरोकार रखना पसन्द न करूंगा।"

रात होने पर नीले आसमान में जब पहले सितारे चमकने शुरू हुए, तभी खोजा नसरुद्दीन ने मिट्टी की एक सुराही उठायी और अमीर के हरम के दरवाजे पर तैनात पहरेदारों के पास पहुंचा।

साबित अंडे निगलनेवाला मोटा और काहिल सिपाही कह रहा था : "वह देखो ! एक सितारा और टूटा। अगर, जैसा कि तुम कहते हो, सितारे टूटकर जमीन पर गिरते हैं, तो लोगों को पड़े हुए क्यों नहीं मिलते ?"

"शायद वे समन्दर में गिर जाते हों !" दूसरे सिपाही ने जवाब दिया।

"ऐ बहादुर सिपाहियो !" खोजा नसरुद्दीन ने टोका। "ख्वाजा सरा को बुलाओ। मैं बीमार दाश्ता के लिए दवा लाया हूं।"

ख्वाजा सरा आया। बड़ी इज्जत से उसने सुराही थामी। सुराही में खड़िया मिले सादे पानी के अलावा और कुछ नहीं था। दवा कैसे पी जायगी इस बारे में खोजा नसरुद्दीन ने उसे लम्बी हिदायत दी।

"ऐ दानिशमन्द मौलाना हुसैन ! आप दुनिया की सब बातें जानते हैं।" मोटे सिपाही ने चापलूसी भरी आवाज में कहा। "आपके इल्म की कोई हद नहीं। आप हमें बताइए कि आसमान से गिरकर सितारे कहां जाते हैं और लोगों को मिलते क्यों नहीं ?"

खोजा नसरुद्दीन ने मजाक करने का मौका नहीं छोड़ा। बहुत संजीदगी से बोला : "तुम नहीं जानते ? जब सितारे टूटते हैं तो वे चांदी के छोटे-छोटे सिक्के बन जाते हैं और फकीर लोग उन्हें बटोर लेते हैं। लोगों को मैंने इसी तरह दौलतमन्द बनते देखा है।"

सिपाहियों ने एक-दूसरे को ताका। उनके चेहरों पर ताज्जुब की छाप थी।

उनकी बेवकूफी पर हंसता हुआ खोजा नसरुद्दीन अपने रास्ते लगा। उसे खयाल भी न था कि उसका यह मजाक किसी वक्त बहुत कारगर साबित होगा।

आधी रात तक वह मीनार में रहा। आखिरकार सारा शहर और महल खामोशी में डूब गये। जाया करने लिए अब वक्त नहीं था। गर्मी की रातें तेज परों पर उड़ती हैं। खोजा नसरुद्दीन चुपचाप नीचे उतरा और चोरी-चोरी अमीर के हरम की तरफ बढ़ा। वह सोच रहा था कि पहरेदार अब तक नींद में गाफिल हो चुके होंगे। लेकिन, वहां पहुंचकर उसे धीमे-धीमे बोलने की आवाजें सुनाई दीं। उसे बहुत नाउम्मीदी हुई।

मोटा काहिल सिपाही कह रहा था : "काश ! एक सितार टूटकर यहां भी गिर जाता तो चांदी बटोरकर हम लोग रईस बन जाते।"

उसके साथी ने जवाब दिया : "भई, मुझे तो यकीन नहीं होता कि सितारे टूटकर चांदी के सिक्के बन जाते हैं।"

"लेकिन बगदाद के आलिम ने तो यही कहा था।" पहले ने जवाब दिया।

"बेशक ! उनका इल्म गहरा है और वह गलत नहीं कह सकते।"

साये में छिपते हुए खोजा नसरुद्दीन भुनभुनाया : "खुदा की मार इन लोगों पर ! मैंने इनसे सितारों की बात की ही क्यों ? अब तो सबेरे तक यही तकरार रहेगी और भाग निकलने में देर हो जायगी !"

बुखारा के ऊपर आसमान में साफ और हलकी रोशनी में हजारों सितारे चमक रहे थे। यकायक एक नन्हा-सा सितारा टूटा और आसमान में तिरछा-

तिरछा अपनी मौत की मंजिल पर बढ़ चला। जलती हुई लकीर-सी छोड़ता हुआ एक और सितारा उसके पीछे हो लिया। आधी गर्मियां खत्म हो चुकी थीं और सितारे टूटने का मौसम आ रहा था।

"अगर ये सचमुच चांदी के सिक्के बनकर गिरते ..." दूसरे पहरेदार ने कहा।

यकायक खोजा नसरुद्दीन के दिमाग में एक खयाल कौंध गया। झटपट उसने चांदी के सिक्कों से भरी अपनी थैली खोली।

लेकिन देर तक कोई सितारा नहीं टूटा।

आखिर एक सितारा टूटा।

तभी ऊंचे-नीचे पत्थरों पर एक सिक्का खनका। अचम्भे से पहरेदार मानो बुत बन गये। एक-दूसरे की तरफ घूरते वे उठ खड़े हुए।

पहले ने कांपती आवाज में पूछा: "सुना तुमने?"

"हां सुना त... तो!" दूसरा हकलाकर बोला।

खोजा नसरुद्दीन ने दूसरा सिक्का फेंका। वह चांदनी के उजाले में गिरा और चमकने लगा। मोटा पहरेदार झपटकर उसके ऊपर लेट गया।

दूसरा पहरेदार ठीक से बोल भी नहीं पा रहा था। जोश के मारे उसकी जबान से लफ्ज नहीं फूट रहे थे: "क्या तु ...तुम्हें व ... वह मिला ... ?"

"मि...मिल गया!" कांपते होंठों से मोटा सिपाही हकलाया। उसने उठकर सिक्का दिखाया।

यकायक मानों कई तारे एक साथ टूटकर तेजी से गिरे। खोजा नसरुद्दीन मुट्ठी भर-भरकर सिक्के फेंकने लगा। रात का सन्नाटा सिक्कों की खनखनाहट से कांप रहा था। सिपाही अक्ल खो बैठे। अपने नेजे फेंककर, जमीन पर लोट-लोटकर, वे सिक्के ढूंढ़ने लगे।

"यहां, यहां, यह रहा!" पहलेवाले ने फटी आवाज में कहा।

दूसरा रेंगता हुआ चुपचाप आगे बढ़ा। यकायक उसे बहुत से सिक्के मिल गये। खुशी से वह गलगलाने लगा।

खोजा नसरुद्दीन ने एक मुट्ठी सिक्के और उछाले और चोर दरवाजे से भीतर घुस गया। बाकी काम आसान था। पैरों की आहट मुलायम ईरानी कालीनों में खो गयी। मोड़ और रास्ते उसे याद थे। हिजड़े सो रहे थे।

भरी मुहब्बत से गुलजान ने उसे प्यार किया और कांपती हुयी उससे लिपट गयी।

खोजा नसरुद्दीन ने फुसफुसाकर कहा: "जल्दी करो।"

किसी ने उनको रोका नहीं। एक हिजड़ा नींद में कुनमुनाया और कराहने लगा। खोजा नसरुद्दीन उस पर झुका; लेकिन हिजड़े की मौत अभी नहीं आयी थी; उसने होंठ चटखारे और फिर खर्राटे भरने लगा।

रंगीन शीशों से हलकी चांदनी छन रही थी।

चोर दरवाजे पर पहुंचकर खोजा नसरुद्दीन ने होशियारी से बाहर नजर डाली। सहन के बीच घुटनों के बल बैठे अपनी-अपनी गरदनें आगे बढ़ाये सिपाही आसमान की तरफ टकटकी बांधे किसी सितारे के टूटने का इन्तजार कर रहे थे। खोजा नसरुद्दीन ने एक मुट्ठी सिक्के और फेंके, जो दरख्तों के दूसरी तरफ गिरे। उनकी खनखनाहट सुनकर जूते खटखटाते पहरेदार उधर ही दौड़ पड़े। जोश में वे अपने आसपास नहीं देख रहे थे। भालुओं की तरह जोर से हांफते और समझ में न आनेवाली बातें बड़बड़ाते वे आगे बढ़ गये और उस कंटीली झाड़ी को पार कर गये जिसने उनके कपड़े फाड़ दिये।

एक की कौन कहे, उस रात सारी दाश्ताएं चुरायी जा सकती थीं।

खोजा नसरुद्दीन बराबर कह रहा था: "जल्दी करो, जल्दी!"

दोनों दौड़कर मीनार तक पहुंचे और सीढ़ियां चढ़ गये। अपने बिस्तर के नीचे से खोजा नसरुद्दीन ने एक रस्सा निकाला। यह तैयारी उसने पहले ही कर ली थी।

गुलजान फुसफुसायी: "बहुत ऊंचाई है... मुझे डर......।"

खोजा नसरुद्दीन ने एक फंदा बनाया और उसमें गुलजान को बांधा। फिर खिड़की के सीखचों को हटा दिया। इन्हें उसने पहले ही रेत डाला था। गुलजान खिड़की की मुंडेर पर जा बैठी। डर से वह कांप रही थी।

उसकी पीठ को हलका सा धक्का देते हुए खोजा नसरुद्दीन ने कड़ाई से कहा: "बाहर उतरो!"

गुलजान ने आंखें मींच लीं और चिकने पत्थर से सरककर हवा में झूलने लगी।

जमीन पर पहुंचकर वह सम्भल गयी। तभी ऊपर से आवाज आयी: "भागो! भागो! भाग जाओ!"

खिड़की पर झुका हुआ खोजा नसरुद्दीन हाथ हिला रहा था और रस्सा ऊपर को खींच रहा था। गुलजान ने जल्दी से रस्सा खोला और सुनसान बाजार में गायब हो गया।

खोजा नसरुद्दीन को नहीं मालूम था कि पूरे महल में शोरगुल और कुहराम मच गया है।

मार पड़ने के तकलीफदेह तजरबे के बाद ख्वाजा सरा को बेवक्त अपनी जिम्मेदारी का खयाल आया और नयी दाश्ता के कमरे में जाकर आधी रात

को झांका। उसका बिस्तर खाली पाकर भागा-भागा वह अमीर के पास पहुंचा और उन्हें जगा दिया।

अमीर ने अर्सलां बेग को बुलाया। अर्सलां बेग ने पहरेदारों को जगाया। फिर क्या था ! मसालें जल उठीं, ढालें और नेजे खड़कने लगे।

बगदाद के आलिम मौलाना हुसैन को बुला भेजा गया। खोजा नसरुद्दीन हाजिर हुआ।

अमीर ने शिकायत करते हुए तेज आवाज में कहा : "मौलाना हुसैन ! यह क्या हालत है ? अमीरे-आजम, माबदौलत, को अपने महल में भी बदमाश खोजा नसरुद्दीन से नजात नहीं ? ऐसा तो कभी नहीं सुना गया था कि अमीर के हरम से दाश्ता चुरा ली जाय !"

"ऐ अमीरे-आजम !" बख्तियार ने हिम्मत बटोरकर कहा। "यह भी मुमकिन है कि यह खोजा नसरुद्दीन की करतूत न हो ?"

"फिर कौन कर सकता है यह ?" फटी हुई आवाज में अमीर चिल्लाये। "सबेरे हमें इत्तिला दी जाती है कि वह बुखारा में लौट आया है और रात में हमारी दाश्ता गायब हो जाती है ! उसके अलावा और हो ही कौन सकता है ? तलाश करो। तलाश करो उसको। जाने न पाये ! सिपाहियों की तादाद तिगुनी कर दो। अभी वह महल से खिसका नहीं होगा। ओ अर्सलां बेग ! यह न भूलना कि तेरे कन्धों पर तेरा सिर खैरियत से नहीं है।"

तलाश शुरू हुई। पहरेदारों ने महल का कोना-कोना छान मारा। हर तरफ मशालें जल रही थीं और हिलती हुई रोशनी फेंक रही थीं। इस तलाश में सबसे ज्यादा जोश से काम कर रहा था खोजा नसरुद्दीन। कभी वह कालीन उठाता, कभी संगमरमर के हौजों में छड़ियां डालकर देखता, कभी शोर-गुल मचाता हुआ तेजी से इधर-उधर भागता। केतली, सुराही, मर्तबान, यहां तक कि चूहे के बिलों तक में वह झांक रहा था।

"शहंशाहे-आजम !" अमीर की आरामगाह में वापस लौटकर वह बोला। "खोजा नसरुद्दीन महल से निकल भागा है।"

अमीर गुस्से से चिल्लाए : "मौलाना हुसैन ! तुम्हारी बेवकूफी पर हमें ताज्जुब होता है। मान लो उसे महल में छिपने की कोई जगह मिल गयी हो ? तब तो वह हमारी आरामगाह में भी आ धमकेगा ! पहरेदार बुलाओ। फौरन बुलाओ ! यहां आओ पहरेदार !" डर के मारे अमीर की घिग्घी बंधी थी।

बाहर तोप गरज उठी। यह तोप भगोड़े खोजा नसरुद्दीन को डराने के लिए दागी गयी थी।

अमीर एक कोने में दुबके हुए चिल्ला रहे थे : "पहरेदारों को बुलाओ ! सिपाहियों को बुलाओ !"

उनका खौफ तभी मिटा जब अर्सलां बेग ने आरामगाह के दरवाजे पर तीस और हर खिड़की के नीचे दस-दस सिपाही तैनात कर दिये। तभी अमीर कोने से निकले और आजिजी से बोले : "मौलाना हुसैन ! सच-सच बताओ, क्या तुम्हें यकीन है कि वह बदमाश अब हमारी आरामगाह में नहीं है ?"

खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "दरवाजे और खिड़कियों पर पहरा बैठा दिया गया है। कमरे में सिर्फ हम दो शख्स हैं, जहांपनाह। खोजा नसरुद्दीन यहां हो ही कैसे सकता है ?"

अमीर के डर ने अब गुस्से का रंग पकड़ा। "खबरदार ! भागने का मौका नहीं मिलना चाहिए उसे।" वह चिल्लाये। "वह हमारी दाश्ता को भगाकर नहीं ले जा सकता ! मौलाना हुसैन, हमारे गुस्से और नाराजगी की इन्तिहा नहीं ! हम उस दाश्ता से एक बार भी नहीं मिल सके ! सोचो तो, एक बार भी नहीं ! हमारा दिल यह खयाल आते ही मसोस उठता है। ओ मौलाना हुसैन ! यह सब तुम्हारे उन बेवकूफ सितारों का ही कुसूर है। इस बेइज्जती के लिए हम काट पाते तो सारे सितारों के सिर काट डालते ! अर्सलां बेग को हमने हुक्म जारी कर दिया है। मौलाना हुसैन, तुम भी उस बदमाश को पकड़ने की पूरी कोशिश करो। याद रखो, ख्वाजा सरा के ओहदे पर तुम्हारी तैनाती इस काम में तुम्हारी कामयाबी पर ही मुनहसर है।" अमीर की उंगलियां रह-रहकर ऐंठ रही थीं, मानो खोजा नसरुद्दीन के गले को टटोल रही हों।

शैतानी से अपनी आंखें दबाता हुआ खोजा नसरुद्दीन आदाब के लिए झुक गया।

: ७ :

बाकी रात खोजा नसरुद्दीन उस काफिर, बदमाश खोजा नसरुद्दीन, को पकड़ने की तरकीबें अमीर को बताता रहा। ये तरकीबें बहुत चालाकी भरी थीं और अमीर उन्हें सुनकर बहुत खुश हुए।

खर्च के लिए सोने से भरी एक थैली अमीर से लेकर खोजा नसरुद्दीन आखिरी बार अपने मीनार की सीढ़ियां चढ़ा। रकम उसने चमड़े की एक पेटी में रखी और अपने आस-पास नजर दौड़ायी। उसने एक लम्बी सांस ली क्योंकि एकाएक यह जगह छोड़ने में उसे अफसोस हो रहा था। यहां उसने बहुत-सी रातें अकेले, बिना सोये, काटी थीं और बहुत से खयाल उसके दिमाग में आये थे। इन खौफनाक दीवालों के पीछे उसकी रूह का एक हिस्सा हमेशा के लिए छूट रहा था।

उसने दरवाजा बन्द किया, हल्के कदमों से नीचे उतरा और रवाना हुआ —आजादी की तरफ। एक बार फिर सारी दुनिया उसके लिए खुली थी।

सड़कें, पहाड़ी दर्रे और रास्ते—उसे दूर की मंजिलें तय करने की दावत दे रहे थे। हरे जंगल पत्तों के नये कालीन पर साये में जगह देने का वादा कर रहे थे। नदियां ठंडे पानी से उसकी प्यास बुझाने का इन्तजार कर रही थीं। चिड़ियां अपने बेहतरीन गानों से उसका इस्तकबाल करने की तैयारी में थीं। खुशमिजाज पंछी खोजा नसरुद्दीन सुनहरे पिंजरे में बहुत दिन बन्द रह लिया था; दुनिया उसकी गैरहाजिरी महसूस कर रही थी।

वह फाटक पर पहुंचा तो उसे एक गहरा धक्का लगा। दिल को चोट पहुंची। वह रुक गया। उसका चेहरा सफेद पड़ गया। वह दीवाल से लगकर खड़ा हो गया।

बेशुमार सिपाहियों से घिरे उसके दोस्तों की एक लम्बी कतार खुले फाटक से भीतर आ रही थी। उनके हाथ बंधे और सिर झुके हुए थे।

इनमें बूढ़ा नयाज कुम्हार था, चायखाने का मालिक अली और यूसुफ लुहार था। और भी बहुत से लोग थे। जिस किसी से भी खोजा नसरुद्दीन कभी मिला था, बात की थी, उससे पानी पिया था, या जिससे भी उसने अपने गधे के लिए एक मुट्ठी घास ली थी—वे सभी वहां मौजूद थे। इस जुलूस के पीछे-पीछे अर्सलां बेग आ रहा था।

खोजा नसरुद्दीन जब तक सम्हले-सम्हले और होश दुरुस्त करे तब तक फाटक बन्द हो चुका था और आहाता खाली हो गया था। कैदी कैदखाने पहुंच चुके थे। खोजा नसरुद्दीन फौरन अर्सलां बेग की तलाश में लौट पड़ा।

"अर्सलां बेग साहब! क्या हुआ? ये लोग कहां से आये? इन लोगों का जुर्म क्या है?"

अर्सलां बेग ने जीत के लहजे में कहा: "ये सब लोग खोजा नसरुद्दीन के साथी और उसे पनाह देनेवाले हैं। मेरे मुखबिरों और जासूसों ने इन लोगों का पता बताया था। इन सबको सरे आम बेरहमी से मौत की सजा दी जायगी—या फिर वे खोजा नसरुद्दीन से कोई ताल्लुक न होने का सबूत पेश करेंगे। लेकिन मौलाना हुसैन, आप इतने पीले क्यों पड़ रहे हैं? आप कुछ परेशान मालूम होते हैं?"

खोजा नसरुद्दीन चौंका: "पीला? हां, हां, क्यों नहीं! इसका मतलब है कि इनाम आपको मिलेगा, मुझे नहीं।"

खोजा नसरुद्दीन महल में रुकने को मजबूर हो गया। बेगुनाह लोग मौत के मुंह में जा रहे हों, तो वह इसके अलावा कर ही क्या सकता था।

दोपहर को फौज ने बाजार में मोर्चा जमाया। शाही तख्त के चारों तरफ तीन-तीन की कतार में सिपाही खड़े हो गये। नकीबों ने सजा का ऐलान कर

दिया था। भीड़ चुपचाप खड़ी थी। तपते हुए आसमान से झुलसानेवाली गरमी बरस रही थी।

महल के फाटक खुले और पुरानी तरतीब के मुताबिक पहले चोबदार, फिर पहरेदार, फिर मीरासी, फिर हाथी और दरबारी लोग निकले। आखीर में अमीर की सवारी दिखायी दी। भीड़ ने जमीन पर लेटकर कोर्निश की। सवारी तख्त तक आ गयी।

अमीर तख्त पर जा बैठे। मुजरिम लोग फाटक के बाहर लाये गये। भीड़ ने फुसफुसाहट से उनका इस्तकबाल किया। मुजरिमों के रिश्तेदार और दोस्त उनपर टकटकी बांधे सामने की कतारों में खड़े थे।

जल्लाद कुल्हाड़ियां तेज करने, सूलियां गाड़ने व रस्से तैयार करने में मशगूल थे। उन्हें दिन भर के लिए काम मिल गया था, क्योंकि एक के बाद एक उन्हें साठ आदमियों को मौत के घाट उतारना था।

मौत के इस जुलूस में सबसे आगे था बूढ़ा नयाज। जल्लादों ने उसे बांहों में जकड़ लिया। दाहिनी तरफ फांसी थी, बायीं तरफ लकड़ी का कुन्दा, जिस पर सिर रखकर कुल्हाड़ी चलायी जाती। सामने की जमीन पर सूली गड़ी थी।

वजीर बख्तियार ने जोरदार और संजीदा आवाज में ऐलान किया:

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम! बुखारा के सुलतान, आफताब-ए-जहां, अमीरे-आजम ने इंसाफ के तराजू में तौलकर अपनी रिआया में से साठ लोगों के जुर्मों का फैसला किया है। इन लोगों ने अमन में खलल डालने, फूट फैलानेवाले, शरारत-पसन्द, काफिर, खोजा नसरुद्दीन को पनाह दी थी।

"अमीरे-आजम का हुक्म है कि आवारा खोजा नसरुद्दीन को बहुत दिनों तक अपने घर में पनाह देनेवाले नयाज कुम्हार को सबसे पहले मौत की सजा दी जाय। उसका सिर कलम कर दिया जायगा। जहां तक दूसरे मुजरिमों की बात है, उनकी पहली सजा है नयाज की मौत देखना, ताकि वे अपने लिए और भी सख्त मौत का खयाल कर सकें। इनमें से हर एक को किस ढंग से मारा जायगा, इसका ऐलान बाद में होगा।"

वहां ऐसी खामोशी थी कि बख्तियार का हर लफ्ज आखिरी कतार तक सुनायी पड़ रहा था।

अपनी आवाज और ऊंची करते हुए उसने कहा: "हरेक को मालूम हो कि आइन्दा से खोजा नसरुद्दीन को पनाह देनेवाले हर शख्स को यही सजा मिलेगी और वह जल्लाद के हाथों सौंप दिया जायेगा। लेकिन, अगर मौत की सजा पानेवाला कोई शख्स उस काफिर बदमाश का पता बतायेगा तो न सिर्फ उसकी खुद की सजा माफ कर दी जायगी और उसे अमीर का इनाम व खुदा का करम मिलेगा, बल्कि वह औरों की सजा माफ कराने का भी हकदार

होगा। नयाज कुम्हार ! क्या तुम्हें खोजा नसरुद्दीन का पता बताना और अपने आप को व औरों को बचाना मंजूर है ?"

नयाज बहुत देर तक चुपचाप सिर झुकाये खड़ा रहा। बख्तियार ने अपना सवाल दोहराया। नयाज ने जवाब दिया : "नहीं, मैं नहीं कह सकता कि वह कहां है।"

जल्लाद उसे खींचकर लकड़ी के कुन्दे तक ले गये। भीड़ में कोई रो उठा। बूढ़ा झुका और गरदन बढ़ाकर सफेद बालोंवाला अपना सिर कुन्दे पर रख दिया।

तभी दरबारियों को कोहनी से हटाता हुआ खोजा नसरुद्दीन अमीर के सामने आ खड़ा हुआ। उसने इतने जोर से बोलना शुरू किया कि भीड़ सुन ले :

"ऐ आका-ए-नामदार ! जल्लादों को हुक्म दें कि सजा की तामील रोक दी जाय। मैं अभी और यहीं खोजा नसरुद्दीन को पकड़कर दिखा दूंगा।"

अमीर ताज्जुब से उसकी तरफ देखने लगे। भीड़ में खलबली मच गयी। अमीर के इशारे पर जल्लाद ने कुल्हाड़ी कन्धे से उतार दी और पैरों के पास रख ली।

खोजा नसरुद्दीन बुलन्द आवाज में बोला : "ऐ शहंशाह ! क्या इन नाचीज पनाह देनेवालों को सजा देना मुनासिब होगा, जबकि पनाह देनेवालों का सरदार बिना सजा पाये रह जाय, वह शख्स छूट जाय जिसके यहां पिछले दिनों खोजा नसरुद्दीन रहता आया है और अब भी रहता है, जिसने उसे खिलाया है, इनाम दिया है और उसकी पूरी देख-रेख की है ?"

अमीर ने कुछ सोचते हुए कहा : "तुम ठीक कहते हो। अगर उसे पनाह देनेवाला इस तरह का कोई शख्स है तो सबसे पहले उसका सिर कलम होना चाहिए। लेकिन मौलाना हुसैन, हमें वह आदमी दिखाओ तो।"

भीड़ में फुसफुसाहट शुरू हो गयी। आगे की कतारों के लोगों ने पीछे-वालों को अमीर की बात सुनायी।

खोजा नसरुद्दीन ने फिर कहा: "लेकिन, अगर अमीरे-आजम पनाह देनेवालों के इस सरदार को मौत की सजा नहीं देते और उसे जिन्दा रहने देते हैं, तो क्या इन छोटे पनाह देनेवालों को मारना इंसाफ होगा ?"

"अगर हम पनाह देनेवालों के सरदार को मारना नहीं चाहते, तो जरूर ही हम इन लोगों को छोड़ देंगे।" अमीर ने परेशानी से जवाब दिया। "लेकिन मौलाना हुसैन, यह बात हमारी समझ में नहीं आ रही : सरदार को मौत की सजा देने से हमें रोकने का सबब क्या हो सकता है ? वह है कहां ? हमें उसे दिखा भर दो। हम फौरन उसका सिर धड़ से जुदा कर देंगे।"

खोजा नसरुद्दीन भीड़ की तरफ मुड़ा : "क्या आप लोगों ने अमीर की बात सुन ली है ? बुखारा के सुलतान ने अभी-अभी फरमाया है कि अगर वह पनाह देनेवालों के सरदार को, जिसका नाम मैं इन्हीं चन्द मिन्टों में बताऊंगा, मौत की सजा नहीं देते तो यह सब छोटे पनाह देनेवाले, जो इस वक्त मौत के कुन्दे के पास खड़े हैं, अपने-अपने घरों व खानदानों को वापस लौटने के लिए आजाद कर दिये जायेंगे। ऐ शहंशाह ! मैंने सच कहा है न ?"

अमीर ने ताईद की : "मौलाना हुसैन, तुमने सच कहा है। हम वादा करते हैं कि ऐसा ही होगा। लेकिन तुम अब जल्द ही हमें उस सरदार की सूरत दिखाओ।"

खोजा नसरुद्दीन ने भीड़ से पूछा : "आप लोग सुन रहे हैं न ? अमीर ने वादा किया है।"

उसने लम्बी सांस ली। उसे लगा कि हजारों आंखें उसी पर टिकी हैं।

"पनाह देनेवालों का सरदार..."

वह लड़खड़ा गया। उसने अपने चारों तरफ देखा। बहुतों ने उसके चेहरे पर मौत की तकलीफ देखी। अपनी प्यारी दुनिया से, अपने आवाम से, सूरज से, वह विदा ले रहा था।

अमीर बेताबी से चिल्लाये : "जल्दी करो, मौलाना हुसैन ! जल्दी बताओ !"

खुली, खनकती आवाज में खोजा नसरुद्दीन ने कहा :

"पनाह देनेवालों में अव्वल — आप हैं, अमीर !" उसने अपनी नकली दाढ़ी और साफा उतार फेंका।

भीड़ की सांस जैसे ऊपर की ऊपर रह गयी; वह हिली-डुली और खामोश हो गयी। अमीर की आंखें बाहर को निकल पड़ीं। उनके होंठ हिले लेकिन कोई आवाज न निकली। दरबारी खड़े रह गये, मानो बुत बन गये हों।

यह खामोशी बहुत थोड़ी देर तक रही।

"खोजा नसरुद्दीन ! खोजा नसरुद्दीन !" खुशी से भीड़ चिल्लायी।

"खोजा नसरुद्दीन ?" घबराकर दरबारी फुसफुसाये।

"खोजा नसरुद्दीन ?" अर्सलां बेग चौंका।

आखिर अमीर संभला और धीरे से बोला : "खोजा नसरुद्दीन ?"

"हां, खोजा नसरुद्दीन ! ऐ अमीर ! फौरन इन लोगों को हुक्म दीजिए कि आपका सिर धड़ से जुदा कर दें, क्योंकि मुझे पनाह देनेवालों के सरदार आप हैं। मैं आपके महल में रहा। मैंने आपके साथ खाना खाया। मैंने आपसे इनाम पाये। आपके मामलों में सलाह देनेवाला सबसे आला सलाहकार मैं

था। खोजा नसरुद्दीन को पनाह देनेवाले आप हैं, अमीर ! हुक्म दीजिए इन लोगों को कि आपका सिर कालम कर दें !"

पलक झपकते खोजा नसरुद्दीन को पकड़ लिया गया। उसके हाथ बांध दिये गये। उसने अपने को बचाने की कोशिश नहीं की। वह चिल्लाया :

"अमीर ने वादा किया है कि मौत की सजा पानेवाले सभी लोग रिहा कर दिये जायेंगे ! बुखारा शरीफ के बाशिन्दो ! अमीर की बात सभी लोगों ने सुनी है ! आप लोगों ने अपने सामने उन्हें वादा करते सुना था।"

भीड़ में एक खलबली-सी मची और वह आगे बढ़ने लगी। सिपाहियों की तेहरी कतार उसे रोकने में पूरी ताकत लगा रही थी। हर लमहे आवाज और ज्यादा बुलन्द हो रही थी :

"कैदियों को रिहा करो !"

"अमीर ने वादा किया है !"

"कैदियों को रिहा करो ! ..."

ये आवाजें बुलन्द होती गयीं; बढ़ती गयीं। सिपाहियों की कतारें तितर-बितर होने लगीं।

बख्तियार अमीर के कान के पास झुका और बोला : "ऐ मेहरबान आका ! इन लोगों को रिहा करना होगा, वर्ना रिआया बगावत कर देगी।"

अमीर ने हामी में सिर हिलाया।

बख्तियार चिल्लाया : "अमीर अपना वादा पूरा करते हैं !"

सिपाहियों ने रास्ता खोल दिया। मौत की सजा पानेवाले लोग फौरन भीड़ में समा गये।

सिपाही खोजा नसरुद्दीन को महल की तरफ ले चले। भीड़ में बहुत से लोग रो-रोकर उसके पीछे चिल्ला रहे थे :

"अलविदा, खोजा नसरुद्दीन ! हमारे प्यारे, नेक-दिल, खोजा नसरुद्दीन — अलविदा ! तुम हमेशा हमारे दिलों में रहोगे !"

खोजा नसरुद्दीन सीना ताने, सिर ऊंचा किये, चल रहा था। उसके चेहरे पर डर की एक शिकन तक न थी। फाटक पर पहुंचकर वह पीछे को मुड़ा। भीड़ बहुत जोर से चीखी :

"अलविदा, खोजा ..."

अमीर जल्दी से सवारी में जा बैठे। शाही जुलूस तेजी से वापस लौट चला।

फैसला सुनाने के लिए दरबार लगा।

सिपाहियों से घिरा, बंधे हाथ, जब खोजा नसरुद्दीन लाया गया तो दरबारियों ने आंखें नीची कर लीं। आलिम भवें चढ़ाकर दाढ़ियों पर हाथ फेरने लगे। वे एक दूसरे को देखते भी शर्मा रहे थे। लम्बी सांस लेता और गला साफ करता अमीर दूसरी तरफ ताकने लगा।

लेकिन, खोजा नसरुद्दीन की नजर सीधी व साफ थी। अगर उसके हाथ उसकी पीठ के पीछे बंधे न होते तो यही लगता कि मुजरिम वह नहीं, बल्कि वे सब दरबारी हैं जो वहां बैठे थे।

आखिर कैद से रिहाई पाकर बगदाद के असली आलिम मौलाना हुसैन भी दरबार में हाजिर हुए। खोजा नसरुद्दीन ने बड़े दोस्ताने ढंग से उन्हें आंख मारी। बगदाद के आलिम चौंक पड़े और नाराजगी से सिसकारी भरी।

फैसले में देर नहीं लगी। देर लगने की गुंजाइश भी नहीं थी! खोजा नसरुद्दीन को मौत का हुक्म सुना दिया गया।

सिर्फ यह तय होना बाकी था कि मौत किस ढंग की हो।

अर्सलां बेग बोला: "ऐ शहंशाह! मेरी राय में मुजरिम को सूली दी जाय ताकि वह बेहद तकलीफ से मरे।"

खोजा नसरुद्दीन ने आंख तक न झपकायी। वह खुशी से मुस्कराता खुले रोशनदान से आती सूरज की किरनों को ताकता रहा।

अमीर ने सूली की सजा देने से मना किया और बताया कि तुर्की के सुलतान ने इस काफिर को सूली देने की कोशिश की थी। जाहिर है कि वह इस तरह की सजा से बेदाग छूटने की तरकीब जानता होगा, नहीं तो सुलतान के हाथ से जिन्दा न निकल पाता।

बख्तियार ने सलाह दी कि उसका सिर कलम कर दिया जाय। वह बोला: "सच है कि ऐसी मौत आसान मौतों में से है, लेकिन यही सबसे ज्यादा यकीनी मौत है।"

"नहीं।" अमीर बोले। "बगदाद के खलीफा ने इसका सिर कलम कर दिया था, लेकिन वह इसके कन्धों पर अब भी कायम है।"

एक के बाद एक दरबारी उठे और खोजा नसरुद्दीन को फांसी लगाने या उसकी जिन्दा खाल खींच लेने की सलाह देते रहे। अमीर ने हर सुझाव को ठुकरा दिया। वह लगातार खोजा नसरुद्दीन को ताक रहा था। उसे उसके चेहरे पर डर का निशान तक न दिखायी देता था। और वह इसे इन सुझावों के निकम्मेपन का सबूत मानता था।

आखिर दरबारी अपने-अपने सुझाव देकर खामोश हो गये। अमीर बेहद नाराजगी के आसार दिखा ही रहे थे कि बगदाद का आलिम, असली मौलाना हुसैन, उठा। चूंकि अमीर की मौजूदगी में वह पहली मर्तबा बोल रहा था, उसने अपनी सलाह पर पहले से ही पूरी तरह गौर कर लिया था, ताकि उसकी दानाई का सिक्का जम जाय।

"ऐ खल्क के शहंशाहे-आजम! अगर अब तक यह मुजरिम हर तरह की सजा से बेदाग छूट निकला है, तो क्या इससे यह साबित नहीं होता कि नापाक ताकतें, अंधेरे की रूहें, जिनका अमीर के हुजूर में नाम भी लेना मुनासिब नहीं, इसकी मदद करती रही हैं?"

यह कहकर आलिम ने अपने कन्धों पर फूंक मारी। खोजा नसरुद्दीन को छोड़कर बाकी सभी लोगों ने ऐसा ही किया।

आलिम ने फिर कहना शुरू किया: "मुजरिम की बाबत मिली पूरी इत्तिला इकट्ठी करके और उस पर गौर करके हमारे अमीरे-आजम ने इसकी मौत के तरीकों के बारे में हर सुझाव को ठुकरा दिया है। उन्हें अन्देशा है कि नापाक ताकतें फिर एक बार इस मुजरिम की मदद करके मुनासिब बदले और सजा से इसे बचा लेंगी। मौत का एक और तरीका है जो इस मुजरिम पर नहीं आजमाया गया है, और वह तरीका है—पानी में डुबाने का!"

बगदाद के आलिम ने सिर उठाया और जीत के अन्दाज से दरबार को देखा।

खोजा नसरुद्दीन कुछ चौंका। अमीर ने उसका हिलना भांप लिया: "ओ हो, तो यह है इसका राज!"

इस बीच खोजा नसरुद्दीन सोच रहा था: "इन लोगों ने नापाक रूहों की बात करनी शुरू की है। यह अच्छा शुगुन है। इसका मतलब है कि अभी उम्मीद नहीं खोनी चाहिए।"

बगदाद का आलिम कहता गया: "जो कुछ मैंने पढ़ा-सुना है, उससे मुझे मालूम हुआ है कि बुखारा में एक पाक तालाब है जो शेख तुरखान के तालाब के नाम से मशहूर है। जाहिर है कि बदी की ताकतें ऐसे तालाब के पास फटकने की मजाल नहीं कर सकतीं। इससे, ऐ शहंशाह, यह मतलब निकलता है कि इस मुजरिम को पाक पानी के भीतर काफी देर तक दबाये रखा जाय, जिसके बाद यह मर जायगा।"

"यही अक्लमन्दी की और काबिले-इनाम सलाह है!" अमीर ने कहा।

खोजा नसरुद्दीन ने आलिम को डाटकर कहा: "अरे मौलाना हुसैन! जब तुम मेरे कब्जे में थे, तब क्या मैंने तुमसे ऐसा ही सलूक किया था? तुम्हारी ऐसी हरकत के बाद कैसे कोई किसी इंसान का अहसान मानने पर यकीन करेगा।"

दरबार ने तय किया कि सूरज डूबने के बाद खोजा नसरुद्दीन सरे आम शेख तुरखान के तालाब में डुबाया जाय। रास्ते में वह कहीं भाग न निकले, इसके लिए तालाब तक उसे चमड़े के थैले में बन्द करके ले जाने का तरीका तय हुआ, जिससे बन्द ही बन्द वह डुबा दिया जाय।

...सारे दिन तालाब के किनारे कुल्हाड़ियां बजती रहीं। वहां बढ़ई एक ऊंचा तख्ता बना रहे थे। वे जानते थे कि अमीर को इस तख्ते की जरूरत क्यों है। लेकिन जब उनमें से हरेक के पीछे एक-एक सिपाही खड़ा था, तो वे करते ही क्या? बेचारे खामोशी से काम करते रहे। उनके चेहरे गमगीन और परेशान थे। जब काम खत्म हुआ तो उन्होंने वह उजरत लेने से इन्कार कर दिया जो बहुत कम थी और उन्हें दी जा रही थी। नीची नजरें किये वे वापस चले गये।

तालाब के किनारे और तख्ते पर कालीन बिछा दिये गये। दूसरा किनारा रिआया के लिए खाली छोड़ दिया गया।

मुखबिरों ने खबर दी कि सारे शहर में खलबली और नाराजगी फैली है। एहतिआतन अर्सलां बेग ने तालाब के चारों तरफ सिपाही तैनात कर दिये और तोपें चढ़ा दीं।

इस डर से कि कहीं रिआया खोजा नसरुद्दीन को रास्ते में ही न छीन ले, अर्सलां बेग ने चार थैलों में चीथड़े भरवा लिये थे। उसका इरादा था कि ये चारों थैले उन सड़कों से तालाब तक खुले आम भेजे जायेंगे, जो बहुत आबाद हैं। और उस थैले को, जिसमें खोजा नसरुद्दीन होगा, सुनसान गलियों में से ले जाया जायगा। अपनी काइयां चाल में उसने यह जिद्दत भी लगायी कि झूठे थैलों के साथ तो आठ-आठ पहरेदार हों, लेकिन असली के साथ सिर्फ तीन, ताकि उसमें कोई खोजा नसरुद्दीन की मौजूदगी का शक भी न कर सके।

अर्सलां बेग ने पहरेदारों से कहा: "तालाब से जब मैं तुम्हारे पास खबर भेजूं, तो झूठे थैलों को तुम लोग एक-के-बाद एक साथ ही ले आना। लेकिन मुजरिमवाले पांचवें थैले को जरा देर बाद—जब फाटक पर मौजूद भीड़ नकली थैलों के साथ जाने लगे—दूसरों की नजरों से पूरी तरह बचाकर लाना। समझ रहे हो न तुम लोग? याद रखना तुम्हें अपनी जान से जवाब देना होगा।"

ढोल पीटकर शाम को बाजार बन्द करने का ऐलान किया गया। हर तरफ से आदमियों का तालाब की तरफ तांता लग गया। थोड़ी देर बाद अमीर की सवारी आयी। उस तख्ते पर और उसके आस-पास मशालें जला दी गयीं। लपटें 'सी-सी' करती हुई हवा में हिल रही थीं और पानी की लहरों पर लाल सुर्ख लकीरें बना रही थीं। दूसरा किनारा अंधेरे से ढंका था। तख्ते पर से भीड़ दिखायी नहीं देती थी, लेकिन उसके हिलने-डुलने और सांस

लेने की आवाज सुनायी पड़ती थी। रात की हवा के झोंकों पर सवार अनजाना और परेशान करनेवाला शोर फैल रहा था।

ऊंची आवाज में बख्तियार ने खोजा नसरुद्दीन की मौत की सजा का ऐलान किया।

इस वक्त हवा थम-सी गयी। खामोशी छा गयी। इस खामोशी से अमीर को डर के मारे कंपकपी आ गयी।

हवा ने आह भरी और भीड़ में हजारों सीनों से आह उठी।

अमीर ने कांपते हुए कहा: "अर्सलां बेग! अब क्या देर है?"

"शहंशाह, मैंने पयामी रवाना भी कर दिया है।"

यकायक अंधेरे से आवाजें आने लगीं। हथियार खड़कने लगे। कहीं पर लड़ाई शुरू हो गयी थी। अमीर डर के मारे चौंक पड़े। फौरन ही खाली हाथ आठ सिपाही मंच के सामने रोशनी में आ खड़े हुए।

"मुजरिम कहां है?" अमीर चिल्लाये। "क्या लोगों ने उसे सिपाहियों से छुड़ा लिया! भाग निकला वह? अर्सलां बेग, तूने यह सब होने दिया?"

"ऐ शहंशाह!" अर्सलां बेग बोला। "अपने नाचीज गुलाम ने यह पहले ही भांप लिया था। उस थैले में सिर्फ चीथड़े थे।"

तभी दूसरे किनारे से लड़ाई-झगड़े की आवाजें आयीं। अर्सलां बेग ने जल्दी से अमीर को समझाया: "ऐ आका! उन्हें यह थैला भी ले लेने दीजिए। इसमें भी चीथड़े हैं।"

सिपाहियों से पहला थैला चायखाने के मालिक अली और उसके दोस्तों ने छीना था; दूसरा यूसुफ की रहनुमाई में लुहारों ने। कुम्हारों ने तीसरा थैला छीना। चौथा बिना छीन-झपट के बखैरियत पहुंच गया।

मशालों की रोशनी में सिपाहियों ने भीड़ को दिखाते हुए उस बोरे को उठाया और उलट दिया। चीथड़े बाहर निकल पड़े।

परेशान और भौचक्की भीड़ नाउम्मीदी से खामोश खड़ी रही। यही अर्सलां बेग की चाल भी थी। वह जानता था कि बेसमझी से इंसान में नाकारा-पन आ जाता है।

और, अब पांचवें थैले से निपटने का वक्त आ गया था। जाने क्यों उसे लानेवाले पहरेदारों को रास्ते में देर हो गयी थी और वे अब तक नहीं आये थे।

: ६ :

सिपाही खोजा नसरुद्दीन को कैदखाने से बाहर लाये तो वह बोला: "क्या तुम लोग मुझे अपनी पीठों पर लादकर ले चलोगे? अफसोस कि मेरा गधा इस वक्त न हुआ। हंसी के मारे वह लोट-पोट हो जाता।"

"खामोश ! अपना मुंह बन्द कर।" सिपाहियों ने बिगड़कर कहा। "तू अभी रोयेगा।"

वे उसे माफ नहीं कर सकते थे, क्योंकि उसने खुद अपने को अमीर के सिपुर्द कर दिया था जिससे कि उनका इनाम मारा गया था।

उन्होंने एक संकरा बोरा बिछाया और नसरुद्दीन को उसमें ठूंसने लगे।

दोहरा-तेहरा होता हुआ खोजा नसरुद्दीन चिल्लाया : "अरे शैतानो ! क्या इससे बड़ा बोरा नहीं मिल सकता था तुम्हें ?"

पसीने से शराबोर, हांफते हुए सिपाहियों ने, डपटकर कहा : "खामोश ! अब तेरी नहीं चलने की। अबे हरामजादे, इस तरह न फैल, नहीं तो तेरे पैर पेट में ठूंस देंगे।"

मारपीट शुरू हो गयी, जिसकी वजह से महल के और नौकर भी वहां पहुंच गये। आखिर, बड़ी कोशिश के बाद सिपाही उसे बोरे में बन्द करने और बोरे का मुंह रस्से से बांधने में कामयाब हुए। बोरे के भीतर बदबू, अंधेरा और घुटन थी। खोजा नसरुद्दीन की रूह पर काला कोहरा छा गया। अब बच निकलने की कोई उम्मीद नहीं थी।

उसने मुकद्दर और सबसे ज्यादा ताकतवर चीज, मौके, से इल्तिजा की : "ऐ किस्मत, जो मेरी मां की तरह मुझ पर मेहरबान है ! ऐ सबसे ज्यादा ताकतवर मौके, जिसने अब तक अपने बच्चे की तरह मेरी हिफाजत की है ! कहां हो तुम ? खोजा नसरुद्दीन की मदद के लिए तुम जल्दी क्यों नहीं आते ? इन लोगों ने मुझे एक गन्दे बदबूदार बोरे में बन्द कर दिया है और मुझे कीचड़ भरे पोखरे में डुबाने ले जा रहे हैं—मुझे, जिसे सारी दुनिया ने देखा है; मुझे, जिसे सिर्फ समन्दर ही मुनासिब कब्र दे सकता है। इंसाफ कहां है ? सच्चाई कहां है ? नहीं, यह नहीं हो सकता ! कुछ न कुछ होना ही चाहिए ! आग, जलजला, बगावत ! ऐ किस्मत ! ऐ मौके ! कुछ न कुछ होना ही चाहिए !"

इस बीच पहरेदार तालाब का आधा रास्ता तय कर चुके थे। लेकिन अब तक कुछ न हुआ था। वे लोग बारी-बारी से बोरा लाद रहे थे और हर दो सौ कदम पर बोझा बदल रहे थे। खोजा नसरुद्दीन छोटे-छोटे कदम गिन रहा था। इससे उसे अन्दाजा हो रहा था कि कितना फासला तय हो गया है और कितना बाकी है।

वह जानता था कि मुकद्दर और मौका उस शख्स की मदद नहीं करते जो रोता-पीटता है, जो दिलेरी से काम नहीं लेता। लेकिन जो शख्स लगन से बढ़ता जाता है, वह मंजिल तक पहुंच जाता है। अगर उसके पांव थक जायें और जवाब दे जायें, तो उसे हाथों के बल ही रेंगना चाहिए। तब जरूर उसे रात के अंधेरे में दूर तक फैले काफिलों के अलाव की तेज रोशनियां दिखायी

पड़ेगी, कारवां सही रास्ते पर जा रहे होंगे और जरूर कोई अकेला ऊंट उस मुसाफिर को मिल जायेगा जो उसे मंजिल तक पहुंचा देगा। लेकिन वह शख्स जो सड़क के किनारे बैठ रहेगा और नाउम्मीदी को सीने से लेगा, उसे बेदिल पत्थरों से कोई हमदर्दी नहीं मिलेगी — वह चाहे जितना रोये-गिड़गिड़ाये। रेगिस्तान में वह प्यास से मर जायेगा। उसका जिस्म बदबूदार लकड़बग्घों का शिकार बनेगा और उसकी हड्डियां गर्म रेत के नीचे दब जायेंगी। कितने ही लोग अपने वक्त से पहले मर जाते हैं, क्योंकि उनमें जिन्दा रहने की तमन्ना काफी मजबूत नहीं होती!"

खोजा नसरुद्दीन ऐसी मौत को सच्चे इंसान के लिए शर्मनाक चीज समझता था।

"नहीं!" उसने कहा और दांत भींचकर दोहराया, "नहीं! मैं आज नहीं मरूंगा! मैं आज मरना नहीं चाहता!"

लेकिन एक संकरे बोरे में दोहरा-तेहरा मुड़ा, जहां हिलने की भी जगह नहीं थी, वह कर ही क्या सकता था? उसकी कोहनियां और टांगें उसके धड़ से सटी हुयी थीं। कोई चीज आजाद थी तो सिर्फ उसकी जुबान।

बोरे के भीतर से वह बोला: "ऐ बहादुर सिपाहियो। जरा एक लमहे के लिए रुको। मरने से पहले मैं दुआ करना चाहता हूं ताकि अल्लाह मेरी रूह को कुबूल कर ले।"

"अच्छा! दुआ कर लो।" सिपाहियों ने बोरा जमीन पर रख दिया। "लेकिन जल्दी। दुआ जल्द ही खत्म कर लो। हम तुम्हें बाहर नहीं निकालेंगे। तुम बोरे के अन्दर ही इबादत कर लो।"

"हम हैं कहां?" खोजा नसरुद्दीन ने पूछा। "मुझे यह मालूम होना चाहिए क्योंकि तुम्हें मेरा मुंह सबसे नजदीकी मसजिद की तरफ करना होगा।"

"हम लोग कर्शी फाटक के पास हैं। यहां चारों तरफ मसजिदें ही मसजिदें हैं। बस, अब तुम अपनी दुआ जल्द खत्म करो।"

"शुक्रिया, ऐ सिपाहियो!" गमजदा आवाज में खोजा नसरुद्दीन ने कहा।

खोजा नसरुद्दीन खुद नहीं जानता था कि क्या होनेवाला है: "चलो, दुआ करने के नाम मुझे चन्द मिनटों की मोहलत मिल जायगी। फिर देखा जायगा। तब तक कुछ ऐसा हो सकता है कि ..."

वह जोर-जोर से दुआ करने लगा। साथ ही सिपाहियों की बातें सुनने लगा।

"आखिर ऐसा हुआ ही कैसे कि हम लोग फौरन ही न भांप पाये कि नया आलिम खोजा नसरुद्दीन है?" वे लोग कह रहे थे: "काश! उसे पहचानकर हम लोग पकड़ लेते तो अमीर से हमें भारी इनाम मिलता।"

सिपाहियों के खयालात इन्हीं जानी-पहचानी गलियों में भटक रहे थे, क्योंकि उनकी जिन्दगी का सारा जुज लालच ही था।

खोजा नसरुद्दीन फौरन इसका फायदा उठाने को तैयार हो गया।

"मुझे कोशिश करनी चाहिए कि ये लोग बोरे को अकेला छोड़ दें—चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही ...। तब शायद मैं रस्सा तोड़ने में कामयाब हो जाऊं ! या शायद इधर से कोई गुजरे जो मुझे आजाद कर दे।" उसने सोचा।

बोरे में लात मारते हुए एक सिपाही गुर्राया: "जल्द खत्म कर अपनी दुआ। तू सुन रहा है न ? हम लोग अब ज्यादा इन्तजार नहीं कर सकते।"

"ऐ नेक और बहादुर सिपाहियो ! सिर्फ एक मिनट और !" खोजा नसरुद्दीन बोला। "मुझे खुदा से एक ही इल्तिजा और करनी है। ऐ कादिरे-मुतलक ! ऐ मेहरबान अल्लाह ! तू ऐसा कर दे कि जिस किसी को भी मेरे दस हजार तंके मिलें वह उनमें से एक हजार किसी मसजिद में ले जाय और मुल्ला से मेरे लिए एक साल तक दुआ-ए-खैर करने को कहे।"

दस हजार तंके !!!

दस हजार तंकों की बात सुनकर सिपाही खामोश हो गये। खोजा नसरुद्दीन हालांकि बोरे के बाहर नहीं देख सकता था, तो भी वह बता सकता था कि सिपाहियों के चेहरों से क्या झलक रहा है, कि वे कैसे एक-दूसरे को ताक रहे हैं और एक-दूसरे को कोहनी मार रहे हैं।

सहमकर, दबी जुबान से, उसने कहा : "अब मुझे ले चलो, नेक सिपाहियो ! मैंने अपनी रूह अल्लाह के सिपुर्द कर दी है।"

सिपाही हिचकिचाये। उनमें से एक खोजा नसरुद्दीन को उकसाते हुए बोला : "हम जरा देर और सुस्तायेंगे। खोजा नसरुद्दीन, तुम यह न समझना कि हम लोग बुरे हैं, या हमारे दिल नहीं है। तुम्हारे साथ ऐसा सख्त बरताव करने के लिए हम अपने फर्ज की वजह से मजबूर हैं। अमीर से तनखाह पाये बिना हम लोग अपने खानदानों को पालने लायक हो जाते, तो तुम्हें रिहा करने में हमें कोई हिचक न होती ..."

दूसरा सिपाही फुसफुसाया : "यह तुम क्या कह रहे हो ? हमने उसे बाहर निकलने दिया तो अमीर हमारा सिर काट डालेंगे।"

पहले सिपाही ने सिसकारी भरी और जवाब दिया : "अपनी जुबान बन्द रख। हमें तो सिर्फ इसका रुपया चाहिए।"

खोजा नसरुद्दीन उनकी फुसफुसाहट नहीं सुन सका, लेकिन वह जानता था कि किस सिलसिले में बातें हो रही हैं। बड़ी पाकीजगी से आह भरता हुआ वह बोला : "ऐ बहादुरो ! मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं। दूसरों की बाबत बुरा-भला क्या कहूं। मैं खुद ही बहुत बड़ा गुनहगार हूं। उस

दूसरी दुनिया में अल्लाह ने अगर मुझे माफी बख्श दी, तो मैं तुम लोगों से वादा करता हूं कि उसके तख्त के नीचे बैठकर तुम लोगों के लिए दुआ करूंगा। तुम कहते हो कि अगर तुम्हें अमीर की तनखाह की जरूरत न होती तो मुझे बोरे से बाहर निकल आने देते ? जरा सोचो तो कि तुम कह क्या रहे हो ! तुम अमीर के हुक्म के खिलाफ काम करते, जो खुद एक बड़ा गुनाह है ? नहीं, नहीं ! मैं नहीं चाहता कि मेरी खातिर तुम्हारी रूहों पर गुनाह का साया पड़े। उठाओ बोरा ! ले चलो मुझे तालाब की तरफ। अमीर का मंशा और अल्लाह का मंशा पूरा होकर रहेगा।"

सिपाही परेशानी से एक-दूसरे को देख रहे थे। खोजा नसरुद्दीन की गुनाह कुबूल करने और अफसोस जाहिर करने की धुन को वे बुरा-भला कह रहे थे।

बातचीत में अब तीसरा सिपाही भी शामिल हो गया, जो कोई शैतानी भरी चाल सोचता हुआ अब तक खामोश था। अपने साथियों को आंख मारकर वह बोला : "किसी शख्स को अपनी गलतियां और गुनाह सिर्फ मौत के डर से कुबूल करते देखकर दिल को तकलीफ होती है। नहीं, मैं ऐसा नहीं हूं। मैंने बहुत पहले ही अपने गुनाह कुबूल कर लिए थे और तब से अब तक पाक जिन्दगी बसर कर रहा हूं। लेकिन तुम तो जानते ही हो भाइयो, अल्लाह को खुश करनेवाले काम किये बगैर सिर्फ पाकीजगी काफी नहीं होती।" वह इसी तरह की बातें कहता रहा और उसके साथी अपनी हंसी रोकने के लिए मुंह पर हाथ लगाये रहे। वे जानते थे कि यह शख्स अव्वल नम्बर का जुआरी और ऐयाश है। "और इसलिए मैं अपनी पाकीजगी को मजबूत बनाने के लिए एक सही और नेक काम कर रहा हूं। मैं अपने वतन में एक मसजिद बनवा रहा हूं और इसके लिए मैं और मेरे खानदानवाले भर पेट खाना भी नहीं खाते।"

बाकी दो सिपाहियों में से एक से नहीं रहा गया और वह कुछ दूर जाकर हंसने लगा। हंसी के मारे उसका दम घुटा जा रहा था।

तीसरा सिपाही कहता गया : "मैं तांबे तक का एक-एक सिक्का बचाकर रखता हूं। लेकिन मसजिद का काम बहुत आहिस्ते चल रहा है। अभी हाल में मैंने अपनी गाय बेची है। अब मुझे चाहे जूते तक बेच देने पड़ें—लेकिन अगर वह काम पूरा हो जो मैंने उठाया है, तो मैं नंगे पैर चलने को तैयार हूं।"

खोजा नसरुद्दीन ने बोरे के भीतर एक सिसकी भरी। सिपाहियों ने एक-दूसरे को ताका। चाल काम कर रही थी। उन्होंने अपने चालाक साथी को कोहनी मारी कि वह अपनी बात जारी रखे।

वह बोला: "काश ! मुझे कोई शख्स मिल जाता जो मसजिद पूरी करने के लिए आठ-दस हजार तंके दे देता ! मैं उससे वादा कर लेता कि पांच, बल्कि दस, साल तक लगातार अल्लाह के तख्त की तरफ मसजिद की छतों से इबादत के महकते हुए बादलों से लिपटा उसका नाम रोज ऊपर उठता रहेगा !"

दूसरा सिपाही बोला : "दोस्त, मेरे पास दस हजार तंके नहीं हैं, लेकिन तुम मेरी बचत की सारी कमाई, यानी पांच सौ तंके, कुबूल कर लो। मेरी यह नाचीज भेंट ठुकराना मत, क्योंकि मैं भी इस नेक काम में हाथ बटाना चाहता हूं।"

दबी हुई खुशी और हंसी से कांपता सिपाही हकलाता हुआ बोला: "और मैं भी... लेकिन मेरे पास कुल तीन सौ तंके हैं..."

दर्द-भरी आवाज में खोजा नसरुद्दीन बोला: "ऐ नेक इंसान ! ऐ सबसे ज्यादा पाक सिपाही ! काश, मैं तुम्हारी पोशाक का कोना अपने होंठों से चूम पाता ! मैं बड़ा गुनहगार हूं ! लेकिन मेरे ऊपर मेहरबानी करो और मेरी भेंट लेने से इनकार मत करो। मेरे पास दस हजार तंके हैं। जब मैंने बद इरादे से अमीर की खिदमत की थी, तो मुझे अक्सर सोने और चांदी की थैलियां मिलती रहती थीं। मैंने दस हजार तंके बचाकर छिपा दिये थे। मैं सोचता था कि बचकर निकल भागने के वक्त मैं इस रकम को ले लूंगा और चूंकि मुझे कर्शी फाटक होकर जाना था, इसलिए मैंने कर्शी कब्रिस्तान में ही वह रकम गाड़ दी थी — कब्र के एक पुराने पत्थर के नीचे।"

सिपाही चिल्ला पड़े: "कर्शी कब्रिस्तान ? अरे वह तो नजदीक ही है।"

"हां। हम लोग अब कब्रिस्तान के शुमाली (उत्तरी) कोने पर हैं। अगर कोई..."

"हम लोग इस वक्त मशरिकी (पूर्वी) कोने पर हैं। कहां...तुमने रुपया कहां छिपाया है ?"

खोजा नसरुद्दीन बोला: "वह कब्रिस्तान के मगरिबी (पश्चिमी) कोने में है। लेकिन ऐ नेक सिपाही ! पहले मुझसे वादा करो कि मेरा नाम वाकई दस साल तक मसजिद में रोजाना लिया जायगा।"

बेताबी से ऐंठता हुआ सिपाही बोला: "मैं वादा करता हूं। मैं अल्लाह और उनके पैगम्बर के नाम पर वादा करता हूं। अब तुम जल्द बताओ कि वह रकम कहां गड़ी है ?"

खोजा नसरुद्दीन ने जवाब देने में काफी वक्त लगाया। वह सोच रहा था: "अगर इन लोगों ने तय किया कि पहले मुझे तालाब तक छोड़ आयें और रुपये की खोज कल तक मुल्तवी कर दें तो बड़ा गजब होगा ? नहीं, बेताबी और लालच के मारे ये लोग मरे जा रहे हैं। इन्हें डर होगा कि कोई और

आकर इनसे पहले ही रकम न ले जाय। फिर, इन लोगों को आपस में भी एक-दूसरे पर यकीन नहीं। आखिर में कौन सी ऐसी जगह बताऊं जहां ये लोग ज्यादा से ज्यादा देर तक खोदते रहें।"

बोरे पर झुके सिपाही जवाब का इन्तजार कर रहे थे। खोजा नसरुद्दीन को उनकी तेज सांसें सुनाई पड़ रही थीं। ऐसा लगता था मानो वे कहीं बड़ी दूर से दौड़कर आ रहे हों।

"अच्छा सुनो," वह बोला, "कब्रिस्तान के मगरिबी कोने में कब्रों के तीन पुराने पत्थर हैं, जो एक तिकोन बनाते हैं। इनमें तिकोन के तीनों कोनों के नीचे मैंने तीन हजार, तीन सौ तेंतीस और एक तिहाई तंके गाड़ रखे हैं ..."

"तिकोन के तीनों कोनों के नीचे," सिपाहियों ने एक साथ दोहराया मानो जहीन शागिर्द अपने उस्ताद के साथ-साथ कुरआन के लफ्ज दोहरा रहे हों : "तीन हजार, तीन सौ तेंतीस और एक तिहाई तंके ..."

उन लोगों ने तय किया कि दो सिपाही इस रकम की खोज में जायें और तीसरा वहीं पहरा दे। इस पर खोजा नसरुद्दीन को नाउम्मीद हो जाना चाहिए था। लेकिन वह इंसान के मिजाज से अच्छी तरह वाकिफ था। उसे पूरा यकीन था कि तीसरा सिपाही ज्यादा देर तक नहीं रुकेगा। यह खयाल गलत नहीं था। अकेला रह जाने पर सिपाही गहरी सांसें भरता, खांसता और सड़क पर अपने हथियार खड़खड़ाता चहलकदमी करता रहा। इन आवाजों से खोजा नसरुद्दीन को उसके खयालात भांपने का मौका मिला। सिपाही को अपने तीन हजार, तीन सौ तेंतीस और एक तिहाई तंकों की भारी फिक्र थी। खोजा नसरुद्दीन इतमीनान से वक्त का इन्तजार करता रहा।

"बड़ी देर लगा दी उन लोगों ने !" सिपाही बोला।

"शायद वे रकम को किसी दूसरी जगह छिपा रहे हैं, ताकि आप लोग कल इकट्ठे आकर उसे ले जायें," खोजा नसरुद्दीन ने कहा।

बात अपना असर कर गयी, सिपाही ने जोर से सांस खींची और जम्हाई लेने का बहाना किया।

"मरने से पहले मैं कोई नसीहत भरी कहानी सुनना चाहता हूं।" बोरे के भीतर से खोजा नसरुद्दीन ने कहा। "ऐ नेक सिपाही ! शायद तुम्हें कोई कहानी याद हो जो तुम मुझे सुना सको।"

नाराज होकर सिपाही बोला : "नहीं, मुझे कोई कहानी याद नहीं। नसीहतवाली कोई कहानी मुझे याद नहीं। दूसरे, मैं थक गया हूं। मैं जाकर जरा घास पर लेटूंगा।"

लेकिन सिपाही को यह नहीं मालूम था कि सख्त जमीन पर उसके कदमों की आवाज दूर से भी सुनायी देगी। पहले तो वह धीरे-धीरे चला। फिर खोजा नसरुद्दीन को तेज कदमों की आवाज सुनायी दी। सिपाही तेजी से भाग रहा था।

कुछ कर गुजरने का वक्त आ गया था। खोजा नसरुद्दीन बहुत लोटा-पोटा, बहुत लुढ़का। लेकिन बेकार। रस्सा नहीं टूटा।

"ऐ मुकद्दर, किसी राहगीर को भेज," खोजा नसरुद्दीन दुआ करने लगा, "किसी राहगीर को भेज दे! या अल्लाह, किसी राहगीर को भेज दे।"

और मुकद्दर ने एक राहगीर भेज दिया।

तकदीर और सुनहरे मौके सिर्फ उसी शख्स की मदद करने आते हैं जो पूरे यकीन के साथ आखीर तक लड़ता है (यह बात हमने पहले भी कही है, लेकिन सच्चाई दोहराने से कम नहीं होती)। खोजा नसरुद्दीन अपनी जिन्दगी को बचाने के लिए पूरी ताकत और लगन से जूझ रहा था। मुकद्दर इसकी मदद से इनकार नहीं कर सकता था।

राहगीर आहिस्ता-आहिस्ता आ रहा था। उसके कदमों की आवाज से खोजा नसरुद्दीन ने अन्दाजा लगाया कि वह लंगड़ा है। वह हांफ भी रहा था, जिससे जाहिर था कि वह बुजुर्ग है।

बोरा रास्ते के बीचोंबीच पड़ा था। राहगीर रुका। कुछ देर तक बोरे को देखता रहा, फिर उसे पैर से टटोला।

खरखराती आवाज में उसने कहा: "क्या हो सकता है इस बोरे में? यह आया कहां से?"

वल्लाह! खोजा नसरुद्दीन को सूदखोर जाफर की आवाज सुनाई दी। उसे पहचानते देर न लगी। अब उसे कतई शक न था कि वह बच जायगा। जरूरत सिर्फ इस बात की थी कि सिपाही लौटने में देर लगायें।

उसने हौले से खांसा, ताकि सूदखोर चौंक न पड़े।

"ओहो! इसमें तो कोई आदमी है।" पीछे को हटता हुआ जाफर चिल्लाया।

"बेशक इसमें आदमी है!" आवाज बदलकर बहुत इतमीनान से खोजा नसरुद्दीन बोला, "इसमें ताज्जुब की बात क्या है?"

"ताज्जुब की बात? तुम बोरे में बन्द क्यों हो?"

"यह मेरा निजी मामला है। तुम्हें इससे क्या? तुम अपनी राह लगो। मुझे अपने सवालों से परेशान न करो।"

खोजा नसरुद्दीन जानता था कि सूदखोर के दिमाग में खुजली मच रही होगी और वह नहीं टलेगा।

"सचमुच बड़े ताज्जुब की बात है," सूदखोर बोला। "एक आदमी बोरे में बन्द है और बोरा सड़क पर पड़ा है। ऐ भाई, तुम्हें क्या जबरदस्ती बोरे में बन्द किया गया था ?"

"जबरदस्ती ?" खोजा नसरुद्दीन चिढ़ता हुआ बोला। "क्या छः सौ तंके मैं इसलिए खर्च करूंगा कि कोई मुझे जबर्दस्ती बोरे में बन्द करे ?"

"छः सौ तंके ? तुमने छः सौ तंके क्यों खर्च किये ?"

"ऐ मुसाफिर, अगर तुम वादा करो कि मेरी बात सुनने के बाद तुम अपने रास्ते लगोगे और मुझे परेशान न करोगे तो मैं तुम्हें पूरी कहानी सुना दूं। यह बोरा एक अरब का है, जो यहां बुखारा में रहता है। इसमें जादू की सिफत है। सिफत यह है कि बीमारी और बदनुमा जिस्म को ठीक कर देता है। इसका मालिक इसे किराये पर देता है। लेकिन वह भारी रकम लेता है और हर ऐरे-गैरे को नहीं देता। मैं लंगड़ा था, मेरे कूबड़ निकला था और मैं एक आंख से काना था। मैं शादी करना चाहता हूं। लड़की का बाप अपनी बेटी को मेरी बदसूरती देखने से बचाना चाहता था। सो वह मुझे इस अरब के पास ले गया। मैंने उसे छः सौ तंके दिये और चार घंटे के लिए यह बोरा ले लिया।

"चूंकि यह बोरा अपना असर कब्रिस्तान के अरीब-करीब ही दिखाता है, सो सूरज डूबने के बाद मैं इस कर्शी कब्रिस्तान चला आया। मेरी होनेवाली बीवी का बाप, जो मेरे साथ आया था, मुझे इस बोरे के भीतर घुसाकर और ऊपर से रस्सा बांधकर चला गया। मुमकिन था कि किसी गैर की मौजूदगी में इलाज न हो पाये। बोरेवाले अरब ने मुझे बताया था कि जैसे ही मैं अकेला रह जाऊंगा, तीन जिन जोरों से पीतल के पर खड़खड़ाते हुए आयेंगे। इंसानों जैसी जुबान में वे मुझ से पूछेंगे कि कब्रिस्तान के किस हिस्से में दस हजार तंके गड़े हैं और इसके जवाब में मैं जादू के ये बोल सुनाऊंगा : "तांबे जैसी ढाल है जिसकी, उसका माथा तांबे का। उकाब के दर पर उल्लू ! ऐ जिन, तू पूछता है पता उस रकम का जो तूने छुपाई नहीं, इसलिए पलट और चूम मेरे गधे की दुम !"

"बस, जैसा उसने बताया था हू-ब-हू वैसा हुआ। जिन आये और मुझसे पूछा कि दस हजार तंके कहां गड़े हैं; मेरा जवाब सुनकर वे तैश में आ गये और मुझे पीटने लगे। लेकिन मैं अरब की हिदायतों पर चलता हुआ चिल्लाता रहा—'तांबे जैसी ढाल है जिसकी, उसका माथा तांबे का ... इसलिए पलट और चूम मेरे गधे की दुम।' तब जिन बोरा उठाकर मुझे ले चले ... इसके बाद मुझे कुछ याद नहीं। दो घंटे बाद मुझे होश आया तो देखा कि मैं बिलकुल दुरुस्त हो गया हूं और उसी जगह पड़ा हूं, जहां से वे मुझे ले गये थे।

मेरा कूबड़ गायब हो गया है, पैर सीधा हो गया है और मैं दोनों आंखों से देख सकता हूं—इसका यकीन मैंने इस सूराख से झांककर कर लिया है जो मुझसे पहले किसी और शख्स ने इस बोरे में कर दिया था। अब मैं यहां सिर्फ इसलिए बन्द हूं कि पूरी रकम अदा करने के बाद उसे बेकार जाने देना ठीक नहीं। बेशक, एक गलती मैंने की। मुझे किसी ऐसे शख्स से पहले ही समझौता कर लेना चाहिए था जिसे ये सारी बीमारियां होतीं। तब हम लोग बोरे को साझे में किराये पर ले लेते और दो-दो घंटे इसमें रहते। इस तरह इलाज में कुल तीन-तीन सौ तंके खर्च होते। लेकिन अब क्या किया जाय? रकम बरबाद हो तो हो, लेकिन असली बात तो यह है कि मेरा इलाज मुकम्मल हो गया।

"ऐ राहगीर! तुमने पूरी कहानी सुन ली है। अब तुम अपना वादा पूरा करो, यानी अपनी राह लगो। इलाज के बाद मुझे कमजोरी महसूस हो रही है। बात करने में तकलीफ होती है। तुम से पहले नौ शख्स मुझ से यही सवाल कर चुके हैं और बार-बार सारी बातें दोहराते मैं थक गया हूं।"

सूदखोर ने सब बातें ध्यान से सुनीं। सिर्फ बीच-बीच में वह ताज्जुब और अचम्भा जाहिर करने के लिए "सच?" "अच्छा!" "वाकई!" कहता गया।

"ऐ बोरे में बन्द इंसान! मेरी भी सुनो।" सूदखोर बोला। "हमारी इस मुलाकात से हम दोनों को फायदा हो सकता है। तुम्हें इस बात का गम है कि तुमने किसी ऐसे साझेदार को ढूंढ़ने की कोशिश नहीं की जिसको तुम्हारी ही तरह की बीमारियां हों। लेकिन घबराओ नहीं। देर नहीं हुई है। मैं ठीक वैसा ही शख्स हूं जैसे की तुम्हें जरूरत है। मैं कुबड़ा हूं, दाहिने पैर से लंगड़ा हूं और एक आंख से काना हूं। बोरे में बाकी दो घंटे रह सकने के लिए खुशी से तुम्हें तीन सौ तंके दे दूंगा।"

"बस-बस! मेरा मजाक न उड़ाओ!" खोजा नसरुद्दीन बोला। "भला कहीं ऐसा भी इत्तिफाक हुआ है? यह एकदम नामुमकिन है। लेकिन अगर तुम सच बोल रहे हो तो, ऐ भाई, अल्लाह का शुक्रिया अदा करो जो उसने ऐसा मौका तुम्हें बख्सा। ऐ मुसाफिर, मैं बोरा खाली करने को राजी हूं। लेकिन मैं पहले ही कह दूं कि बोरे का किराया मैंने पेशगी दिया था और तुमसे भी पेशगी लूंगा। बोरा मैं उधार नहीं देने का।"

"बेशक, बेशक! मैं पेशगी दूंगा।" बोरे को खोलता हुआ सूदखोर बोला। "लेकिन हम लोग वक्त जाया न करें। वक्त जा रहा है। अब हर मिनट मेरा है।"

बोरे से निकलते वक्त खोजा नसरुद्दीन ने अपना चेहरा आस्तीन से छिपा लिया। लेकिन सूदखोर ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। वह फुर्ती से रकम गिन रहा था। उसे हर मिनट की फिक्र थी। बहुत कांखने-कराहने के बाद वह बोरे में घुसा और अपना सिर भीतर कर लिया।

खोजा नसरुद्दीन ने बोरे के मुंह पर रस्सा कसा, कुछ दूर गया और एक पेड़ की आड़ में छिप गया। वह ऐन मौके पर बोरे के बाहर निकला था, क्योंकि कब्रिस्तान की तरफ से सिपाहियों के जोर-जोर से गाली देने की आवाजें आ रही थीं। टूटी दीवाल के बीच की दराज से खोजा नसरुद्दीन को उनके लम्बे साफे दिखाई दिये। चांदनी में अपने तांबे के भाले चमकाते सिपाही बोरे के पास आ पहुंचे।

: १० :

"क्यों बे चालबाज!" बोरे में ठोकरें मारते हुए सिपाही चिल्लाये। उनके हथियार ठीक वैसे ही खड़क रहे थे जैसे किसी जिन के तांबे के पर खड़कते! "यह बदमाशी? हमने कब्रिस्तान का चप्पा-चप्पा छान मारा, लेकिन कुछ हाथ न लगा। ठीक-ठीक बता हरामजादे, दस हजार तंके कहां हैं?"

सूदखोर ने अपना सबक अच्छी तरह रट रखा था:

"तांबे जैसी ढाल है जिसकी, उसका माथा तांबे का," बोरे के अन्दर से सूदखोर बोला, "उकाब के दर पर उल्लू। ऐ जिन, तू पूछता है पता उस रकम का जो तूने छुपाई नहीं, इसलिए पलट और चूम मेरे गधे की दुम!"

इतना सुनना था कि सिपाही गुस्से से बौखला उठे।

"तूने दगाबाजी की है, जलील कुत्ते! अब हमें बेवकूफ बनाता है? देखो भाई! देखो! बोरा धूल से सना है। हम लोगों के हाथ तो कब्रिस्तान में खोदाई करते-करते लहू-लुहान हो रहे थे, और यह सड़क पर लोट-पोटकर बोरे से निकल भागने की कोशिश कर रहा था। अबे गीदड़ की औलाद, तुझे यह चालबाजी मंहगी पड़ेगी।"

पहले तो उन्होंने मुक्कों से बोरे की कुटाई की, फिर लोहे के नालदार बूटों से उसे अच्छी तरह रौंदा। इस बीच सूदखोर, खोजा नसरुद्दीन की हिदायतों पर मजबूती से अमल करता हुआ चिल्लाता रहा: 'तांबे जैसी ढाल है जिसकी, उसका माथा तांबे का' वगैरा। सिपाही और भी भन्ना उठे। उनकी तबियत तो हो रही थी कि इस बदमाश को अपने तरीके से यहीं खत्म कर दें, लेकिन उन्हें अफसोस था कि वे ऐसा कर नहीं सकते थे। सो, उन्होंने बोरा उठाया, उसे पीठ पर लादा और पाक तालाब की तरफ बढ़ चले।

खोजा नसरुद्दीन पेड़ की आड़ से निकला, सिंचाई की नहर में हाथ-मुंह धोये, खलअत उतार कर रख दी और रात की हवा में सांस ली—सीना खोल-कर, आजादी से। वह अपने को बिलकुल आजाद महसूस कर रहा था, क्योंकि मौत का काला साया उसके सिर से टल गया था। हिफाजत और आराम की एक जगह पाकर उसने अपनी खलअत बिछाकर एक पत्थर सिरहाने रखा और लेट गया। इतनी देर तक उस तंग और बदबूदार बोरे में बन्द रहने की वजह से वह थक गया था और उसे आराम की जरूरत थी। हवा पेड़ों की पत्तियों में सरासरा रही थी। आसमान के समन्दर में तारों के सुनहरे झुंड तैर रहे थे। नहर में बहते पानी की कलकल सुनाई दे रही थी। यह सब खोजा नसरुद्दीन को इस वक्त पहले से दस-गुना ज्यादा अच्छा लग रहा था।

"हां! दुनिया मेरे लिए अब भी इतनी अच्छी है कि अगर मुझे बहिश्त में जगह देने का पक्का वादा भी कर लिया जाय, तो मैं मरने के लिए रजामंद न हूंगा। कोई भी शख्स वहां एक ही दरख्त के साये में, उन्हीं हूरों के बीच बैठा-बैठा, ऊब उठेगा।"

तारों की छांह में गर्म जमीन पर लेटे-लेटे लगातार बहने और कभी आराम न करनेवाली जिन्दगी के बारे में खोजा नसरुद्दीन के दिमाग में इसी तरह के खयालात दौड़ रहे थे। उसके सीने में उसका दिल धड़क रहा था। कब्रिस्तान में बार-बार उल्लू बोल रहा था। कोई छोटा सा जानवर—शायद साही—चुपके-चुपके झाड़ियों से सरसराती जा रही थी। घास से चरपरी खुशबू उड़ रही थी। राजदार हरकतों, अजीब खरखराहटों, रेंगने की आवाजों और चरमराहट से वह गुलजार थी।

दुनिया जिन्दा थी और सांस ले रही थी। इतनी बड़ी दुनिया हर एक के लिए एक-सी खुली हुई थी। चींटियों, चिड़ियों और इन्सानों, सभी को अपनी बेइन्तिहा जगह की दावत देती, वह बड़ी मुहब्बत से उनकी तरफ हाथ बढ़ा रही थी। बदले में उसकी मांग सिर्फ इतनी थी कि इस मुहब्बत और अमानत का वे बेजा इस्तेमाल न करें। उस मेहमान को मेजबान बेइज्जती से निकाल बाहर करता है जो दावत की खुशी के माहौल का बेजा फायदा उठाता दूसरे मेहमानों की जेब काटने की हरकत करता है। और ऐसा ही चोर था बदनाम सूदखोर जो खुशी और मुहब्बत की इस दुनिया से बाहर निकाला जा रहा था।

खोजा नसरुद्दीन को उसके लिए कतई अफसोस न था, क्योंकि जाहिर था कि उसके न होने से हजारों लोगों का बोझ हल्का होगा। खोजा नसरुद्दीन को सिर्फ इस बात का गम था कि इस जमीन पर यह सूदखोर ही आखिरी और अकेला मनहूस शख्स नहीं है। काश! कोई सारे अमीर-उमरावों, मुल्लाओं

और सूदखोरों को एक ही बोरे में बन्द करके शेख तुरखान के पाक तालाब में डुबा देता ! तब उनकी बदबू दरख्तों पर खिलते फूलों को मुरझा न देती। तब चिड़ियों की चहचहाहट उनकी दौलत की खनक, झूठी नसीहतों और तलवारों की झनझनाहट में न खो जाती। तब इन्सान दुनिया की खूबसूरती का लुत्फ लूटने के लिए आजाद होते। वे अपने सबसे अहम फर्ज—हर चीज में और हर वक्त खुश रहने के फर्ज—को पूरा करने को आजाद होते !

इस बीच सिपाहियों ने वक्त की कमी पूरी करने के लिए तेजी से कदम बढ़ाये। आखिरकार वे दौड़ने लगे। बोरे में धक्के और हिचकोले खाता सूदखोर इतमीनान से इस अजीबोगरीब सफर के खात्मे का इन्तजार कर रहा था। सिपाहियों के हथियारों की झनझनाहट और उनके बूटों के नीचे पत्थरों की खड़क सुनता हुआ वह सोच रहा था कि क्यों ये ताकतवर जिन उड़ नहीं पड़ते, क्यों ये अपने तांबे के परों को जमीन पर रगड़ते हुए मुर्गे की तरह दौड़ रहे हैं।

आखिर दूर से पहाड़ी झरने की-सी आवाज सुनाई दी। सूदखोर ने समझा कि जिन उसे पहाड़ों—शायद अपने रहने की जगह, रूहों की चोटी, खान तेंगरी—पर ले आये हैं। लेकिन जल्द ही उसे इन्सानों की आवाजें सुनायी देने लगीं। वह समझ गया कि बड़ी तादाद में आदमियों की भीड़ जमा है। शोर-शराबे से उसे लगा कि यहां हजारों आदमी इकट्ठे हैं—बाजार की तरह। लेकिन बुखारा में रात में बाजार लगते किसने सुना था ?

यकायक उसे लगा कि वह ऊपर उठ रहा है। तो जिनों ने आखिरकार हवा में उड़ने का फैसला कर लिया ? उसे मालूम ही कैसे हो सकता था कि सिपाही बोरे को तख्ते पर पहुंचाने के लिए सीढ़ियां चढ़ रहे हैं ? ऊपर पहुंचकर उन्होंने बोरे को पटक दिया। बोरे के बोझ से तख्ता हिला और चरमराया। सूदखोर कराह उठा।

"अरे ओ जिन्नो !" उसने चिल्लाकर कहा। "अगर तुमने बोरे को इस तरह पटकना शुरू किया तो इलाज होना तो दरकिनार, मेरे हाथ-पांव टूट जायेंगे।"

जवाब में एक जोरदार ठोकर लगी।

"पाक तुरखान तालाब की तह में बहुत जल्द तेरा इलाज हो जायगा, हरामजादे !" किसी ने कहा।

सूदखोर यकायक घबरा उठा। पाक तुरखान के तालाब का इस इलाज से क्या वास्ता ? और, जब उसे अपने पास ही अपने पुराने दोस्त—वह कसम खा सकता था कि यह वही है—महल के पहरेदार और फौज के सिपहसालार अर्सलां बेग की आवाज सुनाई दी तो उसकी घबराहट ताज्जुब में बदल गयी।

उसका दिमाग चक्कर खाने लगा। अर्सलां बेग यहां कैसे नमूदार हुआ ? वह जिन्नों को रास्ते में देर करने के लिए डाट क्यों रहा था। जिन्न क्यों जवाब देते डर से कांपते मालूम होते थे ? यह तो गैर-मुमकिन था कि अर्सलां बेग जिन्नात का भी सिपहसालार हो ? वह क्या करे ? खामोश रहे या अर्सलां बेग को पुकारे ? और चूंकि सूदखोर को इस सिलसिले में कोई हिदायत नहीं मिली थी, इसलिए उसने खुद ही कुछ सोचने का फैसला किया।

भीड़ का शोर-गुल बढ़ता जा रहा था। एक लफ्ज आम शोर-गुल से भी ज्यादा तेज और ऊंचा सुनाई दे रहा था। मालूम होता था कि जमीन और आसमान सब जगह से इसी लफ्ज की सदा उठ रही थी। यह लफ्ज भनभनाता था, गूंजता था, गरजता था—और दूर जाती गूंजों में खत्म हो जाता था। सूदखोर सांस रोककर इस लफ्ज को सुनने की कोशिश करने लगा। आखिर यह लफ्ज उसकी समझ में आया :

"खोजा नसरुद्दीन !"

भीड़ में हजारों गलों से यही आवाज निकल रही थी :

"खोजा नसरुद्दीन ! खोजा नसरुद्दीन !!"

यकायक सन्नाटा छा गया। इस खौफनाक सन्नाटे में सूदखोर को मशालों की सिसकारी, हवा की सरसराहट और पानी की आवाज सुनाई दी। उसकी टेढ़ी रीढ़ में कंपकंपी दौड़ गयी। भयानक खौफ ने उसे अपने बर्फीले पंजों में जकड़ लिया।

तभी उसे एक दूसरी आवाज सुनाई दी। सूदखोर कसम खा सकता था कि यह आवाज आला वजीर बख्तियार की है :

"अलहमदुलिल्लाह ! नेक और रहम दिल, सूरज के मानिन्द, बुखारा के हमारे अमीर के हुक्म से कुफ्र फैलानेवाला मलऊन बदमाश, अमन में खलल डालने और फूट फैलानेवाला खोजा नसरुद्दीन इस बोरे में बन्द करके तालाब में डुबाया जा रहा है।"

चन्द हाथों ने बोरे को पकड़कर ऊपर उठाया।

अब सूदखोर को असली हालत का पता चला।

"ठहरो ! ठहरो !" वह चिल्लाया। "यह क्या कर रहे हो तुम लोग ? ठहरो ! ठहरो ! मैं खोजा नसरुद्दीन नहीं हूं। मैं सूदखोर जाफर हूं। छोड़ दो मुझे ! अरे मैं सूदखोर जाफर हूं, खोजा नसरुद्दीन नहीं। कहां ले जा रहे हो मुझे ? मैं सच कहता हूं, मैं सूदखोर जाफर हूं !"

अमीर और उनके दरबारी खामोशी से उसकी चीख-पुकार सुनते रहे। बगदाद के आलिम मौलाना हुसैन ने, जो अमीर के सबसे करीब बैठे थे, परेशानी से अपना सिर हिलाते हुए कहा :

"इस बदमाश की बेशर्मी की हद नहीं। देखिए न, एक वक्त इसने अपने को बगदाद का आलिम मौलाना हुसैन बताया और अब यह चाहता है कि हम इसे सूदखोर जाफर मान लें।"

"वह सोचता है कि यहां सब बेवकूफ बैठे हैं और वे उसकी बात का यकीन कर लेंगे," अर्सलां बेग ने कहा, "सुनिए न, कितनी चालाकी से इसने अपनी आवाज बदल ली है।"

"मुझे छोड़ दो! छोड़ दो मुझे! मैं खोजा नसरुद्दीन नहीं हूं। मैं जाफर हूं, जाफर।" तख्ते पर किनारे खड़े कुछ सिपाहियों ने बोरे को इधर-उधर झुलाया। "मैं खोजा नसरुद्दीन नहीं हूं! अरे मैं ..."

इसी लमहे अर्सलां बेग ने इशारा किया और हवा में टेढ़ा-मेढ़ा झूलता बोरा उछला। एक जोरदार छपाके के साथ वह तालाब में गिरा और मशालों की तेज सुर्ख रोशनी में पानी के छींटे चमक उठे। सूदखोर जाफर के गुनहगार जिस्म और गुनहगार रूह को पानी ने अपने नीचे दबा लिया।

भीड़ में से एक गहरी सर्द आह उठी और रात के अंधेरे में सनसनाती रही। कुछ लमहों तक डरावना सन्नाटा रहा। फिर, दिल को हिला देनेवाली एक वहशियाना चीख ने खामोशी तोड़ दी। यह चीख थी हसीन गुलजान की जो अपने बुजुर्ग वालिद की बाहों में रो और तड़प रही थी।

चायखाने का मालिक अली सिर थामकर बैठ गया। यूसुफ लुहार कांपने लगा, मानो उसे जूड़ी चढ़ आयी हो।

: ११ :

तालाब पर काम पूरा हो चुकने के बाद अमीर अपने दरबारियों के साथ महल को लौट आये।

इस बात का खतरा भांपकर कि मुजरिम के पूरी तौर पर डूब चुकने से पहले ही उसे बचाने की कोशिशें की जा सकती हैं, अर्सलां बेग ने तालाब के चारों तरफ पहरेदार तैनात कर दिये थे और हुक्म जारी कर दिया था कि कोई भी तालाब के किनारे न फटकने पाये। भीड़ कुछ आगे बढ़ी, लेकिन पहरेदारों के सामने पहुंचकर डगमगायी, पीछे हटी, फिर गुस्से में एक बड़ी और काली दीवाल के मानिन्द खड़ी हो गयी। अर्सलां बेग ने भीड़ को तितर-बितर करने की कोशिश की, मगर लोग वहां से दूसरी जगह हट गये, अंधेरे में छिप गये, और थोड़ी देर बाद फिर उसी जगह आ खड़े हुए।

महल में खुशी के नगाड़े बज उठे। अमीर ने दुश्मन पर फतह का जलूस मनाया। सोना और चांदी चकाचौंध फैला रहे थे। केतलियां उबल रही थीं। अंगीठियां सुलग रही थीं। तम्बूरे झनक रहे थे। नगाड़े गरज रहे थे, जिससे

हवा कांप रही थी। दावत के लिए इतनी रोशनी की गयी थी कि लगता था, महल में आग लग गयी है।

लेकिन महल के इर्द-गिर्द बसे शहर में सन्नाटा था। उसने अंधेरे का और उदास खामोशी का कफन ओढ़ रखा था।

अमीर ने उस दिन बड़ी फैयाजी से इनाम बांटे। बहुतों को बख्शीशें मिलीं। कसीदे गाते-गाते शायरों के गले पड़ गये। बार-बार झुककर सोने-चांदी के सिक्के बटोरनेवालों की पीठों में हल्का दर्द पैदा हो गया।

"मुहर्रिर को बुलाया जाय!" अमीर ने हुक्म दिया।

मुहर्रिर दौड़ा हुआ आया और तेजी से नेजे की कलम घसीटने लगा :

"बुखारा के सुलतान और कानूनसाज, सूरज को अपनी रोशनी से ढंक लेनेवाले अजीमुश्शान अमीर की तरफ से सूरज को अपनी रोशनी से ढंक लेनेवाले, खीवा के अजीमुश्शान खान को सलाम के गुलाब और दोस्ती की लिली कुबूल हों। अपने प्यारे शाही भाई को हम एक ऐसी इत्तिला देते हैं जिसकी खुशी के जोश से उनका दिल भड़क उठेगा और मन को तस्कीन होगी।

"वह खुशखबरी यह है कि आज, सफर के महीने की सत्रहवीं तारीख को, बुखारा के अमीरे-आजम, माबदौलत, ने सारी दुनिया में कुफ्र और नापाक कारनामों के लिए बदनाम बदमाश खोजा नसरुद्दीन को—अल्लाह की उस पर मार—सरेआम मौत की सजा दी। हमने अपने सामने, अपनी आंखों के सामने, एक बोरे में बन्द करके और डुबाकर उसे मौत की सजा दी। इसलिए अपने शाही बयान की हम तसदीक करते हैं कि अमन में खलल डालनेवाला, बदमाश, फूट फैलाने और बगावत करनेवाला यह काफिर अब जिन्दा लोगों में शामिल नहीं है और अपनी नापाक हरकतों से हमारे प्यारे भाई को आइन्दा परेशान न कर सकेगा।"

इसी किस्म के खत बगदाद के खलीफा, तुर्की के सुलतान, ईरान के शाह, कोकन्द के खान, अफगानिस्तान के अमीर और पास और दूर के सभी मुल्कों के हुक्मरानों के नाम लिखवाये गये। वजीर बख्तियार ने खतों का खरीता बनाया, शाही मुहर लगायी और कासिदों को फौरन रवाना होने का हुक्म देकर खत रवाना कर दिये। उस रात चरमराते और जोर की आवाज करते बुखारा के ग्यारहों फाटक खुल गये और कासिद खीवा, तेहरान, इस्तम्बूल, बगदाद, काबुल और दूसरे शहरों को दौड़ पड़े। उनके घोड़ों की टापों से पत्थर तितर-बितर हो रहे थे, नालों की रगड़ खाकर पत्थरों से चिनगारियां निकल रही थीं।

... आधी रात के सन्नाटे में, तालाब में बोरा फेंके जाने के चार घंटे बाद, अर्सलां बेग ने तालाब पर से पहरा हटा लिया।

"वह कोई भी क्यों न हो — खुद शैतान ही क्यों न हो — चार घंटे पानी में रहने के बाद जिन्दा नहीं बच सकता।" अर्सलां बेग ने कहा। "अब उसे निकालने की जरूरत नहीं। जिस किसी की तबियत चाहे, उसकी बदबूदार लाश निकाल सकता है।"

रात के अंधेरे में जैसे ही आखिरी पहरेदार गायब हुआ, शोर मचाती भीड़ फिर किनारे की तरफ बढ़ चली। मशालें, जो पहले से ही तैयार कर रखी गयी थीं और नजदीक की झाड़ियों में छिपा दी गयी थीं, जला ली गयीं। खोजा नसरुद्दीन की किस्मत पर मरसिया पढ़ती औरतें मातम करने लगीं।

"हमें चाहिए कि हम उसे दीनदार मुसलमान की तरह दफनाएं!" बूढ़े नयाज ने कहा। उसके कन्धों का सहारा लिये, सकते की हालत में खड़ी गुलजान, खामोश थी।

अपने-अपने हाथों में कटिया लिये चायखाने का मालिक अली और यूसुफ लुहार पानी में कूद पड़े। वे दोनों काफी देर तक तलाश करते रहे। उन्होंने बोरे को पकड़ लिया और कटिया में फंसाकर किनारे घसीट लाये। काला, मशालों की रोशनी में चमकता और पतावर में लिपटा बोरा जब सतह पर आया तो औरतों ने और जोर से सियापा किया। महल से उठती जश्न की आवाजें इसमें डूब गयीं।

दर्जनों हाथ एक साथ उठे और बोरे को उठा लिया।

"मेरे पीछे-पीछे आओ!" यूसुफ ने मशाल की रोशनी से रास्ता दिखाते हुए कहा।

एक बड़े से दरख्त के नीचे बोरा रख दिया गया। लोग उसे घेरकर खामोशी से खड़े हो गये। यूसुफ ने एक चाकू निकाला, होशियारी से बोरे को लम्बाई में काटा, लाश के चेहरे पर एक नजर डाली और चौंककर पीछे हट गया। वह मानो पत्थर बन गया था। उसकी आंखें बाहर निकली पड़ती थीं। जुबान से बोल नहीं फूट रहा था।

यूसूफ की मदद के लिए दौड़कर अली उसके पास पहुंचा। लेकिन उसकी भी वही हालत हुई। अली जमीन पर बैठ गया, एक नजर लाश पर डाली और यकायक पीठ के बल गिर पड़ा। उसकी तोंद आसमान की तरफ उठी थी।

"क्या हुआ? क्या हुआ? क्या माजरा है?" भीड़ में से आवाजें उठीं। "हमें भी देखने दो, भाई। हटो, हटो! हम भी देखें!"

रोती हुई गुलजान लाश के ऊपर झुककर दोजानू बैठ गयी। लेकिन जैसे ही किसी ने लाश की तरफ मशाल बढ़ाई, वह डर और ताज्जुब से पीछे हट गयी।

मशालें लिये आदमी चारों तरफ जमा थे। तालाब का किनारा रोशन हो उठा था। बहुत सी आवाजें एक साथ निकलीं और रात का सन्नाटा तोड़ दिया :

"जाफर !"

"यह तो सूदखोर जाफर है !"

"जाफर, जाफर ! यह खोजा नसरुद्दीन नहीं ! यह तो सूदखोर जाफर है !"

ताज्जुब और सकते के पहले चन्द लमहे गुजर चुके थे। अब हर शख्स शोर मचाने, चिल्लाने, और धक्कम-धुक्की करने लगा। लोग एक दूसरे के कन्धों पर से उभक-उभककर देखने की कोशिश करने लगे। गुलजान की हालत कुछ ऐसी हो गयी थी कि बूढ़ा नयाज डर के मारे उसे किनारे से दूर हटा ले गया। उसे डर था कि गुलजान का दिमाग न फिर जाय। शक और यकीन के बीच डगमगाती वह कभी हंसती और कभी चिल्ला उठती। एक आखिरी नजर डालने के लिए वह लाश की तरफ दौड़ पड़ती।

"जाफर ! जाफर !" की खुशी की आवाजें इतने जोर से उठीं कि शाही जश्न की आवाजें फीकी पड़ गयीं। "यह सूदखोर जाफर है ! कसम से, यह जाफर है ! यह देखो ! यह रहा उसका बटुआ, मय रसीदों के !"

काफी वक्त गुजर जाने के बाद, जब एक शख्स के होश-हवास दुरुस्त हुए, तो उसने भीड़ की तरफ मुखातिब होकर पूछा :

"लेकिन, खोजा नसरुद्दीन कहां है ?"

फौरन यही सवाल सबकी जुबानों पर दौड़ने लगा। एक चिल्लाहट मच गयी :

"खोजा नसरुद्दीन कहां है ?"

"हमारा प्यारा खोजा नसरुद्दीन कहां है ?"

"हां, हां, हमारा खोजा नसरुद्दीन कहां है ?"

"यहां है खोजा नसरुद्दीन !" एक जानी-पहचानी आवाज ने जवाब दिया। सबने ताज्जुब से घूमकर देखा तो जीता-जागता खोजा नसरुद्दीन सामने नजर आया। बिना पहरेदारों के, बड़े आराम से जम्हाई और अंगड़ाई लेता हुआ, वह भीड़ की तरफ आ रहा था। कब्रिस्तान के पास ही उसे नींद आ गयी थी। इसी वजह से उसे आने में देर हो गयी थी।

"लो, यह रहा खोजा नसरुद्दीन !" वह बोला। "जो कोई मुझ से मिलना चाहता हो — यहां आ जाये। ऐ बुखारा के शरीफ बाशिन्दो ! तुम सब तालाब पर क्यों जमा हुए हो और यहां क्या कर रहे हो ?"

"क्या कर रहे हैं ? तुम पूछते हो हम यहां क्या कर रहे हैं ?" सैकड़ों आवाजों ने जवाब दिया। "ऐ खोजा नसरुद्दीन ! हम लोग तो यहां तुमको अलविदा कहने आये थे, तुम्हारा मातम करने और तुम्हें दफनाने आये थे।"

"मुझे दफनाने ?" उसने पूछा : "बुखारा के नेक बाशिन्दो ! क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि खोजा नसरुद्दीन का मरने का वक्त अभी नहीं आया, कि अभी भी उसका मरने का इरादा नहीं है। कब्रिस्तान के पास तो मैं आराम करने के लिए लेट गया था। तुम लोग समझ बैठे कि मैं मर गया हूं ?"

वह इतना ही कह पाया था कि चायखाने का मालिक अली और यूसफ लुहार खुशी से चिल्लाते हुए उस पर टूट पड़े; उन्होंने भींचकर उसे अधमरा कर दिया। नयाज भी लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा, मगर भीड़ का धक्का खाकर एक तरफ जा गिरा। खोजा नसरुद्दीन ने अपने को एक बड़ी भीड़ से घिरा पाया। हर आदमी उससे गले मिलना और उसका इस्तकबाल करना चाहता था। और वह ? वह एक-एक से गले मिलता ठीक उस जगह की तरफ बढ़ रहा था जहां उसे गुलजान की बेताब और नाराज आवाज सुनायी दे रही थी। और, आखिर जब दोनों एक दूसरे के रूबरू हुए तो गुलजान ने उसके गले में बांहें डाल दीं। खोजा नसरुद्दीन ने उसका नकाब उलट दिया, और इतने लोगों के बीच, बेधड़क उसका बोसा लिया। तो भी, वहां मौजूद लोगों में से किसी को भी, यहां तक कि तहजीब और कायदों के बड़े से बड़े हिमायतियों को भी, इसमें कोई बेजा या काबिले एतराज बात नहीं दिखाई दी।

लोगों को खामोश करने और उन्हें अपनी तरफ मुखातिब करने के लिए खोजा नसरुद्दीन ने हाथ उठाया।

"तुम लोग मेरा मातम करने के लिए यहां जमा हुए थे ? बुखारा के शरीफ बाशिन्दो ! क्या तुम नहीं जानते कि मैं मर नहीं सकता ? क्या तुम नहीं जानते कि

मैं खोजा नसरुद्दीन, मियां !
आजाद हमेशा रहा किया !
यह झूठ न कोई बकता हूं,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं !"

सिसकारती मशालों की चकाचौंध में खड़ा वह गा रहा था। भीड़ ने भी जब इन कड़ियों को दोहराना शुरू किया तो इस गाने ने रात के अंधेरे में डूबे बुखारा को गुंजा दिया :

मैं खोजा नसरुद्दीन, मियां !
आजाद हमेशा रहा किया !
यह झूठ न कोई बकता हूं,
मैं कभी नहीं मर सकता हूं !

इस खुशी से महल की खुशी का मुकाबला ही क्या ?

"अरे यह तो बताओ खोजा नसरुद्दीन," कोई चिल्लाया, "कि तुमने अपनी जगह सूदखोर जाफर को कैसे डुबोया ।"

"आहा !" यकायक खोजा नसरुद्दीन को याद आया । "यूसुफ भाई ! तुम्हें मेरी कसम याद है ?"

"जरूर याद है," यूसुफ ने जवाब दिया, "और तुमने उसे पूरा कर दिखाया, खोजा नसरुद्दीन ।"

"वह है कहां ?" खोजा नसरुद्दीन ने पूछा । "सूदखोर कहां है ? क्या तुमने उसका बटुआ लिया ?"

"नहीं ! हमने तो उसे छुआ तक नहीं ।"

"अरे ... रे-रे !" खोजा नसरुद्दीन ने कहा । "बुखारा के शरीफ बाशिन्दो ! शराफत और नेक खयाल तो तुम्हें फैयाजी से मिले, लेकिन मामूली अक्ल कम मिली है ! क्या तुम लोग नहीं जानते कि यह बटुआ सूदखोर के वारिसों को मिल गया तो वे पाई-पाई कर्ज चुका लेंगे ? लाओ, फौरन उसका बटुआ मुझे दो ।"

शोर मचाते, धक्कम-धुक्की करते, बीसों आदमी खोजा नसरुद्दीन के हुक्म की तामील करने दौड़ पड़े । वे बटुआ ले आये और खोजा नसरुद्दीन को दे दिया ।

उसने बटुये से यूं ही एक रसीद निकाली :

"मुहम्मद जीनसाज ! कहां है मुहम्मद जीनसाज ? सामने आये ।" उसने कहा ।

"मैं हूं मुहम्मद जीनसाज !" एक पतली कांपती आवाज ने जवाब दिया । भीड़ से एक नाटा-सा बूढ़ा निकला जिसके कुच्ची दाढ़ी थी और जिसकी रंगीन खलअत तार-तार हो रही थी ।

"मुहम्मद जीनसाज ! इस रसीद के मुताबिक तुम्हें कल पांच सौ तंके अदा करने हैं । लेकिन मैं, खोजा नसरुद्दीन, तुम्हारा कर्ज मंसूख करता हूं । इस रकम को तुम अपनी जरूरतों पर खर्च करो । अपने लिए तुम एक नयी खलअत खरीदो । तुम्हारी यह खलअत रुई का पका खेत मालूम होती है; इसमें हर तरफ से रुई निकल रही है ।"

यह कहकर उसने एक मशाल ली और कागज को उसकी लपट के हवाले कर दिया।

बाकी रसीदों के साथ भी खोजा नसरुद्दीन ने यही किया। कागजों की लपट ने उन लोगों के दिलों में बड़े से बड़े अलाव से भी ज्यादा गरमी पैदा कर दी। अपनी जिन्दगी में ये लोग पहली बार आजाद हुए थे, क्योंकि बहुत से लोगों को यह कर्ज बाप-दादों से विरासत में मिला था और जवानी से ही ये लोग जाफर की कैद में थे—कुछ तो बीस साल से भी ज्यादा वक्त से उसके चंगुल में थे।

जब आखिरी रसीद जल चुकी तो खोजा नसरुद्दीन ने खाली थैले को तालाब में फेंक दिया।

"अब यह हमेशा के लिए तालाब की तह में पड़ा रहेगा।" वह बोला। "कोई शख्स इसे अपने कन्धे से न लटकाये। ऐ बुखारा के नेक बाशिन्दो! किसी भी शख्स के लिए ऐसा बटुआ लेकर चलने से ज्यादा मनहूस बात दूसरी नहीं हो सकती। तुम को चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय, तुम लोगों में से चाहे कोई दौलतमन्द ही क्यों न बन जाय—हालांकि इस सूरज के मानिन्द अमीर और तेज आंखोंवाले उसके वजीरों के रहते इसकी कोई उम्मीद नहीं—लेकिन मान लो कि तुम में से कोई कभी अमीर हो ही जाय, तो भी उसे कभी ऐसा बटुआ लेकर न चलना चाहिए, नहीं तो चौदह पुश्तों तक उसकी बदनामी रहेगी! उसे याद रखना चाहिए कि इस दुनिया में एक खोजा नसरुद्दीन भी है, जिसका हाथ बहुत सख्त और मजबूत है। तुम लोगों ने खुद देखा है कि सूदखोर जाफर को उसने क्या सजा दी है। बुखारा शरीफ के शहरियो! अब मैं तुम लोगों से रुखसत चाहता हूं। लम्बे सफर पर रवाना होने का वक्त आ पहुंचा है। गुलजान, क्या तुम मेरे साथ चलोगी?"

"तुम जहां जाओगे, तुम्हारे साथ चलूंगी।" वह बोली।

बुखारा के बाशिन्दों ने खोजा नसरुद्दीन को बड़ी शान-शौकत से रुखसत किया। सरायों के मालिकों ने उसकी बीवी के लिए रुई के मानिन्द सफेद एक गधा लाकर दिया—जिसकी खाल पर एक भी काला धब्बा नहीं था और जो खोजा नसरुद्दीन की आवारगी के वफादार साथी भूरे गधे के पास खड़ा शान से दुम हिला रहा था। भूरे गधे को भी अपने साथी से कोई रश्क नहीं था और वह खामोश खड़ा मजे से रसीली तिपतिया घास खा रहा था। कभी-कभी अपनी थूथनी से वह सफेद गधे को दूर भी हटा देता, मानो यह जताने के लिए कि अपने हुस्न की चमक के बावजूद सफेद गधा अभी वफादारी में उसके सामने नाचीज है।

लुहार अपने औजार ले आये और जल्द ही दोनों गधों के नये नाल लगा दिये। जीनसाजों ने दो बढ़िया जीनें कस दीं : एक मखमल से सजी—नसरुद्दीन के लिए; दूसरी चांदी से मढ़ी—गुलजान के लिए। चायखाने के मालिक ने दो बहुत बढ़िया चीनी प्याले और दो बेशकीमती चायदानियां दीं। छिपिलगरों ने मशहूर गुरदा इस्पात की एक तलवार खोजा नसरुद्दीन को भेंट की, जिससे वह डाकुओं से अपनी हिफाजत कर सके। कालीन बनानेवालों ने जीन पर बिछाने के लिए कालीन दिये। रस्से बनानेवाले घोड़े के बालों का रस्सा तैयार कर लाये। इस रस्से में यह सिफत थी कि सोते हुए मुसाफिर के चारों तरफ डाल दिया जाय तो जहरीले सांप वगैरा जानवर उसके कंटीले बालों के ऊपर फिसलने-सरकने की हिम्मत नहीं कर सकते थे और इस तरह मुसाफिर को कोई नुकसान न पहुंचा सकते थे।

जुलाहे, तांबागर, दर्जी, मोची—सभी अपनी-अपनी कारीगरी के तोहफे लाये। मुल्लों, अफसरों और रईसों को छोड़कर, बुखारा के सभी बाशिन्दों ने खोजा नसरुद्दीन को सफर का सामान मुहैया किया।

बेचारे कुम्हार मन मारे अलग खड़े थे। खोजा नसरुद्दीन को देने के लिए उनके पास कुछ नहीं था। भला कोई आदमी मिट्टी के बरतनों का क्या करता जब कि उसके पास तांबागरों के दिये बरतन थे?

यकायक सबसे बुजुर्ग कुम्हार ने, जिसकी उम्र सौ साल से भी ज्यादा थी, ऊंची आवाज में कहा :

"कौन कहता है कि हम कुम्हारों ने खोजा नसरुद्दीन को कुछ नहीं दिया? क्या यह हसीन दोशीजा, इसकी दुलहन, गुलजान, कुम्हारों के शरीफ और मशहूर खानदान की ही बेटी नहीं है?"

कुम्हार खुशी से "वाह-वाह! खूब कहा! खूब कहा!" कह उठे। सभी ने गुलजान को हिदायत दी कि वह खोजा नसरुद्दीन की वफादार और सच्ची हमराही बने ताकि उसके खानदान के आला नाम और शोहरत को बट्टा न लगे।

"सुबह होने वाली है," खोजा नसरुद्दीन ने कहा, "थोड़ी देर में ही शहर के फाटक खुल जायेंगे। मेरा और मेरी दुलहन का चुपचाप निकल जाना जरूरी है। अगर तुम लोग हमें रुखसत करने चले तो पहरेदार समझेंगे कि बुखारा की पूरी आबादी कहीं दूसरी जगह बसने के इरादे से शहर छोड़ रही है और तब वे फाटक बन्द कर देंगे और कोई भी बाहर न जाने पायेगा। इसलिए, बुखारा के ऐ शरीफ बाशिन्दो! तुम लोग अपने-अपने घरों को जाओ! अल्लाह करे तुम्हें चैन की नींद आये और बदकिस्मती का काला साया

कभी तुम्हारे सिर पर न पड़े ! तुम्हें कामयाबी हासिल हो। खोजा नसरुद्दीन तुमसे रुखसत होता है। कब तक के लिए ? यह मैं खुद नहीं जानता !"

एक बारीक, हल्की-सी, किरन पूरब में फूटी। तालाब पर हल्का-सा कोहरा उठा। भीड़ छंटने लगी। लोग मशालें बुझा रहे थे और कह रहे थे :

"अल्लाह करे तुम्हारा सफर बखैरो-खूबी पूरा हो ! अपने वतन को न भूल जाना, खोजा नसरुद्दीन !"

यूसुफ लुहार और चायखाने के मालिक अली से रुखसत दिल हिला देने-वाली थी। मोटा अली आंसुओं पर काबू न पा रहा था। वे उसके लाल गोल चेहरे को गीला कर रहे थे।

फाटक खुलने के वक्त तक खोजा नसरुद्दीन नयाज के मकान में रहा। जैसे ही शहर के ऊपर मुअज्जिन की गमजदा आवाज गूंजी, खोजा नसरुद्दीन और गुलजान अपनी मंजिल पर रवाना हो गये। बूढ़ा नयाज उनके साथ सबसे करीब के कोने तक गया—खोजा नसरुद्दीन उसे और आगे नहीं जाने देना चाहता था। वह बेचारा वहीं खड़ा आंसुओं के पर्दे से उन्हें तब तक देखता रहा, जब तक मोड़ पर दोनों गायब न हो गये ! सुबह की हल्की हवा उठी और बड़े करीने से सड़क साफ करती हुई सारे सुराग मिटा चली।

नयाज दौड़कर घर वापस पहुंचा। वह छत पर चढ़ गया। वहां से शहर की दीवाल के पार दूर तक देखा जा सकता था। वह बड़ी देर तक वहां खड़ा देखता रहा। अपनी बूढ़ी आंखों से देर तक वह सूरज से तपी, मटमैली पहाड़ियों को ताकता रहा, जिनमें होकर बलखाती सड़क, भूरे फीते की तरह दूर तक फैली हुई थी। वह देख रहा था और बराबर आंसू पोंछता जा रहा था जो उसकी कोशिशों के बावजूद रुकने का नाम नहीं लेते थे। उसने इतनी देर तक इन्तजार किया कि उसे फिक्र होने लगी। वह सोचने लगा—कहीं खोजा नसरुद्दीन और गुलजान सिपाहियों के हाथ में तो नहीं पड़ गये।

आखिरकार उसे बहुत दूर दो छोटे-छोटे नुक्ते-से दिखायी दिये ... एक भूरा और एक सफेद। ये नुक्ते दूर होकर धीरे-धीरे छोटे होते गये। कुछ देर बाद भूरा नुक्ता पहाड़ियों में कहीं घुल-मिल गया। सिर्फ सफेद नुक्ता बहुत देर तक दिखायी देता रहा ... कभी वह पहाड़ी सलवटों में गुम हो जाता और कभी फिर दिखायी देने लगता। आखिर, वह भी गर्म धुंध में गायब हो गया।

पहला पहर बीत रहा था। गर्मी बढ़ रही थी। इस गर्मी से बेखबर, बूढ़ा नयाज बहुत देर तक छत पर उदास खड़ा रहा। सफेद बालों से भरा उसका सिर कांपने लगता और गला रुंध जाता। अपनी बेटी और खोजा नसरुद्दीन से उसे कोई शिकायत नहीं थी। उनके लिए वह हर खुशी और आराम की दुआ

कर रहा था। उसे अफसोस था तो अपने लिए। उसका घर सूना हो गया था। बुढ़ापे के अकेलेपन में अब उसके घर में खुशी के गानों और हंसी से जिन्दगी भर देने के लिए कोई नहीं था।

गर्म हवा उठी और अंगूर की बेलों में सरसराती हुई धूल उड़ाने लगी। छत पर सूखते बरतनों में हवा बज उठी। ऐसी पतली और आजिजी भरी आवाज उन बरतनों से निकल रही थी मानो वे रुखसत होनेवालों के बिछोह में अफसोस मना रहे हों।

यकायक अपने पीछे कोई आवाज सुनकर नयाज होश में आया। उसने पीछे घूमकर देखा। पड़ोस में रहनेवाले तीन भाई एक-एककर सीढ़ियां चढ़ रहे थे। ये तीनों कुम्हार तन्दुरुस्त, कद्दावर और खूबसूरत भाई थे। नयाज के पास पहुंचकर वे अदब से झुके :

"नयाज साहब," सबसे बड़ा भाई बोला, "आपकी बेटी खोजा नसरुद्दीन के साथ चली गयी। लेकिन इसका आपको गम या अफसोस नहीं होना चाहिए, क्योंकि दुनिया का यही रहन है। हिरनी हिरन के बिना नहीं रह सकती। गाय सांड़ के बिना नहीं रह सकती और बत्तख अपने नर के बिना नहीं रह सकती। फिर भला कोई हसीन दोशीजा एक सच्चे और वफादार साथी के बिना कैसे रह सकती है? अल्लाह ने मखलूक को जोड़ों से बनाया है जो यहां दुनिया में रहते हैं। उसने घास तक में नर और मादा के जोड़े बनाये हैं।

"लेकिन आपका बुढ़ापा गम में न कटे, नयाज साहब, इसके लिए हम तीनों भाइयों ने एक फैसला किया है जो आपसे कहने आये हैं। अब सुनिए : जो खोजा नसरुद्दीन का रिश्तेदार है, वह बुखारा के शहरियों का रिश्तेदार है, और, इस तरह, नयाज साहब, आप हमारे रिश्तेदार हैं। आप जानते ही हैं कि पिछले साल आपके दोस्त और हमारे अजीज वालिद मरहूम मुहम्मद अली साहब को हमने रोते-बिलखते दफनाया था। और अब हमारे घर के अलाव के पास खानदान के बुजुर्ग की जगह खाली है। रोजाना इज्जत से सफेद दाढ़ी देखने की खुशी से हम महरूम हैं और सफेद दाढ़ी के बिना—जैसे कि मासूम बच्चे की किलकारी के बिना—घर सूना रहता है। किसी भी इंसान की रूह को तभी तस्कीन हासिल होती है जब उसके एक तरफ उस बुजुर्ग की सफेद दाढ़ी हो जिसने उसे पैदा किया है, और दूसरी तरफ पालने में पड़ा वह नन्हा मुन्ना हो, जिसे खुद उसने पैदा किया है।

"इसलिए, ऐ नयाज साहब, हम आपसे इल्तिजा करने आये हैं कि आप हमारे आंसुओं की फरियाद सुनें और हमारी बात नामंजूर न करें। अब आप हमारे घर चलें, और हम तीनों के वालिद और हमारे बच्चों के दादा बनें।"

उन भाइयों ने इतनी जिद पकड़ी कि नयाज से इनकार नहीं करते बना। नयाज उनके खानदान का बाबा बन गया और उसे पूरी इज्जत बख्शी गयी। इस तरह बुढ़ापे में नयाज को ईमानदारी और नेक जिन्दगी का वह सबसे बड़ा सिला मिला जो इस दुनिया में मुसलमानों के लिए सबसे बड़ी न्यामत है। वह नयाज बाबा बन गया—एक बड़े खानदान का बुजुर्ग, जिसके चौदह नाती-पोते थे। अंगूरों और सहतूत के रस से सने गुलाबी गालों के एक के बाद दूसरे जोड़े को देखकर उसकी आंखें खुशी से चमक उठतीं। अब कभी उसके कान खामोशी से परेशान न होते थे, यहां तक कि कभी-कभी तो इस शोरगुल से घबराकर वह अपने पुराने मकान में आराम करने चला जाता और उन दोनों की याद में खो जाता जो उसके दिल के इतने नजदीक थे और अब इतनी दूर चले गये थे—न जाने कहां।

बाजार के दिन नयाज बाजार जाता और दुनिया के कोने-कोने से बुखारा आये काफिलों के सरदारों से पूछता कि क्या उन्होंने सड़क पर दो मुसाफिरों को देखा है—एक मर्द, जो भूरे गधे पर सवार था; और एक औरत—जो ऐसे सफेद गधे पर सवार थी जिसके एक भी काला धब्बा नहीं? ऊंटवान धूप से तपे माथों पर शिकन डालकर थोड़ी देर सोचते फिर सिर हिलाकर इन्कार कर देते: नहीं, उन्होंने ऐसे मुसाफिर नहीं देखे थे।

हमेशा की तरह खोजा नसरुद्दीन बिलकुल लापता हो गया था ...

हमेशा की तरह किसी ऐसी जगह नमूदार होने के लिए जहां उसकी कतई उम्मीद नहीं थी ...।

आखिरी मंजिल

जो एक नये सफर की पहली मंजिल बन सकती है

"मैंने सात सफर किये और हर सफर
एक ऐसा अचम्भा है जो दिमाग को
परेशान किये रहता है।"

—सिंदबाद जहाजी

और वह वहां जा पहुंचा जहां उसकी कतई उम्मीद नहीं थी। वह इस्तम्बूल में नमूदार हुआ।

यह हुआ अमीर का खत सुलतान को मिलने के तीसरे दिन। हजारों नकीब इस शानदार बन्दरगाह के गांवों व शहरों में जाकर खोजा नसरुद्दीन की मौत का ऐलान कर रहे थे। मसजिदों में मुल्ला अमीर का खत पढ़ते और सुबह-शाम दो बार अल्लाह का शुक्र अदा करते।

महल के बाग में, फव्वारों की नम फुहारों से सने चनारों के साये में, सुलतान जश्न मना रहे थे। उनके चारों तरफ वजीरों, आलिमों, शायरों व दूसरे मुसाहिबों की भीड़ थी, जो बख्शीश और इनाम की उम्मीद में खड़े थे। सुराहियां, हुक्के और गर्म पकवानों से भरी किश्तियां लिये हब्शी भीड़ में घूम रहे थे। सुलतान आज बहुत खुश थे और चुहुल में थे।

आंखों को दाबते हुए उन्होंने शायरों और आलिमों से पूछा : "क्या बात है कि गर्मी के बावजूद हवा में आज खुशबू और खुशगवार नमी है?"

इसके जवाब में सुलतान के हाथ के चमड़े के बटुए को लालची निगाहों से ताकते हुए उन्होंने कहा : "हमारे अजीमुश्शान शहंशाह की सास ने हवा में खुशगवार नमी पैदा कर दी है और उसमें खुशबू इसलिए है कि काफिर खोजा नसरुद्दीन की नापाक रूह ने सारी दुनिया में जहर फैलानेवाली अपनी गन्दी बदबू फैलाना बन्द कर दिया है।"

इस्तम्बूल में नेकी और अमन कायम रखनेवाला महल के पहरेदारों का सरदार कुछ दूर खड़ा देख रहा था कि सब काम कायदे-कानून से चल रहा है या नहीं। बुखारा के मरतबे के अर्सलां बेग से उसमें फर्क था तो सिर्फ इतना कि यह शख्स अर्सलां बेग से ज्यादा दुबला-पतला मगर उससे भी ज्यादा बेरहम था। उसकी ये दोनों खुसूसियतें इतनी जुड़ी-मिली थीं कि इस्तम्बूल के बाशिन्दों ने इन पर बहुत पहले गौर कर लिया था और हर हफ्ते उसके गुसल के दिन महल के नौकरों से पूछते कि सरदार का वजन बढ़ा है या घटा। अगर खबर उनके माफिक न होती तो महल के पड़ोस के सभी शहरी अपने घरों से तब तक उसके गुसल के अगले दिन न निकलते जब तक मजबूर न हो जाते। यही खौफनाक शख्स इस वक्त सबसे अलग खड़ा हुआ था। लम्बी-दुबली गरदन पर उसका साफेदार सिर इस तरह टंगा था, गोया एक बांस पर जड़ दिया गया हो (इस्तम्बूल के बहुत से बाशिन्दे इस तशबीह को सुनकर चैन की सांस लेते)।

सब कुछ ठीक चल रहा था। दावत बदस्तूर जारी थी। किसी खतरे का अन्देशा नहीं था। महल के गुमाश्ते को दरबारियों की भीड़ से बड़ी होशियारी से सरदार की तरफ बढ़कर उसके कान में कुछ कहते किसी ने भी नहीं देखा। सरदार चौंका। उसके चेहरे का रंग बदल गया। वह तेजी से बाहर निकल गया। गुमाश्ता उसके पीछे-पीछे चल दिया। चन्द मिनट बाद ही वह फिर लौटा। उसका रंग पीला पड़ रहा था। मुंह बराबर चल रहा था, हालांकि आवाज नहीं निकल रही थी। कोहनी से दरबारियों को एक तरफ हटाता वह सुलतान के पास पहुंचा और कोर्निश में दोहरा झुक गया :

"ऐ शहंशाहे आजम ! ..."

"क्यों ? अब क्या मुसीबत है ?" सुलतान ने चिढ़कर कहा। "क्या आज के दिन भी तुम हवालात और कोड़ों की खबर अपने तक नहीं रख सकते ? बोलो, क्या बात है ?"

"ऐ संजीदा, ऐ अजीमुश्शान सुलतान ! मेरी जुबान बोलने से इनकार करती है।"

सुलतान ने कुछ परेशान होकर भवें तानीं। सरदार ने फुसफुसाकर कहा :

"ऐ आका ! वह इस्तम्बूल में ही है !"

"कौन ?" सुलतान ने कड़ककर पूछा, हालांकि वह समझ गये थे कि सरदार किस शख्स का जिक्र कर रहा है।

"खोजा नसरुद्दीन !!"

यह नाम सरदार ने तो बहुत धीमे से लिया था, लेकिन दरबारियों के कान तेज थे। उन्होंने सुन लिया। महल के पूरे मैदान में कानाफूसी फैल गयी।

"खोजा नसरुद्दीन इस्तम्बूल में है!"

"तुम्हें कैसे मालूम ?" यकायक सुलतान ने खोखली आवाज में पूछा। "तुम्हें कैसे मालूम ? तुमसे किसने कहा ? यह हो ही कैसे सकता है जब कि बुखारा के अमीर का यह खत हमारे हाथ में है जिसमें उन्होंने शाही यकीन दिलाया है कि खोजा नसरुद्दीन अब जिन्दा नहीं है ?"

सरदार ने महल के गुमाश्ते को इशारा किया और वह सुलतान के पास एक शख्स को ले आया। इस शख्स की नाक चपटी थी, चेहरा चेचक के दागों से भरा था, आंखें पीली व काइयां थीं।

"ऐ शहंशाह !" सरदार ने कहा। "यह शख्स बुखारा के अमीर के दरबार में बहुत दिनों तक जासूस का काम कर चुका है और खोजा नसरुद्दीन को बखूबी पहचानता है। जब यह शख्स इस्तम्बूल आया तो मैंने इसे जासूस का काम दे दिया और इसी ओहदे पर यह अब भी ..."

"तू ने उसे इस्तम्बूल में देखा ?" सुलतान जासूस की तरफ मुड़े और पूछा। "तू ने उसे अपनी आंखों से देखा है ?"

जासूस ने हामी भरी।

"शायद तूने गलती की है ?"

जासूस ने यकीन दिलाया। नहीं, इस मामले में वह गलती कर ही नहीं सकता था। खोजा नसरुद्दीन के साथ एक औरत भी थी, जो सफेद गधे पर सवार थी।

"तू ने उसे वहीं क्यों नहीं पकड़ लिया ?" सुलतान चिल्ला उठे। "तूने पकड़कर सिपाहियों के हवाले क्यों नहीं कर दिया ?"

घुटनों के बल गिरकर कांपते हुए जासूस ने जवाब दिया : "ऐ संजीदा सुलतान ! बुखारा में एक मर्तबा मैं खोजा नसरुद्दीन के हाथों पड़ गया था। अल्लाह की मेहरबानी से ही मेरी जान बची थी। आज सबेरे जब मैंने उसे इस्तम्बूल की सड़कों पर देखा तो डर के मारे मेरी नजर धुंधली पड़ गयी। जब तक मेरे होश-हवास दुरुस्त हों तब तक वह गायब हो चुका था।"

सिपाहियों के सरदार को घूरते हुए, जो अदब से झुका खड़ा था, सुलतान चिल्लाये :

"तो ये हैं तेरे जासूस ? मुजरिम को देखते ही डर के मारे इनके होश फाख्ता हो जाते हैं ?"

ठोकर मारकर सुलतान ने चेचकरू जासूस को एक तरफ हटाया, उठकर खड़े हुए और आरामगाह की तरफ चल दिये। पीछे-पीछे गुलामों की कतार भी चल पड़ी।

वजीर, शायर व आलिम बेचैन भीड़ में से बाहर निकलने के रास्ते की तरफ भाग चले। कुछ देर बाद, सरदार को छोड़कर, बाग में एक भी शख्स बाकी नहीं रहा। मजबूरी में खाली जगह को घूरता हुआ सरदार फव्वारे के संगमरमर के किनारे धम से बैठ गया। बहुत देर तक वहां बैठा वह पानी के हंसने और हौले-हौले उछलने की आवाज सुनता रहा। यकायक वह इतना सूख और सिकुड़ गया कि अगर इस्तम्बूल के बाशिन्दे उसे देख पाते तो उनमें भगदड़ मच जाती। जूते छोड़-छाड़ वे हर तरफ को भाग निकलते।

इस बीच चेचकरू मुखबिर शहर की गर्म गलियों से भागता हुआ तेजी से समन्दर की तरफ जा रहा था। उसकी सांस फूल रही थी। वहां उसने एक अरबी जहाज देखा, जो रवाना होने ही वाला था। जहाज के मालिक को जरा भी शक नहीं था कि यह शख्स कोई भागा हुआ मुजरिम है। उसे जहाज पर ले जाने के लिए उसने बहुत ही ऊंचा किराया तलब किया। मोल-भाव करने के लिए जासूस रुका नहीं। फौरन जहाज पर चढ़ गया और एक गन्दे कोने में छिपकर लद से गिर पड़ा। बाद में जब इस्तम्बूल की पतली मीनारें नीले कोहरे में छिप गयीं और ताजी हवा से पाल भर गये, वह अपनी पनाह की जगह से निकला, पूरे जहाज में घूमा और हर चेहरे को गौर से घूरने लगा। जब उसे यकीन हो गया कि खोजा नसरुद्दीन जहाज पर नहीं है, तो उसने चैन की सांस ली।

तब से वह चेचकरू जासूस लगातार डर और अन्देशे की जिन्दगी काटता रहा। जिस शहर भी वह जाता — बुखारा, काहिरा, तेहरान, दमिश्क — कहीं भी तीन महीने से ज्यादा चैन से न ठहर पाता, क्योंकि खोजा नसरुद्दीन हर जगह जरूर जा पहुंचता और जासूस उससे मुलाकात हो जाने के डर से दूर भाग निकलता। यहां खोजा नसरुद्दीन की तशबीह एक बहुत बड़े तूफान से देना मुनासिब है, जिसकी तेज सांस के सामने सूखी पत्तियां और घास उखड़कर लगातार भागा करती हैं। इस तरह दूसरों पर मुसीबतें ढाने का बदला इस चेचकरू जासूस को मिल गया।

दूसरे दिन से ही इस्तम्बूल में अजीबोगरीब और दिलचस्प वाकयात होने लगे।... लेकिन ऐसी बातों का चर्चा नहीं करना चाहिए जो कहनेवाले ने

खुद न देखी हों और ऐसे मुल्कों का जिक्र न करना चाहिए जहां किस्सा कहनेवाला खुद न गया हो। इसलिए इन लफ्जों से हम अपनी कहानी का आखिरी हिस्सा खत्म करते हैं। कोई होशियार और मेहनती शख्स इसे खोजा नसरुद्दीन के इस्तम्बूल, बगदाद, तेहरान, दमिश्क और दूसरे मशहूर शहरों के सफर की नयी किताब की शुरूआत बना सकता है।

